राजस्थान के

अग्यात ब्रजभाषा साहित्यकार

भाग-5

सम्पादक

मोहनलाल मधुकर

राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी जयपुर

विसै-सूची

सम्पादकीय पष्ठ सख्या

स्तर पै प्रोत्साहित कर्यौ जाइ, दूरदमन पै इनकी रचना माधुरी दिखाई जाय तौ फिर-कत्ता जि हमारे देस के साहित्य कला अरु सस्कृति मे प्रेम, करूणा अरु वात्सल्य भावन कौ सगम साकार है सकैगौ। आजु जा अलगाव, ऊँचनीच के भेदभाव अरु मन तारिबे वारि बातन कूँ भुलानौ है तौ नये ब्रजभाषा साहित्य कौ प्रचार प्रसार करनौ होइगौ। तबई हमारे रूखे सूखे मनन मे सनेह की सरिता प्रवाहित है सकैगी।

या ग्रथ के चार रचनाकारन के ब्रजभाषा साहित्य मे आपकूँ विविधता मे एकता मिलगी, परम्परागत अरु नये भाव बोध की इन रचनान म ब्रजभाषा कौ सरस-सुहानौ रूप मिलगौ।

श्रीमती इन्दिरा त्रिपाठी–या ग्र थ मे श्रीमती त्रिपाठी अकेली कवयित्री हे जिन्नें दिसम्बर 1988 तं अब तक के थोरे से समै मे ब्रजभाषा कौ विपुल काव्य रचिकै कमाल कीनौ है। बिन्नें अग्रेजी की उत्तम लोकप्रिय अमर रचनान कौ ब्रजभाषा मे ऐसौ भावा-नुवाद प्रस्तुत करयौ हे जौ मूल रचना सौ हू बढिके भावोत्पादक, प्रभावोत्पादक अरु मम-स्पर्शी है।

श्रीमती त्रिपाठी ने जन जन म विसेसकर नारीन मे नई चेतना जगाइबे वारी, भारतीय सस्कृति कू उजागर करिबे बारो अरु पर्यावरन, बडे परिवार, गरीबी, हथिया-रन की होड, विज्ञान, नसा (ड्रग), तस्कर व्यौपार जैसे नये नये विषय अरु समस्यान प लेखनी चलाई है। वे घिसीपिटी लकीर की समथक नाए। बिन्नें तौ युग के सग चलिकै नयौ सजन कीनौ है। राधाकृष्ण जी की भक्ति क सग सग मानव प्रम कौ हू परिचै दीनौ है। वे आजु के कवि सम्मेलनन के स्तर पै बहौत दुखी है। वे ऐसी रचनान की मजक अरु समथक है जिनसौ श्रोता अरु पाठकन की रूचि कौ परिष्कार होइ, सुधार होई। कवि सम्मेलन कौ स्तर ऊँचौ करिबे अरु ब्रजभाषा की आजु की स्थिति पै बिनके विचार मनन चिन्तन अरु बहस के योग्य है।

श्रीमती त्रिपाठी जब भरतपुर के क या महाविद्यालय की प्राचाया ही तौ वे समाज-सेवा मे सदा तत्पर रहती। बिन्नें कालेज मे एन एस एस, एन सी सी अरु स्काउट-गाईडिग कूँ बहौत बढावौ दीयौ। धार्मिक प्रवत्ति बारी श्रीमती त्रिपाठी सादा जीवन, उच्च विचार की हिमायती रही है। अग्रेजी अरु हिन्दी भाषान प बिनकौ बरोबर कौ अधिकार है। या कारन उनसौ अग्रेजी के कछू नामी ग्रथन कौ ब्रजभाषा रूपान्तर करायौ जाइ तौ ब्रजभाषा के ताई बडी उपलब्धि होइगी।

श्री वरुण चतुर्वेदी–वरुण जी ने अपने पिताजी श्री जयशकर चतुर्वेदी की प्रेरना सौ समस्यापूर्तीन तं ब्रजभाषा की कविता रचिबौ आरम्भ कीनौ। बिन्नें लोकप्रिय कवि-तान पै पैरौडी हू खूब लिखी। पुराने कथानकन कू आजु के समाज के वातावरन म फिट करिकै लोकधुनन पै, फिल्मी गीनन की धुनन पै गीत रचे अरु गाये। व माने है कि ब्रज-भाषा बिनकूँ जनमघुट्टी मे पिबाई गई या कारन ब्रजभाषा की रचना अनायास ही है जाइ परि खडी बोली हिन्दी मे रचना करिबे मे बिन्नें जोर लगानो परै है।

वरुण चतुर्वेदी कवि सम्मेलनन के मच पै खूब जमत रहे है। बिन्नें कवि सम्मेलनन मे सफलता कौ कारन अच्छी रचना अच्छौ गरौ अरु अच्छी प्रस्तुति बताई है जाके बे धनी है। कवि सम्मेलन के मच प फूहड हास्य अरु अश्लील रचनान कूँ प्रस्तुत करिबे

के वरुण जी बहौत बिरोधी है। बिन्नें परम्परागत सवैया कवित छन्दन के संग संग गीत, लोकगीत अरु गजल हू खूब लिखी है। परि बिनकी मान्यता है क पैंगैडीन्ने बिनकूँ कवि सम्मेलन के मंच पै स्थापित करयौ अरु दूर दूर के कवि सम्मेलनन के बुलौआ आइबे लगे।

वरुण जी की रचनान के प्रमुख विषय है–ब्रजभूमि वंदना, ब्रज कौ आनन्द, आपसी सद्भाव, सूर तुलसी, हमारौ देस, किसान, खेत पैसा, परिवार कल्यान, धरती मैया, प्यासी धरती दहेज साक्षरता, भक्ति, नीति, प्रकृति वनन देसप्रेम बचपन आदि।

ब्रजभाषा की सहजता, सरलता अरु मधुरता वरुण चतुर्वेदी के गीतन मे भरी परी है। बे अपनी हास्य व्यंग्य की रचनान सौ जहा एक ओर हसामे हे मनोरंजन करै है तौ दूसरी ओर समाज की कुरीतिन पै करारी चोट हू करै हे अनाचार भ्रष्टचार कूँ उखाडि फैंकिबे पैन व्यंग बान हू छोडे है। ब्रजभाषा कूँ या गीतकार सौ बहौत आसा है।

श्री रामबाबू शुक्ल– मनमौजी अरु घुमक्कड सुभाव के श्री रामबाबू शुक्ल पुरानी लीक छाडिके चलिबे बार नये भाव बोध के चितेरे रचनाकार है। बिन्नें कोऊ काव्यगुरु नही बनायौ। कविता के संग संग गद्य रचना हू करत रहे हे। बिन्ने गद्य मे निबंध, कहानी अरु रेखाचित्र हू लिखे है।

शुक्ल जी कू प्रकृति ते काव्य-रचना की प्रेरना मिली। पहलै परम्परागत सवैया, छंद, कवित्त, कुंडली लिखिबे लगे, कछू समस्यापूर्त्ती हू करी पद, गीत अरु गजल रचे अरु फिर छंद की नई कविता नवगीत माऊ मुडि गये, वाके हिमायती बनि गये। गामन म अध्यापक रहे सो बिनकी भाषा बोलचाल की ठेठ ब्रजभाषा है। बिन्ने अपनी रचनान मे आंचलिकता कौ पुट दकै गामन के गैल गिरारे खेत खिरान, नदी नारे, हाटबाट-चौपारन के सहज चित्र खेचे है।

शुक्ल जी मानै है कै बिनकौ मनुआ जन जन की पीरा ते विगलित हैक बक झक करिबे लगि जई अरु रचना फूटि परे। जन जन की करुन कहानी, समाज की विसमता, भ्रष्टाचार, मँहगाई गरीबी, अभाव, सूखा, बाढ, टैक्स, चंदा, अत्याचार शोषण अरु बनावटीपन कौ बिरोध बिनकी रचनान के प्रमुख विषय रहे है। हारी, ब्रजवानी की महिमा, ब्रजमहिमा, बसन्त हू पै लेखनी चलाई है। बिन्ने मेज कुर्सी पै बठि के कविता रचिबे के बजाय पदर चलते चलते या सडक पै साइकिल चलामते भये गुनगुनामते भये काव्य रचना करी हे।

बाचिब सुनिबे वारेन कूँ अच्छी लगै चाहै बुरी, शुक्ल जी खरी खरी अरु दो टूक बात कहब वारे लिखिबे बारे हे। कहू कहू बिनकी ब्रजभाषा की शब्दावली अरु मुहावरे खटकिबे बारे हे जाय। प्रगतिशीलता क पक्षधर हैब के कारन परम्परान कूँ ताडिबे के ताई बिनकी लखनी कछू जादा ही तीखौ प्रहार करै है। जौ वे कछू बीच कौ रस्ता अपनाइ ले तौ बिनते ब्रजभाषा साहित्य कूँ अपार संभावना है।

श्री माधौप्रसाद 'माधव'—माता सरस्वती देवी के सपूत श्री माधौप्रसाद जी 'माधव' भरतपुर के वीर रसावतार माने जाइबे वारे कवि कुंभनलाल जी 'कुलशेखर' के शिष्य है। कवि सम्मेलनन के मंच पै बिनकू भरतपुर के 'भूषण' कौ सम्बोधन कर्यौ जाइ। वीर भूमि लोहागढ भरतपुर मे जनम लैके बिन्ने पचपन बरस की प्रौढ अवस्था

अरु ओज उत्साह की रचना करिबे मे बिनकूँ खूब सफलता मिली अरु नाम पायौ ।

माधव जी पहलै दूसरे कवीन की वीर रस की कवितान कूँ याद करिकै सुनायौ करै हे । बे जा वीर भाव की कविता सुनामते वैसौई महाप्रान डीलडौल वारौ बिनकौ तन अरु घन गजना वारौ स्वर हौ सो लोगन्नै बिनकौ खूब उछाह बढायौ और फिर अपनी रचना करिकै सुनाइबे लगे । भरतपुर मे वायुमच्छ की बगीची कबीन की रैठान ही । वा बगीची पै रविवारीय कवि गोठ होती जाके ताई पहलैई समस्या दै दई जाती । कवि कुलशेखर जी वा बगीची के मुखिया हे । बगीची गोठन ते अरु हिदी साहित्य समिति के आयोजनन ते माधव जी कूँ कविता रचिबे कौ औसर मिलतौ रह्यौ ।

माधव जी ने ब्रजभाषा के सग सग खडी बाली हिदी म हू रचना करी । कछू उर्दू के शेर हू लिखे । कवि मचन पै खूब जमै हे । बिनके विपय, भाषा, छद भाव अरु रस माहि एकरुपता है । बिन्नै कवि और कविता ऊधौ सौ गोपीन कौ अरु राधा कौ ऊ गै नौ कहनो यौवन कौ आगमन, राधाछवि, हनुमान, होरी, बेरोजगारो बमन, नेता इदिरा गाधी, द्रौपदी समय कौ फेर, मिथ्या अभिमान कलम कहै कान म बिजारन की भिडत, ढोल कपडा चौ, टी वी, पावस, जनसक्ति सामाजिक काय सेवा नस्वर जीवन माटी के कौतुक गिरिराज की सोभा ब्रजभूमि की महिमा, अजय दुग लोहागढ कलजुग, एकता सदभावना, राजस्थान, भ्रष्टाचार, आजादी के दीवान, कश्मीर आदि विपयन पै लखनी चलाई है ।

माधव जी कौ राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी हिदी साहित्य समिति भरतपुर अरु जिला पुस्तकालय भरतपुर ने सम्मान करयौ अरु वे आकाशवाणी पै हू अपनी रचनान कौ प्रसारन करत रहे हे । वे नई पीढी के रचनाकारन सौ अपेच्छा करै है कै वाकूँ देस की वतमान दसा देखिकै अपनो कविनान ते भ्रष्टाचार, कालाबाजारी, आतकबाद अरु ऊचनीच दूरि करिबे को प्रयास करनौ चाहिए । देस मे अनुसासन अरु चरित सुधारिबे कूँ लेखनी उठानी चहिए ।

या कवि नाहर सौ ब्रजभाषा कूँ बहौत आसा है बडी बडी आकाछा हे ।

राजस्थान के कौन काने मे आजहू ब्रजभाषा की साधना करिबे बारे बहुतेरे साहित्यकार हे । अकादमी की ओर सौ बिन अजाने ब्रज साहित्यकारन की जानकारी परिचै पोथीन के माध्यम सौ ग्र थन के रूप मे दई जाती रहैगी । याई तरिया 'हमारे पुराधा' योजना माहि दिवगत साहित्यकारन कौ परिचै हू प्रकासित कर्यौ जायगौ । जि गोवधन सबके सहारे ते सहयोग ते अरु प्रात्साहन ते ई अकादमी उठाइ सकैगी ।

अत मे कहनौ चाहू कै या सकलन के लेखन माहि, साहित्यकारन के साक्षात्कार अरु रचना प्रक्रिया माहि बिनके निजी विचार सुझाव अरु अनुभव हे । विनते सम्पादक की सहमति होइ ऐसौ आवस्यक नाय ।

रचनाकारन्नै अपनी रचना इकठौरी करिकैं दई, सम्पादन सहयोगीन्नै बिनकौ सकलन तयार करयौ अरु लेख लिखे लिखवाये अकादमी परिवार ते जुरे सिगरे भैयान्नै सहयोग दीनौ, मागदर्सन कीनौ जासौ थोरे से समै मे जि ग्र थ छपि सक्यौ बिन सबन कूँ आभार, नमन ।

—मोहनलाल मधुकर

श्रीमती इन्दिरा त्रिपाठी
डी - 90 कृष्णा मार्ग
सिवाड़ एरिया, बापू नगर
जयपुर-302015 (राजस्थान)
आयु—अट्ठावन वर्ष

इन्द्रा त्रिपाठी नव, चेतना जगाय रही,
नारी सक्ति जागरण, नित्त चित्त धारी है।
भारत की नारी हेतु, सुमन चढाय रही,
मन के सुभावन सों, आरती उतारी है॥
भारतीय संस्कृति साधिका रही है सदा,
रीति नीति पथ प्रीति, चांदनी पसारी है।
जाकी यश गंध अब, फैल रही दूर-दूर,
रंगी त्रिदुगी की बार-बार बलिहारी है॥

मे राजसेवा ते अवकाश लिए पाछ कविता रचिबो चालू करयो। दसभाक्त, राष्ट्रीयता अरु ओज उत्साह की रचना करिबे मे बिनकूँ खूब सफलता मिली अरु नाम पायौ।

माधव जी पहलै दूसरे कवीन की वीर रस की कवितान कूँ याद करिकै सुनायौ करै हे। बे जा वीर भाव की कविता सुनामते वैसोई महाप्रान डीलडौल वारौ बिनकौ तन अरु घन गजना वारौ स्वर हौ सो लोगन्नै बिनकौ खूब उछाह बढायौ और फिर अपनी रचना करिके सुनाइबे लगे। भरतपुर मे वायुमच्छ की बगीची कवीन की रैंठान ही। वा बगीची पै रबिवारीय कवि गोठ होती जाके ताइ पहलैई समस्या दै दई जाती। कवि कुलशेखर जी वा बगीचो के मुखिया हे। बगीची गाठन ते अरु हिंदी साहित्य समिति के आयोजनन ते माधव जी कूँ कविता रचिबे कौ औसर मिलतौ रह्यौ।

माधव जी ने ब्रजभाषा के सग सग खडी बोली हिंदी मे हू रचना करी। कछू उर्दू के शेर हू लिखे। कवि मचन पै खूब जमै हे। बिनके विषय, भाषा, छद भाव अरु रस माहि एकरूपता है। बिन्ने कवि और कविता ऊधौ सौ गोपीन कौ अर राधा कौ ऊधौ सौ कहनो यौवन का आगमन राधाछवि, हनुमान होरी, बेरोजगारी प्रसन, नेता इंदिरा गाधी, द्रौपदी समय कौ फर, मिथ्या अभिमान कलम कहै कान म, बिजारन की भिडत, ढोल कपडा चौ, टी वी, पावस, जनसक्ति सामाजिक काय सेवा नस्वर जीवन मारग के कौतुक गिरिराज की सोभा ब्रजभूमि की महिमा, अजय दुग लोहागढ कलजुग, एकता सदभावना, राजस्थान, भ्रष्टाचार, आजादी के दीवान, कश्मीर आदि विषयन पै लेखनी चलाई है।

माधव जी कौ राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी हिंदी साहित्य समिति भरतपुर अरु जिला पुस्तकालय भरतपुर ने सम्मान करयौ अरु वे आकाशवाणी प ह अपनी रचनान कौ प्रसारन करत रहे है। वे नई पीढी के रचनाकारन सौ अपेच्छा करै है कै वाकूँ देस की वतमान दसा देखिके अपनो कवितान ते भ्रष्टाचार, कालाबाजारी, आतकबाद अरु ऊचनीच दूरि करिबे को प्रयास करनौं चाहिए। देस मे अनुसासन अरु चरित सुधारिवे कूँ लेखनी उठानी चहिए।

या कवि नाहर सौ ब्रजभाषा कूँ बहौत आसा है बडी बडी आकाछा है।

राजस्थान के कौन कौने मे आजहू ब्रजभाषा की साधना करिबे वारे बहुतर साहित्यकार हे। अकादमी की ओर सौ बिन अजाने ब्रज साहित्यकारन की जानकारी परिचै पोथीन के माध्यम सौ ग्रथन के रूप म दई जाती रहैगी। याई तरिया 'हमारे पुरोधा' योजना माहि दिवगत साहित्यकारन कौ परिचै ह प्रकासित कर्यौ जायगो। जि गोवधन सबके सहारे ते सहयोग ते अरु प्रोत्साहन ते ई अकादमी उठाइ सकैगी।

अत मे कहनो चाहू क या सकलन के लेखन माहि, साहित्यकारन के साक्षात्कार अरु रचना प्रक्रिया माहि बिनके निजी विचार सुझाव अरु अनुभव हे। बिनते सम्पादक की सहमति होइ ऐसो आवस्यक नाय।

रचनाकारन्नें अपनी रचना इकठौरी करिकें दई, सम्पादन सहयोगीन्नें बिनकौ सकलन तयार करयौ अरु लेख लिखे लिखवाये अकादमी परिवार ते जुरे सिगरे, भैयान्नैं सहयोग दीनौ, मागदर्सन कीनौ जासौ थोरे से समै मे जि ग्रथ छपि सक्यौ बिन सबन कूँ आभार, नमन।

—मोहनलाल मधुकर

श्रीमती इन्दिरा त्रिपाठी

डी – 90 कृष्णा मार्ग
सिवाड़ एरिया, बापू नगर
जयपुर-302015 (राजस्थान)
आयु–अट्ठावन वर्ष

इन्द्रा त्रिपाठी नव, चेतना जगाय रही,
नारी सक्ति जागरण, नित्त चित्त धारी है।
भारत की नारी हेतु, सुमन चढाय रही,
मन के सुभावन सौं, आरती उतारी है॥
भारतीय संस्कृति साधिका रही है सदा,
रीति नीति पथ प्रीति, चांदनी पसारी है।
जाकी यश गंध अब, फैल रही दूर-दूर,
ऐसी विदुषी की बार–बार बलिहारी है॥

श्रीमती इन्दिरा त्रिपाठी

परिचै

जनम—4 जनवरी 33

जन्म स्थान	कानपुर
पिता को नाम	प ईश्वरी प्रसाद अग्निहोत्री
माताजी को नाम	श्रीमती सरस्वती (वसती)
शिक्षा	एम ए अँग्रेजी एम ए हिदी
शैक्षिक उपलब्धि और उपाधि	राज सरकार के महाविद्यालीय शाखा मे सन् 1957 से प्रवक्ता तथा 1991 मे स्नात-कोत्तर कालेज से सेवानिवत
प्रकाशित ग्रन्थ	ब्रज शतदल मे स्फुट रचनाएँ प्रकाशित
पारिवारिक परिचै	पति श्री विष्णुदत्त त्रिपाठी सेवानिवृत प्राचाय राज शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, अजमेर

पुत्री 1 कौमुदी गुप्ता सीनियर एकाउन्ट्स अधिकारी राजस्थान सरकार

2 केतकी शारदा—डाक्टर

3 नैनी—प्रवक्ता अग्रेजी, मालवीय इजीनियरिंग कालेज, जयपुर

4 पुत्र—अध्ययन कक्षा 1st Year विज्ञान

सिच्छक रहे, पढबौ अरु पढायबौ जिनकौ धम रह्यौ। बिनकी धरोहर कूं चौगुनी करकै श्रीमती त्रिपाठी जी नै दिखायौ है।

समस्या पूर्ति का पछताने' के संग संग 'भारत की नारी' समस्या पै हू आपनै ताही मंच सौं जो छंद पढे बिनें सुनि कें कवि अरु श्रोता मंत्र मुग्ध है गए। भारतीय नारी के संग बालपन सौं ही का दुभांत होय याकौ मार्मिक चित्रन मन कूं झकझोरिबे बारौ है। बदलाब कौ संदसौ दैब वारौ है। पुत्री के जनम पै बिनके ई सब्दन में देखौ—

पूत पाइ गदगद भए अति मातु पितु,
उझकै उछाइ सौं, उमंग अतिभारी है।

काँसे के बजे है थार, लडुअन भाज उडे,
बहन बुआन मिलि आरती उतारी है।

कन्या कौ जनम मानौ, विधि कौ जुलम भयौ
बेटी संग लाई मानौ बिपति पिटारी है।

हुलस्यौ न कोऊ कहू, बाजत बधाई नाहि
पच्छपात की सताई, भारत की नारी है।

जा भारत में कन्या रत्न पूजी जाती ता भारत में कन्या के जनम पै का होय, का भेद भाव बरतौ जाय ताकौ साचौ रूप साफ साफ दरसाय दियौ है। "छोरा छोरी" एक समान कौ नारौ जा ठौर पै लगायौ जाय रह्यौ है बा ठौर पै जो कछु है रह्यौ है बू काहू सौं छिपौ नाहिं। जनम सौं ही जाके संग भेदभाव है जीवन भर कैसै रहै याकौ चित्र हू श्रीमती त्रिपाठी नै यों खैंचौ है—

बालपन बाप घर, सेबा में बिताय दियौ,
माय नै गिरस्ती माहि, हाय पीसि डारी है।

जुवती भई तौ निज, भरता के बस भई,
सास नंद देवर की सही नित गारी है।

आवत बुढापौ तब, तेवर दिखावै पूत,
दुखियारी दिन रैन, नैन ढरै वारी है।

लोगन कही कै—कबौ राखौ न स्वतंत्र याहि,
ऐसै पराधीन भई, भारत की नारी है।

जा भारत की नारी कू दबाय के रखबे की बात कही है ताकौ विरोध त्रिपाठी जी नै कियौ है, खुल कै कियौ है पर तौऊ भारत की नारी अपने धरम पै डटी है। पच्छिम की आधी आई है पर तौऊ या बयार सौ भारत की नारी बची भई बताई है। रूप सील वारी भारत की नारी कौ आदस रूप या तरिया सौ बखानौ है—

माथे पै सि दूर सोहै, भाल लसै बैदो लाल,
नागिन सा चोटी लगै अति मनहारा है।
सील औ सुवरन के, गहना है धारे अ ग
पच्छिम की नाहि याकौ लगत बयारी है।
धीरज की मूरति है, नित ही मुदित मन,
दुहू कुल वारेन कौ लगै अति प्यारी है।
धरम की भाति धारै, रहै आज भारत कू,
ऐसी रूप गुन वारी भारत की नारी है।

भारत की नारी' समस्या पूर्ति सौ त्रिपाठी जी की भावभूमि सौ ई अनुमान लगायौ जाय सकै कै भारत के अतीत गौरव की सस्कृति कू अपनी तूलिका सौ चित्रित करती रही है। देस के साम्कृतिक रूप की प्रससक रही है। किसान बधूरी कौ चित्रन एक सबया मे देखबे "ाग , है—

पौ फाटत बाल बिलोई कै छाछ औ माखन काढि भरी मटकी
गुड छाछ दई है ललान ललीन कौ सग मे रोटी दई टटकी।
बनि कै ठनि कै निकसी घर सौ अरु लैकै कलेऊ चली चटकी
हरवारे छबीले की आखिन मे रसरूप औ गोरस मे अटकी।

सयोग सिगार कौ मनोहारी रूप कैसौ सयत है। बासना की गध सौ परे एक ओर सतति के प्रति सनेह सौ बधी है, तौ दूसरी ओर कम पथ पै प्रियतम के अनुराग रग मे रगी जीवन की सुखद अनुभूति कर रही है। कलयुग मे जहा झाय झाय झिक झिक अरु चाय चाय चिक-चिक दिखाई परै, आपाधापी और खीचातानी चल रही है काहू कू मरबे कू हू फुरस्त नाहि। कल के युग मे सब कल की नाई चल रहे है। भागम भाग है रही है। दो छन के ताई काऊ कू प्यार सौ बतराइबे कू समे नाहि। तहा त्रिपाठी जी के ये चित्र युग कू सदेसौ दै रहे है कै – "देख पराई चूपडी मत ललचावै जी। रूखौ सूखौ खायकै ठडौ पानी पी।'

इन विचारन सौ आप यो मत समझियो कै श्रीमती त्रिपाठी घिसी पिटी लकीरन

की हिमायती है । घिसी पिटी लकीरन प चलबौ सोचौ ही नाहि । रचना लिखी हैं तौ युगानुरूप लिखी है । नए नए विसैन पै लिखी है, राधाकृष्ण साहित्य की अनुरागिनी हैं पर युगधम कू नाय भुलायौ । पर्यावरण सौ सम्बधित एक छन्द मे पेडन की रखवारी के ताईं अप्रत्यच्छ रूप सौ यो सदेसौ दियौ है—

सूखन रूख लगे चहु ँ ओर, भयौ अति सोर सबै बिललाने ।
परु पच्छी डरे चहु ँ ओर मरे नर नारि औ बाल फिरैं बितलाने ।
बिन पानी कहौ कैसै जीव धरे इहरैं हियरे मन मे बिचलान ।
अकाल तौ लीलि गयौ सिगरौ उजरयौ जब बाग तौ का पछताने ।।

याहि तरिया राष्ट्रीय सरोकारन म परिवार कल्यान कौ मुद्दौ कितेक महत्वपूण है । याकौ आभास सबन नै है पर बिना बिचारे सतति बढायबे बारे अ त मे पछतावैं याकौ एक रूप यो दिखायौ है त्रिपाठी जी नै—

कबौ आटो चुकौ, कबो दार चुकी, दधि दूध मिठाई कहू ँ न दिखाने ।
कबौ पोथी नही, कबो बस्तौ नही कबौ फीस नही सो रहै खिसियाने ।
घरवारी है रारि मचाय रही कसै कीजै गुजारौ घरै नही दाने ।
सतान की भीर भरी घर मे तब चूकि गए अब का पछताने ।।

राष्ट्रीय सरोकारन के सग स्थानीय विविधतान कू त्रिपाठी जी नै उभारौ है । भरतपुर प्रवास मे घना पच्छी विहार के पाहूनेन कौ कथन देखबे जोग है—

हिम रासि अनत दिगत छई, तह जीवन रेख परै न दिखाई ।
कहु ँ रूख न दूब हरेरी कहू, सरिता सर नाहि परै दिखराई ।
तरवारी की धारि ज्यो लागै बयारि, औ ओलनमार बडी दुखदाई ।
तब कान मे ऐसौ सदेसौ परयौ चलिए दिसि दच्छिन जूथ बनाई ।।

साइबेरिया सौ लम्बी यात्रा करबे वारे पच्छीन के मनकी बात कू त्रिपाठी जी नै पढो है । उनके दरद कू समझौ है । पच्छीन की मन स्थिति कू जान कै उनकी ओर सौ जो निवेदन कियौ है बू मानवीय पच्छ कू उजागर करबे बारौ है—

हम पाखी निवासी बिदेसन के, इत आए है सीत बितावन कारन ।
नैनन मे सुपनेन सजोय कै, जोरी बनाई उडे दिन रातन ।
मग कौ उत्पात न जात सहै, पन लच्छ सौ कोऊ सक्यौ नाहि टारन ।
सतति को सुख सृस्टि कौ सार, सो आए है नीड बनावन कारण ।

नीति की बात कहकै कवयित्री नै जन जन कू सदेसौ दियौ है सतति सनेह कौ। मोह ममता कौ नही कम के पथ पै अपनी सतान की सुरच्छा कौ। 'हरि कौ भजन पेट कौ धन्धौ, जो नही करै सो मूरख अन्धौ' की उक्ति कू चरितार्थ कियौ है घना पच्छी विहार के पच्छीन नै।

या सो आगे धरती के मानव कू जो सदेसौ दियौ है बू और हू महत्वपूर्ण है। बिनास के नित नए हथियारन कू बनायबे बारे मनुज कू यो समझायौ है—

जह मानुस क्रुद्ध ह्वै जुद्ध करै, निज देस की सीव बढावन कारन,
तोपन टैंक मिसाइल सौ करि ध्वस महा महि खड उजारन।
मनुजाद धरै दनुजाद कौ रूप, सहार कौ खेल रचै दिन रातन,
सांति सदेस सुनौ हमरौ, बिनबै तुम सौ नहि कीजै महारन।

त्रिपाठी जी नै अपनी लेखनी सौ नए नए विसैन कू उजागर कियौ है। विज्ञान के युग मे विनास की लीला कू देखिकै उनसौ नाय रह्यौ गयौ। विज्ञान की ध्वसकारी दैन सौ का होयगौ याकौ एक चित्रण उनके एक कवित्त मे देखौ—

ज्वाल के समुद्र मध्य धधकत धूम जाल,
ध्वस के धमाकन सौ भूतल डरायगौ।
बिकिरन बिसधारी, धूरि छाबै मडल मे,
चण्ड भारतण्ड कौ प्रताप नसि जायगौ।
ताप उत्पात पाछै आबै जड सीत ऐसौ,
धरती सौ प्रान कौ प्रमान मिटि जायगौ।
आत्मा हू कैसै धारि सकगी नवीन बेस,
जीव रूप वस्त्रन कौ बीज मिट जायगौ।

त्रिपाठी जी नै नए विसै ऐसे हू चुने हैं जिन कू आज तक काऊ नै झाक कैंऊ नाय देखौ। ड्रग्स (नसौ) पै जो लिखो है बू आख खोलिबे बारौ है। एक छोटे से छन्द दोहा के भीतर जो लिखौ है बू गागर मे सागर है। एक दो उदाहरण देखौ—

ड्रग तौ कबहु न सेइए ये है बिस बिकराल।
नागदस सौं हू बिकट, अति कराल यह काल॥
रूप गयौ रगत गई, तन मन धन सब छीन।
ड्रग सौ नातौ जोरि कै, मरघट कौ मुख कीन॥

को नाथै ड्रग नाग कौ, को काढै बिस दत ।
या विसधर कौ गरल तौ, व्याप्यौ दसौ दिगत ।।

हैरोइन ब्राउन सुगर, औ हसीस की हूक ।
जीवन धनुस चढाइ कै तानि करै दुइ टूक ।।

सजन के नए आयाम खोलिबे मे त्रिपाठी जी के काव्य की जितेक सराहना करी जाय बितेक थोरी है । इन सबसौ हटिकै अ ग्रेजी सौ कछ्छ प्रसिद्ध कविन की कवितान कौ अनुवाद हू करौ है । या भावानुवाद मे जो सरसता हे, मधुरता है वह मूल जैसी लगै है । नमूना के ताई विलियम शेक्सपियर के True Love कू साचौ सनेह' सीषक सौ या तरिया अनुदित करयौ हे—

प्रीत की गल प्रतीत भरी तह बाधन कौ कछु काज सरै नहि ।
नेह तौ साचौ वही कहिए जो असाचे पिया सौ सनेह टरै नहि ।
कोटि उपाय किए कुटनीन के प्रेम कौ बीज निकारयौ परै नहि ।
प्रेम की डोर अटूट अहै अरि के अमिघात सौ तोरे तुरै नहि ।
प्रेम तौ ऊचौ अकास कौ दीप न कम्पै प्रचड प्रभजन झौकन ।
जीवन के नभ मडल बीच दिपै ध्रुव प्रेम अमद सी जोलन ।
मारग दसन देत सदाई जे पथ भुलाने पयोनिधि पोतन ।
ऊँचौ कितेक तौ बूझि परै पै बताबै को ध्रुव नेह कौ मोलन ।।

याही तरिया मिलटन के On his blindness विलियम वडसवर्थ के 'The world is too much with us शैले के The cloud रौबट ब्रिज के Nightingles आदि कवितान के अनुवाद ब्रज माधुरी की छुअन पायकै भावभरे है गये हे । टी एस इलियट के 'Gerontion का अनुवाद उल्लेखनीय है—

जरा जीरन मै
तन मन सौ सूखि रह्यौ, सूख के मौसम मे ।
हेरि रह्यौ राह बिरखामृत के बू दन की ।
मे
सूर नही बीर नही भोगी नही जुद्ध भूमि जीतना ।
जूझयौ नही सत्रु सौ दलदल की जकड सौ ।
नाम पै निवास के फूटौ घर द्वार ।
ताहू प कुटिल यहूदी अडौ देहरी पै ।

माँगत किरायौ आयौ देस देसन सौ,
रोगन बटोरि कै, लालच सकेलि कै।
अब मेरौ रगत चूसैगौ।

ब्रजभाषा के अतुकान्त छ द मे तुक जैसे छ द कौ प्रवाह झरना की तरह बहतौ दिखाई परै। श्रीमती त्रिपाठी नै नई पीढी के ताई लीक सौ हटि कै लिखिवे को द्वार खोलौ है। थोरे समय मे इतेक मजी भई कवितान को सजन एक कीर्तिमान है। ब्रजभाषानुरागी श्रीमती त्रिपाठी सौ भौत भौत आसा बान है। कबहु कबहु ब्रजभाषा कवि सम्मेलन मच पै त्रिपाठी जी की रचनान की धूम देखी जाए। जो सुनै, सराहै, अरु अपने पल्ले मे गाठ बाध कै लै जाए।

आजकल आप प्राचाय पदसौ सेवा निवृत है कै डी-90 कृष्ण माग, सिवाड एरिया बापू नगर, जयपुर मे रहकै साहित्य सजन कर रही हैं।

—गोपाल प्रसाद मुद्गल

को नाथै ड्रग नाग कौ, को काढै बिस दंत ।
या विसधर कौ गरल तौ, व्याप्यौ दसौ दिगंत ।।

हैरोइन ब्राउन सुगर, औ हसीस की हूक ।
जीवन धनुस चढाइ कै तानि करै दुइ टूक ।।

सृजन के नए आयाम खोलिबे मे त्रिपाठी जी के काव्य की जितेक सराहना करी जाय बितेक थोरी है । इन सबसौ हटिकै अंग्रेजी सौ कछु प्रसिद्ध कबिन की कवितान कौ अनुवाद हू करौ है । या भावानुवाद मे जो सरसता हे, मधुरता है वह मूल जैसी लगै है । नमूना के ताई विलियम शेक्सपियर के True Love कू साचौ सनेह' सीषक सौ या तरिया अनुदित करयौ है—

प्रीत की गल प्रतीत भरी तहँ बाधन कौ कछु काज सरै नहि ।
नेह तौ साचौ वही कहिए जो असाचे पिया सौ सनेह टरै नहि ।
कोटि उपाय किए कुटनीन के प्रेम कौ बीज निकारयौ परै नहि ।
प्रेम की डोर अटूट अहै अरि के अभिघात सौ तोरे तुरै नहि ।
प्रेम तौ ऊचौ अकास कौ दीप न कम्पै प्रचड प्रभजन झौकन ।
जीवन के नभ मडल बीच दिपै ध्रुव प्रेम अमद सी जोतन ।
मारग दसन देत सदाई जे पथ भुलाने पयोनिधि पोतन ।
ऊँचौ कितेक तौ बूझि परै पै बताबै को ध्रुव नेह कौ मोलन ।।

याही तरिया मिलटन के On his blindness विलियम वडसवर्थ के The world is too much with us शैले के The cloud रौबर्ट ब्रिज के 'Nightingles' आदि कवितान के अनुवाद ब्रज माधुरी की छुअन पायकै भावभरे है गये हे । टी एस इलियट के Gerontion का अनुवाद उल्लेखनीय है—

जरा जीरन मै
तन मन सौ सूखि रह्यौ, सूखे के मौसम मे ।
हेरि रह्यौ राह बिरखामृत के बूदन की ।
मै
सूर नही बीर नही भोगी नही जुद्ध भूमि जीतना ।
जूझयौ नही सत्रु सौ दलदल की जकड सौ ।
नाम पै निवास के फूटौ घर द्वार ।
ताहू पै कुटिल यहूदी अडौ देहरी पै ।

मागत किरायौ आयौ देस देसन सौ,
रोगन बटोरि कै, लालच सकेलि कै।
अब मेरौ रगत चूसैगौ।

ब्रजभाषा के अतुकान्त छन्द मे तुक जैसे छन्द कौ प्रवाह झरना की तरह बहतौ दिखाई परै। श्रीमती त्रिपाठी नै नई पीढी के ताई लीक सौ हटि कै लिखिवे को द्वार खोलौ है। थोरे समय मे इतेक मजी भई कवितान को सृजन एक कीर्तिमान है। ब्रजभाषानुरागी श्रीमती त्रिपाठी सौ भौत भौत आसा बान है। कबहु कबहु ब्रजभाषा कवि सम्मेलन मच पै त्रिपाठी जी की रचनान की धूम देखी जाए। जो सुनै, सराहै, अरु अपने पल्ले मे गाठ बाध कै लै जाए।

आजकल आप प्राचाय पदसौ सेवा निवत है कै डी–90 कृष्ण माग, सिवाड एरिया बापू नगर, जयपुर मे रहकै साहित्य सजन कर रही हैं।

—गोपाल प्रसाद मुद्‌गल

साक्षात्कार श्रीमती इन्दिरा त्रिपाठी सौं

☐ आपने ब्रजभाषा लेखन कहा औ कब प्रारम्भ कीनो ?

साची बात या है कि मैंने बिधिवत लेखन काय कबू करौई नाय । हिन्दी बिसे की पढाई के अन्तरगत ब्रजभाषा की कविता कौ अध्ययन करि कै आनन्द पायौ है । दिसम्बर सन 1988 ते पहले ब्रजभासा मे कछु नाय लिख्यौ ।

☐ ब्रजभाषा मे लिखबे की प्रेरना कैसे अरु कौन सा मिली ?

सन 1988 दिसम्बर मास मे राजस्थान ब्रजभासा अकादमी द्वारा रामेश्वरी कन्या महाविद्यालय मे 'पढन्त प्रतियोगिता' औ कवि सम्मेलन कौ आयोजन कियौ गयो । तामैं मोय अध्यक्ष बनायो गयौ चौ कि मै बा महाविद्यालय की प्राचार्या हती । सो मेरे मन म आयौ कि अध्यक्ष पद सौ भाषण करिबे के बजाय मैं हू क्यो न समस्या पूर्ति के माध्यम सौ सक्रिय भागीदारी कौ प्रयतन करू । या तरिया मेरौ ब्रजभासा लेखन सुरू करे तीन बरस ऊ नाय भये । जेई औसर, औ बेई गुनीजन जो बा समय जुरे हते—श्री विष्णुचन्द पाठक, श्री गोपाल प्रसाद मुद्गल, श्री वरुण चतुर्वेदी, श्री धनेश फक्कड आदि के उत्साह-बधन सौ मोय प्रेरना मिली ।

पै मूल रूप मे प्रेरना को बीज मेरे पिता की देन है । जो विद्वान अध्यापक हते हिन्दी उर्दू अंगरेजी सस्कृत को अच्छो ज्ञान हतौ उन्हे । ब्रजभासा के कवित्त-सवैया और अन्य छदन कौ सस्वर गान करते । कछु अपनी रचना भी करते । जे बातें मेरे मन मस्तिष्क के पिछवारे मानो जमा है रही हती ।

☐ ब्रजभासा कवि सम्मेलन मे जब आप रचना पढै हैं तब आप कैसी अनुभूति करै है ?

कवि सम्मेलन मे दिसम्बर 88 सो फरवरी 91 तानू कुल 4 बार भाग लियौ । पै जा सूक्षम अनुभव के आधार पै कह सकू कि सहृदय जनन की सराहना, उत्साह-बधन, सिर चालन सो प्रेरना मिल । जा बात मैं जरूर कहनौ चाहूँ कि कवि सम्मेलन

मे गम्भीर विसै कम चलै, हल्की फुल्की बात स्रोता पस द करै। उनकी रुचि सुधारबे को उत्तम कविता परोसी जानी चइये।

☐ आपन आरम्भ म किन बिसयन पै कविता लिखी है—

मेने आरम्भ मै समस्यापूर्त्ति के माध्यम सो पर्यावरण, भारत की नारी, आजके युवाजन, फागुन, होरी आदि विसै लीने है।

☐ आप किन किन साहित्यकारन सो प्रभावित रही है अरु क्यो ?

मन अ ग्रेजी साहित्य म एम ए सन 1957 म कियौ अरु राजस्थान सिच्छा विभाग कालेज साखा म व्याख्याता कौ काम करिबे लगी। पर तु स्वान्त सुखाय मेने सन 1970 म हि दी म एम ए कियौ और पिता की प्रेरना सौ जो बचपन मे इ हिन्दी कविता विसेसकर भक्तिकाल, सिंगारकाल की कविता तथा आधुनिक काल की दस भक्ति पूव रचनान म जा रुचि को बीजारोपण है गयो हतो सो पुनर्जाग्रत है गयो। जा तरिया सूर काव्य, तुलसी विसेसकर कवितावली, बिनय पत्रिका केशव, सिगार काल के कवि देव, बिहारी, मतिराम पदमाकर, बिस्तार सो पढे।

इनक कवित्त रचनान सो माधुरी सौ प्रभावित तो बचपन सो ही हती। वै स्वय कछू नाय लिख्यौ बा समै। पाचीन कवीन म तुलसी बिसेसकर कवितावली ते प्रभावित हू। बडी ससक्त अभिव्यक्ति है। सिगार काल म देव, पदमाकर मतिराम तथा आधुनिक कवीन म दिनकर विसेस रूप सौ कुरुक्षेत्र ने प्रभावित कर्यौ।

☐ व्रजभासा पद्य रचनान मै छन्दबद्ध अरु छ द मुक्त रचना लिखब मे कौन सी उचित या सही लगै अरु क्यो ?

साची कही जाय तौ छ दबद्ध कविता व्रजभासा की कविता कौ मुख्य आकसण है जाकी कण प्रियता जनमानस मै घर कर जाय है। ब्रजभासा मे सगीतमयता है— गेयता है। हमारे भजनो म दास भाव, सख्य भाव विनय निवेदन, प्रेम निवेदन मानो ब्रजभासा म अन्तरतम सो करौ जाय सकै है। सजोग बियोग, सिगार बात्सल्य रस ब्रजभासा म अभिव्यक्ति पाय के ध य है गये है।

आज की कविता जाई कारन दीर्घायु नाय है पाय रही कि जाने छ द सो सम्बन्ध बिच्छेद कर लियौ है। पै हमे अपने दृष्टिकौण मै कछू परिवत न करनो चइयें यदि

कविता केवल वण मात्रा की गिननी नाय है तो गद्य के वाक्य को टुकडान मै लिखकै पूरे पृष्ठ पै फैला दैनौ हू कविता नही है जैसौ कि आज कियौ जाई रह्यौ है ।

परन्तु Correctness कौ अत्यधिक आग्रह भावाभिव्यक्ति मे व्यवधान न बनें याकौ ध्यान रखनौ चाहिये । अग्रेजी की Blank Verse हिन्दी मे सशक्त रूप मे लिखी जा सकै है । यामे तुक नही होई । पक्ति के अन्त म अर्धविराम पूण विराम अनिवाय नही है । कविता एक उमडती भई नदी के वेग सौ आगे बढै है— याकौ हिन्दी मे अच्छौ उदाहरण है मैथिलीशरण गुप्त कौ खण्डकाव्य किहृदराज । ब्रजभाषा मे भी सफल प्रयोग हं सकै है मेने T S Eliot के अनुवाद मे कियौ है ।

☐ किन किन साहित्यकारन की रचनान को आपने ब्रजभासा मे अनुवाद कियौ है । बाकौ नमूना प्रस्तुत करै ।

अनुवाद मैने प्रतिनिधि कवीन की एक एक कविता कौ कीनौ है । कवितान के विसै ऐसे चुने है जो सबई देस काल म मानव हृदय को प्रभावित करै जैसे ईस्वर के प्रति, प्रेमी के प्रति, प्रकृति के प्रति इत्यादि । कविन म शेक्सपीयर की साचौ सनेह (True Love), मिल्टन की ईस कृपा (ON HIS BLINDNESS), वडसवर्थ जगती जजाल बीच (The World is Too Much with us) शेली की बादल (The Cloud), कैम्पबेल कौ सैनिक कौ सपनौ (The Soldier s Dream), हापकिन्स की प्रभू की रीत (Then Art Just my Lord) डैबीज की फुरसत के छिन (Leisure) अरु टी एस एलियट की 'जराजीरन मै' (Gerontion) कौ अनुवाद कीनौ है ।

नमूना —

Love is not Time's Fool though rosy lips and cheeks
Within his bending sickles compass come
Love alters not with brief hours and weeks
But bears it on to the edge of doom

—Shakespeare

काल किसान गहे हँसिया सक काटि कपोलन की अरुनाई,
ओढन औ अधरान की आब गुलाब से रग की सुन्दरताई ।

फीकी पर दिन मासन मै अनुराग कौ रग तौ चोखौ सपाई,
कल्प के अ त लौ प्रेम अखण्ड सनेही न धारि सकै निठुराई ।

I bring fresh Showers for thirsting flowers
From the seas and the streams

I bear light shade for the leaves when laid
In their noon day dreams

लाइ नद नदीसन सो गहिरे बारीसन सो,
सीतिल फुहारै प्यासे पुहुपन पै बारै हम ।

चढत दुपहरी सपनीली द्रुम पतियन पै,
छाया की मृदुता औ स्यामता उतारै हम ।।

अनुवाद कौ काम कठिन औ स्रमसाध्य है । विदेसी भासा कौ भाव हू अभिव्यक्त है जाय औ ब्रजभासा कौ सरूप औ हि दी अभिव्यक्ति हू कायम रहि सकै जे ध्यान राखनौ परै है ।

☐ ब्रजभासा पद्य की रचनान मै अ य भासा के सब्दन कू लिखिबै मै आपकौ का बिचार है ?

भासा समृद्ध औ प्राणवान तबई है सकै जब बामे अ य भासान के सब्दन कूँ आत्म सात् करिबे की सक्ति होय । तुलसीदास कोई देखौ 'साहिब सीतानाथ से सेवक तुलसी दास' 'जानते जहान मन मेरे ह गुमान बडो', 'तुम बडे गरीब निवाज' आदि उदू फारसी के सब्दन सो बडी उत्तमता सो भाव दर्साये है। ऐसे ई आज हू , अ गरेजी के सब्द जो हिन्दी मे आत्मसात है गये हे लालटेन, बटन, गोदाम को अनुवाद कौन करनो चाहे । या तरिया मैने ड्रग सब्द कौ नसे के अथ मे ज्यो कौ त्यो लियो है नसा सब्द सो ड्रगन कौ अर्थ नाय स्पष्ट होय । अ गरेजी भासा मे जगल, राजा आदि अनेक सब्द प्रवेस करी गये हे । सो मेरो मत है कि ब्रजभासा या मामले मै उदार नीति बरतै ।

☐ आदस और यथाथ साहित्य म आप कौन से माग की समथक है ?

यथाथ साहित्य समाज की विद्रूपता उजागर करै है पर तु कोरो यथाथ चित्रण

मन को खिन्न कर देवै है यदि सही दिसा की ओर इ गित न कियौ जाय। यथाथ सत्य भले ही है पर सु दर अरु सिव के बिना सत्य निरासा के गत म ढकेल सकै अतएव आदस की ओर इसारौ जरूरी है। 'क्या है'—यथाथ, का अभीष्ट है—आदस। मेरौ माननौ है कि TRUTH अरु BEAUTY कौ सम वय जरूरी है यामे Good सिव भी समायौ है।

☐ ब्रजभासा की वतमान प्रगति सो आप कहा तानू सहमत है ?

जहा तक मे जानू हू ब्रजभासा की गरिमा कौ सूर, तुलसी, सिगार काल के कवि तथा आधुनिक जुग के पूवाद्ध के कवि जगन्नाथ दास रत्नाकर, भारते दु हरिश्च द्र सत्यनारायण कविरत्न आदि ने जितनो बढायो है, वा ऊचाई को आज क कवि नाय पहुचे हे। माची बात तौ या है कविता की बिधा कमजोर हे गई है उप यास कथा सहित्य निब ध सहित्य आलोचना आदि अधिक लिखी गई हे। ब्रजभासा कविता अपने मीठेपन को कायम रखती भई युगानुरूप बिसयन कौ अपनाव तौ अच्छी प्रगति है सक है पूरे उत्तर भारत मैं ब्रजभासा कौ प्रचार आसानी से हे सकै हे।

☐ राजस्थान म ब्रजभासा के प्रचार-प्रसार के स दभ मे आपके का मुझाव है ?

राजस्थान ब्रजभासा अकादमी की तरिया उत्तर प्रदेस, म यप्रदेस, हरियाणा, बिहार आदि उत्तरी राज्यन सो सम्पक साधि कै ब्रजभापा केकायक्रमन के आदान प्रदान करे जावे। राजस्थान की ब्रजभासा सम्ब धी सस्थान को मिलजुल कै काम करनौ चाहियै। ब्रज के लोकगीतन मे कृष्ण लीला प्रमुख हे याई तरिया राजस्थान के लोक गीनन के भावन को लैके ब्रजभासा मे गीत लिखे जाय। राजस्थान के बीरन की कथा ब्रजभासा काव्य कौ विमय बनायौ जाय तौ राजस्थान की जनता ज्यादा चाव सो कायक्रम सुन सक फड शैली को ब्रजभासा मे प्रयोग करयो जा सकै। ई के अलावा रामदेव चरित गुरुनानक चरित जैसे बिसय जनता को पस द आय सक उनकौ भलौ भी कर सकै।

☐ राजस्थान ब्रजभासा अकादमी के काय कलापन सो आप कहा ताई स तुष्ट हौ अरु का सुझाव देनौ चाहो हौ ?

राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी अबई अपने सैसव काल मे है तीन बरस स कम समय मे जाकी उपलब्धि अच्छी हैं। पाठक जी ने तथा उनके सहयोगिन नें अपार स्रम कीनौ है रुचि सो काम कीनो, ब्रज मैया के तानू रूचि जगाई है ब्रज की रसधारा को

मरुधरा मे पुन प्रवाहित करबे कौ सफल प्रयत्न है। राजस्थान के गाव नगरन मैं भगवान कृष्ण के मन्दिर है—सूर मीरा के भजनन की गूंज है—पै साहित्य के रूप मे ब्रजभाषा के प्रचार-प्रसार पुरानौ पोथीन की खोज आदि कौ सराहनीय कार्य अकादमी कर रई है। इतने थोरे समय मे कई ग्रन्थ पत्रिका ग्रन्थमाला प्रकासित है गई ह।

☐ राष्ट्रीयता की भावनान के प्रचार-प्रसार ताई आपकौ का सुझाव है ?

देस की एकता-अखडता हमारी सब सो बडी आवस्यकता है–देस के सामने चुनौती हे–सौ साहित्य के सामने हू है। विभाजन के साथ आजादी प्राप्त भई सो बू रोग अबई पिण्ड परयौ है। जा बिसै पै ब्रजभासा मे लिख्यो जाय। अलगाववादी प्रदेसन की भारत सो सास्कृतिक एकता पै बल दियौ जाय। अलग हैबे के कुपरिणाम साहित्य के माध्यम सो उजागर करे जाय।

☐ भाषा विवाद सुरझावे ताई आपके सुझाव ?

भावेंकता के ताई एक भाषा जरूरी है। हिन्दी राष्ट्रभासा मानी जाय चुकी है निहित स्वाथ जाके सम्पूण क्रिया वयन मे बाधा डार रये हे ब्रजभासा हिन्दी कौई रूप है कृष्ण भक्ति सारे भारत मे व्याप्त है दक्षिणी तथा अन्य प्रान्तीय लिपीन मे कृष्ण भक्ति साहित्य (ब्रजभाषा के भजन आदि) छापौ जाय तौ हिन्दी प्रचार मे सहायता मिल सकै है।

☐ साहित्य स्रजन मे आपकी आगामी योजना का है ?

कोई सामयिक–युगानुरूप नये सरोकारन पर्यावरण महिला सक्ति जागरण आदि पै लिखबै की सोच रही हू। अनुवाद अगरेजी ते ब्रज मे जारी राखू गी।

☐ समस्यापूर्ति मे आपको का कठिनाई है ?

समस्यापूर्त्ति मे मोय कछू कठिनाई नाय अधिकतर मै आधुनिक समस्यान कौ उजागर करती भई पक्तियाँ लिख कै समस्या पूर्ति करू हू तथा भगवान कृष्ण बिसयक छन्दन मे नयो भाव बौध है–आज की समस्यान पै इगित है।

☐ नई पीढी के ताई आपकौ रचनात्मक सुझाव ?

अगरेजन के जमाने मे राष्ट्रीयता की लहर के कारन अगरेजियत कौ बाईकाट करी जातौ, पै आज तौ पच्छिम कौ प्रभाव पहले सौ ही ज्यादा है। तो आज की पीढी पच्छिम की आधी नकल छाडि कें अपने को पहिचाने, अपने गौरव को जानै, वैज्ञानिक सोच के साथ सास्वत मानव मूल्यन की पालना करै तौ देस कौ साँचौ विकास है सकै भारत सुख साति के मारग को दुनिया कौं दर्साय सकै। नई पीढी छुद्र स्वारथ भौतिकता सौ ऊपर उठै जिई मेरी कामना हे।

—गोपाल प्रसाद मुद्गल

ब्रज रचना माधुरी

भारत की नारी है

(समस्या पूर्ति रूप मे)

पूत पाइ गदगद, भये अति मातु पितु,
उझके उछाह सौ उमग अति भारी है।
कासे के बजे है थार, लड्डुअन भोज उडे,
बहन बुआन मिलि, आरती उतारी है।
कन्या कौ जनम मानौ, बिधि को जुलम भयौ,
बेटी सग लाई मानो, विपति पिटारी है।
हुलस्यौ न कोऊ कहू, बाजत बधाई नाहिं,
पच्छपात की सताई, भारत की नारी है।

□

बालपन बाप घर, सेवा मे बिताय दियौ,
माय नै गिरिस्ती माहि, हाय पीसि डारी है।
जुवती भई तौ निज, भरता के बस भई,
सास नन्द देवर की सही नित गारी है।
आवत बूढापौ तब, तेवर दिखावै पूत,
दुखियारी दिन रैन, नैन ढरै बारी है।
लोगन कही कै कबौ, राखौ न सुतत्र याहि,
ऐसै पराधीन भई, भारत की नारी है।

□

माथे पै सिंदूर सौहे, भाल लसै बेदी लाल,
नागिन सी चोटी लगै, अति मन हारी है।

☐ नई पीढी के ताई आपको रचनात्मक सुझाव ?

अगरेजन के जमाने मे राष्ट्रीयता की लहर के कारन अगरेजियत कौ बाईकाट करौ जातौ, पै आज तौ पच्छिम कौ प्रभाव पहले सौ ही ज्यादा है। तो आज की पीढी पच्छिम की आधी नकल छाँडि कें अपने को पहिचाने, अपने गौरव को जानै, वैज्ञानिक सोच के साथ सास्वत मानव मूल्यन की पालना करै तौ देस को साचौ विकास है सकै भारत सुख सांति के मारग को दुनिया कों दर्साय सकै। नई पीढी छुद्र स्वारथ भौतिकता सौ ऊपर उठै जिई मेरी कामना हे।

—गोपाल प्रसाद मुद्गल

ब्रज रचना माधुरी

भारत की नारी है

(समस्या पूर्ति रूप मे)

पूत पाइ गदगद, भये अति मातु पितु,
उझके उछाह सौ उमग अति भारी है ।
कासे के बजे है थार, लडुअन भोज उडे,
बहन बुआन मिलि, आरती उतारी है ।
कन्या कौ जनम मानौ, बिधि को जुलम भयौ,
बेटी सग लाई मानौ, विपति पिटारी है ।
हुलस्यौ न कोऊ कहू, बाजत बधाई नाहिं,
पच्छपात की सताई, भारत की नारी है ।

□

बालपन बाप घर, सेवा मे बिताय दियौ,
माय नै गिरिस्ती माहि, हाय पीसि डारी है ।
जुवती भई तौ निज, भरता के बस भई,
सास नन्द देवर की सही नित गारी है ।
आवत बूढापौ तब, तेवर दिखावै पूत,
दुखियारी दिन रैन, नैंन ढरै बारी है ।
लोगन कही कै कबौ, राखौ न सुतत्र याहि,
ऐसै पराधीन भई, भारत की नारी है ।

□

माथे पै सिंदूर सौहे, भाल लसै बेदी लाल,
नागिन सी चोटी लगै, अति मन हारी है ।

☐ नई पीढी के ताई आपको रचनात्मक सुझाव ?

अगरेजन के जमाने मे राष्ट्रीयता की लहर के कारन अगरेजियत कौ बाईकाट करौ जातौ, पै आज तौ पच्छिम कौ प्रभाव पहले सौ ही ज्यादा है। तो आज की पीढी पच्छिम की आधी नकल छाँडि कें अपने को पहिचाने, अपने गौरव को जानै, वैज्ञानिक सोच के साथ सास्वत मानव मूल्यन की पालना करै तौ देस को साँचौ विकास है सकै भारत सुख साति के मारग को दुनिया कों दर्साय सकै। नई पीढी छुद्र स्वारथ भौतिकता सौ ऊपर उठै जिई मेरी कामना हे।

—गोपाल प्रसाद मुद्‌गल

ब्रज रचना माधुरी

भारत की नारी है

(समस्या पूर्ति रूप मे)

पूत पाइ गदगद, भये अति मातु पितु,
उझके उछाह सौ उमग अति भारी है।
कासे के बजे है थार, लडुअन भोज उडे,
बहन बुआन मिलि, आरती उतारी है।
कन्या कौ जनम मानौ, बिधि को जुलम भयौ,
बेटी सग लाई मानो, विपति पिटारी है।
हुलस्यौ न कोऊ कहू, बाजत बधाई नाहि,
पच्छपात की सताई, भारत की नारी है।

□

बालपन बाप घर, सेवा मे बिताय दियौ,
माय नै गिरिस्ती माहि, हाय पीसि डारी है।
जुवती भई तौ निज, भरता के बस भई,
सास न द देवर की सही नित गारी है।
आवत बूढापौ तब, तेवर दिखावै पूत,
दुखियारी दिन रैन, नैन ढरै बारी है।
लोगन कही कै कबौ, राखौ न सुतत्र याहि,
ऐसै पराधीन भई, भारत की नारी है।

□

माथे पै सिंदूर सौहे, भाल लसै बेदी लाल,
नागिन सी चोटी लगै, अति मन हारी है।

सील औ सुबरन के, गहना है धारे अग,
पच्छिम की नाहिं याकौ, लगत बयारी है ।
धीरज की मूरति है, नित ही मुदित मन,
दुहू कुल बारेन कौ, लगै अति प्यारी है ।
धरम की भाति धारे, रहै आज भारत कू,
ऐसी रूप गुन बारी भारत की नारी है ।

□

मधु कटभ महिसासुर रक्तवीज दैत्यन,
की हौ उत्पात मेदिनी, ही रौदि डारी है ।
सुर पचि हारे तीनि, देबन कौ धीर डिग्यौ,
मातु की सरन जैये सबनै विचारी है ।
नारि को सब रूपन मे ऊँचौ जानि
देव तेज पुज सार भई दनुजारी है ।
पूजी जाय नारी तहा, देवता रमन करै
कीरति की मूरति है, भारत की नारी है ।

बसत बसै

सरसो सरस चहु ओर लस, हरियारि बसत छटा सरसै ।
बगुला कहु सारस डालत हैं, कहु मोरन को परिवार लसै ।
कहु घूघट बारी गवारी बधू, कहु सावर गौर किसोर दिसै ।
व्रज मडल मडन कारज आज, समेत समाज बसत लसै ।

किसान बधू

पौ फाटत बाल बिलोई कै छाछ औ माखन काढि भरी मटकी ।
गुड छाछ दई है ललाल ललीन कौ सग मे रोटी दई टटकी ।
बनि कै ठनि क निकसी घर सौ, अरु लैकै कलेऊ चली चटकी ।
हरवारे छबीले की आखिन मे, रस रूप और गारस म अटकी ।

बिगरैल

ऊँचाई कै काव, चढाइ कै भौह, गोलाइ कै हौट गिटापिट बोलै ।
बाल कौ लागत लाज न नैकु बनी बिगरै इतै उत डोलै ।

सिगरैट के फूकन औ मदिरान के घू टन मे मरजाद कु घोलै।
मेरी माय कहा भई हाय सुदेस की बेटी कुभेस मे डोलै।

सुहाई है (समस्या पूर्ति)

उत्तर तरनि आय, सीत जड दियौ ताडि,
सचर-अचर मनो, लीन्ह अ गराई है।
सिब-सिब कहि जाडौ समा गयौ कूप माहि,
ताही सौ गरम जल, माहि सित लाई है।
पीरे पात झर गए, खिल गए नए पात
खगकुल कल रव स्रोन सुखदाई है।
आयौ रितु राज साजि, मगल समाज आज,
रग औ सुगध चहु ओर न सुहाई है।

□

जनमत काटि दई, कैद क्रूर कसवारी,
मदिर की कारा कहौ, तुम्है कैसै भाई है।
नाम बनवारी बन उपवन विहरत,
जीव रख वारी मनौ, सोऊ बिसराई है।
तरनि तनूजा तट ग्वालन के खेल भूलि
गोपिन के सग भूलि पखसता पाई है।
धनिकन बस कैधो, निपट अबस भए,
स्याम तुम्हे तासौ ऐसी, रहनि सुहाई है।

स्फुट एव समस्या पूर्ति

पर्यावरण

हिमवत औ बिन्ध्य अरावलि पै बन छाई रहे ते बडे मनभाने,
बन जीव अनेक तहाँ बिचरै, बिहरै खगब द छटा सरसाने।
सरिता सर कूप तडाग अनेकन नीर भरे चहुँ ओर सुहाने
बनराइ कटे ते अकाल डटयौ, नहि सूझै कछू अब का पछिताने।

□

सूखन रूख लगे चहु ओर भयौ अति सोर सबै बिललाने।
पसु पच्छी डरे चहुँ ओर मरे नर नारी औ बाल फिरै बितलाने।

बिनु पानी कहौ कैसे जीव धरै हहरै हियरे मन मैं बिचलाने,
अकाल तौ लीलि गयौ सिगरौ उजरयौ जब बाग तौ का पछिताने।

बडौ परिवार

कबौ आटौ चुक्कौ कबौ दार चुकी दधि दूध मिठाई कहूँन दिखाने,
कबौ पोथी नही कबौ बस्तौ नही कबौ फीस नही सो रहै खिसियाने।
घर बारी है रारि मचाय रही कैसे कीजै गुजारौ घर नहि दाने,
सतान की भीर भरी घर मे तब चूकि गये अब का पछिताने।

आज के युवक

कौमिक कौ पढिबो दिन रैन सुनै किरकेट कमेट्रि सिहाने
हर साझ न छौडै सिनेमा कौ देखिबौ लाल भये विडियो के दिवाने।
सिगरेट न छूटै कबौ कर सौ औ चढाई हसीस चढै असमाने,
तन छीन भये दुतिहीन भये मतिहीन भये अब का पछिताने।

होरी

होरी तौ हौत है नाह के नेह सौ रग गुलाल अबीर सौ नाही,
जैसी सुधा बरसै मधु बैनन सो रस छपान व्यजन नाही।
नैन के सन सनेह पगे छलकै मदिरा जो छकी कहु नाही,
प्रीत की रीत निभै दुहु ओर (तौ) अपार अनद या होरी मे आही।

कन्हैया सबधी – (स्फुट एव समस्या पूर्ति रूप मे)

साझ समै वृषभानुलली, लखि मौन की पौरि मे ढाढौ कन्हाई।
लाज मरी रिसियाइ गई अरु कानन लौ झलकी अरुनाई।
स्याम सौ बैन कहै मधुरे नहि सोहै तुम्है असि चापलताई।
बाँसुरि टेर लगावते आपु तौ आपुहि राधिका आवति धाई।

☐

ब्रज माटि जमे बन पाथर के सो कदम्ब के कुजन काह भयो री।
गउ चारन ठौर बजार बने बँसुरी गई रूठि बजै डिसको री।

जमुना जल धार न दीसै कहूँ मची नार पनारन की बरजोरी।
जु कहा भयो स्याम तेरे ब्रज को नहिं ग्वाल हठीले न ग्वालिन भोरी।

□

आतम औ परमातम बीच अहै अति सूधी सनेह की डोरी।
राज समाज और रीति औ नीति के बधन याहि सकै नहिं तोरी।
गोपिन का्ह कौ ऐसोइ जोग सँजोगमै कौन सकै बिस घोरी।
भोरी हिये मै सामने गुबि द गोबि द के अ तर ग्वालिन भोरी।

□

आगि लगै या बिकास कथा मुहँ पीर उठै मन माँहि मरोरी।
हास बिलास औ रास ओ रग भये बदरग सो कसे सहौरी।
नहिं जात सह्यौ कलि कौ उतपात सो स्याम तुम्हे करजोरि कहौरी।
ग्वालन सग पधारिये स्याम औ स्यामा के सग मै ग्वालिन भोरी।

□

फागुन के दिन नन्द के आगन होत रहे जहँ आन द भारी।
मातु जसोमति भाति अनेकन बिंजन साजि करी मनुहारी।
रग अबीर छटा बिलसी मनौ इ्द्र दिए निज चाप सँवारी।
मोहन के बिन लागत सून, बसी इन नैनन मूरत प्यारी।

कृष्ण

काहे न मानत नद के लालन कैसी अनीत की रीत तिहारी।
गागर फोरत बाहँ मरोरत रोकत हौ नित गैल हमारी।
आइ गयौ अब फागुन मास करैगी सबै मनभाई हमारी।
दैगी बनाइ तुम्है बनरी बनरासी सजावैगी राधिकै प्यारी।

□

डारि गयौ मोपै रग रगीलौ मै जाऊँ कहा अब लाज की मारी।
रग रग्यौ तन स्याम बस्यौ मन, रीझि कै राग भई मतवारी।

धोये धुपै तन रग सखी, पन अ तर रग न जात उतारी ।
प्रीति समद समाइ गई बिसराइ दई जग की सुधि सारी ।

□

तोहि कहा कहिये ब्रजचद अमद लखै सब दीठि तिहारी ।
धीर धरित्री डिग्यौई चहै अब धम धुरी पकरौ गिरधारी ।
पाप पहार, अनच्छ अचार, के घोर ऊँबार अटे अघहारी ।
गिरधारन सौ नहि काज सरै सिगरे जग को धरिये गिरधारी ।

□

नाहि लगै मन ग्वालन कौ जब तै बिछुरे ब्रज सौ बनवारी ।
फाग के रग सुहात न नैकु न चग की थाप लगै मनहारी ।
द्वार कहा करै जाई क नद के स्याम गये परदेस सिधारी ।
आवौ सबै मिलि कुजनि मे गुनगावहि ध्यावहि मूरति प्यारी ।

कृष्ण से

सूधो सनेह सनो यह जीवन छाडि गये कहँ कुज बिहारी ।
गोपिन ग्वालन गौवन भूलि गये मथुरा नद गाव बिसारी ।
भावत क्यो परपच तुम्है रनरग सराहौ कहा जियधारी ।
आवहु फेरि निकुजन बीच बुलावै तुम्हे ब्रज भू अति प्यारी ।

होरी पर (समस्या 'पजारेते')

जारि नहि पाये तुम, मन की कुटेवन कौ,
नाहि जरी ऊँच नीच, भावना बिचारे ते ।
छाडि सके नाहि जाति पातिन कौ भेद भाव,
नाहि बचे सम्प्रदायवाद के नजारे ते ।
उबरि न पाये तुम, क्रूर छरछदनि तै,
काम क्रोधादिक के कीच सने नारे ते ।
राकस अनेक तुम पालि लये मानस मैं,
पैये कहा बधु मेरे होरिका पजारे त ।

घना माँय पधारे पाहुने पच्छिन कौ कथन

हिम रासि अनन्त दिगत छई, तहँ जीवन रेख परै न दिखाई।
कहुँ रूख न दूब हरेरी कहँ, सरिता सर नाँहि परै दिखराई।
तरवारि की धारि ज्यौ लागै बयारि, औ ओलनमार बडी दुखदाई।
तब कान मे ऐसौ सँदेसौ परयौ, चलिये दिसि छच्छिनजूथ बनाई।

□

हम पाँखी निवासी बिदेसन के, इत आये है सीत बितावन कारन।
नैनन मै सुपनेन सँजोइ कै, जोरी बनाइ उडे दिन रातन।
मग के उतपात न जात सहै, पन लच्छ सौ कोउ सक्योनहिं टारन।
सतति कौ सुख स्दष्टि को सार, सो आये है नीड बनावन कारन।

□

या ब्रजमडल अचल माहि, सुरम्य अरण्य बडौ मन भावन।
पच्छि पखेरुन के परिवारन लागै सदा यह ठौर सुहावन।
क्यो कहिये हमको परदेसि, अहै यह ज म की भूमि सुहावन।
सिकार कथा की बिसारि बिथा, हम आवै सदा इत सीत मनावन।

□

जहँ मानुस क्रुद्ध है जुद्ध करै, निज देस की सीव बढावन कारन।
तोपन टैंक मिसाइल सौ, करि ध्वस, महा महि खड उजारन।
मनुजाद धरे दनुजाद को रूप सँहार कौ खेल रचै दिन रातन।
सा ति सँदेस सुनौ हमरौ, बिनवै तुम सो, नहिं कीजै महारन।

□

बन जीव बनस्पति मागत त्राहि, सनेह सौ सीचि कै जीवन दीजै।
महि मडल मात्र कुटुम्ब गनै, यहि ज्ञान अनूपम पै जु पतीजै।
ब्रह्मण्ड लौ पाय पसारि लये तुम, भूमि के टूकन क्यो करि कीजै।
बसुधा कौ सुधारस पीजै सबै मिलि, क्यो न सबै मिलि प्रेम सो जीजै।

बिज्ञान अरु बिनास

बिज्ञानी पाई गये कैसो यह बिसेस ज्ञान,
यह तौ निपट अज्ञान कौ अँधेरौ है।
आदिम असभ्य कहि मानि रहे हनि जि है,
तिन नै तौ बिस्ब सहस्राब्दिन अबेरौ है।
तुम तो बिनास बहु बानक बनाय रहे
लाये यह कैसो सभ्य ज्ञान कौ सबेरौ है।
बक्ष यै बसु धरा के बम्मन के ठट्ठ पाटि,
चाहि रहे फूटै सुख सांति को उजेरौ है।

□

देसन खिवैया हौ कि, लवैया सबनास के हौ,
अघन के ओघ मूढमति से लगत हौ।
पाप की पुटरिया औ, लिये नास गठरिया,
मही तो गही है दूजे ग्रहन गहत हौ।
स्वारथ न जानौ परमारथ न जानौ आगौ,
पीछौ हू न जानौ कहा मन मे गुनत हौ।
बुद्ध की न ईसा की न महावीर गांधी की,
तत्व भरी प्रेम भरी बानी कूँ सुनत हौ।

□

ज्वाल के समुद्र मध्य, धधकत बिस धूम जाल,
ध्वस के धमाकन सौ, भूतल डरायगौ।
बिकिरन बिसधारी, धूरि छावै मडल मैं,
चण्ड मारतण्ड कौ प्रताप नसि जायगौ।
ताप उतपात पाछे आवै जड सीत ऐसौ,
धरती सौ प्रान कौ प्रमान मिटि जायगौ।
आत्मा हूँ कैसे धारि सकैगी नवीन बेस,
जीव रूप बस्यन कौ बीज ही बिलायगौ॥

प्रलै सो भले ई बचै, सग हिमभूधर के,
दूसन प्रदूसन कौ, छाई जाई सग ही।
नूर केरि किरित्ती काजें, ढूँढे न मिलैगे जोहे,
मिलि हू गये तो ह वै है निपट अपग ही।
माथ धरे हाथ सोचै विधना बिबस मन,
बिस के प्रभाव नाहि, ब्यादि है अनग ही।
सवनास ऐसौ जैसौ सम्भु कबौ सौच्यौ नाहि,
देव मति भ्रमी भयो स्रष्टि चक्र भग ही।।

□

नाहि कीजै का ह उपदेस महाभारत कौ,
प्रेम की उपासना कौ मारग बताइये।
अस्त्र सस्त्र छाडि कै बताइ राह सिरजन की
सत्य सिव सु दर कौ मत्र जगवाइये।
ध्वसक प्रयोगन के बजन कौ मानस दै,
मैगाडेथ रोकिबे की जुगुति बताइये।
जग प्रतिपालक कौ विरुद बचैबे काज,
बिस्व बीच साति मेगाभाव सौ बढाइये।।

□

नसौं (ड्रग्स)

दोहे—

ड्रग तौ कबहु न सेइये, ये है बिस बिकराल।
नागदस सौ हू बिकट, अति कराल यह काल।।

□

कहिबे कूँ ऊपर चढत, गिरत नरक की आगि।
नव तरुनाई बीच ड्रग, फैली ज्यूँ दावागि।।

□

एक बेर ड्रग बिच फँसे, कबहुँ न पैये भागि।
कपट कुचाली कतल लौ, किये पाप यह लागि।।

रूप गयौ रगत गई, तन मन धन सब छीन।
ड्रग सौ नातो जोरि कै, मरघट कौ मुख कीन।।

□

को नाथै ड्रग नाग को, को काढ़ै बिसदत।
या बिसधर कौ गरल तौ, व्याप्यो दसौ दिगत।।

□

ड्रग व्यौपारी बढ़ि रहे, सतानन की फौज।
मौत मोल बेचत फिरै, चारि दिना की मौज।।

□

कु डलिया—

बचिबे कूँ ड्रग दैत्य सौ किय प्रचार सरकार।
ह्‌वै कठोर बरज्यौ नही ड्रग तस्कर व्यापार।
ड्रग तस्कर व्यापार सगठित जैसे सेना।
सरकारी अमलानि चुपावै घालि चबेना।
ड्रग ब्यापारी कहौ तिहारे घर सुत नाही।
मेलि मीचु मुख तरुन रतन सोवत सुख माही।

दोहा

हैरोइन ब्राउन सुगर औ हसीस की हूक।
जीवन धनुस चढाइ कै तानि करै दुइ टूक।

सॉंचो सनेह (T1ue Love)

मूल विलियम शेक्सपीयर
अनुवाद इन्दिरा त्रिपाठी

प्रीति की गैल, प्रतीति भरी तहँ बाधन कौ कछु काज सरै नहि।
नेन तौ साचौ वही कहिये जो असाँचे पिया सौ सनेह हरै नहि।
(प्रीति तौ साची वही कहिये जो असाँचे पिया सौ प्रतीति टरै नहि)

कोटि उपाय किये कुटनीन के प्रेम कौ बीज निकारचौ परै नहिं ।
प्रेम की डोर अटूट अहै अरि के अभिघात सौ तोरै तुरै नहिं ।

□

प्रेम तौ ऊँचो अकास कौ दीप न कम्पै प्रचड प्रभजन झौकन ।
जीवन के नभमण्डल बीच ध्रुव प्रेम अमद सी जोतन ।
मारग दसन देत सदाई जे पथ भुलाने पयोनिधि पोतन ।
ऊँचौ कितेक तौ बूझि परै पै बतावैगो को भुवनहु कै मोलन ।।

□

काल किसान गहे हँसिया सकै काटि कपोलन की अरुनाई,
ओठन औ अधरान की आब गुलाब से रग की सुदरताई ।
फीकी परै दिनमासन मै अनुराग का रग तौ चोखौ सदाई ।
कल्प के अन्त लो प्रेम अखण्ड सनेही न वारि सकै निठुराई ।।

□

प्रेम सरूप कौ मेरो निरूपन कोऊ सयानौ असाच प्रमानै ।
तौ कविताई मरी बिरथा औ सनेही कौ नेह अलीह कै मानै ।।

ईस-कृपा (नेत्र ज्योति जाने पर)

(अनुवाद मिल्टन की On his blindness)

अनुवाद द्वारा—इन्दिरा त्रिपाठी

नैन की जोति बुझाई गई जब आवि टूँ बैस भई नही पूरी ।
सोच बडौ मन नाथ यहै कस क गुनगाथ रचौ अति रूरी ।
छाइ रह्यो अँधियारौ चहूँ दिसि सूझि परै नहिं लच्छ की दूरी ।
कचन सौ कविताई कौ तेज सो, मूँदत लागति सासति पूरी ।

□

कल्प के अ त प्रभू दरबार मे दैनौ हिसाब करी किति सेवा ।
बूझत हौ करतार तुम्है कैसै मागत हौ बिन जोति के सेवा ।

अन्तर बोध भयौ तब मोहिं कि ईस न चाहत मानुस सेवा ।
सीस चढाइ कै कीजै निबाहु दियौ जस जीवन स्वग के देवा ।

□

सम्पति जो स्वयमेव दई ताकी भेट कबौ नहिं चाहिय स्वामिहिं ।
राज समाज बिसाल लसै अरु सेवक सैन अनेक हजारहिं ।
पार कर गिरि सागर नित्य बिना बिसराम निर तर धावहिं ।
सेवक सेवा मे ठाढौ रह सोउ लागत प्यारो है पालन हारहिं ।

जगती जजाल बीच उरझे हम

(The world is too much with us)

मूल - विलिवम वर्ड्सवर्थ

अनवाद - इन्दिरा त्रिपाठी

खर्चिबे कमैबे बीच, बहुबिध परपच बीच,
जगती जजाल बीच, फसे सुख मानै हम ।
माय रूप धाय रूप, ज्ञान गुन दानि रूप,
प्रकृति सनेहिनी न नैकु पहिचानै हम ।
स्वारथ मै बूडयौ मन, उवै न उदात भाव
बयस नसावै परमारथ न जानै हम ।
सहराती जीवन की, कीच बीच ऐसे फँसे ,
गाव कौ अपनपौ न नैकु उर आनै हम ।

□

नलि नभ अक माहि पूरन मयक लसै,
पारावार ताहि सौ उमाहि उमगत है ।
झझा के झकोर हहरात ठहरात कबौ,
पाँखुरी सिकोरि कबौ सोवन लगत है ।
ऐसी मनहारी बिधि रचना निहारी तऊ,
हिय मे न मोद सुरलहरी लहरत है ।

नित नव रूप धरै, भव मे विभव भरै,
दिव्य सक्ति ब दना न मन उचरत है ।

□

हौ तौ क्रिस्तानी ईस छिमा करै पातक कौं,
देवता अनेक मेरौ मन करसत है ।
जलधि तीर जाई धरौ ध्यान जल देवन कौ,
दरसन दिव्य हित मन तरसत है ।
मगन निहारौ मै अपार जलरासि बीच,
प्रगट्यौ प्राटयूस मन मेरौ हरसत है ।
बारिधि अधीस ट्राइटन सिंगी सरस,
गू जत दिगत औ अनद बरसत है ।

बादल (The Cloud)

मूल पी बी शेली

अनुवाद - इन्दिरा त्रिपाठी

लाइ नद नदीसन सौ गहिरे बारीसन सौ,
सीतल फुहारै प्यासे पुहुपन पै बारै हम ।
चढत दुपैरी सपनीली द्रुमपति यन पै,
छाया की मृदुता औ स्यामता उतारै हम ।।

□

मातु गोद झूमती दिनेस-कर चूमती
अलसायी कलियन हित ओस बू द लावै हम ।
मुक्तासम ओसकन झारि निज पाखन सौ,
कोमल कलीन तन जीवन सरसावै हम ।।

□

ओखल मे ओलन को छरै हम गोलन से,
मार तिनकी सौ धरा धौरी करि डारै हम ।

ओलन गराइ कै धराइ रूप मेहजल को,
हासमय घोर घन गजन उचार हम ।।

□

वारि औ वसुधरा की सुता सुकुमारि हम,
नील नभ अटारी धाय माता करि मान हम ।
रमन करै सिंधुन पै, जल औ थल दोउन पै,
रूप बदलै पै कबौ मीचु नहि जानै हम ।।

□

बीती बरसात नभ सुभ्र सरसात दखौ,
व्योम के वितान की निरभ्र छवि हेरै हम ।
ताल पै समीरन के उत्तल मरीचि जाल,
अम्बर कौ गुम्बद रच्चौ हसि मन फेरै हम ।।

□

मौन साधि हँसत हौ देखत समाधि निज,
बरखा गुहा सौ फेरि नयो जीव धारै हम ।
मातु कोख पूत ज्यो, प्रेत ज्यो समाधि सौ,
प्रगटै त्यो बारम्बार नव वपु धारै हम ।।

सैनिक कौ सपनौ

The soldiers Dream Campbell

अनुवाद इन्दिरा त्रिपाठी

बाजत बिगुल धुन सधि गीतन रन अधियारो छयो ।
प्रगटे नखत गन गगन ऊपर मन हु मिलि पहरो दयो ।
सैनिक सहस्रन परे भूतल क्रूर रिपु दल सहरे ।
कछु नीद बस, मुरुछित कछू, कछु मीचु के मुख मँह परे ।

रन भूमि महँ वकदल निवारन अग्नि राखी बारि कै।
तेहि निकट मै सोवन लग्यौ निज फूस गादी डारिकै।
सोवत गई अधिराति, मै देख्यौ सपन मन भावनौ।
सूरज उयो तौलौ दिख्यौ त्रय बार सपन सुहावनौ।

□

मोहि लग्यौ मै अति ही भयकर समर अगन छाडि कै।
जातौ चल्यौ मै एकलौ इक बिजन मारग पाई कै।
हेमन्त रितु सोभा अनूपम सुखद उजियारौ उयौ।
पुरिखान कौ घर करत स्वागत मोद सौ हिय भरि गयौ।

□

देखँड मनोहर खेत जहँ खेल्यौ रम्यौ बहु भाति सौ
जीवन सबेरौ बालपन बीत्यौ जहा उतसाह सौ।
कानन परे सुर अति मधुर पसु बन्द के मन भावने।
करसक मगन मन धान काटत गीत गावत रससने।

□

मदिरा चषक लै नेह सौ सौगध यो मैंने कही।
परिजन सनेही छाडि कै जावो न फेरि कदापि ही।
लपटै 'लडैते बार बारहि' मन मेरौ नाही भरै।
ठाढी अकेली बिरह भय सौ मानिनी हिचकी भरै।

□

'हारे थके सनिक हमारे हमहि' छाडि न जाइयौ।
अब कीजियो बिसराम सुनि मेरौ हियौ हरसाइयौ।
ताही समय पौ फटत ही जाग्यो, जमी मेरी बिथा।
परिजन सुबानी सुधा सानी कहूँ बिलानी सवथा।

प्रभू की रीत

मूल–Thou art indeed Just my Lord —Hopkins

अनुवाद इन्दिरा - त्रिपाठी

नीत सौ पूरन ईस की रीत, पै मेरौ उराहनौ हूँ अति साँची ।
पूछत हौ जगदीश तुम्है क्यो अनीति की जीत चहूँ दिसि माची ।
मेरौ सबै तप त्याग सुधम निरास के बारिधि बूडत बाची ।
मोहिं भयौ भ्रम आजु यहै प्रभु आपकी मोसौ मिताई है काची ।

□

फूलै फरै मदमत्त फिरै बिहरै सुख सौ जड काम के चेरे ।
मै मन सौ बच कम सौ सेवक नाथ दये मोहि कष्ट घनेरे ।
भोग बिलास के रग रचे तिनकौ सुख सम्पति है बहुतेरे ।
चाकर आपकौ जीवन अर्पित धर्महिं मो घर दु ख बसेरे ।

□

आइ गयौ बहुरग बसत नये द्रुमपात लसै चहुँ फेरे ।
देखहु झूमत पात ललान के पौन के झौकन साझ सबेरे ।
नीड बनावत है खगब द हूँ, मै उजर्यौ सो सिरौ बिनु डेरे ।
सीदत है हिय मेरौ हमेस कि बीति गये बिरथा दिन मेरे ।

□

सिरजन सक्ति बिहीन जरौ हहरौ हियरे बिधि की गति हेरे ।
प्रान प्रदायक नाथ पियूष पियाइ जियावहु मूलन मेरे ।

बुलबुलो से

मूल - राबर्ट ब्रिजेज

अनुवाद - इन्दिरा त्रिपाठी

सैल माल जहँ तुम बसौ सुख सुषमा की खान ।
फल फुलादिक जुत लसौ, सुरभित बन उद्यान ।

सुरभित बन उद्यान सोह सरिता सर सु दर।
जिनकी छवि रमणीक गीत उपजावै तव उर।
कहौ कहा ऐसौ न दन बन बिचरौ मै हूँ।
जहा बसत रितुराज सिसिर हेम त हु मै हूँ॥

□

त परबत बजर परे साच सुनौ कविराज।
रीती परी तरगिनी नहिं सुरग रितुराज।
नहिं सुरग रितुराज उठत उर आस हूक सी।
कसक करेजे उठै गीत मिस प्रगट कूक सी।
केतौ करै उपाय कलामय भावन गावै।
सपने होत न साँच बाम बिधि बनत मिटावै॥

□

मुग्ध भाव सौ सुनत है मम गीतन नर नार।
मधुर सुरन के ब्याज सौ उमहै बिथा अपार।
उमहै बिथा अपार निमा अब बीत्यौ चाहत।
दिवस हमहिं सुख देत मनोहर सपन सजावत।
सतरगी सुमनन सौ सजी महकती डारै।
भँवर पछिगन मगन प्रात के गीत उचारै।

□

फुरसत के छिन

Leisure W H Davies

अनुवाद - इन्दिरा त्रिपाठी

चिंता मे बूड्यौ रहै, आजु सकल ससार।
प्रकृति रूप रस पान कौ, नैकहुँ मिलै न बार॥

□

सा त भाव सौ निरखिये, बन सोभा निद्वन्द।
सीतल तरु छाया तरें, बिलमै ज्यो पसु ब द॥

दूब बीच मूँदत फली, चपल गिलहरी पेखि ।
बनमारग म बिलयि कै पलछिन सकै न देखि ॥

□

देखि सकै क्यू दिवस मे, दमकत यौ जलधार ।
ज्यूँ नछत्र मडित गगन, साहे निसि अधियार ॥

□

चपल सुदरी नैन हूँ नैकु न सके निहार ।
चारु चरन नत्त न निपुन, प न गये बलिहार ॥

□

घरी एक हू ना मिली, निरखो वा मुसुकानि ।
नैनन सौ प्रगटित भई, पुनि बिकसी अधरानि ॥

□

आजु मनुज उरझयो रहै, जगती के जजाल ।
प्रकृति रूप आस्वाद बिन, भौ दरिद्र सौ हाल ॥

मूल टी एस एलियट

अनुवाद - इन्दिरा त्रिपाठी

जरा जीरन मै,

तन मन सो सूखि रह्यौ सूखे के मौसम मे,
हेरि रह्यौ राह बिरखामृत के बूँदन की ।

मै,

सूर नही बीर नही भोगी नही जुद्ध भूमि जातना,
जूझयौ नही सत्रु सो, दलदल की जकड सौ ।

नाम पै निवास के, फूटौ घर द्वार
ताहू पै कुटिल यहूदी अडौ देहरी पै,

मागत फिरायौ आयौ देस देसन सौ
रोगन वटोरिकै लालच सकेलि कै,
अब मेरौ रगत चूसैगौ ।

कैसी य जिन्दगी
रूखी ी करारी पथरीली, बजर अँबार करकट की,
लीद ओ गोबर सी नागफनी सी
जकडी कुंठा के कटक जाल सौ ।

पिसि रही घरतिन घर चाकी मे,
चूल्हे सो जूझती झीकती छीकती,
भरती चायदानी खोलती अडती सडती गारदानी ।
म जरठ वेबस रह्यौ निहार
भीतर सौ गयौ हार
सूझै नही आसा किरन
आस्था विहीन जीवन ।

सोच्यौ ग
लायगो बसन्त धीसु आवन कौ सँदेसौ,
चमकगौ सितारा मुक्तिदाता के जनम कौ
व्यापगौ जग भीतल नव हुलास नई आस,
लीलैगौ समथ व्याप्त पाप ताप मानुस के ।

पै मनुज न सुधरैगौ न उबरैगौ रसातल सौ
रचैगौ पाखड । ऊपर सौ हँसगौ अन्तर सो सीदैगौ,
दिसाहीन भटकैगौ अटकैगौ, मटकगौ
घूँछी ढेरकी सौ ।
बुनैगौ हवा के तार !
पावै न कोऊ सार ।

मै बूढौ बेबस ठड सौं ठिठुरि रह्यौ
जीरन घर द्वार, झझा करै फुकार ।

मुसकिल है मिलनी छिमा अपराधी मानव कौ ।

सीखैगौ नाहि गुर ग्यान इतिहास सौ,
भटक्यौ भ्रमजाल मे, भूलि औ भुलयन मे,
चलगौ निर तर ग तव्य नहि पावैगौ ।
भय औ साहस क, जय के पराजयके
पतन उत्थान के, भटकन सौ चूर चूर
खण्ड खण्ड बिखरैगौ । कसे निखरगौ ।
पावगौ कैसे विसवास, बिमल अ तममन ।
भौगैगौ नतीजौ ईस आज्ञा के उलाघन कौ ।
बरज्यौ फल चाखन को ।
आयौ बस त फेरि,
उदय भयौ सक्ति पु ज तेज पु ज,
व्याघ्र रूप यीसु रव्रीस्त,
नासगौ पाप पु ज जनके ।

मे अजहू जरत हू तरपत हौ सीदत हौ ।
पूछत हौ समथ नाथ त्रान कब पाऊँगौ ?
सापित ओ तापित विद्रूप या जीवन सौ
मरे सघस कौ अन्त कब आवैगौ ।
दूँगौ म कान नही कुटिल डविल छलना पै,
सूधौ ही आय डटयौ आपके समक्ष करौ
रक्षा निवारि पाप, उज्ज्वल करि अ तमन,
भय सो करि मुक्त कीजै दया दान ।
मेरौ बिसवास डिग्यौ, ज्ञानेंद्रिय सिथिल भई
केहि विधि नाथ करौ आपकी
बन्दना उपासना।

चिन्ता हजार ग्रसै मेरे उर अन्तर कौ,
मन को असाति डसै, गहरी उर पीर उठै,
भटक्यौ मै सान्ति हीन त्रान हीन
जीवन जीवट बिहीन ।
मकरी और माखी सौ, कीरा औ मकोरा सौ
मनुज बलहीन उर झयौ भ्रम जाल मे, चक्र म काल के
चकरी सौ घूमतौ अनत ब्रह्माण्ड मे ।
टूक टूक, खण्ड खण्ड, ध्वस्त अणु कनिका सौ

नास व्यक्तित्व कौ, बिनास अस्तित्व कौ ।
चकित चित थकित मन जूझि रह्यौ
उलटी बयारि सा सेत समद पाखी सौ ।
हारि गिस्यौ सरदीली बरफीली धरा प,
सेत पख सेत हिम रासि पै ।
ऐसौ ही आजु मनुज दरस हीन, परस हीन
नासा मुख करन हीन । दूरि कहूँ निजन में

परयो स्पन्द हीन ।
मै जरठ जजर झझा के थपरन सौ
टकरातौ डगमग पग रेगतौ
जीवन डगर पै ।

ऐसे कटु चिंतन सौ ग्रस्यो नित
सूखि रह्यौ सूखे के मौसम मे ।

श्रीमती इन्दिरा त्रिपाठी का ब्रज काव्य

श्रीमती इ दिरा त्रिपाठी ब्रजभाषा की अपनी तरिगा की अकेली कवयित्री है। तीन बरस की अल्प अवधि माहि इनकी लेखनी सो जो व्रज काव्यानुराग निमत भयौ है बाते इनकी रचना क्षमता कौ सहजई बोध है जाय। व्रजभाषा सो इनकौ लगाव मूल रूप सौ घर परिवार के बातावरन सौ भयौ। अध्ययन अ यापन माहि व्रज साहित्य कौ जि अनुराग औरऊ बढयौ। 1988 सन माहि प्रयाग रूप म उनै व्र छंद मच पै प्रस्तुत कीन। ब्रज के सोये भावन कू जागरन कौ औसर मिल्यौ। इनके भीतर कौ सोयौ कवि जग्यौ तौ एक ते एक अनौखी रचना सामइ आवन लगी। कबहू कवि सम्मेलन के मच सौ कबहू आकाशवाणी सौ इन व्रज माधुरी रस बरसावन लगी। लगन, आत्मविश्वास स्वाध्याय की सगम हिलारे लेन लगी। ब्रजभाषा भण्डार म एक ते एक अनमोल रतन इकठौरे हूबे लगे। या थार मे सबसे इन जा कछु लिख्यौ है बाकौ अनुशीलन करै तौ इनकी रचनान कू चार भागन म बाट सकै है—

(1) प्रकृति चित्रण, (2) कृष्णलीला
(3) आधुनिक भावबोध (4) अनुवाद

प्रकृति चित्रण—

श्रीमती त्रिपाठी के काव्य माहि प्रकृति चित्रण के छद जद्यपि थोरी मात्रा म मिलै हे पर इनकौ महत्व अधिक है। बसन्त, होरी पावस शीत, ग्रीष्म पै आ छद लिखे है बिनमे नयौ परिवेश, नयौ युगबोध खूब झलकै है, सगई भक्तिकालीन समपन भाव अरु रीतिकालीन सिंगार भाव ते इनकी रचना मुक्त नाय। ब्रज म होरी कौ बरनन काहू विधि सौ होय रास रासेस्वर तौ बीच मे सहजइ आइ बिराजै—बिनक बिना तौ होरी कौ भावइ फीकौ है। एक होरी कौ भाव या छन्द मे देखौ—

रग अबीर छटा बिलसी मनो इ द्र दिये निज चाप सवारी।
मोहन के बिन लागत सून, बसी इन नैनन मूरत प्यारी।।

होरी तौ होत है नाह के नेक सौ, रग गुलाल अबीर सौ नाही।
जसी सुधा बरसै मधु बैनन, सो रस छप्पन व्यजन नाही ।।

बसन्त बरनन माहि मौलिक उद्भावना इनके प्रकृति चित्रण की यारी विशेषता है—

सरसा सरसै चहु ओर लसै, हरियारि बस त छटा सरसै ।
बगला कहु सारस डोलत है, कहु मोरन कौ परिवार लसै ।।
कहु घू घट बारी गवारी बवू, कहु सावर–गौर किसौर दिसै ।
ब्रज मडल मडन कारन आज, समेत समाज बस त लसै ।।

ब्रज की भोर कवयित्री नै आखि ते देखी है या सहज वरनन मे कितनौ सटीक यथाथ उभरौ है – जेमै काहू चित्रकार नै तस्वीर उतार दई होय—

पौ फाटत वाल बिलोय कै छाछ औ माखन काढि भरी मटकी ।
गुड छाछ दई है ललान ललीन को मग मे रोटी दई टटकी ।।
बन्कि ठनिकै निकसी घर सौ अरु लैकै कलेऊ चली चटकी ।
हरबारे छबीले की आखिन मे रमरूप औ गोरस ये अटकी ।।

आज चारौ लग रूँख कटिबे लगे ह सूखबे लगे ह । याते पसु पच्छीन कू ई नाय—मानव जाति कू हू ग भीर पयावरण की समस्या पैदा भई हैं । अकाल, अनावष्टि कौ जि मूल है । कवयित्री नै या राष्ट्रीय ममस्या कूँ या तरिया अपनी लेखनी ते रेखांकित कीनौ है—

सुखन रूख लगे चहु सोर, भयौ अति सोर सबै बिललाने ।
पसु पच्छी डरे चहु ओर मरे नर नारी औ बाल फिरै बिललान ।।
बिनु पानी कहौ कैसै धीर धरै, टहरै हियरे मनमे बिचलाने ।
अकाल तौ लीलि गयौ सिगरौ उजर्यौ जब बाग तौ का पछताने ।।

श्रीमती त्रिपाठी कौ प्रकृति चित्रण व्यवहार पै टिकौ भयौ है— यथाथ की भाव भूमि के बहुतई समीप है । या मे अशरीरी कल्पनान की कोरी उडान नाय । या मे युगीन भावबोध की चाह है अरू राष्ट्रीय सरोकार की पूर्ति कौ उछाह है ।

कृष्णलीला।—

श्रीमती त्रिपाठी के ब्रजकाव्य म कई छ दन माहि कृष्णलीला क भाव चित्रित भए है। इनै यारे यारे औसरन के लडीब छ द तौ ना लिखे पर फिरऊ गात सरूप मोचारण होरी माखन चोरी जसी बाललीला इनके छ दन कौ वण विषय बने ह। आज क ब्रज के सरूप कू देखिकै कवयित्री कौ मन अकुलाहट त भर जात है। या कू कलिकाल को उत्पात कहिक अपनी विथा प्रकट कर है। थोथे विकास की बात पै कवयित्री की खीझ सुभाविक यथाथ के धरातल कू स्पश कर है। एक ओर फिरक्त्ता स्याम कू ब्रज आइबे कौ निमत्रण दैती दिखाई देय हे -

आगि लग या विकास कथा मुँह पीर उठै मन माहि मरोरी
हास विलास औ रास औ रग भए बदरग सा कैसै सहारी ।।

नहि जात सह्यौ कलि कौ उत्पात सो स्याम तुम्हे करजोर कहोरी।
ग्वालन सग पधारिय श्याम औ स्यामा के सग ग्वालिन भारी ।।

कवयित्री चितित है—हाय श्याम तेरे ब्रिज कौ का है गयो ? मोचारन की ठौर बजार, बनन की ठौर पै पत्थरन कौ अम्बार बासुरी की ठौर डिस्को, जमुना जल मे गिरते भए दूषित नारे परनाले जा कहू ग्वालन दीख हे ना ग्वाल—

ब्रज माहि जमे बन पाथर के सो कदम्ब के कु जन काह भयो री
गऊ चारन ठोर बजार बने बासुरी गई रूठि बज डिस्कोरी ।।

जमना जलधार न दीसै कहू, मचो नार पनारन की बरजारी।
जु कहा भयो स्याम तेरे ब्रज कौ नहि ग्वाल हठीले न ग्वालन भोरी ।।

कवयित्री के भाव कृष्ण भक्ति सौ भरे है, विनकौ चित्त ब्रज अरु ब्रजराज कू छाडि कै कहा जाव। राधा-कृष्ण की एक मनुहार भरी झाकी-

साझ समै ब्रषभानुलली, लखि भौन की फरि मे ठाडौ कन्हाई।
लाज मरी रिसियाय गई, अरु कानन लौ झलकी अरु नाई ।।

स्याम सौ बैन कहै मधुरे, नहि सोहै तुम्हे अस चापलताई।
बासुरी टेरि लगामते आप तौ आपुहि राधिका आवत धाई ।।

दधि–लीला अरु होरी के नौते की नई उद्‌भावना या छन्द मे कितनी कसावट भरी है—

काहे न मानत नन्द के लालन कैसी अनीत की रीत तिहारी।
गागर फोरत बाह मरोरत रोकत हौ नित गैल हमारी ।।
आइ गयौ अब फागुन मास करेगी सबै मनभाई हमारी।
दैगो बनाय तुम्हे बरनी, बरना सी सजावेगी राधिका प्यारी ।।

श्रीमती त्रिपाठी की पैनी कलम सौ लिखे भये कृष्ण काव्य मे मौलिक चिन्तन अरु यथार्थ की भाव भूमि पै सपाट बयानी के दरसन होय। भगवान कृष्ण के बहुआयामी सरूप कू वर्तमान प्रामाणिकता ते जोरबे कौ स्तुत्य काम कवयित्री नै कीनौ है अरु आज हू या के उन्नयन माहि लगी भई हे। भरोसौ है इनकी लेखनी ते औरउ छद या विधा पै लिखे जायेग।

आधुनिक भावबोध –

दिन भर की चैंचैंपैंपैं आपाधापी, स्वार्थपरता नै आम आदमी कू त्रस्त कीनौ है। या ते रसाभास अरु अलंकार विधान की बात बीते जमाने की बात है गई हैं। आम अभावन की कसक अरु नित्तके अरझेटे जीवन की अनिवार्यता होती जा रई है। या ते कवि कौ कल्पनालाक सुपनलोक सौ बन गयौ है बाकू धरती के सुरन कू छेडैबौ, धरती की कसक कू जानबौ बहुत जरूरी है गयौ है। श्रीमती त्रिपाठी नै ललित कवितान कै सगई ब्रजबोध के भावन कू हू अपनी रचनान कौ वण विसै बनाये है। ब्रजभाषा म अबतानू या धरातल पै बहुनई कम लिखौ गयौ है। भरोसौ बनै है कै इनकी कलम सौ आधुनिक भावबोध की औरऊ तेज तर्रार रचना सामई आमिगी। भारत की नारी के पच्छिमी सभ्यता के अनुकरन कू कवयित्री 'सुदेस की बेटी कुभेस मे डोलै।' सवया मे या तरिया ढारै है—

उचाय कै काध, चढाइ कै भौह गुलाय कै होठ गिटापिट बोलै।
बाल कौ लागत लाज न नैकु बनी बिगरैल इतै उत डोलै ।।
सिगरेट के फूकन औ मदिरान के घूटन मे मरजाद कू घोलै।
अब मेरी माय कहा भई हाय, सुदेस की बेटी कुभेस मे डोलै ।।

युवतीन की तरिया आज के युवक के बिगरे भए सरूप कू कवयित्री या तरिया प्रकट करै है—

कौमिक कौ पढिबो दिन रैन सुन किरकट कमेंट्रि सिहान
हर साझ न छोडै सिनेमा कौ देखिबौ लाल भये विडियो के दिवाने ।
सिगरेट न छूटै कबौ कर सौ औ चढाई हसीस चढै असमाने
तन छीन भये दुतिहीन भये मतिहीन भय अब का पछितान ।

गरीबी की मार अरु बाम सिसकतौ बाल बच्चान कौ भरौ पूरौ परिवार श्रीमती त्रिपाठी कू बेदना पहुचाब है—बिनकौ भावुक हृदय कह उठै है—

कबौ आटौ चुक्कौ कबौ दार चुकी दधि दूध मिठाइ वह न दिखा ।
कबौ पोथी नही कबो वस्तौ नही कबौ फीस नही मा रहे खिसियात ।
घर बारी है रार मचाय रही कैसे कीज गुजारौ घर नहि दाने,
सतान की भीर भरी घर म तव चूकि गय अब का पछितान ।

आज सदभाव कू समाज न छाडि दियौ है । याकू मूल कारन बताते भए राष्ट्रीय सरोकारन की उदभाविका श्रीमती त्रिपाठी कहे हे—

जारी नहि पाये तुम मन की कुटेबन कू, नही जरी ऊच नीच भावना विचार ते ।
छाडि सके नहि जात पातन को भेदभाव, नाहि बचे सम्प्रदायवाद के नजारे त ।
उबरि न पाये तुम कूर छरा छ दीन ते काम क्रोधाधिक के कीच सन नार ते ।
राकस अनक तुम पालि लए मानस मे, पय कहा वधु मरे होरिका पजार त ।।

विसभरौ विकीरण, परमाणु युद्ध को मडरातौ आतक आज विश्व की समस्या बनिकै सीस चढि कै बोलबे लगि परे हे । या साच कू कौन ना मानैगौ -

ज्वाल के समुद्र मध्य धधकत धूम जाल, ध्वस के धमाकन सौ भूतल थर्रायगौ ।
विकिरन बिस भारी धूरि छावै मडल मे, चड मातड कौ प्रताप नसि जायगौ ।।
ताप उत्पात पाछें आव जड शीत ऐसौ, धरती सौ प्रान कौ प्रमान मिट जायगौ ।
आत्मा हू कैसै धारि सकैगी नवीन बेस, जीव रूप असन कौ बीज बिलागायगौ ।

ससार मे बढतौ भयौ ड्रग्स (नसा) सेवन आजु अन्तर्राष्ट्रीय समस्या बनि गयौ है । श्रीमती त्रिपाठी न या कू अपने आखरन मे ढारयौ है । बिनै ब्यापारी, सर-कार अरु सेवन करबे वारेन कूँ समयोचित सीख दई है—

ग व्यौपारी बढि रहे, सैतानन की फौज ।
मौत मोल बेचत फिरै, चारि दिना की मौज ।।

का नाथै ग नाग कू, का काढै बिस दंत ।
या बिसधर कौ गरल तौ व्यापौ दसौ दिगंत ।।

बांचिबे कू ग दल्य सौ कोरौ भयौ प्रचार ।
है कठोर बरज्यौ नहीं, डूग तस्कर व्यौपार ।।

या तरिया वा दा द्र यानी बारी श्रीमती त्रिपाठी सौं ब्रजभासा जगत आधुनिक युगानुरूप समस्यान पै औरऊ तेज तर्रार धार बारी रचनान की अपेच्छा करै है ।

अनुवाद--

ब्रजभासा माहि दूसरी भासान ते अनुदित साहित्य की आवश्यकता बहुत समे ते करी जाइ रही ही । कछु विद्वान साहित्यकारन कौ ध्यान या ओर कू गयौ हू—पर इतनी उपलब्धि ना है सकी जा कछु गणना मे आवै । अनुवाद काय कू प्रोत्साहित करिबे कौ औसर अनुपलब्ध रहबो ह या मे कारन रयौ । श्रीमती त्रिपाठी कौ लगाव अंगरेजी साहित्य ते रयौ है । उनकी अंगरेजी ते ब्रजभाषा मे अनुदित रचनान सौ निस्चैई एक अभाव की पूरता भई है । इन्ने सेक्सपीयर, मिल्टन वर्डसवर्थ, शेली, कैम्पबल, हार्पकिंस, डैवीस, टी एस इलियट जैसी कैई कवीन की नामी कवितान कौ ब्रजभासा मे भावानुवाद कीनौ है । इनके भावानुवाद माहि मूल रचनान कौ सौ रसाभासा होय । नमूना के रूप माहि शैली की प्रसिद्ध कविता CLOUD कौ ब्रज अनुवाद बादल' के कछु अंश देखिबे जोग है

लाइ नद नदीसन गहिर बारीसन सो, सीतल फुहार प्यासे पुहपन पै बारे हम ।
चढत दुपैरी सपनीली द्रुम पातियन पै, छाया की मृदुता औ स्यामता उतार हम ।।
मातु गोद झूमतो दिनेश कर चूमती, अलसाई कलियन हित ओस बूँद लावै हम ।
मुक्ता सम ओसकन झारि निज पाखन सौ, कोमल कलीन तन जीवन सरसावे हम ।।

आधुनिक भाव बोधवारी टी एस इलियट की कविता GERONTION कौ 'जराजीरन म' नाम ते इन्नै जो अनुवाद कीनौ बाकी शैली अरु प्रवाह दोनू बेजोड हैं—

पिस रही घरतिन घर-चाकी मै,
चूल्हे सौ जूझती झीकती झाकती,

भरती चायदानी, खोलती अडती सडती नारदानी ।
मैं जरठ बेबस रह्यौ निहार
भीतर सौ गयौ हार
सूझ नही आसा किरन
आस्था विहीन जीवन ।

श्रीमती त्रिपाठी कौ कोऊ प्रकाशित साहित्य नाय । ब्रजभासा कूं उनतें बहुत आसा है । अनुवाद के छेत्र माहि इनकू प्रोत्साहित करनौ जरूरी है । विश्व के नामी अंगरेजी साहित्य के कछु ग्रंथ इनते ब्रजभाषा मे अनुदित कराए जाय तौ ब्रजभासा की श्री वृद्धि है सकैगी ।

—रामशरण पीतलिया

मेरी रचना प्रक्रिया

मैनैं जा कछु थोरौ सो लिख्यौ है बाके आधार पै जे कहनौ बडौ कठिन है कि मेरी रचना प्रक्रिया कैसी है ब को कैसें विकास भयौ। चौ कि मेरी लेखन सक्ति सन 88 तक सुप्तप्राय ही रही। सन 83 दिसम्बर म महाविद्यालय प्रांगण मे ब्रजभासा अकादमी नै एक पत्रकार प्रतियोगिता और कवि सम्मेलन आयोजित कीनौ बाम समारोह के अध्यक्ष के रूप म कछु समस्यापूर्ति मो हू करि दीनी। बिनकी गुनीजनन अरु सुधीजनन नै गुनग्राहकता सम सराहना करि दोनी और आगे भी लिखिबे कौ प्रोत्साहन दियौ। विसेस रूप सो अकादमी अध्यक्ष श्री विष्णुचन्द्र पाठक सचालक श्री गोपाल प्रसाद मुदगल श्री धनेश फलक ने उत्साहवर्धन कीनौ। जा जरिया 2-3 कवि सम्मेलन मे और भाग लीनौ तथा सहृदय श्रोतान नै ब्रजभासा कविता म नयौ आधुनिक सोच कौ स्वागत कीनौ।

मैन कविता लिखिबे की सिच्छा नाय पायी। बस जेई है कि अँगरेजी और हिंदी साहित्य म एम ए करयौ है तासौ साहित्य की कछु समझ है और रुचि है। बचपन सौ घर मै तुलसी की कवितावली के छद देव, मतिराम, घनानन्द, भूषण पदमाकर के छद सस्वर अपने पिता सौ सुने। बा जमाने म जेई मनोरजन हतौ। अन्त्याक्षरी कौ चलन भी भौत हतौ। मोय भी अनेक छद कण्ठाग्र है गये हते। सो कवित्त सवैया की धुन, भासा प्रवाह, माधुरी सब मन म बसी हती। पर मेनै कबहू लिखिबे की कोसिस नाय कीनी।

महाविद्यालय के आयोजन राष्ट्रीय सेवा योजना तानूँ कबहू कव्वाली आदि लिख दीनी एक बेर राष्ट्रीय सेवा योजना की काव्य सध्या ताई मैंनै खडी बोली के कवित्त 'गगा की शिकायत' के लिखे पर जे भी सन 88 माय लिखे। सो मेरौ लिखिबौ कुल 2 3 बरस कौ ई है।

जब समस्यापूर्ति की बात आई तो मानौ पदमाकर के कवित्त सवैया, तुलसी की

कवितावली के छ द देव मतिराम के छ दन की जा गूँज मस्तिष्क म हती ताई की अभिव्यक्ति आज की समस्यान का लै क है गई ।

भरतपुर सौ जयपुर बस मारग मे हरे भरे सरसा क खेत, बगुलान का खेतन के पास जल मे बिचरिबौ, मौरन कौ परिवार समेत फिरिबो, ग्राम बहूगी अरु हरवाहे इनकौ देखि कै सवया बस मैई लिखि लियौ—

बगला कहु सारस डोलत हे कहु मोरन क परिवार लसै ।
कहु घूँघट बारी गवारी बहू कहु सावर गोर किसोर दिसै ।।

मथुरा व दावन फरवरी 89 म गइ तहा जमुना या की दुदशा देखी । सिगरो दृश्य देख क जा तरिया लिख्यौ—

ब्रज माहि जम बन पाथर के सो कदब के कु जन काह भयारी ।
गउ चारन ठौर बजार बने बँसुरी गइ रुठि बज डिस्कोरी ।

जमुना जल धार न दीसै कहू मची नार पनारन की जरजारी ।
जु कहा भयौ स्याम तेरे ब्रज को नहि ग्वाल हटीनन ग्वालन मारी ।।

जाई तरिया स्याम का उराहनौ दानौ हे कि ब बनमाली, बन उपबन बिहारी नाय रहे और म दिरन मे कैद है कै रहि गय । भाव जे कि अब पर्यावरण की रक्षा कान करैगो ?

आज क जुग म दसन के झगडान को जुद्ध सौ पार नाय पाय जा सकै, कारन कि आजु कौ परमाणु युद्ध सवनासी सवग्रासी है जायगौ मा रहैगा सौ कहा है नाहि कीज काहू उपदेश महाभारत को, प्रेम की उपासना का मारग बताय' 'बमक प्रयोगन क बरजन का मानस द 'मेगाडेथ' रोकिबे की जुगुति बताय'

घना अभयारण्य क मेहमान पच्छीन कौ आदस बताते भय विश्व प्रेम का भाव दरसायबे की कोसिस कीनी है । जे पछी मानव की बनाई दसन की सीमा का नाय मानै धरती के एक कोने सौ दूसरे कोने मे चले जाय बिन ने धरती नाय बाँटी— क्योंकि ईसुर की बनाई प्रिथिवी पै सब जीवन को अधिकार है—

बन जीव बनस्पति मागत नाहि सनेह सौ साचि कै जीवन दीजै ।
महि मडल मात्र कुटुम्ब गनै यहि ज्ञान अनुपम पै जु पतीज ।
ब्रह्माण्ड ला पाय पसारि ल्ये तुम भूमि के टूकन क्यो करि कीजै ।
बसुधा को सुधारस पीजै सबै मिलि क्यो न सब मिल प्रेम सो जीजै ।

खाडी जुद्ध सौ जो तरिया पयावरण को विनास धन जन की हानि 'भई सो सब बिदित है जासौ भविष्य के विस्व युद्ध की भीषणता को अनुमान लगायौ जाय सकै ।

कहिबे को तात्पय जे है कि मनें आज की ज्वलत समस्यान कौ अपनौ बिसै बनायौ है । ड्रग जो भयकर नसा है जा बिकराल समस्या पै कछु दोहा लिखे है—

कहिबे कूँ ऊपर चढत गिरत नरक की आगि ।
नव तरुनाई बीच ड्रग फैली ज्यूँ दावागि ।।

समस्यापूर्ति के माध्यम सौ कृष्ण क हैया, पर्यावरण बडौ परिवार, भारत की नारी आदि बिसयन प भोगै पद्न लिखौ है ।

श्री विष्णुच द्र जी पाठक के सुझाव के अनुसार मने अ गरेजी कबीन की कुछ प्रसिद्ध कवितान को ब्रजभासा म अनुवाद कीनो है । शेक्सपीयर को साँचो सनेह (True Love) मिल्टन की ईस कृपा (On His Blindness), वडसवर्थ जगती जजाल बीच (The World is Too Much with us) शेली की बादल (The Cloud) कैम्पबेल की सैनिक कौ सपनौ (The Soldier s Dream) हॉपकिन्स की प्रभू की रीत (Thou Art Just my Lord) डैबीज की फुरसत के छिन (Leisure) अरु टी एस एलियट की 'जराजीरन मैं' (Gerontion) अनुवादमे सवैया, कवित्त, दोहा, हरिगीतिका अरु ब्लैक वस को प्रयोग कीनो है । अ गरेजी की इन कवितान को मैनै अनुवाद ताई चुयौ है चौ कि जे लोकप्रिय कविता हैं तथा सबए देस काल मे जे मानव मन को प्रभावित करै है । एक दो नमूना देखैं—

This sea that bares her bosom to the moon
The winds that will be howling at all hours
And are up gathered now like sleeping flowers

For this, for everything we are out of tune

—W Wordsworth

(From the World is too much with us)

जगती के जजाल बीच उरझ्यौ मनुष्य प्रकृति की सु दरताई भूलि गयौ । उत्तम मनोभाव, सहृदयता भी बाके मन म नाय सचरै । प्रकृति के मनोहारी दस्यन पैहू नाय जाय—मानौ जड है गयौ है । भौतिकता मे फसि क रहि गयौ है—पूरनच द कौ निहारि कै समुद्र उमगै है पै मानो आज का मनुस्य कछू देखई नाय—

नील नभ अ क माहि, पूरन मयक नसैं,
पारावार ताहि सो उमाहि उमगत है ।
झझा के झकोर हहरात ठहरात कबौ,
पाखुरी सिकोरि कबौ सोवन लगत है ।
ऐसी मनहारी बिधि, रचना बिहारी तऊ
हिय मै न मोद सुरलहारी लहरत है ।
नित नव रूप धरै भव म विभव भर
दिव्य सक्ति बदनन, मन उचरत है ।

भक्त भगवान सौ खीझि रह्यौ है कि पापी तौ आन द सुख मे मगन है रहे है ऊरै नैम धम सौ रहिबे वारौ भगत दुख भोगि रह्यौ है—

How wouldst the worse I wonder than thou dost
Defeat, thwart me ? Oh the sots and thrills of lust
Do in spare hours more thrive than I that spend
Sir life upon thy cause

—Hopkins

(From Thou Art Indeed Just my Lord

फूलै फरै मदमत्त फिरै बिहरै सुख सौ जड काम के चेरे ।
मैं मन सौं बच कर्म सौ सेवक, नाथ दये मोहि कष्ट घनेरे ।

भोग बिलास के रग रचे तिनकौ सुख सम्पति है बहुतेरे।
चाकर आपकौ, जीवन अर्पित धर्महि मोघर दुख बसेरे।

ऐसे भाव भगतन के मन माय कबहू आ जायो करै पै अ त मे तो स्वर प्राथना कोई रहै 'प्रान प्रदायक नाय वियूस पियाइ जियावहु मूलन मेरे।" (Send my roots rain)

अनुवाद का उद्देश्य जेई है कि मनुस्य के मन मे प्रेम घगा, वीरता, बैराग, भगती सिगरी धरती पै एक सी है बाकौ भावानुवाद के माध्यम सौ ब्रजभासा मे उतारिबे की कौसिम करी है।

ब्रजभासा मे छ द रचना कौ बडौ महत्व है परन्तु अत्यधिक रीतिबद्धता सौ भावन की अभिव्यक्ति प्रभावित होय सो मोय ठीक ना लगै। कविता कोरी मात्रा वण की गिनती है के न रहि जावै। जैसे मेरा'–4 मात्रा है जाय 'मे को एक मात्रा अथवा लघु पढो जाय सकै। तुलसीदास की कवितावली मे राम ब्याह कौ बडौ सु दर दस्य है—

दूलह श्री रघुनाथ बने दुलही सिय सुन्दर मन्दिर माही।
गावति गीत सबै मिलि सुन्दरि बेद जुवा जुरि बिप्र पढाही।

राम को रूप विलोकति जानकि कक्न के नग की परछाही।
यातै सबै सुधि भूलि गई कर टकि रही पल टारत नाही।

रामको यातैस बै कू भगण के अनुसार पढते समय ध्यान रख लियो जाय। ऐसे अनेक उदाहरण मिलि सकै। दो सवैया मिलाय क उपजाति सवैया भी लिखे गये है। अनुवाद मे अगरेजी की blank verse कौ अनुवाद मैने हिन्दी छदन के रूप मे नाय कियौ। उदाहरण—

मुसकिल है मिलनी छिमा अपराधी मानव कौं।
सीखैगौ नाहि गुरग्यान इतिहास सौ,

भटक्यौ भ्रमजाल मे भूल औ भुलैयन मे,
चलगौ निरतर गन्तव्य नहि पावैगौ।

भय अरु साहस के, जय के पराजय के,
पतन उत्थान के, भटकन सौ चूर चूर,

खण्ड खण्ड बिखरेंगौ । कैसे निखरेंगौ ।
पावैगौ कैस बिसवास, बिमल अ तमन ।

भोगैगौ नतीजौ ईस आज्ञा क उलाघन कौ
बरज्यौ फल चाखन कौ ।

टी एस एलियट को भाव प्रवाह उपयु क्त प्रारार सो अ‍ाक उत्तमता सौ अभिव्यक्त है पायौ है, सो नन जाके ताई कवित्त सवैया आदि को प्रयाग नाय कीनो ।

मेरो अ त मे जेई निबेदन है कि मोय काव्य कला कौ कछू ज्ञान नाय 'मु दरतानि के भेदन की पहिचान नाय, काऊ बिसै ध्यान मै आयौ तौ कछू लिखि दियो सा बिज्ञ पाठक प्रयास मात्र मानै जे प्राथ ना है ।

—इन्दिरा त्रिपाठी

श्रीमती इन्दिरा त्रिपाठी कौ आँग्ल भासा सो अनुदित काव्य

पानी अरु प्रतिभा रोके सो नाय रुक ई कहनावत तोला मासा रत्ती सही ऐ। जामे कारियित्री प्रतिभा होय बू रचनाधर्मी बनि के जगत कूँ भौत कछू ऐसौ दै जाय— जासो अँधेरे माहि उजारौ होतो रहै। प्रतिभा सम्पन्न महान आत्मा कूँ कितेकऊ ऊँचौ पद दै देऔ, काम के बोझ सौ लादि दऔ, कैसौऊ गुरुतर उत्तरदायित्व सौंपि देऔ, तऊ बाकी रचनात्मक छमता रुकि नाय सकै बू तौ सतत कुलबुलायौ करै अर तबई चैन लेब जब कछू सिरजन करि के हलकी है जाय।

श्रीमती इन्दिरा त्रिपाठी आजि के जमान मे महाविद्यालय के प्राचाय पद जैसे काटेन के ताज कूँ पहरि केऊ सिरजनरत रही ऐ ई बिनकी कारियित्री प्रतिभा कौई कमाल ए जा जुग मे कालेज को प्रिंसिपल कविता लिख ले सिरजन रत ले ई तौ एक ई अजूबा ई मा यौ जाय सक। श्रीमती त्रिपाठी ने ई अजूबा करि दिखायौ ऐ। बिककू सुरसुती सेवकन कौ साधुवाद।

जामे कारियित्री प्रतिभा होय, बाम भावयित्री प्रतिभा हू विकसि जाय, निखरि जाय एसौ रचनाधर्मी अपनीऊ लिख अरु औरन की लिखी कौ सही मूल्याकन हू करि सकै। श्रीमती त्रिपाठी ने ब्रजभासा माहि मौलिक सिरजन के सग इतर भासान की अमर रचनान कौ महत्व ह समझ्यौ ऐ। वे अग्रेजी क अध्ययन अध्यापन सो विगत चारि दसकन सो जरी भई ऐ। अँग्रेजी माहि सेक्सपियर मिल्टन, शैली, ब्राउनिंग, कैम्पबैल हौपकि स रौबट ब्रिजैज डेवीज अरु टी एस इलियट जसे महान प्रतिभासम्पन्न कविराज भये ऐ। इनकी कछू रचना तौ अमर सिरजन की स्रेनी मे आवे है। बे सबरे जगत कूँ पुलकित करिबे बारी असाधारन रचना रही जाय सके। सेक्सपीयर की True Love मिल्टन की On His Blindness वडवथ की The world is too much अरु शैली की The Cloud ऐसी ही अमर कविता मानी गई ऐ। श्रीमती त्रिपाठी इनकौ मरम समझ्यौ ऐ अरु इनकौ सरस ब्रजभासा माहि अनुवाद करिके ब्रजबासी भैया-भैनन की भारी सेवा करी ऐ। बिनके द्वारा लिखित ये सबई अनुवाद मूल रचना के रस कीऊ

खण्ड खण्ड बिखरैंगो। कैसे निखरैंगो।
पावैगो कैस बिसवास, बिमल अन्तमन।

भोगैगो नतीजौ ईस आज्ञा के उलाघन कौ
बरज्यौ फल चाखन कौ।

टी एस एलियट को भाव प्रवाह उपयुक्त प्रकार सो अधिक उत्तमता सौ अभिव्यक्त है पायौ है, सो मैंन जाके ताई कवित्त सवैया आदि को प्रयोग नाय कीनो।

मेरो अन्तम जेई निबेदन है कि मोय काव्य कला कौ कछू ज्ञान नाय 'सुन्दरतानि के भेदन की पहिचान नाय, काऊ बिसैं ध्यान मै आयौ तौ कछू लिखि दियौ सो बिज्ञ पाठक प्रयास मात्र मानै जे प्राथना है।

— इन्दिरा त्रिपाठी

श्रीमती इन्दिरा त्रिपाठी कौ आँग्ल भासा सो अनुदित काव्य

पानी अरु प्रतिभा रोके सो नाय रुक ई कहनावत तोला मासा रत्ती सही ऐ। जामे कारियित्री प्रतिभा होय बू रचनाधर्मी बनि के जगत कूँ भौत कछू ऐसौ दै जाय— जासो अँधेरे माहि उजारौ होतो रहै। प्रतिभा सम्पन्न महान आत्मा कूँ कितेकऊ ऊँचौ पद दै देऔ, काम के बोझ सौ लादि देऔ, कैसौऊ गुरुतर उत्तरदायित्व सोपि देऔ, तऊ बाकी रचनात्मक छमता रुकि नाय सकै बू तौ सतत कुलबुलायो करै, अर तबई चैन लेब जब कछू सिरजन करि के हल्की है जाय।

श्रीमती इन्दिरा त्रिपाठी आजि के जमाने मे महाविद्यालय के प्राचाय पद जैसे काटेन के ताज कूँ पहरि केऊ सिरजनरत रही ऐ ई विनकी कारियित्री प्रतिभा कौई कमाल ए जा जुग म कालेज को प्रिंसिपल कविता लिख ले सिरजन रत ने ई तौ एक ई अजूबा ई मा यो जाय सक। श्रीमती त्रिपाठी ने ई अजूबा करि दिखायौ ऐ। बिककू सुरसुती सेवकन कौ साधुवाद।

जाम कारियित्री प्रतिभा होय, बाम भावयित्री प्रतिभा हू विकसि जाय, निखरि जाय ऐसौ रचनाधर्मी अपनीऊ लिख अरु औरन की लिखी कौ सही मूल्याकन हू करि सक। श्रीमती त्रिपाठी ने ब्रजभासा माहि मौलिक सिरजन के सग इतर भासान की अमर रचनान कौ महत्व ह समझ्यौ ऐ। वे अग्रेजी के अध्ययन अध्यापन सो विगत चारि दसकन सो जुरी भई ऐ। अग्रेजी माहि सेक्सपियर मिल्टन, शली, ब्राउनिंग, कैम्पबैल हौपकि स रौबट ब्रिजज डेवीज अरु टी एस इलियट जसे महान प्रतिभासम्पन्न कविराज भये ऐ। इनकी कछू रचना तौ अमर सिरजन की स्रेनी मे आवे है। ब सबरे जगत कूँ पुलकित करिबे बारी असाधारन रचना रही जाय सकें। सेक्सपीयर की True Love मिल्टन की On His Blindness वडवथ की The world is too much अरु शैली की The Cloud ऐसी ही अमर कविता मानी गई ऐ। श्रीमती त्रिपाठी इनकौ मरम समझ्यौ ऐ अरु इनकौ सरस ब्रजभासा माहि अनुवाद करिके ब्रजबासी भैया-भैनन की भारी सेवा करी ऐ। बिनके द्वारा लिखित य सबई अनुवाद मूल रचना के रस कीऊ

रच्छा करि ले अरु भासा, सली छ द आदि के सिल्प कौसल की दृष्टि सो ऊ मूल रचना सो काहू तरिया घटिया नाय दीखें। अनुवाद भाव अरु कला दोऊन की दष्टि सो सत प्रतिसत सही भयौ ऐ। श्रीमती त्रिपाठी ने छ द बद्ध अरु छ द मुक्त दाऊ तरिया के अनुवाद करिके अपनी परम्परागत अरु प्रगतिसील छमता सिद्ध करि दई ऐ। अनुवाद करिबौ भौत दुरुह काम मान्यौ जाय। मौलिक रचना रचिबे म इतेक जोर नाय पर। बू तौ काऊ चपल निझर के ताई आपई झरिबे लगि जाय। परि अनुवाद करते सम भौत सजग रहना परै। कवि के भाव अरु विचार सो जुरनो पर साधारनी करन की प्रक्रिया सो गुजरते भय बाई भावभूमि पै पहुँचनो परै जा पै चढि कें मूल कवि ने रचना रची ऐ।

श्रीमती त्रिपाठी न आग्ल भासा क काव्याम्बुधि म बूडि बूडि क ये रतन निकार ये। ये बिनकी आत्मा म रमि के बिनकी चेतना अरु अनुभूति क अग बनि गये एँ। या ऊँची भावभूमि पै भासा भेद मिट गयौ ऐ सुद्ध अनुभूति क ऊँचे धरातल पै भासा भेद कहा टिक सक। 'मधुमती भूमिका' पै माधुय अरु प्रकास कौ साम्राज्य बसि जाय। म्हा भासा तौ अनुभूति की चेरी बनि के पीछ पीछ भागती फिरै। श्रीमती त्रिपाठी ने ये सबई अनुवाद बाई ऊँची प्रकासधरा प अवस्थित है कै करे ऐ। मूल कवि की अनुभूति मयो। वरु आग्लभासा मे उमगी हती इनकी आत्ममात साधारनीकृत अनुभूति ब्रजभासा माम्ही उमगि परी—इतेकई अ तर भयौ ऐ। मूल कवि ने जा काव्यसिसु प्रजनन पीर सही हती, बू अनुवाद कर्त्री कूँ हू सहनी परी—यामे नेकऊ ससय नाय—

> जा पहुच वा भूमि पै, एक मक ह्वै जाय।
> अनुवादक बू ही बन, प्रसवपीर दोहराय॥

अमर आग्ल कबीन के बहुमूल्य जीवन रत्न सौ ज म जन्मा तर के ताँई स चित अरु सुरक्षित या काव्य कोस कूँ ब्रजसनेही जनन कूँ सौपि के इ दिरा भैन ने जो उपकार कीनो ऐ-बा के ताँई —

> ब्रजबासी उपकृत भये सग न दें य बैन।
> ब्रज सनेह पीयूस मे, पगी रहो दिन रैन॥

—डॉ० रामकृष्ण शर्मा

श्री वरुण चतुर्वेदी
खादी भडार के ऊपर,
मथुरा गेट बाहर
भरतपुर
आयु–40 बरस

काव्य कला कौ मर्मज्ञ

दी है निपुनाई ब्रजराज जाहि गौरब सौ,
काव्य की कला कौ ममज्ञ और भेदी है।
भेदी है दुरूहता कौ भासा की अनूपता कौ,
कोमलकान्त पदावली अनुष्ठान वेदी है।।
वेदी है रचाबै गीत, पावस निदाघ शीत,
बन्यौ रहै प्यारौ मीत सुघराई दे दी है।
दे दी है सरसुती नै घुट्टी मे मिलाय सुधा,
पूत जै शकर कौ वरुण चतुर्वेदी है।।

श्री वरुण चतुर्वेदी

परिचै

जनम—16 फरवरी 1951

जन्म स्थान	भरतपुर
पिता कौ नाम	श्री जयशकर प्रसाद चतुर्वेदी
माताजी कौ नाम	श्रीमती सरस्वती देवी
काव्य गुरू	पिताश्री जयशकर प्रसाद चतुर्वेदी
शिक्षा	एम ए
व्यवसाय	अधिकारी सिमको बैगन फैक्ट्री
विसेस	अकासवानी जयपुर, दिल्ली, मथुरा, आगरा जोधपुर, बीकानेर ते तथा दूरदसन दिल्ली ते कविता प्रसारित। विभिन्न पत्र पत्रिकान मे लेख।
वतमान पतौ	खादी भडार के ऊपर मथुरा दरवाजौ, भरतपुर

कवि सम्मेलन के हास्य व्यग्यकार श्री वरूण चतुर्वेदी

स्वाफ स्वाफ त्रो टूक अपनी बात बेबाक कहबे बारे श्री वरूण चतुर्वेदी जहा जाने पहचाने जाएँ वहा हास्य अरु व्यग्य रचनाकार के रूप मे जन जन के बीच सराहे जाएँ। बिनकी हास्य व्यग्य रचनान मे आम जनता के ताई सहानुभूति है, प्यार है अरु दद है। तबई तो श्री वरूण की रचना बरबस सबकू बाध ल। बिनकी रचनान कू सुनिकै लोग बँधे चल आवै मन सौ सुनै अरु डूब जाय। का मजाल है कै कोऊ उठि कै चल दे। कवि सम्मेलन म लौगन कूँ अपनी बात सुनिबे कू मिलै। अपने सवालन को उत्तर मिलै। अपन दद की बात सुनाई परै तौ ऐसौ कौन हेगौ जो सुननौ पसद नही करैगौ। इन सिगरी बातन कू कोऊ हँसाय हसाय कै सुनाबै तौ लोग ज्यादा सुननौ पसद करिगे। जनता कूँ लूटिबे खसूटिबे वारेन की कलई काऊ खोल तौ मन सौ सुनिगे। याही तरिया आज क युग की समस्यान कू सबन के सामई परोसै तौ जरूर रूचिकर लागिगी। श्री वरूण युगबोध करायत्र म तौ सिद्धहस्त है। हाथ कगन कूँ आरसी का। बिनकेई एक लोकगीत म बानगी रूप म देखो—

का का होय आज भारत म सुनौ ध्यान धर भाई।
ऊँचे भाव नाज के देखे, सोची का खाविगे।
नाज खाय तौ घर के थारी लोटा बिक जाविगे॥

या कारन हम कन्ट्रौल की झट दुकान पै आए।
भीर दूर ते देखी भैया, हमै पसीना आए॥

एक-एक पै तीन तीन ज्यो मधु मक्खिन कौ छत्ता।
हाल भयौ बेहाल फट गए सिगरे कपडा लत्ता॥

जीएँ कैसै या कलियुग म कमर तोरि महँगाई।
का का होय आज भारत मे सुनौ ध्यान धर भाई॥

महँगाई की मार ते कौन बचौ है फुटपाथन पै रहबे वारे तौ परेसान हतई है। निम्न वग के सग मध्यम वग हू द्वै पाटन के बीच मे फँस रह्यौ है। ये वर्ग जितेक महँगाई ते

श्री वरुण चतुर्वेदी

परिचै

जनम—16 फरवरी 1951

जन्म स्थान	भरतपुर
पिता को नाम	श्री जयशकर प्रसाद चतुर्वेदी
माताजी को नाम	श्रीमती सरस्वती देवी
काव्य गुरू	पिताश्री जयशकर प्रसाद चतुर्वेदी
शिक्षा	एम ए
व्यवसाय	अधिकारी सिमको वैगन फक्ट्री
विसेस	अकासवानी जयपुर, दिल्ली, मथुरा, आगरा जोधपुर, बीकानेर ते तथा दूरदसन दिल्ली ते कविता प्रसारित। विभिन्न पत्र पत्रिकान मे लेख।
वतमान पतो	खादी भडार के ऊपर मथुरा दरवाजो, भरतपुर

कवि सम्मेलन के हास्य व्यग्यकार श्री वरूण चतुर्वेदी

स्वाफ-स्वाफ ना टूक अपनी बात बेबाक कहबे बारे श्री वरूण चतुर्वेदी जहाँ जाने पहचाने जाए वहा हास्य अरु व्यग्य रचनाकार के रूप मे जन जन के बीच सराहे जाए । बिनकी हास्य व्यग्य रचनान मे आम जनता के ताई सहानुभूति है, प्यार है अरु दद है । तबई तो श्री वरूण की रचना बरबस सबकू बाध ल । बिनकी रचनान कू सुनिकै लोग बरे चले आव मन सौ सुनै अरु डूब जाय । का मजाल है कै कोऊ उठि कै चल द । कवि सम्मेलन मे लोगन कूँ अपनी बात सुनिबे कू मिलै । अपने सवालन कौ उत्तर मिलै । अपने दद की बात सुनाई परै तौ ऐसौ कौन हेगौ जो सुननौ पसद नही करैगौ । इन सिगरी बातन कू कोऊ हँसाय हँसाय कै सुनाबै तौ लोग ज्यादा सुननौ पसद करिगे । जनता कूँ लूटिबे खसूटिबे वारेन की कलई काऊ खोलै तौ मन सौ सुनिगे । याही तरिया आज के युग की समस्यान कू सबन के मामई परोसै तौ जरूर रूचिकर लागिगी । श्री वरूण युगबोध करायबे म तौ सिद्धहस्त है । हाथ कगन कूँ आरसी का । बिनकई एक लोकगीत म बानगी रूप म देखो—

का का होय आज भारत म सुनौ यान धर भाई ।
ऊचे भाव नाज के दखे, सोची का खाविगे ।
नाज खाँय तौ घर के थारी लोटा बिक जाविगे ।।

या कारन हम कन्ट्रोल की झट दुकान पै आए ।
भीर दूर ते देखी भैया, हमै पसीना आए ।।

एक-एक पै तीन तीन ज्यो मधु मक्खिन कौ छत्ता ।
हाल भयौ बेहाल फट गए सिगरे कपडा लत्ता ।।

जीएँ कैसे या कलियुग मे कमर तोरि महँगाई ।
का का होय आज भारत मे सुनौ ध्यान धर भाई ।।

महँगाई की मार ते कौन बचौ है फुटपाथन पै रहबे वारे तौ परेसान हतई है । निम्न वग के सग मध्यम वग हू द्व पाटन के बीच मे फँस रह्यौ है । ये वर्ग जितेक महँगाई ते

दुखी है बाते ज्यादा या बात ते दुखी है कै जो कल तक फटे हाल हे मत्री बनते ई कछू ते कछू है गए। देखौ तौ सही—

मिक्की क्का के पडौस मे मत्री जी की कोठी।
चोरन के डर ते फाटक मे लगी तान है मोटी।
गवरमि ट ते पायौ बँगला लगै छदाम न भाडौ।
माल मुफत कौ खाय खाय कै बनगौ पट नगाडौ।
मत्रीजी नै अपने बच्चा कान्वेट बठारे।
पास पडौसी सब बच्चन सौ भेज दिए हे यारे।
मत्री जी नै एक फौन म नई कार मँगवाई।।

पासे-चित्त पर जाय तौ पौबारह कार कोठी फोन सा कछू। कहूँ भाग नै साथ नही दियौ तौ चारो खाने चित्त आनौ परै फिर धाबी को कुत्ता घर कौ रहै न घाट कौ। जुआ मे हारे हुए ज्वारी की नाई एक हारे हुए नेता की आप बीती सुनौ—

नेतागीरी के चक्कर मे मेरे यार मार ग्ये पत्थर ते।
बीबी रोजाना रही है ताने मार, निखट्टू निकर घर ते।।
जब ते मै चुनाव मे हारौ डालू मारौ मारौ।
या चुनाव नै मोकू धोबी को कुत्ता कर डारौ।
भैया नाय मिली ता दिन ते घर म तरिया दार।।

घर खीर तौ बाहर खीर होय। घर मेई फटकार मिलै तौ बाहर कौन पूछै। घर मे तो रौटीन के लाले पर जांय तो बाहर चौखटा उतर जाय।

याही तरियाँ श्री वरूण ने एक गीत मे "हम चौडे सडक सकरी" मानकै चलबे वारेन कूँ खरी खरी सुनाई है। ऊपर थूकबे वारे, अपने कूँ बाकौ बीर समझबे वारे कूँ जो चेतावनी दई है बिनकेई सब्दन मे सुनौ।

भैया सब जग जानै, समय बडौ बलबान रे।
समय परे अनगिन बीरन नै, मूँछन मे अटा दीए।
घौंटुन के बल गिरे, समय नै सब अटा ढीले कीए।
महल मिले माटी मे अनगिन, चमन भए बीरान रे।

गव करबे के ताई दुनिया मे अनेक चीज है। काऊ ए धन कौ गरब है। काऊ ए नाती बेटान कौ गरब है। काऊ ए रूप कौ गरब है। काऊ ए कोठी कारन कौ गरब

है । काऊ खेत कुआॅन कौ गरब है । एक बैयर-ए अपने खसम कौ थानेदार हैबे कौ गरब है । बू मौहल्ला मे ऐसौ चलै जैसे मटर पै अधर चलै चाकी । श्री वरूण नै थानेदार की घरवारी तेई छटकी द दैकै सुनवाई है—

जाकौ मैया भयौ हे थानेदार मोरी बहना, सब दुनिया है बाके ठैंगा पै ।
धरती पै न आबै डोल अम्बर मे ।
जाकौ खसम कमाबै कारे कम्बर मे ।
जाकी फौज है फुलका फार मेरी बहना
सब दुनिया है बाके ठैंगा पै ।

कारे कम्बर की कमाई के का ठिकाने ? क्या करारौ व्यग्य है । "बाकी फौज हे फुलका फार" कहकै एक तीर ते दो सिकार किए हे । थानेदारी को कितेक घमड है सीधे मुँह बात नाय कर रही सबन कूँ सीग बताय रही है । सही है कवि नै लोकरूचि कौ कितेक सटीक वणन कियौ है ।

कवि सम्मेलन के मच पै हसायबे के ताई श्री वरूण जी प मसालौ काफी है । पुरातन कथानकन कू अधुनिक परिवेस मे लोक धुनन मे उतार कै जन जीवन के मन कूँ जीत लियौ हे । माखन मिसरी के ताई कान्हा कूँ बुलायबे मे कोऊ तुक दिखाई नाँय परै । एक तो माखन मिसरी के दरसन दुलभ है रहे है दूसरे टेस्ट हू बदल गए । युग के नए स्वादन कौ लोभ दिखाय कै गूजरी कन्हैया कूँ बुलाय रही है । एक लोक धुन पै आधारित लोकगीत की कछु पक्ति देखौ–

कान्हा काफी पीबे आ जइयो तू सजा कूँ घर पै ।
तू सजा कूँ घर पै, मम्मी पापा ते मत डर पै ।।
गरम गरम तोकू कॉफी पिबाउँगी ।
ऊपर ते नमकीन खवाउँगी ।
नक प्रेम सौ भोग लगाय जइयो ।। तू सजा

ई बात कान्हा और गूजरी की ही नाय । आज के समाज के वातावरण कौ जीतौ जागतौ चित्रण है । गल फ्रैन्ड नौते पै खुल कै काफी के ताई बुलाबै बे हिचक बे रोक टोक । याए आज की सस्कृति मे फारवडनैस कौ सुभ लच्छन मानै । याते दूर रहबे वारे ए दकिया नूसी अरु लकीर कौ फकीर मानै आगै चलकै का परिनाम निकसै याकी चिन्ता नाँय करै ।

श्री वरूण न हास्य बखेरबे के ताई समाज के ऐसे वग चुने हैं। जिनकौ नाम नेते ही हँसी के फब्बारे अपने आप फूट परै। गजेपन ते दुनिया परेसान है सहरन मे इनकी फसल अच्छी है। गजौ बिचारौ प्रभु सौ अरदास करै–

प्रभु मेरौ एक काम तौ करौ
मै हूँ भगत तिहारौ गजौ, मेरौ कष्ट हरौ।
कँऊ साल सूखा मे बीते कर देऔ हरौ भरौ।
साबुन तेल कौ स्वाद भूच गयौ मन म चाव भरौ।।

मेरी इच्छा पूरन कर देऔ नही पन जात टरौ।
मरे बार नाय तौ सबकी समतल भूमि करौ।।

गजौ वाइ तरिया कामना अरु अरदास कर रह्यौ है जैम– 'रॉड के पैर सुहागिल लागी हैजा भैना मो सी"। ई मनुष्य की प्रकृति है याकूँ कवि वरुण नै बहुत ही सहज रूप मे प्रस्तुत कर दियौ है।

दूसरी ओर अधिक वारन वारौ गजौ होनौ चाह रहौ है। दीना कौ लाल सोने के खिलौनान कूँ मचल रहौ है तौ राजा कौ लाल माटी के खिलौनान के ताई हठ कर रह्यौ है दूसरे की थारी मे घी ज्यादा लगै। दूसरे क हाय म फरवगै हल्कौ लगै। ई नीति की बात है पर सबसौ बडी बात है जो जाके पास है वाने वू खुस नाय। हर एक वतमान सौ दुखी है तबई तौ घने वारन वारौ कह रह्यौ है —

"प्रभु मोहि गजौ आज करौ
एक दिना गुस्सा मे भरिकै काहू त जूझ परौ।
बार पकर वानै दीने चक्कर नाली मे जाय परौ।
गु डन के चक्कर मे मोकूँ पुलिस नै आय धरौ।
चौरायौ बन गयौ चाद पै देखै जग सिगरौ।
एक दिना जलती बीडी नै मोपै जुलम करौ।
बार जरे सो जरे सग मे मूँड मेरौ पजरौ।।

हास्य व्यग्य की रचनान मे कोरी हँसाइबे की बातई नायँ। आधुनिक समस्यान कौ समाधान कियौ है। परिवार कल्यान की बात या तरियाँ सौ कही है —

पैदा करि करि कै सन्तान, बलम तैनै फौज बनाई रे।
फौज बनाई रे देख कितनी महँगाई रे।।

कवि सम्मेलन के मच पै इन रचनान की ऐसी धूम मचै कै चारो ओर सौ फिर-कत्ता और ओजू की ऊँचे सुरन मे आवाज आवै । या कडी मे श्री वरूण जी की पैरौडी औरऊ बजनदार है । पैरौडी सुनिकै तौ छोरा छोरी मरद वैयर सब झूम उठै कविता कौ सीसक नाम लैतेई लोगबाग लोटपोट है जाएँ । एक पैरौडी कौ सीसक है—बीबी के बेलन की आरती । वाके एक दो छन्द देखौ—

मैं तो आरती उतारूँ रे बीबी के बेलन की ।
पीछै परी है मेरे च्यो खामाखा ।
करियो दया तू मेरे लल्लू की मा ।
बडी ममता है, बडौ प्यार, बीबी के बेलन की ।।

रहै चौबीसौ घटा बहार बीबी के बेलन मे ।
मिलै चटनी, मुरब्बा अचार बीबी के बेलन मे ।
छिपी रोटी उरद की दार बीबी के बेलन मे
दीप धरूँ धूप धरूँ प्रेम सहित भक्ति करूँ ।
झाकी निहारू रे, ओ बाकी झाकी निहारू रे —मै तौ

या तरिया सौ श्री वरूण चतुर्वेदी हास्य व्यग्य की रचनान सौ एक ओर मनोरजन कर रहे है, हसा रहे है तौ दूसरी और समाज की कुरीतीन पै चोट कर रहे है समाज मे फैले अनाचार, भ्रष्टाचार आदि कू उखाड फेकबे के ताई तीखे व्यग्य दै रहे है । इनकी हास्य व्यग्य रचनान कौ प्रभाव दिन दूनौ रात चौगुनौ बढ रह्यौ है, इनकी माग बढ रही है । ब्रजभाषा साहित्य आपकी ओर सौ आसावान है । एक कमी की पूर्ति आपकी रचनान सौ है रही है । बाहर की चोटन सौ ज्यादा भीतर की चोट हाय बुहू सलीके सौ लहू नही निकसै अरू चोट है जाय । यामे सफलता सौ साथक रचनान की उपलब्धि श्री वरूण जी की है ।

—गोपाल प्रसाद मुद्‌गल

———

साक्षात्कार श्री वरुण चतुर्वेदी सौ

☐ आपन कविता लिखिबौ कब सौ प्रारम्भ करौ ?

सन 1965 मे जब मै ग्यारहवी कक्षा मे पढतौ तबते कविता करबे कौ श्री गनस है गयौ । पर तब मैने दो चार कविता ही लिखी । बा समै कविता प्रतियागिता भयौ करती । श्री गोपेश शरण शर्मा आतुर ये आयोजन करायौ करै हे । या तरिया बे प्रोत्साहित करौ करै हे । हा विधिवत कविता लिखिबौ सन 1969 सौ भयौ । मै थोरौ बढ़ हू गयौ । थोरौ पढ हू गयौ । बा समै मै बी ए मे पढतौ । तब मेनै 21-1 69 कूँ पहली रचना लिखी । पिता श्री श्री जयशकर प्रसाद जी कविता खुद लिखौ करै है । बिन की रचना प्रक्रिया देखौ करै हौ । मेरी मेया सरस्वती देवी कूँ व अपनी रचनान नै सुनायौ करै हे । मै हू सुनौ करै हौ । या तरिया कविता रचबे के ताई अनुराग मेरे मन मे जागौ ।

☐ आपकी प्रारम्भिक रचनान की बानगी का है ?,

प्रारम्भ मे मैं श्री हिन्दी साहित्य समिति मे कबि सम्मेलन सुनिबे कूँ जाऔ करै औ । ता समै समम्या पूर्तीन कौ बडौ जोर हौ म ता समय ब्रजभाषा अरु खडी बोली मे ज्यादा अन्तर नाय जानतौ सोई कहूँ खडी बाली के सब्द आ जाते । एक समै 'भारत निराला है' समस्या निकसी । या की समम्या पूर्ति मैनै या तरियाँ सौ करी—

एक दिन भोर भऐ, भनक परी है कान,
भज्यौ भगवान औ सँभारयौ कर भाला है ।

भक्त है भवानी कौ भैरवी करैगौ नृत्य,
भोले सौ भगडी भुजगन की माला है ।

भाजि कै मिटयौ जो जाइ, भाजि गए सत्रु कहू
भूलि गई मैया भभक उठी ज्वाला है ।

भानु सौ है तेज, भाल ऊँचौ कियौ जननी कौ,
भर्‌यौ भूमि भक्तन ते, भारत निराला है ।

☐ आपनै समस्यापूर्ति मे कब सौ भाग लैबौ प्रारम्भ करौ ?

सन् 1969 मे समस्यापूर्ति गोष्ठीन मे भाग लैबौ प्रारम्भ करौ । एक समस्या निकसी "आवै है" याकी पूर्ति या ढब सौ करी—

भाग अजमाइबे कौं, पैसा बनाइबे कौ, लाटरी के टिकट निज सग मे जो लावै है ।
लोगन दिखायबे कौ भजन जो रोज करै मन मे भगवान नाहि भक्तन पद पावै है ।
बिनती कर जोर करै पायन म गिरयौ पर, उपर के मन सौ जो रामगुन गावै है ।
बन्यौ है बगुला भगत काम के निकासबे को, रटत रहत लाटरी नम्बर कब आवै है ।

☐ समस्यापूर्तीन ते आपकू का लाभ भयौ ? सब सौ प्रिय समस्या पूर्ति कौन सी है ?

समस्यापूर्ति के माध्यम सौ मोय लिखिबे की ललक बढती रही । जब कोऊ समस्या निकसती तौ मन उतै ही लगौ रहतौ । मन एकाग्र करबे के ताई समस्या लाभ प्रद रही । फिर समस्या अधिकतर ब्रजभापा मे निकसती यासौ ब्रजभाषा मे लिखिबे मे हाथ मजतौ गयो । अच्छी समस्या पूर्ति पै स्रोतान की तारीन की गडगडाहट उत्साह दुगनौ कर दैती । कछु दिना पहलै अकादमी बनबे पै समस्यान की परम्परा फिर चल परी । याही क्रम मे गगापुर मे एक ब्रजभाषा कौ कवि सम्मेलन भयो जामे समस्या निकसी 'मारे हे ।' याकौ निर्वाह यो करौ—

मौह ते उडाय धुँआ, चाद मे परे है जुआँ, सिकुरि सिकुरि तन है गए छुआरे है,
चढत जवानी मे सफेद है गए है बार, दावत हकीकत कराय लेत कारे है ।
हाथ और पाव दिन रात कीरतन करें हाकत हे डीग मानौ बादर से फारे है,
नापत सडक रोजगार की तलास मे, ये फैसन के मारे या मुकद्दर के मारे है ।

☐ आकासबानी पै आपनै कब सौ जानौ प्रारम्भ करौ ?

सन् 1980 सौ मैं आकासवानी सौ जुर्‌यौ भयौ हूँ । पहली रचना 8 2 80 कूँ 'गीतन भरी साझ' मे मथुरा सौ प्रसारित भई । रचना के बोल यो हे—

भैया सब जग जानै समै बडौ बलवान रे ।

जो नर साच यायि नाय मानै, चाल समै की नाय पहचानै,
मूरख कहत जहान रे।। भैया सब जग

पल मे रक बनत है राजा पल म राजा रक बनै,
बात समै की धरती रज धर छाडि आकास तनै
पल भर मे मिल जाय धूरि मे, बडे बडे धनवानरे । भैया

☐ आप हिन्दी अरु ब्रजभाषा दोउन मे रचना कर रहे है। आपकू कौन सी भाषा मे रचना करबे म सुविधा लगै ?

मोय तौ घुट्टी तेई ब्रजभाषा पीबे कूँ मिली है। ब्रजभाषा म बचपन बीतौ है। याही मे रचौ बसौ हूँ ब्रजभाषा मे ही मोय लिखिबौ भाब। खडी बोली हिन्दी म तौ सायास लिखनौ परै पर ब्रजभाषा तौ अनायाम ही मेर मुख सौ निकसै। स्यात याकौ कारन जि रह्यौ होय कै ब्रजभाषा मेरी रोजमर्रा की बोलचाल की भाषा है। घर म दिनभर यही तौ बाली जाय।

☐ आपन लोकगीतन के माध्यम सौ कौन सौ पक्ष उजागर करौ है ?

नर अरु नारी मे भारतीय सस्कार जगाइबे कौ प्रयास कियौ है। यदि नर नारीन मे भारतीय सस्कार जाग जाइगे तौ भारत फिर अपनौ पुरानौ गौरव पा सकैगौ। अपने लोक गीतन मे कुसस्कार छोडबे पै अरु सु सस्कार ग्रहन करबे पै जोर दियौ है। उदाहरन कूँ सराब की लत छुडायबे के ताई लिखो है—

'घर की नैक राखौ ध्यान, नसा करबो छोडौ।
पिय बहुत निकस गए दूर, राह अपनी मोडौ।'

☐ पैरोडी लिखिबे की प्रेरणा आपकूँ कसै मिली ? आपकी सबसौ अच्छी पैरोडी कौन सी है ?

पैरोडी लिखिबे की प्रेरना मोय काहू सौ नाय मिली। मेरे मन मे अपने आप पैरोडी लिखिबे की भावना जागी। भगवान की किरपा ते गरौ चोखौ है अरु पैरोडी लिखिबो आसान है। हा पिता श्री हास्य व्यग्य लिखौ करै हे। मोय हास्य व्यग अच्छौ लगतौ ई मोय विरासत म मिल्यौ। पैरोडी की विधा हास्य अरु व्यग्य पै ही आधारित है। या तरिया अपने विचारन कूँ परौडी मे अभिव्यक्त करबे लग्यौ।

बैसैं तौ मेरी सिगरी पैरोडी सराही जाएं कौनसी अच्छी बताऊँ फिर ऊ मोय मेरी या पैरोडी के बोल अच्छे लगैं—

चूम बराबर चूम रे चमचे, चूम बराबर चूम। तू अफसर के जाकर घर पै, बनकर कुत्ता घूमरे चमचे—

☐ कवि सम्मेलनन मे आपकी सफलता को का राज है ?

कवि सम्मेलनन मे सफलता कौ राज मा सरस्वती कौ आसीर्वाद है। वसैं अच्छी रचना अरु अच्छौ गरो ताके ऊपर अच्छी प्रस्तुति सोने मे सुहागौ कौ सो काम करै। मेरी एक धारणा आज के कवि सम्मेलन नै देखिकै बनी है। आज रचना कूँ 40% अक दिए जाएँ अरु प्रस्तुति कूँ 60%। मीठे गरे ते गाय कै कोऊ सुनाबै तौ ब की सों कमी ढक जाय अब आप खुद समझ लेऔ कै आजकल के कवि सम्मेलन म सफलता का का राज है। अच्छौ गरौ नही होय, अच्छी प्रस्तुतीकरण नहीं होय तौ अच्छे अच्छे वर रह जाय अरु गावे वारे या अच्छी प्रस्तुती करबे वारे बाजी मार लै जाय।

☐ आज के कवि सम्मेलन के कवि का तरिया की रचना लिखे जासौ जन जन कौ कल्यान होय ?

आज देस म अलगाव है रह्यौ है। भटकाव है। एकता के सूत्र मे बाधबे की रचना लिखनौ जरूरी है। सामाजिक कुरीतीन कूँ दूर करबे वारी रचना नई पीढी के ताई औरऊ जरूरी है जासौ चरित्र निर्माण होय। पसा कमाबे के ताई फूहड हास्य अरु अस्लील रचनान की कतई जरूरत नाएँ। स्रोतान कूँ चइए कै ऐसे फूहड अरु अस्लील लिखिबे बारे कवीन कूँ मच पैंई पकड कै अरु घमीट कै लै जाएँ। बिनकौ सामाजिक बहिष्कार करैं। पर याके काजै दम चइए। सो दिखाई पर नाय। कवि सम्मेलनन म ऐसौ हैबौ लग जाय तौ कल्यान है जाय।

☐ आगै आबे बारी पीढी के ताई आप का कहनौ चाहौ ?

मेरी तौ ईसुर ते ई कामना है कै आइबे बारी पीढी अच्छे सस्कार लैकै आबै। मै बार बार अच्छे सस्कारन की बात या मारैं कर रह्यौ हू कै अच्छे सस्कारई देस कूँ गडढा मे जाइबे ते बचा सकै। आज सब सौ अधिक पतन भयौ है तौ चरित्र कौ भयौ है। भाव अगर गिरौ है तौ आदमी कौ ही गिरौ है। या चरित्र कूँ ऊँचौ उठाइबे की जिम्मेदारी नई पीढी की है। मेरी कामना है कै मा सरस्वती नई पीढी के ताई सद्‌बुद्धि दे।

☐ अकादमी की प्रगति के ताँई आप अपने विचार बताएँ ?

अकादमी की प्रगति तबई होय जब सब मिलिकै टीम की भावना सौं काम करें। जैसौ तालमेल एक अच्छी टीम मे होय वैसौ तालमेल अकादमी मे होय। यदि ऐसौ नही होयगौ तौ अच्छे अच्छे खिलाडी पिटकै घर लौट आवैंगे। टीम कौ अथ तौ जानौ ही हौ एक खिलाडी सकट मे होय तौ सब एक जुट है कै बाए बचावे पै टूट परै।

—बृजेश चतुर्वेदी

हास्य रस के तरुण कवि वरुण चतुर्वेदी

मा पर पूत पिता पर घोरा,

बहुत नही तौऊ थोरा थोरा ।

की लोकोक्ति हमारे चरित नाइक वरुन पै पूरी तरिया ते घटित हौय्यै । आदमी कौ समूचौ विकासई मेरी समझ मे द्वै वातन पै निरभर करै है एक तौ बस की परपरा अरू दूसरो बाकौ मिलिवै बारौ घर अरु बाहिर कौ वातावरन ।

वरुन को जनमई ऐमे बश मे भयौ जिन लोगन कौ ब्रजभासा अरु ब्रज सस्कृति सौ सदा तेई बडौ भारी लगाव रह्यौ है जाइ कारन ते वरुन की कवितान मे ब्रजभासा कौ सहज मिठलौनापन है । कवी वरुन पै सरसुतीऊ बडी प्रसन्नै, कवि सम्मेलनन मे कवि कौ रूप लावण्य सुर की मिठास और भासा को ओज तीनो मिलिकै त्रिवेनी कौ सौ रूप दरसाई दै । कबी ने एक ठौर पै अपने बाल जीवन सुमिरन जा तरया तै कीनौ है—

दै दई है सरसुती ने घुट्टी मिलाई सुधा ।

पूत जैशकर कौ बरुन चतुर्वेदी है जा भाग्यसाली नै घुट्टी मेई सुधा पी डारी ए बाकी वानी मे जीवन परियन्त इमरत बरसै गौ जामे कोऊ सक नाय । कवी के पता श्री जैशकर जी चतुर्वेदी अपने समय के प्रसिद्ध कवि भए । कवि के वाल मन पै अपने पूज्य पिता कौ बडौ प्रभाव पर्‌यौ जैशकर हास्य व्यग्य मे बडे सिद्ध हस्त हते उनकौ सा तीखौ, साचौ और चुभीलो व्यग्य हरेक नाय लिख सकै ।

जयशकर जी कै समै मे दसहरा बस त फुआरेन (डीग के) अवसरन पै कवि सम्मेलनन मे समस्या पूर्ति की पृथा बहुत चलती । स्वय भरतपुर नरेस हू ऐसे

पधारि कै कवि सम्मेलनन मे कवीन कू पुरस्कार दैब ऐ और उनको सम्मान बहुत करैए ।

अपने पूज्य पिता तेई प्रेरना लैकै कवी ने अपनी रचनान को आरभ कियौ । किशोर अवस्था मेई जब कवी 11 वी कक्षा मे पढतौ तबई भरतपुर के एक दूसरे प्रसिद्ध कवी और लेखक श्री गोपेशशरण शमा 'आतुर' के सम्पक म आयौ श्री आतुर जी जा अवस्था मै कवि के शिक्षक रहे हते । बिन दिनान मे गोपश जी विद्यालय म अन्त्याक्षरी और कविता प्रतियोगितान को आयाजन करवायौ करै ऐं । बिन प्रतियोगितान मे बाल प्रतिभान कू बडौ प्रौत्साहन मिलै औ ।

कवी ने एक जग प अपनी कविता रचना मे गोपेश जी कू बडी श्रद्धा सो स्मरन कियौ ऐ कवी न जि बात स्वय मानी ऐ कि मेरे काव्य रचना म श्री गोपेश जी ने मोए बडौ प्रोत्साहन मिल्यौ ।

यो तौ वरुण जी हास्य व्यग्य मे ख्याति पा चुके ह पर बिनक रगमी गीत माय भौत पसन्द हे । इन गीतन मे मानव मन की पकड है जाके जीवन कू अपन म समेटे भए हे लोक जीवन कू बाधिवे वारे हे, लोगन कू जोरिबे वार है- लोगन कू एक भाव भूमि पै लाइबे वारे है लोगन की आधुनिक समस्यान को समाधान करबे वार है और मूल रूप सौ दीन दुखी लोगन की मूलभूत समस्यान सो जुडे भए ह इस ही सास्कृतिक परम्परा सौ जुडे भए है—एक गीत देखौ—

पानी जीवन कौ आधार मेघा जल वरसइयो रे ।
अबकै सावन झरै फुहार, मेघा मत तरसइया रे ।
'बिन पानी सब सून' कह गए नीकी बात रहीमा ।
बरस पै वरस बीत गए बरसै टूट गई है सीमा ।
प्यासी धरती कर पुकार मेघा जल बरसइयो रे ।
पानी जीवन को आधार

हीरा मोती प्यासे डोलै श्यामा खरी रैभावै ।
खोले चोच पखेरू डोलै, बूदन पानी पावै ।
सबके दीने है मन मार, मेघा जल बरसइयो रे ।
प्यासी धरती करै पुकार, मेघा ।।

याही तरियाँ एक और मीठौ लिखौ है "माटी कौ" बड़े सीधे सादे सब्दन मे माटी की महिमा गाई है। माटी कौ मोल अमोल बतायौ है। माटी कूँ प्रतीक रूप मे हू प्रयोग कियौ है—

माटी सौ करलै प्यार ।
नर जनम न मिलै हजार ।।
याही माटी मे जनम तैनै पायौ ।
बचपन धूरि मे लोट बितायौ ।
भूख लगी तो खाय लई माटी ।
निंदिया लगी बिछा लई माटी ।
तू माटी को बिरबा प्यारे, जापै चढी बहार ।
माटी सौ करलै प्यार

दुनिया पै माटी कौ करजा ।
माटी कौ ईसुर सौ दरजा ।
माटी केसर की सी क्यारी ।
माटी है सबकी महतारी ।
बाबुल की गोदी बढकै माटी देय दुलार ।
माटी सो

या गीत मे सहज अभिव्यक्ति है। ई मानसन कूँ उदबोधन करायबे वारौ है। दाशनिक पक्ष कूँ उजागर करवे वारौ ई गीत जीवन के अंतिम छोर मौत कौ ध्यान दिवावै सतपथ पै चलवौ सिखावै, भाईचारा बढाब और मौ बातन की एक बात ई है कै ई मानस कूँ मानस बनावै।

इन रेसमी गीतन मे आधुनिक समस्यान की अभिव्यक्ति और प्रभावपूण है। दहेज की विथा घर-घर मे फैल रही है। बिन दहेज के का दुरदसा हाय। कैसी मट्टी खराब होय। गरीब घरन की छोरीन कूँ दहेज के लोभीन सौ का का सुननौ परै ई काहू सौ छिपी नाहै। गरीबन की रोटी अंग नाय लगै। सास ननद खोद खोद कै खायेई जाएँ—एक गीत मे करुण कथा कूँ सुनौ—

जब सौ मैं आई बाबुल मेरे ब्याह कै जी
एजी कोई तब सौ अरे हम्बै कोई सास लड दिन रैन
और कहै मोसो, तेरे दिन आ चुके जी ।
मेरी अपनी हालत कैसी है,
पर कटे कबूतर जसी है
उडनौ जो मन मे चाहै आकास मे जी
एजी कोई गिर गिर जाय जमीन ।
सास कहै मोसो

तू सोय रह्यौ कानून कहा ।
इक अबला टेरत तोय यहा ।
जैसै कृष्ण नै रक्षा करी द्रोपदी की जी,
एजी कोई बैसैई बचइयौ मोय आय ।
सास कहे मोसौ

याही तरिया के गीतन मे वरूण जी नै रस की धार वहाई है तगई तौ व मीठे गीतकार है रेसमी गीतकार है इनके गीतन की मार हिए कूँ छुए । कबहू-कबहू तौ अपार जन समूह इनके गातन नै सुनिकै फफक फफक कै रो उठै । इन गीतन की प्रभावोत्पादकता कवि सम्मेलन मे देखी जा सकै । लोग गाँठ बाध कै लै जाव तवई इनके गीतन की साथकता सिद्ध होय तबई इनकी सफलता प्रतीत होय ।

—रमेशचन्द चतुर्वेदी

मेरी रचना प्रक्रिया

मैनै रचना लिखिबौ कब अरु कैसै प्रारम्भ करौ याहि लिखिबे ते पहलै मोय अपने बचपन के दिनान माऊँ झाकनौ परैगो। मै जब 7 8 बरस कौ हौ अरु तीसरी कक्षा मे अखैगढ गाम मे पढयौ करैऔ तबई मोय कविता पढिबे कौ चाव भयौ। मेरे पिता श्री जयशकर चतुर्वेदी वा समै स्कूल के हैडमास्टर हे। अखैगढ गाम केई मास्टर श्री ताराचन्द जी हमारे सगीत के अध्यापक हे। जब मै कक्षा चार मे आयौ तौ बिनने स्कूल की सास्कृतिक कायक्रमन की टीम मे लै लियौ। जा तरिया मिडिल स्कूल के टूर्नामेट्न मे जाइबौ, अरु दूसरे कवीन की कवितान कूँ सुर मे सुनाइबौ आरम्भ है गयौ। जे बात सन 1958 59 की है जब मे सात बरस कौइ हौ। कक्षा 4 ते कक्षा 11 तक प्रतियोगितान मे पहले या दूसरे नम्बर मे आतौ ई रह्यौ। या सो गाइबे वारे छारान मे स्कूलन मे चोखौ नाम है गयौ।

अब आऊँ मै असली बात पै। थोरौ थारौ कविता लिखिबौ तौ मने सन् 1965-66 मे जब मे ग्यारहमी कक्षा मे पढतौ सिरू कर दियौ हौ। उन दिनान स्कूल मे महीना के आखिरी शनिवार कूँ अन्त्याक्षरी सुगम सगीत, कविता प्रतियोगिता अरु वाद विवाद प्रतियोगिता होऔ करती। वा समै के जाने माने हिन्दी के अध्यापकन मे ते एक हे श्री गोपेश शरण जी शर्मा 'आतुर''। वे स्वय अच्छे कवि हैवै के नाते कविता प्रतियोगित। रखै करते मैने हू कछू कविता बिन दिनान मे लिखी।

ग्यारहमी कक्षा पास करके कॉलेज मे आयौ तौ साल दो साल रचना नाय लिखि पायौ। जब मै बी ऐ की अतिम साल मे हौ तौ विधिवत रचना लिखिवौ प्रारम्भ कर दियौ। मेरे पिताजी मोय बचपन तेई कवि सम्मेलन मे अपने सग लै जाते या कारन मच पै जाइबे कौ सौक चर्रायौ। ई मेरो सौभाग्य रह्यौ कै मोय घर मे ही पिता के रूप मे काव्य के गुरु हू मिलि गये।

श्री हिन्दी साहित्य समिति मे साहित्यिक कायक्रम अपनी चरम सीमा पै हे, जब मेने हिन्दी साहित्य समिति मे जाइबौ प्रारम्भ कियौ। हर गोष्ठी मे समस्या पूर्ति दयी

जाती । भरतपुर शहर के सबई छोटे बडे कवि विनमे बडे चाव ते भाग लैते । उन दिनन बुजुग पीढी के प्रतिष्ठित कवि हे श्री कुम्भनलाल जी "कुलशेखर", श्री गिरिराज प्रसाद मिश्र, श्री चम्पालाल जी मजुल, रावराजा यदुराजसिह जी "रसिक छैल', श्री छेदालाल चतुर्वेदी 'छेद", मेरे पिता श्री जयशकर चतुर्वेदी "जय', श्री हरप्रसाद बेखकर आदि । मोय इन सबकौ ही आशीर्वाद भरपूर मिल्यौ । म इन बातन नै या मारै लिख रह्यौ हू कि मेरी रचना प्रक्रिया मे इन सबकौ आशीवाद ई सामिल है । समस्या पूर्ति के माध्यम ते जो छन्द लिखे गये उनम ते दो छ द बानगी के ताई प्रस्तुत ह—

समस्या -'लाल है'

मोह से उडावै धुआ, बालो म पडे है धुआ
टाइट सौ पैंट और स्पशल चाल है ।
बीटल कट बार मु हू, लेप रहै पाउडर की
चेहरे के चौखटे की, रौनक विशाल है ।
मू छो कौ साफ कियौ नही कोई पाप कियौ,
स्वास्थ्य के बनावे कौ, सफाई कौ ख्याल है ।
आ रहौ सामने सौ कार्टून बनौ भयौ,
मेरे देश भारत को होनहार "लाल है" ।

"लपटी" (कु डली)

लपटी मे गुन बहुत है अ य मिठाइन नाहि ।
स्वाद लयो तिन नरन कौ स्वग मित्यौ इहि माहि ।
स्वग मिल्यौ इहि माहि भोग सब यापै वारे ।
भर भर बेला खाहि जीभ लै लै चटखारे ।
कहै 'वरूण' कवि छोडि छतीसौ व्यजन झपटी ।
बामन, बनिया सबई प्रेम सौ खामे 'लपटी' ।

समस्या पूर्ति के दौर के बाद मेरौ रुझान स्वत ही परौडी की विधा की ओर है गयौ । पैरौडी मोय लिखिवे मे आसान सी हू लगी । अरु कवि सम्मेलन मे श्रोता पैरोडीन ने बडे आनन्द ते सुन्यौ हू करते । सबते पहली पैरौडी जो मैने लिखी बाके बोल या तरिया सौ है–

ओ भैया दौडकर आओ मोय मच्छर ने काटौ है ।
तुरत एक डाक्टर लाओ मोय मच्छर ने काटौ है ।
लगायौ डक मच्छर नै तभी याद आ गई नानी ।
उठौ मैं चौक कै चीखौ अरे लाओ कोऊ पानी ।
सहारौ मोकूँ दै जाओ, मोय मच्छर ने काटौ है ।

हालाकि ब्रजभाषा मे पैरौडी लिखनौ थोरौ मुश्किल परै पर फिर हू मैंने कछू पैरौडी ब्रजभाषा मे लिखी है । एक ब्रजभाषा मे लिखी पैरौडी की बानगी नीचें दै रह्यौ हूँ—

'बीबी के बेलन की आरती'

मै तौ आरती उतारूँ रे बीबी के बेलन की ।
पीछै परी है मेरे च्यौ खामखा ।
करियौ दया तू मेरे लल्लू की मा ।

बडी ममता है बडौ प्यार बीबी के बेलन मे ।
रहै चौबीसो घटा बहार, बीबी के बेलन मे ।
मिलै चटनी मुरब्बा अचार बीबी के बेलन मे ।
छिपी रोटी उरद की दार बीबी के बेलन मे ।
दीप धरूँ धूप करूँ, प्रेम सहित भक्ति करूँ झाकी निहारूँ रे,
ओ बाकी बाकी झाकी निहारूँ रे । मैं तौ ।

दीखै हर घडी नयौ चमत्कार बीबी के बेलन मे ।
मेरे जीवन कौ तौ जैसे सार बीबी के बेलन मे ।
भरी नागिन की जैसी फुकार बीबी के बेलन मे ।
घुस्यौ जैसै होय बिजली कौ तार बीबी के बेलन मे ।
मारै जब घूमघूम, निरत करूँ झूमझूम सुध बुध बिसारूँ रे,
ओ मै तौ तनकी सुधबुध बिसारूँ रे । मैं तौ ।

हारे दुनिया के सब हथियार बीबी के बेलन ते ।
बजे मनुआ की बीना के तार बीबी के बेलन ते ।
च्यों ना खाऊँ मैं रोजाना मार, बीबी के बेलन ते ।

बहै गगा की निमल धार बीबी के बेलन ते।
प्रेम सहित पान करूँ, भक्ति ते इसनान करूँ।
जीवन सुधारूँ रे, ओ मै तौ सबकौ जीवन सुधारूँ रे।
मे तौ आरती उतारूँ रे बेलन की।

या तरिया करीब 8-9 बरस तानूँ पैरौडी लिखतौ चलतौ रह्यौ। हिन्दी अरु ब्रज भाषा की पचासन पैरोडी लिखी हुँगी। इन पैरोडीन नै मोकूँ कवि सम्मेलन के मच पै स्थापित कर दियौ और मोय दूर दूर के कवि सम्मेलन मिलवे लग गये। पैरौडीन के सगई कछू गीत हिन्दी मे लिखे। पर मूल रूप ते मे हास्य व्यग्यकौ ही कवि मानौ जातौ रह्यौ हू। हास्य, व्यग्य की कविता कौ एक छोटौ सौ नमूना देखौ—

हे प्रभु सेल टैक्स दुखदायी।
मे तौ कमा कमा कै हारो बचत न एकहू पाई।
मैन तौ प्रभु द्वै दुकान औ चक्की एक लगाई।
सेल टैक्स के कारन ही तौ हवा जेल की खाइ।
पाच हजार रूपैया दकै अपनी जान छुडाई।
'वरुण' कहत हे क्यो प्रभु तुमने मेरी सुधि बिसराई।

ई रचना मेरी डायरी के हिसाबते 27 7-71 कू लिखी है।

मैनै कछू कुण्डलिया हू लिखी है। 14 1 72 कू लिखी सो कुण्डली या तरिया है —

जूते मे गुन बहुत है सदा राखिये पाव।
इन्हे पहनकर जाइये, शहर, नगर या गाव।
शहर नगर या गाव, पडा हो चाहे काटा।
कानपुरी देशी हो चाहे होवे बाटा
घोर ग्रीष्म या शीत चलौ इनके बलबूते।
गर कोई लड पडे, लगाऔ कस कर जूते।

मक्खन की मालिस करौ अफसर के घर जाय।
श्रीमती कू खुस करौ, अच्छी भेट चढाय।

अच्छी भेट चढाय, कृपा उनकी है जावै ।
श्रीमान सौ कहिकै इन्क्रीमेट करावै ।
कहे 'वरुण' कवि नित्य करौ दौनो की पालिश ।
चूकौ मत हर बखत, करौ मक्खन की मालिस ।

सन 1972 मे भरतपुर शहर मे भयकर बाढ आई । नुमाइस कौ कवि सम्मेलन चल रह्यौ, ई वा टैम की बात है । कवि सम्मेलन सुनिबे के ताइ भरतपुर नरेश सवाई ब्रजेन्द्र सिह जी आय गये । बिनन कवि सम्मेलन के बीच मे माइक पै आय के ई घोषणा कर दयी कि जो कवि बाढ पै बोलैगो बाकू 300 रुपया इनाम दऊ गो । कवीन मे होड सी लग गयी रुपैया जीतवे की । मैन एक छ द बाढ पै यो सुनायो —

दद के मारै खवै नहि रोटी
पुकारत वैद कू डाढ के मारै ।
गारी हू देत सदामन मे,
एक क्लक साहब की झाड के मारै ।
पुत्र ने बाप कू पीट ग्यौ
यह बात बनी सब लाढ के मारै ।
जान्ते लियौ न कबहू हरिनाम,
उचारत पे 'हरि' बाढ के मारै ।

या छन्द ए सुनिके महाराज साहब ने मोकू '00 रुपैया अपने हाथन ते दिये । बकाया सौ सौ रुपैया फक्कड जी, अरु मूल चद नादान कू दिये बिनकी कविता ते खुश है के धीरे-धीरे मेरी रुचि पैरौडीन की ओर सौ हटती गयी, अरु लोकधुन पै ब्रजभाषा के लोकगीतन की तरफ होती चली गयी । पर रुचि रही हास्य व्यग्य की ओरई । याकौ प्रमान नीचे लिखी रचनान ते मिल -

अपनी गू गी अरु बहरी है सरकार सुनत नाहि काहू की ।
मन मे आवै जो करत सरकार सुनत नाहि काहू की ।
अवे लूले लगडे सबई चुन चुन कर है छाटे ।
छोटे, बडे सबन मे भडुआ बदर ने बाटे ।
भैया करवाय दई सबन मे तकरार ।
सुनत नाहि काहू की ।

बैठ कार मे एक सग ये सफर करन सब लागे ।
नेंक लडे तौ एक एक पहिया निकार लै भागे ।
भैया कर दीनी गाडी कौ बटाढार ।
सुनत नाहि काहू की ।

अन्न मिलै नहि महँगाई मे लोग विचारे रोम ।
नेता अपने बडे निखट्टू तान रजाइया सोम ।
आओ आओ रे जगाओ लठिया मार ।
सुनत नाहि काहू की ।

पाच साल मे एक बेर ये वोट मागिबे आमे ।
छोड छोड फुलझडी पटाखे मन सबको बहलाम ।
भैया गिर जामे पावन म सौ सौ बार ।
सुनत नाहि काहू की ।

जीते पीछै खोज खबर लव कबहू नाहि आमे ।
असली सूरत छिपा मुखौटा नकली सबई लगामे ।
हडिया लकडी की चढै ना दूजी बार ।
सुनत नाहि काहू की ।

मोय ब्रजभाषा की लोक धुनन के सगई सग हरियाणा की लोक धुन हू बहुत अच्छी लगी । इन धुनन पै हू मैने रचना लिखी । हमार देस मे उन दिनान स्वतत्रता की रजत जयन्ती मनाई जाय रही पर, मेरे मन मे कछू दूसर ही विचार हे वे मैने या रचना मे यो व्यक्त कीन्हे—

कहा कहा होवै या भारत म सुनो ध्यान धर भाई ।
स्वतत्रता की ऐसी अबकै रजत जयन्ती आई ।

बाबा बात बतामे गेहू टकासेर मे आतौ ।
एक रुपैया के गेहुन ते बोरा हू भर जातौ ।
पैसा मे रबडी, रसगुल्ला खूब मिठाई खाते ।
बामे ते हू बचा सग मे बच्चन कू घर लाते ।

आज एक या दो रुपया ल जो बजार कू जाऔ ।
तौ पुडिया मे माल बाध के गोजा मे घर लाऔ ।
अब स्वाधीन देश की भैया है, स्वाधीन मिठाई ।
स्वतन्त्रता की ऐसी आई ।

महीना अखीर मे, हमते, घरवारी यो बोली ।
देखौ रासन लाय देउ नहिं फलाओगे झोली ।
जल्दी जल्दी रासन लाइबे हम जा पहुचे मडी ।
दाम देख हम दग रह गये सतर है गई झडी ।
ज्वार, बाजरा, गेहूँ सबने अपनौ रग दिख यौ ।
तीनो कौ रग देख चना कूँ झट बुखार चढि आयौ ।
पचपन रुपया मन म गेहू लायौ निनुआ नाई ।
स्वतन्त्रता की ऐसी अबकै आई ।

ऊँचे भाव नाज के देखे सोची का खाइगे ।
नाज खाय तौ घर के लोटा थारी बिक जाइ गे ।
या कारन झट क ट्रोल की हम दुकान पै आये ।
भीड दूर ते देखी भारी मन म तब घबराये ।
एक एक पै तीन तीन ज्यो मधुमक्खिन कौ छत्ता ।
हाल भयौ बेहाल फट गये सबरे कपडा लत्ता ।
जीये कैसे या कलियुग मे कमर तोड महँगाई ।
स्वतन्त्रता की ऐसी अबकै आई ।

एक दिना रो रो कै हमते बोल्यौ भिक्की सक्का ।
चार कोस मै पैदल जाऊँ बडे सवेरे कक्का ।
सोचू मन मे एक पुरानी बाइसकिल लै आऊँ ।
जा पै चढ कै फटा फट्ट मै ड्यूटी प भग जाऊँ ।
एक पुरानी देख रखी है, सौ रुपया मे देगौ ।
पर विसवास करै नहिं मेरौ नोट पेसगी लेगौ ।
लई साइकिल एक खटारा सौ रुपया मे आई ।
स्वतन्त्रता की ऐसी आई ।

भिक्की सक्का के पडौस मे मन्त्री जी की कोठी ।
चोरन के डरते फाटक मे लगी तान हैं माटी ।

गवरमिन्टते मिल्यौ है बगला लगै छदाम न भाडौ ।
माल मुफ्त कौ खाय खाय कै बन गौ पट नगाडौ ।
कान्वेन्ट मे अपने बच्चा पढिबे कूँ बैठारे ।
पास पडौसी सब बच्चन ते भेज दिये वे न्यारे ।
मत्री जी ने एक फौन मे नई कार मगवाई ।
स्वतत्रता की जाई ।

घर कौ एक काम करवाइवे हम पहुँचे दफ्तर म ।
बाबून के ढग देख फम गये एक नये चक्कर म ।
असली रजत जयन्ती तौ ये बाबू लाग मना म ।
काम करै नहि बाते पहले चाय समौसा खाम ।
जब तक असर चाय कौ मन पै तब तक कलम चलाम ।
नशा चाय कौ हटै एक पल म स्वतत्र ह जाम ।
एक काम की खातिर हमने जेब साफ करवाई ।
स्वतत्रता की ऐसी अबकै रजत जयती आई ।

जैसौ समय चल रह्यो होय रचना हू वाही रग म रग जाय याही मारे ई बात कही गई कि 'साहित्य समाज कौ दपण है । मे हू या ऊक्ति ते अछूनौ नाय रह पायौ । सन् 1976 77 मे या देस मे इमरजैंसी लगी । इमरजेसी के बाद या देस मे सरकार परिवतन की एक ऐतिहासिक घटना घटी । इतेक महत्वपूण विषय पै हर कवी ने अपनी कमल चलाई । मेने हू दो तीन छन्द लिखे जिननै नीचे लिख रह्यो हू -

दिग्गज तौ रज चाट रहे, जो कुबुद्धि सौ आम चुनाव म हारे ।
सूरज हू ना दिखातौ जि है ति है घोर दुपहर दिख गय तारे ।
सेर की बात तौ दूर रही, सुनौ चेटिन नै गजराज पछारे ।
जीत गयौ है गरीब किसान औ जीत गये सिगरे हरवारे ।

छीन लिये सिगरे हथियार औ ताकत सौ सब कैद म डारे ।
राम नै एक दयी है जुबान सौ आरत ह्वै सब लोग पुकारे ।
लोगन के मौह बद किये सब ओर जुबान प डारे है तारे ।
आखिन होत भये अधरे, पै कहैं हम है दोऊ आखिन वारे ।

मोटर सो नीचे जो न रखतौ हौ एक पैर,
टाइम की बात आज पैदल ही धायौ है ।
सीधे मौह बात नाय करतौ जो लोगन सौ,
देखौ आज पैर पैर खोपडा नवायौ है ।
जाके नैन दिन रन दारू मे समाय रहे
देखौ उन नैनन मे आसू भर लायौ है ।
मग कहे सौने कौ या बदर मदारी कहे ।
नेता आज देखौ अभिनेता बनि आयौ है ।

ऐसे ही रचना क्रम चलतो रह्यो और दो तीन बरस और निकर गये । फिर मेरे जीवन मे एक ऐसौ मोड आयौ जानै मेरे सोच विचार की दिशा ही बदल दयी । 22 जून सन् 1979 कू मेरौ विवाह है गयौ । मेरी धम पत्नी स्रीमती निशा चू कि सस्कृत मे एम ए है, अत स्वाभाविक रूप ते बाकौ रुझान काव्य के प्रति है । बानै आइके मोय ई राय दई कि अपनी रचनान नै आकाशवाणी पै भेजौ । मोकू बाकी राय बडी पसन्द आई अरु मैने एक दिना अपनी खडी बोली हिदी की रचनान कौ पुलिदा आकाशवाणी मथुरा के निदेशक के पास भेज दियो । 8 10 दिना म ही बू पुलिदा आकाशवाणी ने मोकू 'सखेद' वापिस करि दियौ ।

पर अचानकई सन् 1980 मे आकाशवाणी ने मोय ब्रजभाषा रचनान के प्रसारण के ताई अनुबध पत्र भेज्यौ । जो मेने सहष पूरौ कियौ । बस ह्याई ते मेरी रचना हास्यव्यग्य की धारा ते हटिके गम्भीर चितन की दिशामे मुडि गई । हास्य व्यग्य छूटिबे कौ एक प्रमुख कारन और हू है । श्री धनेश फक्कड ने ई सलाह दीन्ही कि 'चौबेजी तुम्हारौ गरौमधुर है, तुम पैरौडीन ने छोडि के बढिया गीत लिखौ और एक अच्छे गीत कार बनौ ।' मेने बिनकी सुलाह पै हृदयते अमल कियौ बाकौ परिणाम ई रह्यौ कि आज मै गीत तौ बखूबी लिख लऊँ पर अब मोय परोडी लिखिबे मे दम लगानी परै ।

खैर जा बात है ह्याई छोडि के अपनी बाई बात पै आऊँ । मेरी धमपत्नी कौ मेरी रचना प्रक्रिया ते बहुत निकट कौ नातौ है । वाने हर पल, हर समय मोय रचना लिखिबे मे सहयोग दीन्हौ है । समाज मै व्याप्त कुरीतीन की ओर मेरौ ध्यान आकर्षित करबाती अरू कहती कि इन पै हू कछू लिखौ । तौ मैने सामाजिक समस्यान पै कलम चलाई । दहेज पै लिखी ई रचना याकौ नमूना है—

लगि रही गाम और शहरन मे बाकी हाट
धडाधड छोरा बिक रहे हैं।
मैया बाप लगाय रहे बोली बनि के भाट,
कि पगडी फेंटा फिक रहे है।

नीलामी मे बिक रहे देखौ ऐसे ऐसे पूत।
गोरे, कारे, छवारे कोऊ लागत हे जमदूत।
मैया समझ रे घरवारे इनको लाट। धडाधड छोरा ।

घर मे छोरा कहा है गयौ सूवे बात करेना।
घरवारे कन कौआ है रहे धरती पै उतरे ना।
भैया मिलजुल कै देउ डोरी इनकी काट। धडाधड छोरा ।

भल मन साहत धरम और ईमान ताख पै टागौ।
अलमारी स्कूटर टी वी डबल बैड हू मागौ।
भैया सोइबे कूँ नाय जिनके घर म खाट। घडाधड ।

बेटी बारे भैया सब मिलजुल के आज विचारौ।
जो कोऊ मागै रकम तुरत ही कर देउ म्हौडो कारौ।
अच्छौ नाय लगै मलमल मे थिगरा टाट। धडाधड ।

गारन्टी है कहा भिखारी और नाय मागिगे।
मागे पीछे नाय मिलौ तौ छोरी ए दागिगे।
भैया मत करियो बिटिया कूँ ऐसे ठाडा। धडाधड छोरा बिक रहे हैं।

प्रौढ़ वग की निरक्षरता ए दूर करिबे के ताई मैंने ई गीत प्रौढ शिक्षा पै लिख्यौ—

हमकूँ अ आ इ ई की किताब लै आइयो देवरिया
जइयो देवरिया हाट कूँ जइयो देवरिया।

नशाब दी के ताई जे पक्ति लिखी गई —

घर की राखौ ध्यान नशा करिबौ छोडौ।
पिय बहुत निकस गये दूर राह अपनी मोडौ।

मेरे सग आँच के सामई फेरा सात लगाये।
सात वचन भरिकै तुम मोको अपने घर पै लाये।
वचन निज मत तोडौ। घर कौ ।

घर की या नैया के प्रियतम इकले तुमई खिवैया।
बच्चा भूखे रोम सग मे रोवैं सौन चिरैया।
पख याके मत तोडौ। घर कौ नेक ।

आधे मे ते छूट गई बच्चन की रोज पढाई।
तुम तौ फिरहू रोज पियत हौ नेक शरम नाय आई।
भाग इनके मत फोडौ। घर कौ नेंक ।

सहि न सके घरवारे सब इतने दु ख तौ मत बाटौ।
अ सुअन के जल सौ माढत हौ, साझ सकारें आटौ।
तरस खाऔ थोडौ। घर कौ नेक ।

कहा रख्यौ करूये पानी मे लागत है जो अति प्यारौ।
सबके आगे इज्जत उतरै, बिगरै धरम तिहारौ।
आज बोतल फोडो। घर कौ नैक ।

आदमी के गिरते भये चरित्र ए देखिके मन कबहु–कबहु खिन्न है उठतौ। ई सोच्यौ करतौ कि आदमी इतनौ कसें गिर गयौ। आदमी की आदमियत क्यो मर गई। याही ए सोचते सोचते एक दिना आज के आदमी के ऊपर कछू छन्द मनते फूट परे—

धरती पै पग राखिबे मे जाकौ मान झरै,
बनिकै पतग आसमान तन्यौ आदमी।

नेह नीर भाप हुई कै आकास मे उडयौ है,
आज आदमी के खून म स यौ है आदमी।

गुनन कौ भूल गयौ औगुन की खान भयौ,
हाय देवपूत सौ असुर बन्यौ आदमी।

जाके जन्मे सौ मर जाय गर मानवता
आदमी नें फेर तौ वृथा ज यौ है आदमी।

नर नाँय पूरौ जो अधूरौ सौ जिनावर हैं,
खोल नैंन देखौ तौ बटेर दिखै आदमी।
मनकी ढकेल पच मेल तन ठेल रह्यौ,
लीक सौ हटे पै बेर बेर फिकै आदमी।
सतपथ चलि है तौ बनि जाय रामायन,
वेद औ पुरानन के ढेर लिखै आदमी।
वान्रे समय तेरौ महिमा अपार यार
रूपया मे पाच पाच सेर बिक आदमी।

लेत है दहेज लोग मुखसो, जो माग माँग
नेकू नाहि सकुचात कितने निसक हे।
विषधर कारे है, जे अति के जहर वार
कोऊ छाटे भगत जो बिछुआ के डक है।
कोढ बने देहजो समाज की गराग रह
नर जात भाल पै लिखे असुभ अक है।
आदमी कहे तौ आदमी कौ अपमान हाय,
ऐसे नर आदमी के नाम पै कलक हे।

मेरी रचना प्रक्रिया के या विकास मे जहा मेरे परिवार के सदस्यन (पिताजी, माताजी, भैया, बहिन धमपत्नी) कौ हाथ और सहयाग रह्यौ वही पै आकाशवाणी मथुरा कौ हू योगदान बहुत रह्यौ। सन 1980 ते आज तक आकाशवाणी ने अपने अनुबध पत्र भेज भेजके एक ते एक नई रचना लिखवाय डारो। मथुरा आकाशवाणी पै बालकन के ताई कायक्रम हो औ करे बगिया बच्चान की' अरु "दादी की कहानी"। 'बगिया बच्चान की" के ताई कैऊ अनुबध पत्र मेरे ढिग बिनने भेजे और मैंने बालकन के नाम कछू गीत लिखे। बानगी के तौर पै एक गीत नीचे दै रह्यौ हूँ—

भनन भनन करती मडरावै फुलवारी म मधुमक्खी।
गध सूँघती फिरै सुमन की फुलवारी मे मधुमक्खी।
लगी सबेरे ते सझा तक तयारी मे मधुमक्खी।
बिना काम के कबहु न डोलै मक्कारी म मधुमक्खी।

☐

फूलन मे ते चूस चूस कें रस लै आवै मधुमक्खी।
बडे जतन सौ काम करत है शहद बनावै मधुमक्खी।

बन्यौ शहद अपनी मेहनत कौ कबहु न खावै मधुमक्खी ।
कठिन परिश्रम अपनौ परहित सदा लुटावै मधुमक्खी ।

□

मधुमक्खी कौ छत्ता सबने देख्यौ होगौ ब यौ भ्यौ ।
ऐसी कहावत है जाके कारन इतनौ त यौ भयौ ।
जामे बसै मिठास और भरपूर प्यार मे स यौ भयौ ।
दिनदूनौ और रात चौगुनौ, बढयौ सदा अरु घनो भयौ ।

□

तनिबे कारण पहचानौ यहा एकता वास करै ।
लाखन मक्खी रहे इकट्ठी एकन दूजे सो झगर ।
जहाँ एकता होय तहा पै अपने आप सुरग उतरै ।
बारह मास रहै खुशहाली, और सदा मधुमास झरै ।

□

एक पते की बात बताऊँ बालक सुनियो कान लगाय ।
आपम मे मत कबहूँ झगरियो हिलमिल रहै सो गगा न्हाय ।
मधुमक्खिन ने बात बात मे कहादई है सीख सिखाय ।
जहाँ रहौ सब रहौ प्यारते, याते बडी बात कोऊ नाय ।

मेरौ प्रयास हर बखत ई रह्यौ कि ब्रजभाषा मे लीक ते कछु हटकें रचना करी जाय । च्योकि पुराने ढर्रा पै चलते चलते ब्रजभाषाए बहुत लम्बौ समय निकस गयौ । जा कारन जहा तक हे सकैई मैने नये नये विषय अपनी कवितान के कार्जे चुने । परन्तु परम्परान कौ निर्वाह हू मैने कियौ । जैसे होरी के औसर पै एक रचना जो दिल्ली दूरदशन ते 28 2-90 कूँ होरी के रगारग कायक्रम मे प्रसारित भई अरू दशकन ने सराही जा तरिया है—

झारौ मन की गरद गुबार रग रगीली होरी मे ।
जारौ झगरेन के झखार रग रगीली होरी मे ।

होरी तौ है पर मिलन कौ बडौ न कोऊ छोटौ ।
दिना आज के चलैं शानते दाम खरौ ग्वरु खोटो ।
पर खैया है जाय उदार रग रगीली होरी मे ।

ग्यारह मास ब ट जाहृत है हागी त हरियारे ।
फागुन लगत कहत है भाभी जेठ भये मनत्रारे ।
ली ही अपनी शरम उतार, रग रगीली होरी म ।

फूले फूले फगुभाडो ले डली डली गोरी ।
घर की कान ताख पै धर दयी का छोरा का छोरी ।
गोरी है गई सब गुलनार रग रगीली होरी मे ।

कारे कौ मुख गोरौ है जाय, गोरे कौ मुख कारौ ।
जादूगर बनि आयी होरी अजब गजब करि डारौ ।
रहिगयौ विधना आख पसार, रग रगीली होरी मे।

लाल, गुलाबी, हरौ, जामुनी, लीलौ, पीरौ कारौ ।
इ द्रधनुष गिर परयौ धरा पै नभ कौ राजदुलारौ ।
धरती करन लगी सिंगार, रग रगीली होरी म ।

मन मे उठी उमग धरनि के रगलयो पचरग सारी।
फूली नाय समामे उरमे केसरिया फुलवारी ।
बौरे भँवर करे गु जार, रग रगीली होरी मे ।

आज कवि सम्मेलन जा दौर त गुजर रह है जामे इन रचनान नें कौन सुनें । आज तौ मच पै हास्य व्यग्य की भरमार, ओज के खुर और गजल की नजाकतई छाँई भई है । चूँकि मै पिछले 20–22 बरसन ते मच ते जुरयौ भयौ हूँ या मारे मै हूँ, इन सबते अछूतौ नाय रहि पायौ । कवि सम्मेलनन मे अब कविता कम व्यावसायिकता अधिक आय गई है । जा होडा होडी मे मैने हू गजल की बिधा और अपनाय लई । पिछले 1–2 बरसन ते ब्रजभाषा गीतन के सग हिन्दी गजल हू लिखि रह्यौ हूँ । पर मेरी सिगरी गजलन मे मन के जो भाव उजागर भये है वे या देश की बिगरी भई हालत पै चिन्ता केई है । समय की माग के हिसाब ते मैने समयानुकूल रचना लिखी ।

हाँ एक बात और निवेदन करनौ चाहूँ कि ब्रजभाषा के कवीन पै ई आरोप लगायौ जाय कि वे सब राधा अरु कृष्ण ते सम्बन्धित रचना ही लिख्यौ करें या अब ब्रजभाषा राधा अरु कृष्ण तक ही सीमित रह गई है। तौ मै कहनौ चाहूँ कि ई आरोप निराधार है। आज ब्रजभाषा के कबी हिन्दी के कवीन ते लेखन की दृष्टि सौं पीछे नाय। ब्रजभाषा कवीने समाज मे फैली कुरीतीन पै, ज्वलत समस्यान पै, नये नये विषयन पै खूब कलम चलाई है। मैने अपनी रचना प्रक्रिया मे जाके कछु उदाहरण हू दिये है।

अन्त मे मै ब्रजभाषा अकादमी को बहुत बहुत आभारी हूँ जाने मोय अपनी रचना प्रक्रिया आपके सामई रखि बे को अवसर दियौ। मै आज हू ब्रजभाषा मे लेखन ए अपनौ सौभाग्य मानूँ। पाठकन कूँ ई बिसवास दिवाऊँ कि आगे हू ब्रजभाषा मे लेखन करतौ रहुँगौ, सगई निवेदन करुँ कि आप सबहु ब्रजभाषाए गद्य अरु पद्य दौनो विधान ते मजबूत बनाऔ।

—वरुण चतुर्वेदी

ब्रज रचना माधुरी

सवैया–सरिता

री सखि तोसौ कहू मन की मन मेरे समाय रह्यौ दुख भारी ।
भोरहिं ते मै मिलै चह्यौ मोहन, जान कै जाय छुप्यौ बजमारौ ।।
ढूँढत ढूँढत पाय पिराने ह्वै, पै न मिल्यौ मन को उजियारौ ।
मोहिनी डार गयौ मन मोहन, नन्द की धेनु चरावन वारौ ।।

□

स्याम सौ खेलिबे होरी चली सखि, राधिका नै बहुरूप बनायौ ।
गालन खूब सुरग लगाइ, हौवे सोच कै हाथ म रग दुरायौ ।।
मोहनि मूरत दखी जु स्याम की, रीझ गई मन सावरौ भायौ ।
हाथ कौ रग तौ हाथ मे रह गयौ स्याम कौ रग हिये भ समायौ ।।

□

स्याम पै रग चढावन कौ, निकसी मिलकै ब्रज गाव की गोरी ।
काहू नै हाथ मे रग लियौ अरू काहू गुलाल भरी निज झोरी ।।
देखिकै रूप ठगी सी रही रति ऐसी भई जैसै चन्द्र चकोरी ।
आगै बढै नहिं पीछ फिरै डग, भूलि गई सब खेलिबौ होरी ।।

□

होरी मे स्याम नै बाह गही, कही आज खिलाऊँगौ मै तोय होरा ।
गालन लाल गुलाल मलौ, फिर जोर से मोय दिये झकझोरा ।।

अक मे मोहि भरै तौ खिचै सखि आखिन मे मेरे लाज के डोरा ।
खैच गयो है मेरे हिय मे, निज चित्र विचित्र अहीर कौ छोरा ।।

□

चोरी करै बरजोरी करै, हटकै तौ न मानै करै सीना जोरी ।
बातहिं बात रिझाय लई, नद नदन नै ब्रजभानु किसोरी ।।
नैन सौ नैन मिले तौ हँसे, बधी दोउन के मन प्रीत सुडोरी ।
राधिका के रग स्याम रगे रगी स्याम के रग मे राधिका गौरी ।।

□

बासुरिया चित चोर गई, फिरै राधिका बौरी सी 'कु जन मे ।
कबहू घर स्याम के बूझत है, फिर जाइकै देखत है बन मे ।।
भूख गई अरू प्यास गई घनश्याम कौ ढूँढत है घन मे ।
तन ही तन राधिका पास रह्यौ, मन जाए बस्यौ मन मोहन मे ।।

□

जग पूजि रह्यौ ब्रज की रजकौ ब्रजधाम कौ बासी महान धनी है ।
म द बयार जो आवत है, मन मोहन बासुरी तान तनी है ।।
और कहो सौ बखान करौ ब्रज काच के ढेर मे हीर कनी है ।
स्याम भए ब्रज की रज मे, रज स्याम सनी फिर स्याम बनी है ।।

□

देख कै सकट देस प जो नर, केवल एक पुकार मे आवे ।
जान हथेरी पै लैकै चलै, जो कहौ पल मे तौ पहार ढहावे ।।
भारत मात की लाज बचाइबे वीर जो लोहू पै लोहू बहावे ।
ऐसे सुबीरन की करनी लखि, रीझत है सुर सीस झुकावे ।।

□

छूट गई जब सास की आस, तौ नैन सौ नीर लगौ झरिबे ।
बीत गयौ जब दीपकौ नेह तौ बाती बिचारी लगी जरिबे ।।

गति देह की तेरह तीन भई, हिचकीन सौं कठ लग्यौ घिरिबे ।
अ त समै पछतावत चौ नर, मौत सो चो तू लग्यौ डरिबे ।।

□

मूरत पूजेते होय कहा, जब द्वेष घमड रहै मन मे ।
पूँजी अटूट हू पैदा करी, अटक्यौ तब चित्त रहै धन मे ।।
राम बसै नहि स्याम बसै कोई देव बसै नहि पाहन मे ।
घोर परिश्रम के बल सौं, सब चाह बसै इन बाहन मे ।।

□

चोरी छिपे घुस गूजरि के घर, स्याम नै जाइकै माखन लूट्यौ ।
मारन बेगि सपट्टा लगे इह कारन हाथ ते माट हु छूट्यौ ।।
आगन मे दधि फैल गयौ सब, माटी कौ माट फटाक ने फूट्यौ ।
आय गुजरिया नै बाध दये हरि बिल्ली के भाग ते छीकौ टूट्यौ ।।

□

घोर घमडी नरेसन के सर, काट कै भूमि पै पायन डारे ।
सासक क्रूर हू जेते हते फरसा कर धार सबै हन डारे ।।
काल के गाल सौ दीन दुखी अरू बामन जात के लोग उबारे ।
राम प्रनाम करू सतवार बने नर नाहन मे ध्रुवतारे ।।

□

भूमुर रेत भई तप कै अरु लूएँ लगे मानौ लाल अ गारे ।
स्वदे चुचावै सरीर सौ ऐसै बहै बरसात मे जैसै 'पनारे ।।
धूप मे जो निकसे घर सौ तौ लगै तन पै मनु चालत आरे ।
ग्रीषम न सिगरे नर नार पितामह भीषम से कर डारे ।

□

रोगिन के तन की विपदा तुलसी दल के दुई पात हरै ।
प्रेम सौ राम कौ नाम जपौ दुइ आखर ही भव पार करैं ।।

मानस मानसरोवर के जल सौ सिगरे अभिशाप टरै।
लाखहु जोनिन के झगरे, तुलसी कवि की दुइ पात हरै।।

□

काम करौ जस जासौ मिलै प बुराई के काम किए न किए।
सीयौ बिबाई गरीब के पाम की आपने घाव सिये न सिये।।
पान करौ तौ दुखीन के दुख कौ सोम के घूट पिये न पिये।
जीवन तौ बस मान कौ है, अपमान भए पै जिए न जिए।।

□

कस नै ठान लई कछु ठान तौ होत ही होत पै बालक मारे।
जीजा सगे भगिनी निज सग मे कूर कठोर नै जेलन डारे।।
चित्त मे चैन अनूठौ मिल्यौ, जब देवकी गभ मे पाय पसारे।
बध कटे सब फद कटे बसुदेव के लाला नै बादर फारे।।

□

जीव तौ ब्रह्म के अ स हे मूरख जीव मरै नहिं काहू के मारे।
आतम ज्ञान प्रकाश भयौ तब पारथ नै निज सस्त्र सभारे।।
जुद्ध भयकर ठान दयौ निर्भीक ह्वै कौरव जाय सहारे।
आन कौ मान बचावन कौ बसुदेव के लाला नै बादर फारे।।

□

धोखे ते पुत्र हयौ यह जानिकै अजुन क्रोध मे बैन उचारे।
आतमदाह करू दिन डूबे प चैन परै न जयद्रथ मारे।।
माया ते सूरज ढापि दयौ, मुद होय जयद्रथ आन पधारे।
चूक मती प्रन पार लै जे कह नद के लाला नै बादर फारे।।

□

ईस कौ नाम उचारिबे कारन कष्ट मिले औ पहार सौ डारे।
बाप नै जातना घोर दई प्रहलाद न टूटै न जीवन हारे।।

खब ते बाधि दये कस कै तब भरत नै नाम लै बैन उचारे ।
काल बने हिरनाकुस क वसुदेव कै ल।ला नै बादर फारे ।।

□

जह बार बिहारी बिहार करै, मा सम्प ।ि य री लुभावनौ है ।
रहै सीस पै ईस के हाथ सदा, अर द्वारि ाधीश सौ पाहुनौ है ।।
जमुना जी के नीर की बात रहा, सिगरे जम फद नसावनौ है ।
धनि भाग हमारे जु वास मिल्यौ, जग म ननधाम सुहावनौ है ।।

□

नित दूध की धार अटूट चढै गिरिराज बडौ मन भावनौ है ।।
जह गौरिन के रसिया मुनक ब्रज कौ रंगमग हर सावनौ है ।।
परकम्मा लगै औ चनौरो मिलै, यह भाग न्हिया सरसावनौ है ।
गिरिराज की जय गिरिराज की जय गिरिराज की मार सुहावनौ है ।

कवित्त कुसुमाजलि

डोलत उराहन पग, राधरानी भग भग
मन मे कहत प्यारे कतौ तरसावैगौ ।
पायन मे छाले परे परि परि फूटि गए,
पीर पर पीर हिय केती उपजावगौ ।।
मुख प उदासी छिन छिन म बढन जाय,
मन म उठत हूक कौन जानि पावगो ।
हारि कै गिरी धरन, बन यौ लगी कहन,
मोहि तरसावैगौ तौ चन नहि पावैगौ ।।

□

गगा और यमुना की धार बहै भारत मे,
तन कौ पवित्र करै पाप पु ज हरती ।
जिनकौ विख्यात नाम चार है विशाल धाम,

छवि देख बार बार आख ना ठहरती ।।
माता रण माहि पूत भेजिकै मनावै मोद,
जँह धीर बीरन की आरती उतारती ।
राम अरु श्याम नैं जनम कौ बरन करी
पूरे जग बीच मेरे भारत की धरती ।।

□

एक बेर छूटयौ जो कमान मे सौ तीर बीर,
ज त है बिलाय फेर लौट नहिं आत है ।
बोल जो निकस जाय मुख मे सो एक बार,
बार बार टेरे पै न मुख मे समात है ।।
का'लहु की गति एक ठोर पै न थिर हाय,
छिन छिन जाय नर छिन क्यौ गवात है ।
रावन बितायौ ि्न सोवत बिताई रैन,
मूरख है ठाडौ अब काहे पछतात है ।।

□

ण्ढिवे सौ सीतल करै जो नन और मन
मानस है उजियारौ पूनम के च द्र कौं ।
घटिबे की ठौर पैं बढत जात जाकी कला
मानस है बिम्ब जानकी के मुख चन्द्र को ।।
प्रान तन मे समाए एसैई ममाय रह्यौ,
जाके हर आखर मे तेज राघवे द्र कौ ।
असुर असत्य पै भई है सुर सत्य जीत,
मानस असत्य कू है आज वज्र इ द्र कौ ।।

□

बचपन बीत गयौ, लै कै सब प्रीत गयौ,
मीठी मीठी लोरी गाय अब को सुनाइगौ ।
निंदिया सताय जब अक मे उठाय तब,
बाहुन के पलना मे अब को झुलाइगौ ?

घुटुवत चलिबौ भयौ है सपने की बात,
तुतलाई बोली बोल कौन बनियाइगौ ?
ऐमी दै गयौ है पीर बचपन मेरे वीर,
लूट लै गयौ है मोय कगला बनाइगौ ।

□

बासुरी बजी तौ खिंचि आये गोपी ग्वाल मानो,
कूप सौ कलश खिंच आत बाध डोर सो ।
तनमन सुधि बिसराय भए बावरे से
भूख और प्यास कौ न मान भयौ भार सौ ।।
मुसकात श्याम रीझ रीझ जात ग्वाल बाल,
प्रानन सौ प्रान जुरे नद के किशोर सो ।
प्रानहु त प्यारौ मन के अकास कौ उजागौ,
चाद ये हमारौ काहे बिलग चकार सो ।।

□

अगुरी पकरि कै चलत हे हलत भाग
छूटत ही आगुरिया भूमि पै परत है ।
धूर मे स यौ है गात और न उठ्यौ ही जत
आखिन सौ अ सुवा नो झरर झरत है ।।
कोऊ तौ उठाय और उर सौ लगाय लैतौ,
भोरी अखिया सौ मौन बिनती करत है ।
पकरि उठायौ हाथ हिय मे मुदित मात,
चूमि लियौ गात पुनि अक म भरत है ।

□

धूर भरे दगरे पसरे हे मलमरता से,
लिपट जाय पायन ते सेवक बन नेह सौ ।
गावत है मधुर भजन, पाथर की चाकी हू,
भोरहि ते चेतावै लुकी लुकी गेह सौ ।

सौंधी सी गंध उठै माटी की गामन ते,
सामन में न्हाये जब खेत क्यार मेह सौं ।
फावरौ खुरपिया अरु हाँसिया हँसन लगै,
जमे श्रम देवता किसानन की देह सौं ।

□

काहे की नराई कहा रखौ यार झगरे में,
झगरे में उरझे तौ सुज्झि नाहिं पाऔगे ।
रहबे कूं बाखर हू मिलै जो सनेह सौं तौ
कलह भरे महलन में हियरा जराऔगे ।
अपने घर आगन न्यौं आग सौं बराय रहे,
तापैगी दुनिया तुम ठाडें पछताऔगे ।
गैर के इसारेन पै बर बाधि अपनिन सौं
तैर ना सकौगे तुम डूब डूब जाऔगे ।

□

देत हे उरहाने नित जसुदा के पास आय,
अपने विरान गोपी ग्वाल ब्रज धाम के ।
ब्रज की गलीन औ करीलन की कुंजन में
घरन के अगना में चरचा है नाम के ।
आइ गयौ क्रोध मातु जसुदा नैं मार दियौ,
जोर सौं चपत एक भैया बलराम के ।
कारी कजरारी अखियान सौं ढरकि गए
अँसुवा सलौने सुकुमार घनश्याम के ।।

□

घोटुन चलत खडे ह्वैवे में हलत,
फिर पकरत आगुरिया बलदाऊ भैया की ।
निरखत श्याम तन पुलकित होत मन
बरन न जाय खुशी जसुमत मैया की ।
क्यो फिरै अगना में क्यो घरै घुस जात,
और क्यो खीचत है धोती निज मैया की ।

बलि बलि जाऊ चाह मन मे यही है मेरे
मूरत हिये मे बसै सूर के कन्हैया की ।

गीत-मजरी

नेतागीरी कौ चक्कर—

नेतागिरी के चक्कर मे मेरे यार मार दये पत्थर ते ।
घरबारी रही है ताने मार निखट्टू निकर घर ते ।।

जबते मै चुनाव मे हारौ डोलू मारौ मारौ ।
या चुनाव नै धोबी कौ कुत्ता मोकू कर डारौ ।।
भैया नाय मिली ता दिन ते घर मे दरिया-दार ।
मार दये पत्थर ते

बाहर की का बात करूँ घरबारे आख तरेरे ।
जब मै बिनके परू सामने फौरन रस्ता फेरै ।।
मोकू समझ रे टी बी कौ सौ बीमार ।
मार दये पत्थर ते

नाँय नौकरी कीनी मैंने पर कै या चक्कर मे ।
मौहडे के बल गिरयौ यार मै तौ एकइ टक्कर म ।।
भैया ना दैबै कोऊ मोकूँ उधार ।
मार दये पत्थर ते

□

कँपकँपी—

मचि रयौ सीत रितू कौ सोर सब काँपै रसिया ।
बलवान अरु कमजोर सब काँपै रसिया ।

नर नारी बूढे अरु बारे ।
सहर गाव के गैला गिरारे ।।

निसा साझ अरु भोर सब कापै रसिया ।
घर घर मे सूटर जर्सी की अब है रही बुनाई ।
गली गली म होय रूई की जम के खूब धुनाई ।।
भर रहे गद्दी गद्दा खेर सब कापै रसिया ।
मचि रह्यौ ।

नौजवान ज य कै सडकन प कोट पेट मे डोलै ।
गर्मी की तरिया सीन के बटन आज ना खोलै ।।
सबकूँ सीत रयौ झकझौर सब कापै रसिया ।
मचि रयौ ।

सई साझ ते अब चोराहे सब सुन सान परे है ।
रात रात भर घूमन बारे खटिया बीच धरे है ।
बाँधी सबकी लुटिया डोर, सब कापै रसिया ।
मचि रयो ।

आज गैस नै घर घर आइक अपने पाम जमाए ।
सुविधा भारी पाई यासौ सबइ गुलाम बनाए ।।
देखे अब चूल्हे की ओर सब कापै रसिया ।
मचि रयौ ।

ाय बडौ बलवान —

भैया सब जग जानै, समै बडौ बलवान रे ।
जो जन याहि साँच नहि जानै ।
चाल समै की नहिं पहचानै ।।
मूरख करत गुमान रे ।
भैया सब जग जानै

पल मे रक बनता राजा, पल म राजा रक बनै ।
बात समै की धरती की रज भूमि छोड आकाश तनै ।।
पल भर मे मिल जाय धूर मे बने बडे बलवान रे ।
भैया सब जग जानै

काव काव कागा जब बाल काकर मार भजावत है ।
एक समे ऐसौ आवत है ताकू टेर बुलावत है ।
बखत परे पै करत निरादर बखत पर सम्मान रे ।
भया सब जग जानै

उजियारौ ही उजियारो जग है प्रसन्न मन बारे कू ।
मीठे वचन तीर लागत है सदा दीन दुखियारे कू ।।
जहर लगै कुघरी म कबहू बासुरिया की तान रे ।
भैया सब जग जानै

समे परे अनगिन बीरन न मूछन म जटा दिए ।
घौटुन के बल गिरे समै नै सब अटा ढीते कीए ।।
महल मिले माटी मे अनगिन चमन भए बीरान रे ।
भैया सब जग जानै

बचपन बीतै चढ जवानी, समै अनोख खेल रचै ।
ताके पाछे आय बुढापौ कहौ समे सौ कौन बचै ।।
माटी कौ पुतला माटा मे मिलत समे पै आन रे ।
भैया सब जग जानै

तिरगा—

नभ मे फहर फहर फहराय तिरगा प्यारौ रे ।
देखौ लहर लहर लहराय तिरगा प्यारौ रे ।।
केशरिया रग भारत के जन जन कू सत बनावै ।
काम क्रोध मद मोह कबहु ढिग जाके नैक न आवै ।
देवता हर मानव बन जाय तिरगा प्यारौ रे ।
नभ मे फहर फहर

रग धौरौ जाकौ चहु दिस फैलै मन की करै सफाई ।
भेदभाव मिट जाय रहे सब आपस मे मिल भाई ।।
तौ भारत सुरग धाम बन जाय तिरगा प्यारौ रे ।
नभ मे फहर फहर

हरौ रग मेर भारत मे लै आवै हरियाली ।
खेत और बागन मे फूलै हर पता हर डाली ।
तौ मन की कली कली खिल जाय तिरगा प्यारौ रे ।
नभ म फहर फहर

ब्रज कौ आनन्द—

बिरज म ऐसौ आन द छावै ।
प्रातहि ते उठि हर ब्रजवासी राधा गोवि द गावै ।
घटा और शख गू जत है मन्दिर म दिर बोलै ।
किसन राधिका पूजि नम सौ हिय की अ खिया खोले ।
उठत उठत माखन मिसरी कौ का हा भोग लगावै । बिरज मे

घर घर मे राधामोहन हे सकल काज करवया ।
सग रहे हल मूसर बारे श्री बलदाऊ भैया ।।
मात जसोदा भरी हौंस सौ दोउन कू दुलरावै । बिरज मे

जमना न्हाय सबहि नर नारी सझा और सकारे ।
जय श्री कृष्ण जयति श्री राधामोहन बैन उचारे ।।
राग द्वेष भूलि जाय मन श्यामा श्यामहि गावै । बिरज मे

श्रद्धा ते लाखन श्रद्धालू पूजत है गिरधारी ।
सात कोस की परकम्मा मे नाचत हे दै तारी ।।
हर जन जन गोवधन महिमा मीठे बोलन गावै । बिरज मे

राधा टेरै का हा कान्हा कु ज कु ज सुधि खोई ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर और न दूजौ कोई ।।

सूरदास और श्याम रगो मन अनत कहा सुख पावै ।
बिरज मे ऐमो आनद छावै ।।

कलयुगी नौतौ—

का-हा काफी पीवे आ जइयौ तू सजा कू घर पै ।
तू सजा कू घर पै मम्मी पापा ते मत डरपै ।।
गरम गरम तोकू काफी पिलाउगी ।
ऊपर ते नमकीन खवाऊगी ।।
नैक प्रेम सौ भोग लगा जइयौ तू मजा कू घर पै ।
कलयुग म मक्खन कहा मिलैगौ ।
बिनु मक्खन नाय काम चलैगौ ।
मोय मक्खन समझ कै खा जइयौ तू सजा कू घर मे ।
जानै कहा तैनै जादू माप डारौ है ।
तन मन का हा मैनै तेरे ऊपर बारौ है।
वाय ब्याज सहित लौटा जइयौ, तू सजा कू घर म ।
कितने गहरे घाव तैनै दिल मे लगाए है ।
आज तलक जो नाय भर पाये हे ।।
नैक आइकै दवा लगा जइयौ तू सजा कू घर मे ।
द्वापर मे तैनै रास हू रचाये हे ।
मुरली बजाय गोपी ग्वाल हू नचाए हे ।।
अब भगडा डास सिखा जइयौ, तू सजा कू घर मे ।
का हा काफी पीवै आ जइयौ तू सजा कू घर मे ।।

अरदास एक गजे की—

प्रभु मेरौ एक काम तौ करौ ।
मै हू भगत तिहारौ गजौ मेरौ कष्ट हरौ ।
कैऊ साल सूखा मे बीते कर देउ हरौ भरौ ।।

साबुन तेल कौ स्वाद भूल गयौ मन मे चाव भरौ ।
जो कोऊ इन्है लगावत दीसै है जाय घाव हरौ ।।
इक चेहरा एक सीस कहावत जब तक रहत हरौ ।
बार हटत दोउ एक बरन भए गजौ नाम परौ ।।
मेरी इच्छा पूरन कर देउ नहि पन जात टरौ ।
मेरे बार नाय तौ सबकी समतल भूमि करौ ।।

अरदास घने केस बारे की -

प्रभु माहि गजौ आज करौ ।
एक दिना गुस्सा मे भरि कै काहू तं झगर परौ ।
बार पकर वाने दीने चक्कर नालो मे जाय गिरौ ।।
गुडन के चक्कर मे मोकू पुलिस नै आय धरौ ।
चौराग्रौ बन गयौ चाद पै देख जग सिगरौ ।।
एक दिना जलती बीडी नै मोपै जुलम करौ ।
बार जरे सो जरे सग मे मूड मेरौ पजरौ ।।

सद्भाव गीत —

हिल मिल कै रहनौ रे भैया हिल मिल कै रहनौ ।
कह गए पुरखा ऐसी बात मान लेऔ अब उनकौ कहनौ ।
हिल मिल रहै सो गगा न्हावै ऐसी सीख सिखाए गए ।
भूख लगै तौ बाट कै खावै ऐसी राह दिखाए गए ।
जा घर मे फैलैगौ झगरौ सो घर नरक कहावै ।
सुख ते कोसन दूर रहै म्हा अमन चैन ना आवै ।
पहनौ रे पहनौ प्रीति के आभूषण पहनौ ।
कह गए

नानक अल्ला कान्हा ईसा सबई माने जाये ।
हर जुग मे सदभाव सिखाइबे रूप बदल कै आए ।।
इक दिन नर है जाय नरायण वात साच कर डारी ।

मानव धरम, धरम मानव को और सबन ते भारी ।।
गहनौ है गहनौ धरम मानवता कौ गहनौ ।
कह गए

भेदभाव आपस के भूलौ मन कौ मत निकारौ ।
मिल गरे ते गर आज मं र मस्जिद गुरुद्वारौ ।
एक भैया की परि आज दूजौ भैया पहचानै ।
हम मिल जुल क आज बिचारे माल प्रेम कौ जानै ।।
सहनौ ह सहनौ परायौ दर्द हम सहनौ ।
कह गए

तुलसी कौ मानस—

मानस तुलसी कौ गगा की निमल धार सबन के पाप हरै ।
पढिकै मिट जाए मनवा के सब विकार कृपा की बरसात करै ।।
बडे चाव सौ लोग पढत हैं घर घर अगना द्वारे ।
मानव मन के छिन मे खोल मानस बंद किवारे ।।
भैया समझावै सगरे बेदन कौ सार सबन के पाप हरै ।
प्रेम परस्पर बढ़ै मिटावै ऊँच नीच की खाई ।
मन ममान तन मन मे लावै जीवन की तरूनाई ।।
भैया कर देवै विष कौ अमत की धार सबन के पाप हरै ।
मानम तुलसी कौ गगा की निमल धार सबन के पाप हरै ।।

हमारौ देस—

हमारौ प्यारौ है देस जगत उजियारौ है देस ।
जाकौ तन पावन वृन्दावन मन मे रमे महेस ।।
जाकी माटी चन्दन है गई, तपो भूमि नन्दन बन है गई ।
पुरवा बहै अमिय रस बरसै, धरती के सग अबर हरसै ।

मृत समान प्रानन मे फूकै गीता कौ सदेश।
हमारौ ॥

तन के कारे मन के गोरे, नर नारी सुभाव ते भोरे।
उर सौ झरै नेह के निझर वानी मे रामायण के स्वर॥
जीवन तुलसी की चौपाई धर्यौ कबीरा भेस।
हमारौ ॥

भूलै मत इतिहास पुरानौ अपने गौरव कू पहिचानौ।
रिसि मुनि की सतान कहावै, जाको सुजस देवता गावै।
बालक आज भरत न है जाय दीजो सुमति गनेस।
हमारौ देस॥

किसान—

गाम के किसान हम तौ गाम की बहार।
भारत के बेटा धरती के हम सिंगार॥
सहरन सो दूर बसै गाम जे हमारे।
छल अरु कपट से रहे दूर ये बिचारे॥
इनकौ दुलरावै सदा बासनी बयार।
गाम की बहार॥

गामन मे खेत हँसे, फुलवा की क्यारी।
माटी की झोपडी है महलन सौ प्यारी॥
प्रानन सौ प्यारी धरती मैया सौ प्यार।
गाम की बहार॥

अमरत सौ लागै हमे पनघट कौ पानी।
फीके पकवान लगे नीकी गुरधानी॥
गेहू चना सौ बढिकै आव मक्का ज्वार।
गाम की बहार॥

ना व्यापै बरखा हमे, ना गरमी जाडौ।
माटी कौ तन भयौ अब तौ अखाडौ॥

सकट सौ जूझन कौ हर मन तैयार ।
गाम की बहार ।।

खेत—

खेत है किसानन के तन मन अरु धन ।
खेतन मे सोये है सलौने सपन ।।
खेत क्यार है उनकौ हँसतौ परिवार ।
जीवन है बरखा की रिमझिम जलधार।।
रात द्यौस एक करै ये बारह मास ।
मेहनत मे भूल जाय भूख और प्यास ।।
परहित म आजीवन रखे हे रहन ।
सलोने सपन ।।

सूखा सौ सूख जाय बाढ मे बहे ।
हौनी अनहौनी की मार हू सहे ।
जेठ फूस माह सहे सीन पै धीर ।
फागुन औ चत हरै हियरा की पीर ।।
हरे भरे खेत मीत सिरावै तपन ।
सलौने सपन ।।

खेत बने घर बारी के लहगा फरिया ।
खेत बने बच्चन कू दूध दरिया ।
खेतन मे उत्तर है खेत है पहेरी ।
खेत है किसानन कू मठा अरु महेरी ।।
माग लाय खेतन सौ बिटिया कगन ।
खेतन मे सोये है मलौने सपन ।।

पैसा—

जब तक पैसा रह्यौ पास मे तब तक सबनें प्रीत निभाई ।
पैसा खतम भयौ मानव नै शैतानी सूरत हू दिखाई ।

पैसा ही अब तौ सब कछु है ई तौ राम बनि गयौ भैया ।
पैसा दो पैसा की ताई आज बिक गई किसन कन्हैया ।।
चौराये की खुली सडक पै बिकती देखौ मीरा बाई ।
तब नक सबनै प्रीत निभाई ।

धनी लोग पैसा लै दै कै अपने सिगरे काम करामे ।
और राह के काटेन नै हू पैसा तेई दूर हटामे ।।
स्याही सोख समान निबल कौ सबरौ खून चौस लै भाई ।
तब तक सबनै प्रीत निभाई ।।

घर मे फूट परी पैसा ते पैसा रिश्ते बन जामे ।
पैसा है तब तक तौ सबही बैठे बैठे मौज उडामे ।।
इन्हई लोगन नै मरिवे पै मैली चादर कफन बनाई ।।
तब तक सबनै प्रीत निभाई ।।

परिवार कल्यान—

पैदा करि करि कै सतान बलम तैनै फौज बनाई है ।
फौज बनाई है, देखि कितनी महगाई है ।।
बना लई तैनै दजन डेढ करी अपनी और मेरी रेड ।
तनखा तेरी नैक सी ज्यौ सागर मे बूँद ।
सोय रह्यौ तू चैन सौ फिर हु अँखिया मूँद ।।
फिर हु आखिया मूँद मौत क्यो पास बुलाई है ।
पैदा करि करि कै ।।

भरैगौ कैसै इनकौ पेट, रेट है रही इडिया गेट ।
महँगाई की मार ते हाल भयौ बेहाल ।
चप्पल चटकामत फिरै तेरे सबई लाल ।।
तेरे सबई लाल कि इनपै कहा कमाई है ।
पैदा करि करि कै ।।

निकर गए जो कहु सबई कपूत, जान कू है जाएगे जमदूत ।
रोज उराहने आइगे और लराई होय ।
समझदार है फेर हू लीने काटे बोय ।।

लीने काटे बोय कि तेरी मति बौराई है ।
पैदा करि करि कै ॥

जनमाठे पै—

बरसै पानी घनघोर घटा कारी कारी ।
लै लियौ बिष्नु नै जनम बिरज मे धूम भारी ॥
सुसी मनाई दसहु दिसन नै नाच रहे दिक्पाल ।
सुरग लोक मे नचे देवता दै द ठुमका ताल ॥
सुरि दर बलिहारी ।
लै लियौ ॥

मातु जसोदा धाय है गई जिन पाले गोपाल ।
हियरा पै बजर सौ धरिकै सौप दियौ निज लाल ॥
ध य ऐसी नारी ।
लै लियौ ॥

बनिकै जोगी शकर आये नँद बाबा के द्वारे ।
मैया दरसन माय कराय दै कित है लाल तिहारे ।
डरपि गई महनारी ॥
लै लियौ ॥

कहा भरोसौ बाबा तेरौ करि जाय टौना झारौ ।
लाला मेरौ बारौ सौ है, अब तौ आप पधारौ ॥
गैल दखी भारी ।
लै लियौ ॥

अलख निरजन कहिकै जोगी, है गए अ तर्धान ।
छोरा रोवै चुप्प न होवै सबहिं भए हैरान ॥
मात पचि पचि हारी ।
लै लियौ

तुरत बुलायौ बाबा आयौ बोलै बम बम बोल ।
खेलन लगे कान्ह पलना मे मनहर करत किलोल ।
हँसि रहे त्रिपुरारी ।
लै लियौ बिष्णु नै जनम बिरज मे धूम भारी ।।

प्यासी धरती करै पुकार—

पानी जीवन कौ आधार, मेघा जल बरसइयौ रे ।
अबके सावन झरे फुहार, मेघा मत तरसइयौ रे ।।
'बिनु पानी सब सून', कह गए नीकी बात रहीमा ।
बरस पै बरस बीत गए बरसै टूट गई है सीमा ।।
प्यासी धरती करै पुकार, मेघा जल बरसइयौ रे ।

नदी है गई छीन, बाध हू दीन हीन से लागे ।
कुआ बाबरी ताल तलैया सूखे सबहि अभागे ।।
तिनकी छाती परी दरार, मेघा जल बरसइयौ रे ।

झूला रूठे पटरी रूठी रूठी रेसम डोरी ।
कोयल रूठी मैना रूठी रूठ गई सब गोरी ।।
अबकै रूठै नाहि मल्हार, मेघा जल बरसइयौ रे ।

हीरा मोती प्यासे डोलै श्यामा खढी रभावै ।
खोले चोच पखेरू डोलै, बूँद न पानी पावै ।।
सबके दीने है मन मार, मेघा जल बरसइयौ रे ।

रीते घर पनघट तन झाकै, घूँघट भरी उदासी ।
तीन बरस ते धरती मैया है निजला उपासो ।।
चुकता करियौ सबइ उधार मेघा जल बरसइयौ रे ।

काहे निठुर है गयौ ऐसौ, रे इन्दर बजमारे ।
अबकी बेर पठइयौ बदरा नीर झरे कजरारे ।।
अँखिया माग रही सिंगार, मेघा जल बरसइयौ रे ।

सूखे कठ फास सी लागै अटके बोल गरे मे ।
साचौ मीत काम आवत है सदा बात बिगरे मे ।।
दीजौ प्रानन के उपहार, मेघा जल बरसइयौ रे ।
अबके सावन झरै फुहार मेघा जल बरसबयौ रे ।।

बात माटी की—

माटी सौ करलै प्यार ।
नर जनम न मिल हजार ।।
याही माटी मे तो जनम तैने पायौ ।
बचपन धूरि मे लोट बितायौ ।।
भूख लगी तौ खाइ लई माटी ।
निंदिया लगी बिछा लई माटी ।।
तू माटी कौ बिरवा प्यारे जाप चढी बहार ।
माटी सौ ।।

खेतन की माटी है सौनौ ।
बिटिया की सादी अरु गौनौ ।।
जब माटी मे बीज परत हे ।
हलधर के सपने उपजत है ।।
ई माटी अँखियन कौ कजरा और गरे कौ हार ।
माटी सौ ।।

दुनिया पै माटी कौ करजा ।
माटी कौ ईसुर सौ दरजा ।।
माटी केसर की सी क्यारी ।
माटी है सबकी महतारी ।।
बाबुल की गोदी सौ बढिकै माटी देय दुलार ।
माटी सौ

हम सब है माटी के छौना ।
माटी माथे दिये डिठौना ।।

आपस मे मत खैचौ पारौ ।
माटी कौ कैसौ बटबारौ ।।
मेरे प्यारे भैया मानौ माटी की मनुहार ।
माटी सौ

माटी नै बहुरूप बनाए ।
देहरी आगन द्वार सजाए ।।
महल झौपडी सब माटी के ।
हम तुम सब पुतरे माटी के ।।
अ त समै माटी सौ मिलिबे माटी करै सिंगार ।
माटी सौ करलै प्यार ।
नर जनम न मिलै हजार। ।

बाबुल के नाम पाती—

जब सौ मैं आई बाबुल मेरे ब्याह कै जी
एजी कोई तबसौ, अरे हम्बे कोई सास लडै दिन रैन
और कहै मोसौ तेरे दिन आ चुके री ।
किन कगालन मे जाय फँसे,
यह कह कह मोपै ननद हँसे,
बाप तौ तेरौ ठेकेदार है री,
ऐजी कोई फिर हू, अरे हम्बै कोई फिरहु दहेज न देय ।
सास कहै मोसौ ।।

मेरी अपनी हालत कैसी है ?
पर कटे कबूतर जैसी है ।
उडनौ जो मन मे चाहै आकाश मे जी,
ऐजी कोई गिरि गिरि जाय जमीन ।
सास कहै मोसौ ।।

तेरे बाप नै जो सौदा कीनौ ।
क्यौ आज तलक हू नाय दीनौ ।।
अब तूही जिम्मेदार है बाप की री ।

ऐजी कोई दै दऊ गी, अरे हम्बै कोई दै दऊ तेरे मौह पै आय ।
सास कहै मोसौ ॥

मै घर की हालत जानत हौ ।
तुम कैसे हो पहिचानत हौ ॥
आखिर हो म बाबुल बेटी आपकी जी,
ऐजी बाई अँगना मे बिताए सोलह साल ।
सास कहै मोसौ ॥

ओ बाबुल चिंता मत करियो ।
इन हत्यारेन सौ मत डरियौ ॥
तू जि समझियो तुम्हरे बेटी एक कम ही
ए जी कोई भारत मे हे बेटी अनेक ।
सास कहै मोसौ ॥

तू सोय रह्यौ कानून कहा ?
एक अबला टेरत तोहि यहा ।
जैसै कृष्ण नै रक्षा कीनी द्रोपदी की,
ऐजी कोई बैसैई बचइयौ मोय आन ।
सास कहै मोसौ

जो पढै सो बढै—

हमकू अ आ इ ई की किताब लै अइयौ देबरिया ।
लइयौ देबरिया हाट लै जइयौ देबरिया ॥
घर सौ कोऊ पाती आवै हम पै पढी न जाय ।
काऊ और ते जो पढवाऊँ सबइ भेद खुल जाय ॥
हमे पढाइकै घर की लाज बचइयौ देबरिया ।
हमकू अ आ इ ई ॥

कारौ आखर भैंस बराबर हम है निपट गमार ।
ललचाई आँखिन ते देखू रोजीना अखबार ॥

समाचार दुनिया के बाच सुनइयौ देबरिया ।
हमकू अ आ इ ई ।।

पढे लिखे देवर की आवैं पढी लिखी दयौरानी ।
आप तौ बैठी पुजैं करावैं हम पै गोबर पानी ।।
ऐसी बेकदरी तौ मेरी मत करवइयौ देबरिया ।
हमकू अ आ इ ई ।।

बलम हमारे तुमरे भैया हमरी एक न मानै ।
शिक्षा ते इज्जत समाज मे याहि नाँय पहचानै ।।
उनके ताई थोरौ ज्ञान करइयौ देबरिया ।
हमकू अ आ इ ई ।।

पढबे की कोई उमर न होवैं ऐसौ लोग बतामे ।
बूढे बूढे लोग लुगाई मेहनत सौ पढि जामे ।।
बची उमरिया मेरी पार लगइयौ देबरिया ।
हमकू अ आ इ ई ।।

पढौ लिखौ है तू तौ भारी, जोतिस कौ विद्वान ।
देख हतेरी कहा छुपौ है भाग हमारे जान ।।
कितै परी शिक्षा की रेख बतइयौ देबरिया ।
हमकू अ आ इ ई ।।

कहानी कलम की—

दुबरी पतरी सी हूँ देखौ फिरहू मेरौ रूप पियारौ ।
हर कवि गीतकार हर सायर बन जाव मेरौ मतवारौ ।
मेरौ जनम अगर नाय हौ तौ, रामायना कैसै बनि जाती ।
वेद पुरान महाभारत हू दुनियाँ मे कैसै आय पाती ।।
तुलसी सूर कबीर बिहारी जे महान कैसै बन जाते ?
मेरे बिना सबइ धरती पै मलि कै हाथ सदा पछताते ।
है सम्पूण विश्व मे देखौ, मेरौ डका बजिबे बारौ ।
बनि जावै मेरौ मतवारौ ।।

पढिबे बारे छोरा सबई रात दिना मेरे गुन गामे ।
अगर भूल कै जामे घर पै, तो बहुतइ मन मे पछतामे ।।
इम्तान की रौनक मेरी अब मे तुमकू कहा बताऊँ ?
थोरी सी खराब हैबै पै, बेर बेर मे बदली जाऊँ ।
मैं अपनी इच्छा ते कबहू रूकि रूकि कै चलबे लग जाऊँ ।
जानै ठीक तरह नाय राखी, बाकू तब मे खूब रूबाऊ ।।
चाहू जाकौ फेल कराय कै करवाय दऊ बा।रो मुँह कारो।
बनि जावै मेरौ मतवारौ ।।

जब कोऊ बिरहिन वियोग मे अपन पति के रोयौ करती ।
और रात मे बैठ खाट पै अपनी पलक भिगोयौ करती ।।
प्रियतम सग बिताए जो छिन, मन मे ति‍न्हे उतारौ करती ।
खिरकी पै जाय बैठ अकेली, पति ‌कौ पथ निहारौ करती ।।
ऐसी दुखियारी के सिग दुख कम करबे ताई मै जाऊ ।
रूप बदल कै पाती कौ तब पिय तक सदेसौ पहुँचाऊँ ।।
पाती कू पढिकै व्याकुल है घर आवै बाकौ घरबारौ ।
बनि जावै मेरौ मतवारौ ।।

जितने है दुनिया मे दफ्तर सबई चलि रहे मेरे बल पै ।
है रये हे सिगरे तबादले मेरे ई कारन भूतल पै ।।
साहब बाबू अरु चपरासी मेरे कारन बेतन पामे ।
और गिरस्ती की नैया कू, भव सागर ते पार लगामे ।।
मेरे कारन भरी परी ये जितनी है फाइल दफ्तर मे ।
मेरे ही कारन शिक्षित हे नर नारी देखौ घर घर मे ।।
अगर न होती मै दुनिया मे, कहौ काम हौ चलिबे बारौ ?
बनि जाव मेरौ मतवारौ ।।

लेकिन मे हू का कर लैती, जो ना होते साथी मेरे ।
या काजै स्याही अरु निब कौ धन्यवाद मेरे बहुतेरे ।।
बिनु स्याही के देखौ जग मे, मैं अस्तित्वहीन है जाती ।
जैसै मछरी जल ते बाहिर छटपटाइ कै है मर जाती ।।
इन दोऊ मित्रन नै मेरौ, सुख अरु दुख म सग दियौ है ।
देखौ मोपै कितनौ भारी दोउन नै अहसान कियौ है ।।

स्वेत कमल स्याही को मन है तन चाहै कितनो इ कारो ।
बनि जावै मेरो मतबारो ।

महाकवि सूरदास—

भागै दूर अधेरो जब तक नभ मे सूर रे ।
कारो अधियारो छट जावै । घर घर उजियारो पहुँचावै ।।
चाहे इतनी दूर रे ।
भागै दूर अधेरो ।।

एक सूर अबर मे चमकै सबकू राह दिखावत है ।
दूजो सूर सूर-सागर मे हँसि हसि कै बतरावत है ।।
राह दिखावै एक आँधरो देखन मे मजबूर रे ।
भागै दूर अँधेरो ।।

आखिन बारे कहा करिगे जो बिनु आखिन को करिगो ।
जग की रीती परी गगरिया, गागर म सागर भरिगो ।।
सूरदास बट वक्ष है गयौ, सब रह गए खजूर रे ।
भागे दूर अँधेरो ।।

किसान—

भारत के बीर किसान भूमि ते सौनो ई सौनो उपजामे ।
अपने सुख दुख को ख्याल करे नहिं परहित ही दुख वे पामे ।।
हल बैल और भूमि लैके ।
और बीज पसीना के बैकै ।।
उन बूँद पसीनन माहि चमकते मोती घर घर फैलामे ।
भारत के ।।

रहबे कू छप्पर टूटो सो ।
कच्चो मकान हू फूटो सो ।।

बरखा की बूँदें आय, उढैया, सिगरे गीले कर जामे ।
भारत के ।।

इन वीर किसानन के श्रम ते ।
ये सेठ तिजोरी निज भरते ।।
राखत है दो दो कार, बगला कोठी दस दस चिनबा मे ।
भारत के ।।

सरकार ध्यान नहि धरती है ।
अपनी मनमानी करती है ।।
गर मागै कोई चीज किसानन कू महिनन तक तरसामे ।
भारत के ।।

पर जब चुनाव कौ जोर चलै ।
इन बिन पत्ता नहि नैक हलै ।।
तब हार और झकमार बोट की भीख मागबे कू आमे ।
भारत के ।।

इक अरज किसानन ते मेरी ।
अधेर मिटगौ नाय देरी ।।
सब लेहु बुद्धि ते काम बहरूपिया सिर धुन धुन कें पछतामे ।
भारत के वीर किसान भूमि ते सौनौ ई सौनौ उपजामे ।।

लोकगीत—

चाए बिक जाए लोटा थार, बलम मै दिल्ली देखूँगी ।
चाए सिर पै चढ उधार, बलम मैं दिल्ली देखूँगी ।।
जब ते शादी हे कै आई, रारहू तक लौ न घूम पाई ।
माना काजर ते कारी हूँ, पर इकलौती घरवारी हूँ ।
मेरी बडी करारी धार—बलम मैं दिल्ली देखूँगी ।
मत करियो रे इ कार

फट फट प पारीसन डोलै फर्राट ते इ गलिश बोल ।
कधा पै ससुरी हाथ धरै मेरी भीतर भीतर जी पजरै ।
रह जाऊँ हाय मन मार बलम मै दिल्ली दखूँगी ।।
आस पूरी कर दै भरतार

मत बात सुनै घर बारेन की, दिल्ली तौ है दिलदारेन की ।
मेरी सास ननद तोय टोकिगी दिल्ली जाइवे त रोकिगी ।
खटपाटी लीजो ठार बलम म दिल्ली देखूगी ।।
मत करियौ मेरी टार

म्हा चौडी चौडी सडक घनी, हर ठौर पड री छाह घनी ।
स्कूटर टम्पू डोलत है, शहरी भाषा म बोलत ह ।
बैठूगी मारुती कार बलम म दिल्ली दखूगी ।।
देखूगी चाक बजार

तो पै एक बात मनाऊ गी चुपचुप की तिरिया ख ऊगी ।
इक अच्छी सी साडी लीजो मोय गिफ्ट प्यार ते द दीजो ।
सग लऊ गुडिया चा धाम म दिल्ली दखूँगी ।।
रसगुल्ला हू रसदार

मीनार कुतुब देखन जाऊ । पेयर ते फोटू खिचवाऊँ ।
दिन ढरिजै लगै सहर जइयौ । मोय फिलम नगीना दिखबइयौ ।
श्री देवी पै बलिहार बलम म दिल्ली देखूँगी ।।
पीऊ गी शरबत लच्छेदार

इक अतिम अरज हमारी है । ससद मोय सबत प्यारी है ।
जह जूता कुर्सी चलै लात । ज ता ते होय विश्वासघात ।
दिखाइद लु ज पु ज सरकार बलम म दिल्ली देखूँगी ।
छिन छिन जूता पैजार बलम मे दिल्ली दखूँगी ।
बँटै कैसै जूतन मे दार बलम मे दिल्ली देखूगी ।।

लोकगीत —

इक बात मान ल नार सजनी तू दिल्ली मत देखै ।
चढि जायगौ तेज बुखार सजनी तू दिल्ली मत देख ।।

है ढोल सुहाने दूर के, वायदे हे सबइ हजूर के।
सपने है जो मजबूर के, वे लड्डू माती कूर के ।
पल मे है जाइगे छार, सजनी तू दिल्ली मत देख ।
सुन दिल्ली है दिलवालो की, काग्नो की अरु नक्कालो की।
ये सदा ही रही दलालो की, पर नही देश के लालो की ।
यहा ऐश करे मक्कार, सजनी तू दिल्ली मत देखै ।
फैशन कौ अजब तमाशौ है, गुडगाव है शहर बताशौ है।
छोरी छारन कौ झासौ है, जहा पैड पैड पै रासो है ।
छोरी है फरियाफार सजनी तू दिल्ली मत देखै ।

धरती मैया—

धरती मैया कौ करज लाल अब उतारौ ।
निरमम बन पीठ माहि चाबुक मत मारौ ।।
मैया तौ मैया है मन की है भोरी ।
नैनन सौ नेह झरै बनन सौ लोरी ।।
हियरा मे बहै प्रीत झरना हू प्यारौ ।
निरमम बनि ।।

माटी मे जनमे हौ माटी कौ तन मिल्यौ ।
खेल खेल माटी मे मन कौ उपवन खिल्यौ ।।
आस बनौ मैया की देहु अब सहारौ ।
निरमम बनि ।।

कहा रट्यौ झगरे मे काहे तकरार करौ ।
हियरा सौ हियरा मिल जाय मीत प्यार करौ ।
हिरदे के दानव को आज तुम पजारौ ।
निरमम बनि ।।

मैया के बेटा सब हिल मिल कै आओ ।
जन गन मन बानी को घर घर पहुँचाओ ।।
बनि जइ है कुटुम एक देस फिर हमारौ ।
निरमम बनि ।।

जब सौ पिए गए विदेस—

जब सौ पिय गए विदेस भरे हे दग कजरारे ।
अँसुवन के फूटे सोत बिदेसी पिया बजमारे ।।
जब सौ पिय ।

कजरा छूट्यौ गजरा छूटयौ छूटी माथे बिंदिया ।
बैरी है गए दिवस हमारे सौतन है गई निंदिया ।।
सपन रह गये क्वारे ।
जब सौ पिय ।

फीके रग लगै फुलवा के आगन बिरवा सूखे ।
पीरी परि गई मन की बगिया रितुफल लागें रूखे ।
भए पनघट खारे ।
जब सौ पिय ।

पावस आन बसी पलकन पै सीत करै मनमानी ।
जेठ दुपहरी कचन काया तप तप है गई पानी ।।
सास भए झगरारे ।
जब सौ पिय गए बिदेस भरे है दृग कजरारे ।।

गीतन के राजकुमार वरुण चतुर्वेदी

कविता रचिबौ अरु गीत गाइबौ भैया वरुण चतुर्वेदी कूँ जनम घुट्टी मे मैया बापन नै पिवाय दियौ हो। फिर वरुण न अपनी कविता अरु गीतन सौं अरु राजकुमारन जैसे व्यक्तित्व सौं ये द्वै कहावत बालपन मे ही पूरी तरियां चरितार्थ कर दयी— पूत के पाम पालने मे दीख जावैं' अरु 'मोर तौ चिते चिलाय ही आवै है।' तबहि तौ छोटी सी उमरि के वरुण कू मैनै श्री हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर की कवि गोष्ठिन म अरु कवि सम्मेलनन मे अपने पिता कविवर श्री जयशंकर प्रसाद चतुर्वेदी 'जय' के सग आय आय कै मीठी मधुरि अरु भोरी भारी बोली म कविता सुनावतो अरु गीत गावतो देखयौ। श्रोता या बाल कवि की भाव भरी कवितान नैं सुन सुन कै मंत्र मुग्ध है है जाते।

वरुण चतुर्वेदी कूँ भक्ति, नीति, देश प्रेम अरु हास्य व्यग्य के संस्कार अपने कवि पिता श्री जयशकर जी अरु पितामह प. शोभाराम चतुर्वेदी सौं मिलै। वरुण जी के चाचा श्री तुलसी राम चतुर्वेदी, बड़े भैया अरुण चतुर्वेदी अरु चचेरे भैया ब्रजेश चतुर्वेदी हू हिन्दी अरु ब्रजभाषा के मजे भये कवि हैं। अब तौ वरुण जी का छोटौ सौ लाला हू कवि मच पै धडल्ले ते आइबे लागौ है। पर नौ यहा तक कह कै ति इनके परिवार म ऐसौ को होएगौ जो थोरौ भौत गुन गुनाइकै गीत नहीं गाय सकै। काव्य रचना नही कर सकै। वरुण जी के परिवार मे मा सरस्वती न कविता के संस्कार पुरिखा पगत ते ही भरि भरि दी ह्है है। अरु अब बाकी बेल दिन दूनी रात चौगुनी बढती जा रही है।

वरुण जी के पिता श्री जयशकर जी बिनके कवि रूप सौं कितैक सन्तुष्ट हे, जि बात जयशकर जी के मोनोग्राफ मे छपे साक्षात्कार के इन सब्दन सौं अच्छी तरियाँ उजागर होय है— प्रिय बेटा वरुण चतुर्वेदी कूँ मेंनै अपने सग राख्यौ। श्री विश्वेन्द्र सिंह (वर्तमान सासद) पुत्र श्री ब्रजेन्द्र सिंह की चोथी बरस गाठ पै वरुण कू लै गये। गोल

भूख गई अरु प्यास गई घनश्याम को ढूढत है घन मे।
तन ही तन राधिका पास रह्यौ, मन जाइ बस्यौ मन मोहन मे।

नन्द के लाला नै बादर फारै समस्यापूर्ति म वरुण जी नै सवैया मे या तरियाँ करी है—

धोखे ते पुत्र ह यो यह जानि कै, अरजुन क्रोध मे बैन उचारे।
आतम दाह करूँ दिन डूबे पै चैन परे न जयद्रथ मारे।
माया ते सूरज ढाकि दयौ खुस है के जयद्रथ आन पधारे।
चूकै मती प्रन पार लै जै कह न द के लाला नै बादर फारे।

ब्रजभूमि की व दना के ये द्वै सवैया तो इतने लोक प्रिय भये कै वरुण जी जहाँ कहूँ जायें श्रोता इन्नै सुने बिना नाय मान—

जग पूजि रह्यौ ब्रज की रज कौ,
ब्रजधाम को वासी महान धनी है।
म द बयार जो आवत है,
मन मोहन बासुरी तान सनी है।
और कहा लौ बखान करौ
ब्रज काच के ढेर पें हीर कनी है।
स्याम भये ब्रज की रज मे,
ब्रज स्याम सनी फिर स्याम बनी है।

□

जह बाके बिहारी करें,
सो सरुप हियौ कौ लुभावनौ है।
रहे सीस पै इनके हाथ सदा,
अरु द्वारिकाधीस सौ पाहुनौ है।
जमुना जी के नीर की बात कहा,
सिगरे जग फद नसावनौ है।

धनि भाग हमारे जु वास मिल्यौ,
जग मे ब्रजधाम सुहावनौ है ।

लगे हाथ रावे जी की विरह व्यथा ते भरयौ जी कवित्त हू देखो—

डोलत उराहने पग, रावेरानी मग मग
मन मे कहत प्यारे केतौ तरसावैगौ ।
पायन मे छाले परे, परि परि फूटि गए,
पीर पर पीर हिय केती उपजावैगौ ।।
मुख पै उदासी छिन छिन मे बढ जाय,
मन मे उठत हूक कौ न जानि पावैगौ ।
हारि कै गिरी धरन, बैन यौ लगी कहन,
मोहे तरसावैगौ तौ चन नहि पावैगौ ।।

वरुण जी कू अपने बचपन की याद बहुत ही सतावे है । बिनकू ऐसौ लगे है कै बचपन बीते पै बिनकै सिगरै आन द छिन गये अरु पीर ही पीर रह गयी है—

बचपन बीत गयौ, लै कै सब प्रीत गयौ,
मीठी मीठी लोरी गाय अब को सुनाइगौ ।
निंदिया सताय जब अक मे उठाय तब,
बाहन के पलना मे अब को झुलाइगौ ?
घुटुअन चलिबौ भयौ है सपने की बात
तुतलाई बोली बोल कौन बतियाइगौ ।
ऐसी दै गयौ है पीर बचपन मेरे वीर,
लूट लै गयौ है मोय कगला बनाइगौ ।

अपनी धरती अरु बाकी माटी सौ प्यार कौ अरु बाकी महिमा के वरुण जी के या गीत मे भाव की कितनी विविधता अरु व्यापकता है जि देखते ही बने है—

गीत—

माटी सौं करलै प्यार ।
नर जनम न मिलै हजार ।।

याही माटी मे तो जनम तैने पायौ ।
बचपन धूरि मे लोट बितायौ ।
भूख लगी तौ खाइ लई माटी ।
निदिया लगी बिछा लई माटी ।
तू माटी कौ बिरवा प्यारे जापै चढी बहार ।
माटी सौ हजार ।

खेतन की माटी है सौनौ ।
बिटिया की सादी अरु गौनौ ।
जब माटी मे बीज परत है ।
हलधर के सपने उपजत है ।
ई माटी अँखियन कौ कजरा और गरे कौ हार ।
माटी सौ हजार ।

दुनिया पै माटी कौ करजा ।
माटी कौ ईसुर सौ दरजा ।
माटी केसर की सी क्यारी ।
माटी है सबकी महतारी ।
बाबुल की गोरी सौ बढिकै माटी देय दुलार ।
माटी सौ हजार ।

हम सब है माटी के छौना ।
माटी माथे दिये डिठौना ।
आपस मे मत खैचौ पारौ ।
माटी कौ कैसौ बटवारौ ।
मेरे प्यारे भैया मानौ माटी की मनुहार ।
माटी सौ हजार ।

माटी नै बहुरूप बनाए ।
देहरी आगन द्वार सजाए ।
महल झौपडी सब माटी क ।
हम तुम सब पुतरे है माटी के ।
अन्त समै माटी सौ मिलिबे, माटी करै सिंगार ।
माटी सौ करलै प्यार ।
नर जनम न मिलै हजार ।

हास्य सौ भरे इन भजनन मे वरुण जी नै गजे की प्राथना अरु घने केस वारे की प्राथना का तरिया सो प्रस्तुत करि है। याय देखो--

प्रभु मेरौ एक काम तौ करौ।
मैं हू भगत तिहारौ गजौ मेरौ कष्ट हरौ।
कैऊ साल सूखा मे बीते कर देउ हरौ भरौ।
प्रभु मेरौ ।

साबुन तेल कौ स्वाद भूल गयौ मन चाव भरौ।
जो कोऊ उ ह लगावत दीखै है जाय घाव हरौ।
प्रभु मेरौ ।

इक चेहरा इक सीस कहावत जब तक रहत हरौ।
बार हटत दोउ एक बरन भए गजौ नाम परौ।
प्रभु मेरौ ।

मेरी इच्छा पूरी कर देउ नाय पन जात टरौ।
मेरे बार नाय तौ सबकी समतल भूमि करौ।
प्रभु मेरौ ।

□

प्रभु मोहि गजौ आज करौ।
एक दिना गुस्सा मे भरि कै काहू ते झगर परौ।
बार पकर बाने दीने चक्कर नाली मे जाय गिरौ।
प्रभु मोहि ।

गु डन के चक्कर मे मोकू पुलिस नै आय धरौ ।
चौरायो बन गयौ चाद पै देखै जग सिगरौ।
प्रभु मोहि ।

एक दिना जलती बीडी नैं मोपै जुलम करौ।
बार जरे सो जरे सग मे मू ड मेरौ पजरौ ।
प्रभु मोहि गजौ आज करौ।

वरुण जी की रुचि नये नये विषय अरु आज की समस्यान पै लेखनी चलाइबे की रही है। बेटा बेटीन की बाढ कैसी दुखदायी होय जी बात बिनके या रसिया सौ बडे प्रभावशाली ढग सौ प्रकट भई है अरु ऐसी रचनान सौ जनसख्या घटाइबे मे जरूर सहारौ लगैगौ—

पैदा करि करि कै सतान बलम तैनै फौज बनाई है।
फौज बनाई है, देखि कितनी महगाई हे।
पैदा करि करि ।

बना लई तैनै दजन डेढ करी अपनी और मेरी रेड ।
तनखा तेरी नैक सी ज्यो सागर म बूँद ।
सोय रह्यौ तू चैन सौ फिर हु अँखिया मूँद ।
फिर हु आखिया मूँद मौत क्या पास बुलाई है।
पदा करि करि कै ।

भरैगौ कैसै इनकौ पेट, रेट है रही इडिया गेट।
महँगाई की मार ते हाल भयौ बेहाल ।
मुर्गी मुर्गी की तरह होगे कबहु हलाल ।
चप्पल चटकामत फिरै तेरे सबई लाल ।
तेरे सबई लाल कि इनपै कहा कमाई है।
पैदा करि करि कै ।

निकर गए जो कहु सबई कपूत जान कू है जाएगे जमदूत।
रोज उराहने आइगे और लडाई होय।
समझदार है फेर हू लीने काटे बोय।
लीन्हे काँटे बोय कि तेरी मति बौराई है।
पैदा करि करि कै

दहेज की प्रथा आज के समाज की सबसो बडी बुराई है। न जानै कितनी बेटीन को जीबौ या प्रथा न दुस्वार करि दी हौ है। सासरे जाइकै बिनप कहा कहा बीते है, करुण रस मे डूबी बीन्यिा की पाती की या मल्हार म वरुण जी न कैसो भाव भरयौ चित्र उतार्यौ है—

जब सौ मैं आई बाबुल मेरे ब्याह कै जी,
एजी कोई तबसौ, हम्बे कोई सास लडै दिन रैन

और कहै मोसौं नेरे दिन आ चुके री ।
किन कगालन मे जाय फँसे,
यह कह कह मोपै ननद हँसे
बाप तौ तेरौ ठेकेदार है री,
ऐजी कोई फिर हू, हम्बै कोई फिरहु दहेज न देय ।
सास कहै मोसौ ॥

मेरी अपनी हालत कसी है ?
पर कटे कबूतर जैसी है ।
उडनौ जो मन मे चाहै आकाश मेजी,
ऐजी कोई मन मे गिर गिर जाय जमीन ।
सास कहै मोसौ ॥

तेरे बाप नै जो सौदा कीनौ ।
क्यौ आज तलक हू नाय दीनौ ॥
अब तूही जिम्मेदार बाप की री ।
ऐजी कोई दै दऊ गी, हम्बै कोई दै दऊ तेरे मौह पै आग ।
सास कहै मोसौ ॥

मै घर की हालत जानत हौ ।
तुम कसे हो पहिचानत हौ ॥
आखिर हो मै बाबुल बेटी आपकी जी,
ऐजी बाई अँगना मे बिताए सोलह साल ।
सास कहै मोसौ ॥

ओ बाबुल चि ता मत करियो ।
इन हत्यारेन सौ मत डरियौ ॥
तू जि समझियो तुम्हरें बेटी एक कम ही,
ए जी कोई भारत मे है बेटी अनेक ।
सास कहै मोसौ ॥

तू सोय रह्यौ कानून ?
एक अबला टेरत तोहि यहाँ ।
जैसे द्वापर मे रच्छा कीन्ही द्रोपदी की ।
ऐजी कोई तैसे ही बचाइयो मोय आन ।
सास कहे मोसो

'भारत ज्ञान विज्ञान जत्था' भरतपुर की ओर सौ छापी गई पौथी 'अलख जगाये आखर' मे दीयौ भयौ वरुण जी को गीत हाट कूँ जइयौं देवरिया' तो राष्ट्रीय साक्षरता

आन्दोलन के इन दिनान मे गाम गाम गायौ जा रह्यौ है। साक्षरता को अलख जगाइबे अरु बाकौ वातावरण बनाइबै म जे गीत कितनौ सहायक है यायँ बाच कै ही पतौ चलेगौ—

हम कूँ अ आ इ ई की किताब लै अइयो देवरिया।
जइयो देवरिया हाटकूँ जइयो देवरिया।
हम कूँ अ आ इ ई की किताब लै अइयो देवरिया।
घर सो कऊ पाती आवै हम प पढ़ी न जाय।
काऊ और ते जो पढवामे सबई भेद खुल जाय।
हमे पढाइकै घर की लाज बचइयो देवरिया। हमकूँ
हमरे सग की सबई सहेली पढी लिखी म्हौजोर।
बात बात पै सीग दिखामे बहुतई सेखी खोर।
मोय बराबर उनके तू पहुँचइयो देवरिया। हमकूँ

कारौ आखर भैस बराबर हम है निपट गमार।
ललचाई आखिन सो देखे रोजाना अखबार।
समाचार दुनिया के बाच सुनइयो देवरिया। हमकूँ
पढौ-लिखयौ है तू तौ भारी ज्योतिष को विद्वान।
देख हथेरी कहा छुप्यौ है भाग हमारे जान।
कितै परी सिक्छा की लन बतइयो देवरिया हमकूँ।

पढे-लिखे देवर की आवै पढी लिखी द्यौरानी।
आप तौ बठी पुज करावै हम पै गोबर पानी।
ऐसी बेकदरी तौ मत करबइयो देवरिया। हमकूँ
बलम हमारे तुम्हरे भैया, हमरी नेक न मानें।
सिक्छा ते इज्जत समाज मे तनक नाय पहचाने।
निज भइया कू थोरौ ज्ञान करइयो देवरिया।
हमकूँ अ आ इ ई की किताब लै अइयो देवरिया।

हिन्दी अरु ब्रज भाषा के रस सिक्त कवि वरुण चतुर्वेदी कवि की अपार सम्भावनान सौ भरे भये है। काव्य जगत जिनसौ बडी बडी आस लगायै बैठ्यौ है। जिन्नै पूरी करिबे के ताई वरुण जो बडी तेजी सौ आगे बढ रहे है। गीतन के या राजकुमार नै देश के कौने कोने म कवि सम्मेलन के मच पै अपनी धाक जमाई है अरु न्यारी पहचान बनाई है। मोये पूरौ भरौसो है क वरुण काव्य लोक मे ऊँचे ते ऊँचौ चढतो भयौ अपने कोकिल कठ सौ पहले के 'ब्रज कोकिल' कहाइबे वारे कवियन कूँ मात देगौ।

—मोहनलाल मधुकर

श्री रामबाबू शुक्ल
मौहल्ला खेरापति, होलिकेश्वर महादेव
के पास, भरतपुर
आयु–55 बरस

सूरज के सुत लाडले, मात चिरौजी धन्य।
शुक्ल रामबाबू भए, ब्रज के रतन अनन्य।।
ब्रज के रतन अनन्य, लिखै तजि लीक पुरानी।
घुटन और नित की कुण्ठा की कहै कहानी।।
घने कुहासे अँधियारे छाटत ब्रज रज के।
भावबोध के चतुर चितेरे सुत सूरज के।।

श्री रामबाबू शुक्ल

परिचै

जनम—29 दिसम्बर 1936

ज म स्थान	भरतपुर
पिता कौ नाम	श्री सूरज भान शमा
माताजी कौ नाम	श्रीमती चिरोंजी देवी
काव्य गुरू	कोउ नाय
शिक्षा	एम ए (हि दी) बी एड
व्यवसाय	अ॰यापन
सरजना प्रकाशित ग्र थ (रचना)	ग्र थ कोऊ प्रकाशित नाय भयौ रचना समै समै पै पत्रिकान म छपी हे।
अप्रकाशित ग्र थ (रचना)	प्रकाशना ीन कविता स ग्रह—'गरमाये फुट पाथो पर (खडी बोली)
वतमान पतौ	मौ खेरापति होलिक श्वर महादेव के पास, भरतपुर

मेरी रचना प्रक्रिया

रचनाकार ते रचना प्रक्रिया के बारे मे पूछिवौ ऐसै समझौ जैसै काहू हलवाई ते मिठाई बनायबे की विधि पूछिवो होय । मिठाई मे मैदा, घी ओर चीनी कौ अनुपात तौ बतायौ जा सके, पर आच की गरमी कितेक रखी जाय, मैदा कितेक भूनी जाय याकौ अनुपात नाय बनायौ जा सकै । ऐसौई रचनाकार ते पूछौ गयौ बाकी रचना प्रक्रिया कौ प्रश्न समझौ । शब्द छद और भाषा कौ उत्तर तौ दियौ जा सके है पर रचना चौ करी जाय याकौ उत्तर दवौ कठिन काम है । फिर हू अपनी मती अनुसार उत्तर दे रहो हूँ ।

प्रेरणा —

बचपन मे श्री हिन्दी साहित्य समिति भवन मे अत्याक्षरीन मे भाग ले औ करै हो । अन्त के अक्षर ढूँढ ढूढ कै ऐसे रखे जावे हे कि जिनके छद, दोहा चौपाई आदि मिलवौ कठिन हे जाऔ करै । हमारे गुरुजी ऐसे कविन की रचना याद करिबे कूँ दैवेए कि जिनकौ सुरू कौ अक्षर ट, ठ, ड ढ या ऐसे ही काहू अक्षर ते हौय । या प्रक्रिया ते मन मे आयी कि हम हू कछु जोड तोड करकै रचना लिखै । ऐसे कछु छद लिखे हू पर वे रचनान मे सामिल नाय किए । कवि सम्मेलन मे कविन की रचना सुन सुन कै मन कूँ प्रेरणा मिलती । समिति मे रस दरवार, और समस्या-पूर्ति सुनकै प्रेरणा मिलती । और सबते अधिक घर के सामने रहवे बारे श्री गिर्राज प्रसाद मित्र' जी की कवितान ने सुन कै मन मे आती कि कछु लिखौ जाय । इन सबके परे हमारे नगर के बाहर केवलादेव कौ घनौ एक छोटो सो जगल है । जाकौ नाम आजकल तो जगत मे विख्यात है गयौ है पक्षी-विहार है वे के कारन, पर हमारे बालपन म यामे जावे की रोक टोक नाय हती । यार वास मिलकै स्कूल ते छुट्टी मार कै घने चले जाऔ करै हे । वहा खट्टे खट्टे बेरन के सग सग प्रकृति कौऊ आनद लैवे है । बस मन मे कछु गायबे की इच्छा जगती काहू कवि कौ गीत गुनगुनावे लग जावेए । फिर धीरे धीरे गीन लिखबे लगे । उन दिनान मे बच्चन, नीरज आदि की गीतन की पोथी पढिबे कूँ मिली बिनकी छद रचना देखकै गीत लिखबे की प्रेरणा मिली कछु गीत लिखे हू । उतकूँ श्री चम्पालाल जी 'मजुल' बडे मधुर कठ ते सवैया गाऔ करै हे । सुनिकै इच्छा जगती कि कछु ऐसोई लिखौ जाय ।

या तरिया ते अनेक दिसान ते मन मे कछु लिखबे की प्रेरणा जग रही हती । सन् 1956 मे पथोर मे अध्यापक बनकै पहुँचो उपर खरे पै गोपाल जी के मंदिर म रहँतो । बडौ सुंदर प्राकृतिक वातावरण हतौ सो कछु लिखबे की प्रेरणा हू हुई । बहुत सी रचना लिखी पर बाद मे नयी कविता के आन्दोलन ते जुड जाबे के कारन उन रचनान पै ध्यान नाय दियो सो सब रचना इतै वितै खो गयी ।

नयी कविता कौ प्रारम्भ —

भरतपुर जिला पुस्तकालय मे हमारे मित्र ब्रजेन्द्र कौशिक नौकरी है कै आय गये। वे अपने संग डीग तेइ कविता कौ संस्कार लकै आय हते उनके पास सहर के पढे लिखे अध्यापक, प्रोफेसर आदि हू आयबे लगे प्रो रामानंद तिवारी, रामगोपाल दिनेश, गुरुदत्त सोलंकी, जी पी शर्मा 'इंदु' प्रो विजेन्द्र, रमेशकुमार दीक्षित आदि सबई अच्छे अच्छे रचनाकार हते । रोज कविनान पै बहस औरह पुस्तकन पै चर्चा, बहस चलती । सो एक ऐसौ वातावरन बनौ कै मे नयी कविता कौ हिमायती बन गयो । छंदवारी कविता और गीत हल्के लगवे लगे सो पहले जितनऊ लिखौ हतो की उपरी जान पड्यो नली गई । खूब नयी कविता लिखी पत्र पत्रिकान मे छपी हु । या बीच अनेक ठौर स्थानान्तरन मे शीशवाडा बदनगढ, डहरा सोगर बराखुर और अन्त मे हायर सेकण्डरी भरतपुर मे नौकरी चलती रही।

रचनान ते मोह भंग —

अध्यापन के संग संग योग्यता बढावे कौ कामऊ चलतो । ... दस पास करके नौकरी शुरू करी । फिर सरकार ते आग्या लेकै मध्यप्रदेश ते इंटर कियो । वहा के इन्टर के कोर्स मे अंग्रेजी की चार किताब हिंदी अनिवार्य और हिन्दी ऐच्छिक की आठ किताब हती । बडे मनोयोग ते पढाई करी । सो अंगरेजी साहित्य पढिबो को चसका लगौ । धीरे धीरे अंग्रेजी के अच्छे-अच्छे कवि और शेक्सपियर के बहुत से नाटक पढि डारे । फिर बी ए मे अंग्रेजी, हिन्दी और संस्कृत साहित्य ले लीनो । पर अंग्रेजी मे उत्तीण नही है पायौ सो अंग्रेजी छोड दर्शन ले बी ए पास कीनो । फिर एम ए हू हिंदी तै की हौ । या तरिया सौ एक तरफ बडे बडे विद्वानन के संग उठवौ बैठिबौ तौ दूसरी ओर परीक्षा देवे कूँ अंगरेजी हिंदी और संस्कृत साहित्य कौ पढिबौ निरन्तर लिखबे की प्रेरणा दे रहौ पर या बीच परीक्षा देवै के चक्कर मे रचनान तै आराम सौ है गयौ । बडे बडे कवीन कूँ देखकै लगौ कै तुमने जो कछु लिखौ है सो सब घटिया है सो लापरवाही ते या दौरान लिखी नयी कविताऊ नष्ट है गयी । सन् सत्तर के आस पास ते रचना डायरी मे लिखवौ शुरू करौए सौ अब तक मेरे पास

सुरक्षित चल रही है। पर ज्यादातर नयी कविता अर्थात छन्द मुक्त कविता ही लिखी। वैसें मेरी नयी कवितान मे हू ब्रजभाषा कौ ज्यादा असर रहौ ए। बहुत से मित्रन कूँ जि बात अखरैगी कै हिन्दी खडी बोली की रचनान मे ब्रजभाषा क्यो प्रयोग की जावै। पर मोय या आलोचना ने कबहू अपन मारग ते नाय भटकायौ।

गीत रचनान की शुरूआत –

सन् पिचहतर छिहत्तर के आस पास बीकानेर ते एक मित्र नरेन्द्र शर्मा भरतपुर मे बदल कै आय गये। उनके पास ही हरिवश भ दानी हिन्दी के जाने माने गीतकार और कवि हू आवे जावे लगे। उनते गीत और नयी कविता कूँ लैकै बहस हुयी। अन्त मे विनकी जीत हुयी और मे गीतऊ लिखवे लगि गयौ। इनकूँ ब्रजभाषा की एकाध काव्य गोष्ठी हुयी तो पहले तौ ब्रजभाषा मे नयी कविता लिखी। बाद मे गीतऊ लिखे। यातरिया सो मे नयी कविता कै सग-सग ब्रजभाषा मे गीतऊ लिखबै लगो। हा जब ते ब्रजभाषा अकादमी बनी है और वाके कछु कवि सम्मेलनन मे जानौ परौ तौ ब्रजभाषा के कवित्त, सवैयान मे समस्या पूर्तिऊ लिखी। वा या अकादमी के विष्णु चन्द्र पाठक जब अध्यक्ष बनै तो पहले मेरे पासई आये। मैनेई भरतपुर के साहित्यकार, राजनेता, पत्रकार और कवीन ते उनकी मुलाकात करवायी। और सबकूँ तयार करी के भइया जी पाठक भरतपुर की भ जौगना की नेया शारदाजी भरतपुर मेई अध्यापिका रही हैं। सो याये अध्यक्ष बनाने मे कोऊ हरज नाय। पर हमने अनुभव कियो कि वे सत्ता पाय कै मद मे आगये। सौ सबतै जयादा उनने हमारी ही काट करी जयपुर के एकाध कवि सम्मेलन मे समस्यापूर्ति हेतु जरूर बुलायो पर राजस्थान मे अन्य स्थानन मे किये कवि सम्मेलनन मे औसर नाय दियो। सौ ब्रजभाषा की थोडी सी रचना लिखी है। क्योकि मन मे विचार आवै हौ कि रचना जब छपेगी नाय और जब ब्रजभाषा अकादमी हू हमे कवि नाँय मानै तो फिर कौन कूँ लिखै। हा हिन्दी खडी-बोली की रचना निरन्तर लिखतौ रहूँ। क्योकि हिन्दी कौ भविष्य है अब नाय तौ आवै वारी पीढी के लोग पढ लिगे। पर ब्रजभाषा तो अगली पीढी तक चल पावेगी कै नाय या हू कौ भरोसो नाय। सौ ब्रजभाषा मे भौत कम लिखो है।

रचनान मे व्यक्त भाव एव बिचार –

सस्कृत साहित्य के एक विख्यात कवि भवभूति ने अपनी रचनान के रस कौ बखान करते भये कहीए कै 'करुणेव एको रस' अर्थात काव्य कौ एक मात्र रस करुणा ही है। आदि कवि बाल्मीकि ने ही कौच पक्षी के जोडा मे ते एक कूँ व्याध द्वारा मार दिये जावे ते दुखी है कै वा व्याध कूँ सराप दीन्हो सो बू छन्द बन गयौ और ससार मे सबतै पहली कविता मानी गयी कवि ने 'मा निषाद प्रतिष्ठा त्वम गमा शाश्वती

या तरिया ते अनेक दिसान ते मन मे कछु लिखन की प्रेरणा जग रही हती । सन 1956 मे पैंघोर मे अध्यापक बनकै पहुँचौ उपर घरे पै गापात जी के मंदिर मे रहतो । बडौ सुन्दर प्राकृतिक बातावरण हतो सो फेर लिखन की प्रेरणा हू हुई । बहुत सी रचना लिखी पर बाद मे नयी कविता के आन्दोलन ते जुर जाबे के कारन उन रचनान पै ध्यान नाय दियो सो सब रचना इतै वितै गा गयी ।

नयी कविता कौ प्रारम्भ —

भरतपुर जिला पुस्तकालय मे हमारे मित्र ब्रजेन्द्र कौशिक नौ है कै आय गये । वे अपने सग डीग तेइ कविता कौ सस्कार लकै आय हते उनके पास सहर के पढे लिखे अध्यापक, प्रोफेसर आदि हू आयबे लग प्रो रामानन्द तिवारी, रामगोपाल दिनेश, गुरदत्त सोलकी, जी पी शर्मा इन्दु प्रो विजेन्द्र, रमशकुमार ... आदि सबई अच्छे अच्छे रचन कर हते । राज कविनान पे व औरहु पुस्तकन पै न वा, बस चनही । ... एसौ वातावरन बनौ कै मे नयी कविता को दिवानी बन गयो । छन्द वारी कविता और गीत हल्के लगवे लगे सो पहल जितनऊ लिख उनकी डायरी जान कहा चली गई । खूब नयी कविता लिखी पत्र पत्रिकान म छपी । या बीच अध्यापक रूप मे शीशवाडा बदनगढ, डहरा सोगर बराखुर और अन्त मे हायर सैकण्डरी भरतपुर म नौकरी चलती रही।

रचनान ते मोह भग —

अध्यापन के सग सग योग्यता बढावे को कामऊ चलतो । ... दस पास करके नौकरी शुरू करी । फिर सरकार ते आग्या लकै म०प्र ... ... कियौ । वहा के इटर के कोस मे अग्रजी की चार किताब हिन्दी आनाग और हिन्दी ... की आठ किताब हती । बडे मनोयोग ते पढाई करी । ... अगरजी साहित्य पढिबा को चसका लगौ । धीरे धीरे अग्रेजी के अच्छे-अच्छे कवि और ... के बहुत से नाटक पढि डारे । फिर बी ए मे अग्रेजी, हिन्दी ओर सस्कृत साहित्य ले लीनी । पर अग्रेजी मे उत्तीण नही है पायौ सो अग्रेजी छोड दशन लकै बी ए पास कीनी । फिर एम ए हू हिन्दी तै की हौ । या तरिया सौ एक तरफ बडे बडे विद्वानन के सग उठबौ बैठिबौ तौ दूसरी ओर परीक्षा देवे कूँ अगरेजी हिन्दी और सस्कृत साहित्य कौ पढिबौ निरतर लिखबे की प्रेरणा दे रहौ पर या बीच परीक्षा देवै के चक्कर म रचनान तै आराम सो है गयौ । बडे बडे कवीन कूँ देखकै लगौ कै तुमने जो कछु लिखौ है सो सब घटिया है सो लापरवाही ते या दौरान लिखी नयी कविताऊ नष्ट है गयी । सन् सत्तर के आस पास ते रचना डायरी मे लिखवौ शुरू करौए सौ अब तक मेरे पास

सुरक्षित च। रही है। पर ज ा ार नयी कविता अर्थात छ द मुक्त कविता ही लिखी। वैसें मेरी नयी कविता न म न व्रजभाषा की ज्यादा असर रहो ए। बहुत से मित्रन कूँ जि बात अग गी कै हि ी म ा यानी की रचनान म व्रजभाषा क्यों प्रयाग की जावै। पर मोय या ाताचन । म अपने मारग ते नाय भटकायौ।

गीत रचना की शुरुआत –

मन् पि न्तर िन्तर आस पास गीतान ते एक मित्र नरेन्द्र शमा भरतपुर मे बदल है आ गय। उन पास ी हरि भादानी हिन्दी के जा माने गीतकार और कवि ह जा आ नग। उनते गीत और नयी कविता कूँ लैकै बहस हुयी। अ त मे विनकी जी। हयी और म गी ऊ लिखन लगि गयौ। इनकूँ ब्रजभाषा की एकाध काव्य गोष्ठी हय। पहलै तौ व्रजभाषा । नयी कविता लिखी। बाद मे गीतऊ लिख। यातरिया मा म नयी कविता क सग सग व्रजभाषा गीतऊ लिखब लगो। हा जब ते ब्रजभाषा अकादमी बनी है और बाकें कछ कवि सम्मेलनन म जानौ परौ तौ ब्रजभाषा के कवित्त, सवैयान म समस्यापूर्तिऊ लिखी। वा या अकादमी के विष्णु च द्र पाठक जब अध्यक्ष बनै तो पहल मर पासई आय। मेनेई भरतपुर के साहित्यकार, राजनेता, पत्रकार और न्वीन ते उनकी मुलाकात करवायी। और सबकूँ तयार करौ के भइया जी पाठक भरतपुर ते भ जोग या की मैया शारदाजी भरतपुर मेई अध्यापिका रही हे। सो याय अ न तन। म कोऊ हरज नाय। पर हमने अनुभव कियो कि वे सत्ता पाय कै मद मे आगय। सो सबतें जयादा उनने हमारी ही काट करी जयपुर के एकाध कवि सम्मेलन म समस्यापूर्ति हेतु जरूर बुलायौ पर राजस्थान मे अन्य स्थानन मे किये कवि सम्मेलनन म औसर नाय दियो। सौ ब्रजभाषा की थोडी सी रचना लिखी है। क्योंकि मन मे विचार आवै हो कि रचना जब छपेगी नाय और जब ब्रजभाषा अकादमी हू हमे कवि नाँय मानै तो फिर कौन कूँ लिखै। हा हिन्दी खडी-बोली की रचना निरन्तर लिखतौ रहू। क्योंकि हिन्दी को भविष्य है अब नाय तौ आवै वारी पीढी के लोग पढ लिगे। पर ब्रजभाषा तो अगली पीढी तक चल पावेगी कै नाय या हू कौ भरोसो नाय। सौ ब्रजभाषा मे भौत कम लिखी है।

रचनान मे व्यक्त भाव एव बिचार –

सस्कृत साहित्य के एक विख्यात कवि भवभूति ने अपनी रचनान के रस कौ बखान करते भये कहीए कै 'करुणेव एको रस' अर्थात काव्य कौ एक मात्र रस करुणा ही है। आदि कवि बाल्मीकि ने ही कौच पक्षी के जोडा मे ते एक कूँ व्याध द्वारा मार दिये जावे ते दुखी है कै वा व्याध कूँ सराप दीन्हो सो बू छन्द बन गयौ और ससार मे सबतै पहली कविता मानी गयी कवि ने 'मा निषाद प्रतिष्ठा त्वम गमा शाश्वती

समा । चत्क्रोच मिथुनादेकमवधी काम मोहितम् ।।' कहक कवि हृदय म व्याप्त जगत की करुणा कौ अवलोकन करायौ है । कछु ऐसो ही भाव मेरे हृदय म जाग्रत होये । व्रजभाषा मिश्रित हिदी खडी बोली कौ मेरो सबतै पहलो छद जो सन् अस्मी मे श्री हरीश भादानी की प्रेरना त लिखौ । या करुणा के भाव सौ ही परिपूण है । देखो—

'मन की आखे देखौ जरा उघार के
उनकी पलको मे भी सपन प्यार के'

मन की आखन कूँ उघार कै काऊ देखे तो बाय ससार के गरोब और पतित जनन की आखन म प्यार पावै के सपनै मिलिगे । पर ससार ऐसौ है वौ कम है गयौ है सो कवि जनता कूँ प्रेरना देवै क उनकी पलकन के सपेनन कू पहिचानौ ।

करुणा कौ विस्तार प्रकृति के अन्याय देख कै हू जाग्रत होय । बरसा नाय होय तौ जन जन पीडा कितेक बढि जाय मैने एक गीत म लिखैए देखो —

ठौर-ठौर दरक गयी धरती की छाती ।
काऊ तौ लिख भेजौ इदर कूँ पाती ।।

इन्दर हमारी सस्कृति मे बरखा के देवता कहे गए है । वैसे इदर को व्रजवासिन तै पुरानौ बैर है सो चाहे जब आख दिखा जाय पर कवि विचारौ पाती लिखवे के अलावा और कर हू का सक । या गीत मे करुणा को परिपाक अतिम चरण मे देखबे जोग है देखो—

रीते घट भटक रहे घाट घाट पनघट पै ।
सास की उसास जुरै कैसे या झझट पै ।

□

चोच खोल चिचियाती डोले रे चिरैया ।
बूँद बूँद तरस गयी रम्भाती गैया ।
कजरौटी मेघ घिरौ जीव के सगाती ।

रीतेघट और रीती सास को मेल और इतकूँ चिरैया और गैया जैसे तुच्छ जीव जिनको जीवौ दुरलभ है गयौ है कवि के हृदय मे करुणा जगावे और कवि अपनी करुणा कूँ जगत मे बाटे गीत के माध्यम ते । या बरखा के अभाव कूँ लैकै मेरे कवि ने अनेक

रचना लिखी हैं। पाठकन के मन मे जो भ्रम है सकै है कै कहु मै सूखा ईकौ कवि तो नाँऊ। पर मोपै या बात को कछु असर नाय। मेरो मनुवा तो जन जन की पीडा ते विगलित है कै जब तब याही तरिया ते बक भक करिबे लग जाय। ब्रजभाषा की मुक्त छ द की एक नयी कविता 'पावस छियासी'' शीषक ते लिखी जामै भरतपुर चालीस किलोमीटर दूर की बाना नदी को चरित उजागर कीनौए। साथई बाको पार पै रहबे वारैन को दरदऊ बडे मार्मिक शब्दन मे चित्रित की हो हे।

ऐसेई कँऊ लोक गीत औरऊ लिखेए जिनमे बरखा के काजै तलपते नर नारीन को बरनन कियो है देखो—

माग लाऊँ मै द्वै दिन उधार।
लौट आवै जो बरखा बहार।

□

बावरी सी डोल रही पुरबा बयार।
बुझ रही मेघा को धरती सौ प्यार।

□

गरजो, बरसौ रे अभिमानी।
बिन पानी जीवन धारा की कोऊ नाय कहानी।

□

बरसें ते मनमाने बरसे।
पल म कर दे पनियाढार।
रूठ जाँय तौ ऐसे रूठें।
जैसे परै पीठ पै मार।

ऐसी ही औरऊ रचनान मे मेरे कवि ने बरखा के अभाव और जन जन के जीवन की करुणा कहानी को चित्रण की होए सामाजिक विसमता, भ्रष्टाचार, महगायी, गरीबी आदि हू मेरे काव्य के विपय रहे थे। पत्र-पत्रिकान मे छपी ऐसी रचनान को अवलोकन पाठकन ने अवस्य कीन्हौ होयगो।

रचना कर्म —

मैने भौत से कवि लेखकन को रचना कम देखो तो मेरी आख चौड जाँय। इतेक ज्यादा लिखौए उनने कै गिनीज बुक मे नाम लिखाय दीन्हौ है। दूसरी ओर एसेऊ लेखक

समा । यत्क्रोच मिथुनादेकमवधी काम मोहितम् ।।' कहक कवि हृदय मे व्याप्त जगत की करुणा कौ अवलोकन करायौ है । कछु ऐसो ही भाव मेरे हृदय म जाग्रत होये । ब्रजभाषा मिश्रित हिदी खडी बोली कौ मेरो सबतै पहलो छद जो सन् अस्मी मे श्री हरीश भादानी की प्रेरना त लिखौ । या करुणा के भाव सौ ही परिपूण है । देखो—

'मन की आखे देखौ जरा उघार के
उनकी पलको म भी सपन प्यार के

मन की आखन कूँ उघार कै कोऊ देखे तो बाय ससार के गरीब और पतित जनन की आखन म प्यार पावै के सपनै मिलिगे । पर समाज ऐसौ है वौ कम है गयौ है सो कवि जनता कूँ प्रेरना देवै क उनकी पलकन के सपनन कू पहिचानौ ।

करुणा कौ विस्तार प्रकृति के अन्याय देख कै हू जागत होय । बरसा नाय होय तौ जन जन पीडा कितेक बढि जाय मैने एक गीत म लिखैए देखो —

ठौर-ठौर दरक गयी धरती की छाती ।
काऊ तौ लिख भेजौ इदर कूँ पाती ।।

इन्दर हमारी सस्कृति मे बरखा के देवता कहे गए है । वैसे इदर कौ ब्रजवासिन तै पुरानौ बैर है सो चाहे जब आख दिखा जाय पर कवि विचारौ पानी लिखवे के अलावा और कर हू का सकै । या गीत मे करुणा को परिपाक अतिम चरण म देखबे जोग है देखो—

रीते घट भटक रहे घाट घाट पनघट पै ।
सास की उसास जुरै कैसे या झझट पै ।

□

चोच खोल चिचियाती डोले रे चिरैया ।
बूँद बूँद तरस गयी रम्भाती गैया ।
कजरौटी मेघ घिरौ जीव के सगाती ।

रीतेघट और रीती सास को मेल और इतकूँ चिरैया और गैया जैसे तुच्छ जीव जिनको जीवौ दुरलभ है गयौ है कवि के हृदय मे करुणा जगावै और कवि अपनी करुणा कूँ जगत मे बाटे गीत के माध्यम ते । या बरखा के अभाव कूँ लैकै मेरे कबि ने अनेक

रचना लिखी हैं। पाठकन के मन मे जो भ्रम है सकै है कै कहु मै सूखा ईको कवि तो नाँऊ। पर मोपै या बात को कछु असर नाय। मेरो मनुवा तो जन जन की पीडा ते विगलित है कै जब तब याही तरिया ते बक भक करिबे लग जाय। ब्रजभाषा की मुक्त छद की एक नयी कविता 'पावस छियासी'' शीषक ते लिखी जामैं भरतपुर चालीस किलोमीटर दूर की बाना नदी को चरित उजागर कीनोए। साथई बाकी पार पै रहबे वारैन को दरदऊ बडे मार्मिक शब्दन मे चित्रित की हो है।

ऐसेई कँऊ लोक गीत औरऊ लिखेए जिनमे बरखा के काजै तलपते नर नारीन को बरनन कियो है देखो—

माग लाऊँ मै द्व दिन उधार।
लौट आवै जो बरखा बहार।

☐

बावरी सी डोल रही पुरबा बयार।
बुझ रही मेघा को धरती सौ प्यार।

☐

गरजो, बरसो रे अभिमानी।
बिन पानी जीवन धारा की कोऊ नाय कहानी।

☐

बरसें ते मनमाने बरसे।
पल मे कर दे पनियाढार।
रूठ जाँय तो ऐसे रूठे।
जैसे परै पीठ पै मार।

ऐसी ही औरऊ रचनान मे मेरे कवि ने बरखा के अभाव और जन जन के जीवन की करुणा कहानी को चित्रण की होए सामाजिक विसमता, भ्रष्टाचार, महगायी, गरीबी आदि हू मेरे काव्य के विषय रहे थे। पत्र-पत्रिकान मे छपी ऐसी रचनान को अवलोकन पाठकन ने अवस्य की हो होयगो।

रचना कर्म —

मैंने भौत से कवि लेखकन को रचना कम देखो तो मेरी आँख चौड जाँय। इतेक ज्यादा लिखोए उनने कै गिनीज बुक मे नाम लिखाय दीन्हो है। दूसरी ओर एसेऊ लेखक

देखे जिनकी एक कहानी ते वो जगत मे श्रेष्ठ कहानीकार बन गये । एक कविता लिखी बू रचना आज जन जन की जीभ पै चढि रही है और खुद या देस प्रेम की अनौखी कविताय लिख कै विदेश मे जाय बसै । तौ इन बातन ते मेरे मन मे कबहुँ तौ महाकाव्य लिखिवै की प्रेरना होय और कबहुँ ऐसी ही छुटपुट रचना लिखिवे कौ मन करै । सच्ची बात तो जि है कै मेरौ मनमौजी मन कागज कलम लकै विधिवत मेज-कुर्सीन पै बैठ कै लिखवै कू नाय उमगै । एक अनौखी बात अपने रचना कम की बताऊँ कै मेरो सबते पहलो गीत साइकिल चलाते हुए रस्ता म ई रचौ गयौ बात उन दिनान की है जब मेरी बदली सरकारी स्कूल अबार है गयी । साइकिल चलावै मे श्रम होय वा श्रमे दूर करवै कूँ कछु गुनगुनायवे कौ मन करऔ सो कछु पक्ति कविता की बन गई । तो पहली पक्ति सोगर महगाये गामन के बीच बनी 'मन की आखे देखो जरा उघार कें उनकी आखो म भी सपने प्यार के" एक कागज को टुकडा जेब बठौ सो जि पक्ति लिख लीनी । स्कूल मे कक्षा मे बठे कविता चल रहीए छोटी कक्षा 5 बालकन कू कछु काम दे दी हौ और दूसरी पक्ति बन गई । फिर तीसरा ब द और चौथो ब द रस्ता मे लौटते भये बन गयौ । या गीतै लै कै सीधो श्री हरीश भादानी जो कि नरेन्द्र शमा के घर ठहरे भये हते पहुँचौ । गीत सुनायौ । उन्हे बडो पसद आयौ । उनकी प्रेरना ते ही गीत लिखवौ शुरू करौ । सो या गीत के बाद जितने दिन वे यहा ठहरे हर रोज नये-नये गीत गजल रचतौ रहो सुनातो रहौ । या तरिया सौ गीत बिधा मे रचना लिरावौ शुरू भयो ।

ब्रजभाषा अकादमी बन गयी । ब्रजभाषा के कवि सम्मेलन मे समस्या पूर्ति की पक्ति मिली । समस्या पूर्ति के छ द लिखे । पर मन नाय भरैऔ । मन म इच्छा जगी कै ब्रजभाषा मेऊ नयौ सजन कियौ जाय । राधा कृष्ण और रासलोला व्रज की होरीए लैकै इतनो लिखौ गयो है और श्रेष्ठ लिखौ गयौ है कै हम कहु नाय ठहर । सो नयी कविता की मुक्त छ द शैली मे कविता रची । ब्रजभाषा मे "जीवन सिह मानवी' जैसे क ऊ नये कवि ऐसो रचना कर रहे हते । पर हमारे विज्ञान अकादमी अध्यक्ष कूँ तो ब्रज मे और ब्रजभाषा मे रस ही रस दिखाई दैवै हैता सो गीत गाबेबारैन कौ अकादमी मे ज्यादा सनमानु भयौ । हमारी नयी कविता रद्दी की टोकरी माहि डार दी ही । पीछे बडे एहसान ते छापी ? तौ ऐसी जसे सौत कौ छौरा होय । या तरिया तैं व्रजभाषा म मात्र पुरानी सैली की रचनान की नकल भर रची गयी । ब्रजभाषा कौ नयौ विकसित रूप सामने नाय आ सकौ ।

तौ मेरी रचना कम ज्यादातर सडकन प कब हूँ सायकिल पै चलाते भये कबहु पैदल चलते भये ही भयो है । बैठ कै तौ गद्य कौ निरमान होय । गद्य दो कहानी लिखी सो ब्रजभाषा अकादमी की माग पै ई लिखी है ब्रज-शत दल मे छपी है । कविवर गिर्राज मिश्र को व्यक्तित्व और कृतित्व हू ब्रजभाषा अकादमी के काजै एक पत्र वाचन हेतु तैयार

रचना लिखी है। पाठकन के मन मे जो भ्रम है सकै है कै कहु मै सूखा ईकौ कवि तो नाँऊ। पर मोपै या बात को कछु असर नाय। मेरौ मनुवा तौ जन जन की पीडा ते विगलित है कै जब तब याही तरिया ते बक-भक करिबे लग जाय। ब्रजभाषा की मुक्त छंद की एक नयी कविता 'पावस छियासी" शीषक ते लिखी जामैं भरतपुर चालीस किलोमीटर दूर की बाना नदी को चरित उजागर कीनौए। साथई बाकी पार पै रहबे वारैन कौ दरदऊ बडे मार्मिक शब्दन मे चित्रित कीहो है।

ऐसेई कँऊ लोक गीत औरऊ लिखेए जिनमे बरखा के काजै तलपते नर नारीन कौ बरनन कियो है देखो—

माँग लाऊँ मै द्वै दिन उधार।
लौट आवै जो बरखा बहार।

□

बावरी सी डोल रही पुरबा बयार।
बुझ रही मेघा कौ धरती सौ प्यार।

□

गरजौ, बरसौ रे अभिमानी।
बिन पानी जीवन धारा की कोऊ नाय कहानी।

□

बरसें ते मनमाने बरसे।
पल म कर दे पनियाढार।
रूठ जाँय तौ ऐसे रूठें।
जैस परै पीठ पै मार।

ऐसी ही औरऊ रचनान म मेरे कवि ने बरखा के अभाव और जन जन के जीवन की करुणा कहानी कौ चित्रण कीहोए सामाजिक विसमता, भ्रष्टाचार, महगायी, गरीबी आदि हू मेरे काव्य के विषय रहे थे। पत्र-पत्रिकान मे छपी ऐसी रचनान कौ अवलोकन पाठकन ने अवश्य की हौ होयगो।

रचना कर्म —

मैनें भौत से कवि लेखकन को रचना कम देखौ तौ मेरी आँख चौड जाँय। इतेक ज्यादा लिखौए उनने कै गिनीज बुक मे नाम लिखाय दी हौ है। दूसरी ओर एसेऊ लेखक

देखे जिनकी एक कहानी ते वो जगत मे श्रेष्ठ कहानीकार बन गये । एक कविता लिखी बू रचना आज जन जन की जीभ पै चढि रही है और खुद या देस प्रेम की अनौखी कविताय लिख कै विदेश मे जाय बसै । तौ इन बातन ते मेरे मन म कबहुँ तौ महाकाव्य लिखिवै की प्रेरना होय और कबहुँ ऐसी ही छुटपुट रचना लिखिवै कौ मन करै । सच्ची बात तो जि है कै मेरौ मनमौजी मन कागज कलम लैकै विधिवत मेज-कुर्सीन पै बैठ कै लिखवै कू नाय उमगै । एक अनौखी बात अपने रचना कम की बताऊँ कै मेरो सबते पहलो गीत साइकिल चलाते हुए रस्ता म ई रचौ गयौ बात उन दिनान की हे जब मेरी बदली सरकारी स्कूल अबार है गयी । साइकिल चलाव मे श्रम होय वा श्रमे दूर करवै कूँ कछु गुनगुनायव कौ मन करऔ सो कछु पक्ति कविता सी बन गई । तो पहली पक्ति सोगर मँहगाये गामन के बीच बनी 'मन की आखे देखो जरा उघार कें उनकी आखो म भी सपन प्यार कें" एक कागज को टुकडा जेब बऊौ सो जि पक्ति लिख लीनी । स्कूल मे कक्षा मे बठे कविता चल रहीए छोटी कक्षा के बालकन कू कछु काम दे दी हौ और दूसरी पक्ति बन गई । फिर तीसरा ब द और चौथो ब द रस्ता म लौटते भये बन गयौ । या गीतै लै कै सीधो श्री हरीश भादानी जो कि नरेन्द्र शर्मा के घर ठहर भये हते पहुचौ । गीत सुनायौ । उ हे बडौ पस द आयौ । उनकी प्रेरना ते ही गीत लिखवौ शुरू करौ । सो या गीत क बाद जितने दिन वे यहा ठहरे हर रोज नये-नये गीत गजल रचतौ रहौ सुनातौ रहौ । या तरिया सौ गीत बिधा मे रचना लिखवौ शुरु भयो ।

ब्रजभाषा अकादमी बन गयी । ब्रजभाषा के कवि सम्मेलन मे समस्या पूर्ति की पक्ति मिली । समस्या पूर्ति के छ द लिखे । पर मन नाय भरैऔ । मन म इच्छा जगी कै ब्रजभाषा मेऊ नयौ सजन कियौ जाय । राधा कृष्ण और रासलीला ब्रज की होरीए लैकै इतनौ लिखौ गयौ है और श्रेष्ठ लिखौ गयौ है कै हम कहु नाय ठहरै । सो नयी कविता की मुक्त छ द शैली म कविता रची । ब्रजभाषा मे "जीवन सिह मानवी' जैसे क ऊ नये कवि ऐसो रचना कर रहे हते । पर हमारे विधान अकादमी अध्यक्ष कूँ तो ब्रज मे और ब्रजभाषा मे रस ही रस दिखाई दैवै हैता सो गीत गावेबारैन की अकादमी मे ज्यादा सनमानु भयौ । हमारी नयी कविता रद्दी की टोकरी माहि डार दी ही । पीछे बडे एहसान ते छापी ? तौ ऐसी जसे सौत कौ छौरा होय । या तरिया तैं ब्रजभाषा म मात्र पुरानी सैली की रवान की नकल भर रची गयी । ब्रजभाषा कौ नयौ विकसित रूप सामने नाय आ सकौ ।

तौ मेरी रचना कम ज्यादातर सडकन पै कब हूँ सायकिल पै चलाते भये कबहु पैदल चलते भये ही भयो है । बैठ कै तौ गद्य कौ निरमान होय । पर दो कहानी लिखी सो ब्रजभाषा अकादमी की माग पै ई लिखी है ब्रज-शत दल मे छपी है । कविवर गिरीज मिश्र को व्यक्तित्व और कृतित्व हू ब्रजभाषा अकादमी के काजै एक पत्र वाचन हेतु तैयार

रचना लिखी हैं। पाठकन के मन मे जो भ्रम है सकै है कै कहु मै सूखा ईको कवि तो नांऊ। पर मोपै या बात को कछु असर नाय। मेरो मनुवा तो जन जन की पीडा ते विगलित है कै जब तब याही तरिया ते बक भक करिबे लग जाय। ब्रजभाषा की मुक्त छ द की एक नयी कविता 'पावस छियासी'' शीषक ते लिखी जामैं भरतपुर चालीस किलोमीटर दूर की बाना नदी को चरित उजागर कीनोए। साथई बाकी पार पै रहबे वारैन को दरदऊ बडे मार्मिक श-दन मे चित्रित की हो हे।

ऐसेई कैऊ लोक गीत औरऊ लिखेए जिनमे बरखा के काजै तलपते नर नारीन को बरनन कियो है देखो—

माँग लाऊँ मै द्वै दिन उधार।
लौट आवै जो बरखा बहार।

□

बावरी सी डोल रही पुरबा बयार।
बुझ रही मेघा की धरती सौ प्यार।

□

गरजौ बरसौ रे अभिमानी।
बिन पानी जीवन धारा की कोऊ नाय कहानी।

□

बरसें ते मनमाने बरसे।
पल म कर दे पनियाढार।
रूठ जाँय तो ऐसे रूठें।
जैस परै पीठ पै मार।

ऐसी ही औरऊ रचनान म मेरे कवि ने बरखा के अभाव और जन जन के जीवन की करुणा कहानी को चित्रण की होए सामाजिक विसमता, भ्रष्टाचार, महगायी, गरीबी आदि हू मेरे काव्य के विपय रहे थे। पत्र-पत्रिकान मे छपी ऐसी रचनान को अवलोकन पाठकन ने अवश्य की हो होयगो।

रचना कर्म —

मैंनें भौत से कवि लेखकन की रचना कम देखो तो मेरी आँख चौड जाय। इतेक ज्यादा लिखौए उनने कै गिनीज बुक मे नाम लिखाय दीहो है। दूसरी ओर एसेऊ लेखक

देखे जिनकी एक कहानी ते वो जगत मे श्रेष्ठ कहानीकार बन गये । एक कविता लिखी वू रचना आज जन जन की जीभ पै चढि रही है और खुद या देस प्रेम की अनौखी कविताय लिग कै विदेश मे जाय बसै । तौ इन बातन ते मेरे मन म कबहुँ तौ महाकाव्य लिखिवै की प्रेरना होय और कबहुँ ऐसी ही छुटपुट रचना लिखिवै कौ मन करै । सच्ची बात ता जि है कै मेरौ मनमौजी मन कागज कलम लकै विधिवत मेज-कुर्सीन पै बैठ कै लिखवै कूँ नाय उमगै । एक अनौखी बात अपने रचना क्रम की बताऊँ कै मेरो सबते पहलो गीत साइकिल चलाते हुए रस्ता म ई रचौ गयौ बात उन दिनान की है जब मेरी बदली सरकारी स्कूल अबार है गयी । साइकिल चलावै मे श्रम होय वा श्रमै दूर करव कूँ कछु गुनगुनायवे कौ मन करऔ सो कछु पक्ति कविता की बन गई । तो पहली पक्ति सोगर महगाये गामन के बीच बनी 'मन की आये देखो जरा उतार के उनकी आखो मे भी सपन प्यार के" एक कागज कौ टकडा जेब बडौ सो जि पक्ति लिख लीनी । स्कूल मे कक्षा मे बैठे कविता चल रहीए छोटी कक्षा न बालकन कू कछु काम दे दीन्हौ और दूसरी पक्ति बन गई । फिर तीसरा ब द और चौथा ब द रस्ता म लोटते भये बन गयौ । या गीतै लै कै सीधो श्री हरीश भादानी जो कि नरेन्द्र शमा के घर ठहरे भये हते पहुचौ । गीत सुनायौ । उन्हे बडो पस द आयौ । उनकी प्रेरना ते ही गीत लिखवौ शुरू करौ । सो या गीत क बाद जितने दिन वे यहा ठहरे हर रोज नये-नये गीत गजल रचतौ रहौ सुनातो रहौ । या तरिया सौ गीत बिधा मे रचना लिखवौ शुरू भयो ।

ब्रजभाषा अकादमी बन गयी । ब्रजभाषा के कवि सम्मेलन मे समस्या पूर्ति की पक्ति मिली । समस्या पूर्ति के छ द लिखे । पर मन नाय भरऔ । मन मे इच्छा जगी कै ब्रजभाषा मेऊ नयौ सजन कियौ जाय । राधा कृष्ण और रासलोला ब्रज की होरीए लैकै इतनो लिखौ गयौ है और श्रेष्ठ लिखौ गयौ है कै हम कछु नाय ठहर । सो नयी कविता की मुक्त छ द शैली मे कविता रची । ब्रजभाषा मे 'जीवन सिंह मानवी" जैसे कैऊ नये कवि ऐसी रचना कर रह हते । पर हमारे विद्वान अकादमी अध्यक्ष कूँ तो ब्रज मे और ब्रजभाषा मे रस ही रस दिखाई देवै हैना सो गात गाबेबारेन कौ अकादमी म ज्यादा सनमानु भयौ । हमारी नयी कविता रद्दी की टोकरी माहि डार दी गी । पीछे बड एहसान ते छापी हू तो ऐसी जसे सौत कौ छौरा होय । या तरिया त ब्रजभाषा मे मात्र पुरानी सैली की रचनान की नकल भर रची गयी । ब्रजभाषा कौ नयौ विकसित रूप सामने नाय आ सकौ ।

तौ मेरौ रचना क्रम ज्यादातर सडकन प कब हूँ सायकिल पै चलते भये कबहु पैदल चलते भये ही भयौ है । बैठ कै तौ गद्य कौ निरमान होय । एक दो कहानी लिखी सौ ब्रजभाषा अकादमी की माग पै ई लिखी है ब्रज-शत दल मे छपी है । कविवर गिर्राज मिश्र को व्यक्तित्व और कृतित्व हू ब्रजभाषा अकादमी के काजै एक पत्र वाचन हेतु तयार

की हौ सौ ब्रज शत-दल मे छपौए। यानी ब्रजभाषा कौ अधिकाश साहित्य जो कछु मेरे कवि ने रचौए सब अकादमी की माग पै रचौ गयो है।

पर एक जरूर कहूगौ के ब्रजभाषा बोलिबे वारौ काऊ रचनाकार जब रचना लिखैगौ फिर चाहे बू हिदी मे लिखै, पर ब्रजभाषा के शब्द ही अधिक सख्या म बाकी रचनान मे होगे। और बा रचना की प्राण-धारा उन शब्दन के माध्यम ते ही सचारित होगी। सो ब्रजभाषा मे मने चाहे बहुत थौरो लिखौए पर जो भी लिखौ है बामैं मौलिकता अक्षुण्य रखवे कौ प्रयत्न रह्यौए। साथ ही अपनी अन्य रचनान के माध्यम ते ऊ ब्रजभाषा की सजीवता बनाये रखव की चेष्टा कीन्ही है।

अन्त मे मेरो कहबौ तो जे ही है कै ब्रजभाषा अकादमी ब्रजभाषा को एक मात्र रूप बनाबे की चेष्टा कर। और उन रचनाकारन कूँ प्रोत्साहन द जो ब्रजभाषा म मौलिक रूप ते रचना करते होय। प्राचीन छन्दन म यदा कदा रचना-शिविर लगा जाय ताकि बू रूप हू सुरक्षित रह सकै। पर असली बात मौलिकता की है जाते ब्रजभाषा आगे बढ सकै। नये ते नये भाव और विचारन न व्यक्त कर सकै। मैंने अपने छोटे से प्रयास मे मौलिकता की रक्षा करबे की चेष्टा करी है। सक्षिप्त म यही मेरी रचना कम है और यही मेरी रचना प्रक्रिया है। ज्यादा और का लिखू।

—रामबाबू शुक्ल

ब्रज रचना माधुरी

रचयिता--रामबाबू शुक्ल

बिखर गई वह मृदु मुस्कान

पीरी सरसौं
भयी सुनहरी
लाज सरम ते
झुकि झुकि जावै ।

दाने भरी
फरी
पक-पक कै
झोटा लै लै
नाच नचावै ।

हँसिया लै कै
चले किसान ।

बिखर गई
वह
मृदु मुस्कान ।

बरसें तो
मनमाने बरसें
कर दे

पनियाढार
रूठ जाँय तो
सूखा मारै
जैस परै–पीठ पै मार
ऐ रे बदरा।

कारे बदरा
का तू भीतर हू
ते कारौ।

सोच तनिक तौ
या तरिया सौ
कैसे हो
जीवन निस्तारौ।

हाड तोड
मेहनत करबावै
कमर तोड मँहगाई।

भूखे बालक बारे
रोवै
पेट भरे चौथाई
ऊपर ते बजमारौ
बदरा
अब कै ऐसो
रूठो
पोखर नद–नारे
सब सूखे
जीवन डोरा टूटौ।

पिक–पिक इ जिन चलै,
पियै डीजल
अरु फैंके दुल–दुल पानी

लहरा लके वहै,—
साप सी चाल–
चलै बरहा अभिमानी
प्यासे–पपराये
ओठन पै
क्यारी जीभ फैर कै तरसे
कित कूँ
ढरि गई री
वह चचल
रुक रुक कै
क्यो धारा दर सै

दस पैसा मे
रचि पचि जाती
लाल-लाल मेहदी ते
मेरी और बडी जीजी की
ये खुरदरी हथेली'—

फैला नन्हे हाथ
दिखा रमिया
यो पैसा माग रही
काका सौ
बेर-बेर रिरिया कै ।

कँपते हाथन
खूब टटोली
आटी, खीसा, जेब
अभागो सिक्का
एकऊ नाय मिलौ
कहूँ पै अटक्यो
भूलौ भटक्यो
और मन मार रह गयौ
घीसा खडौ–खडौ
धरती कुरेदतो
ऊँगली ते

भीतर ही भीतर हिल गयौ
रह गयो मन मसोस, विचारो ।

और वे भोली अँखिया
टुकुर-टुकुर ढूँकती
रह गई प्यासी की प्यासी
बोली आम मजरी सो
कोयल
हे सखि !

हम, तुम आये इहा
महके कुहके पै
रितुराज नहीं आयौ
अबकै
जाने कहा बिलाय गयौ
रमि रह्यौ कहाँ
आम मजरी, महकी, बोली—
कहा बताऊँ भटू !

बात कछु भयी
अटपटी,
नये-नये बनि रहे
राजधानिन मे बँगला
कोठी और चौबारे
पारक, लौन
सरकाने के दोऊ ओर
रोपि दिये नये-नये
पौदा मतवारे
मेरे जानि फँस्यो तिन माहि
बिचारौ
और रहि गयौ वही
अटक्यौ कौ अट्क्यौ
या कारन ना आय सको
इन गमार/अमराइन मे/रितुरा

लहरा लके वहै,—
साप सी चाल–
चलै बरहा अभिमानी
प्यासे–पपराये
ओठन पै
क्यारी जीभ फैर कै तरसे
कित कूँ
ढरि गई री
वह चचल
रुक रुक कै
क्यो धारा दर सै

दस पैसा मे
रचि पचि जाती
लाल-लाल मेहदी ते
मेरी औंर बडी जीजी की
ये खुरदरी हथेली'—

फैला नन्हे हाथ
दिखा रमिया
यो पैसा माग रही
काका सौ
बेर-बेर रिरिया कें।

कँपते हाथन
खूब टटोली
आटी, खीसा, जेब
अभागो सिक्का
एकऊ नाय मिलौ
कहूँ पै अटक्यो
भूलौ भटक्यो
औंर मन मार रह गयौ
घीसा खडौ–खडौ
धरती कुरेदतो
ऊँगली ते

भीतर ही भीतर हिल गयौ
रह गयो मन मसोस, विचारो ।

और वे भोली अँखिया
टुकुर-टुकुर ढूँकती
रह गई प्यासी की प्यासी
बोली आम मजरी सौ
कोयल
हे सखि !

हम, तुम आये इहा
महके कुहके पै
रितुराज नही आयौ
अबकै
जाने कहा बिलाय गयौ
रमि रह्यौ कहा
आम मजरी, महकी, बोली—
कहा बताऊँ भटू !

बात कछु भयी
अटपटी,
नये-नये बनि रहे
राजधानिन मे बँगला
कोठी और चौबारे
पारक, लौन
सरकाने के दोऊ ओर
रोपि दिये नये-नये
पौदा मतवारे
मेरे जानि फँस्यो तिन माहि
बिचारौ
और रहि गयौ वही
अटक्यौ कौ अट्क्यौ
या कारन ना आय सको
इन गमार/अमराइन मे/रितुराज विचारो !

कुडण्ली—

गऊदान मे मिल गई, हमकूँ जरसी गाय।
हथिनी सी द्वारे बँधी खडी खडी मन्नाय॥
खडी खडी मन्नाय धूप मे हाफे भारी।
जब ब्याव जब साड, एक बछिया नही डारी।
कहँ शुक्ला कविराय, भिडे घुस गये दुकान मे।
गागी रोज दिवाय, मिली जो गऊ दान मे॥

□

गई साल के नाज ते, कटि गई पूरी साल।
इत उत कूँ ढूँकत फिर, सो अब है ठन ठनपाल॥
अब हे ठन ठनपाल मिलै न कहूँ उधारौ।
इन्दर राजा तेरौ हमने कहा विगारौ।
कहँ शुक्ला कविराय सिथिल भये अक भाल के।
कैसे लौटे दिना बीत गये गई साल के॥

□

होरी कौ चस्का लगौ भारत की सरकार।
चढ ससद की छत्त पै भाजि गई रग डार॥
भाजि गइ रग डार बजट घुरवाव भारी।
टैक्सन की पिचकारी भर तक तक कै मारी।
कहँ शुक्ला मन फटौ इते जनता भारी कौ।
खेले उत सरकार लगौ चस्का होरी कौ॥

□

चदा पै जाखन परे अमरीकन के पाम।
तारुन करबा चौथ कौ अरध दे रही वाम॥
अरघ दे रही वाम कहै झूठे विज्ञानी।
दुनिया कूँ बहकाय कर रहे धन्धौ पानी।
बोली बालम सुकुल, फेक दओ ऐसौ फदा।
पैसा बारे फँसे, चाट जओ सगरौ चदा।

कितनी हू पढी लिखी, योग्य औ महान होय,
कितने हू ऊँचे ते ऊँचे पद धारी है ।
इकली जो निकसै तौ पग-पग पै छेड छाड,
खेचतान होय, रोज दुपटा औ सारी है ।
मरद चाहे अनपढ, गमार और मूढ होय,
मूँछ खेच कहै नारि दासी हमारी है ।
होगो सनमान कबहुँ याहि देस माहि भले ।
आज दीन हीन भयी भारत की नारी है ।

□

खेलनि मे कछु बोलनि मे इन काननि मे उतरी ब्रजवानी ।
आँगन की रज मे रमिकै रचिकै, पचिकै उचरी ब्रजबानी ।
आपनी पीर कही जनकी, मनते न कवहू विसरी ब्रजवानी ।
मोह लियौ जग कौ मनुआ, ब्रज की रज ते निसरी ब्रजबानी ।

□

सेबक है हम हू ब्रज के हमने हु सदा ब्रज के गुन गाये ।
मागत का तिनसौ जिनकौ गहि आगुरि कै चलिवो सिखराये ।
पाठक जू हम तो घरिकै फिर क्यो समझे तुमने यो पराये ।
छोरि गये इकलौ हमकूँ सबकू जतराय कि हौ लरिकाये ।

□

डारनि पात झरे, विथुरे इतरात फिरै पुरबा मुह जोरी ।
आय गयौ रितुराज सु यौ, सु उदास भयी कहि सावरि गोरी ।
कौन सुनै परदेस बसै पिय, आतन भेजते रग कमोरी ।
देखि भट बरजोरि करै, रस रगनि बोर गई इत होरी ।

□

भीतर ते अकुलानि उठै, सुगलानि भयी रिस की खिसकोरी ।
मीडत मीडत लाल भयी, पलकै कछु औचक ही कसकोरी ।

रग सुरग भरी निचुरै, आखिया बडरी उन काजर बोरी ।
लाल निहाल करी ब्रज ग्वालिन, आय हुति जेहि खेलनि होरी ।।

□

खेलि रही पट अतर चचल द्वै खग सी आखियाँ चमकोरी ।
रग गुलाल उडात चले हुरियारनु देखि भजी निज पोरी ।
घेरि लई अध वीचहि श्याम, सु गाल गुलाल मली बरजोरी ।
देखि अटा चढिकै हुलसै, सखिया कह खूब रही यहि होरी ।।

□

रग अबीर उडामन कू सखि भागन ते यह फागुन आयौ ।
कँत गये परदेसन मे सुधि भूल गये न सदेस पठायौ ।
देह जरै, पजरै मनुआ, जब फाग उडै सबके मन भायौ ।
झार उठै उत होरिन मे इत आख झरै असुआ ढरकायौ ।।

□

घोरि घुमेरि घुरै बदरा इतते उत लौ सिगरौ नभ छायौ ।
सामन की झरि फागुन मे किहि भाति बनै अब फाग उडायौ ।
या रितु मे हिमपात भयौ विधि ने यहि खेलऊ खूब दिखायौ ।
हाट बजार न कोऊ मिल्यौ सबकूँ महाभारत देखत पायौ ।।

□

रगनु दाम भये दुगुने, तिगुने जब लाल गुलाल मगायौ ।
चार गुने पिचकारिन के जब केसरि रग लला घुरवायौ ।
पाँच गुने सु बदामन के गरु थोरिहु भग कहू घटवायौ ।
लाख गुना दिलदारन के भर अक नही कहु मिलतो पायौ ।।

□

फागुन लागत धूरि उडै, उतकूँ पतझार भरै नित झोरी ।
खेतनि माँहि फरै सरसो उत रूखन छाजत कोपल कोरी ।

शीतल मद समीर बहै, उँमगे हियरा दूत खेलनि होरी।
खोजत स्याम लला निकसी, सखि सग लिए उत ग्वालिन भोरी ।।

□

नाचत कूदत फाग उडामत, ज्यो मिल जाय लला ब्रज खोरी।
तौ सिगरौ बदलौ चुकि जाय, करी वन मारग जो बर जोरी।
आखन लाल गुलाल मलौ उन रगनि आज डुबोय दयौरी।
पै जब मारग माहि मिल्यौ, ठगि सी ठहिराय सु ग्वालिन भोरी ।।

□

देखत ही इन आखिन के सिगरौ बह ठाठ गयौ उलढयोरी।
स्वारथ रग चढ्यौ जग पै, अब नेह सुरग उड्यौ सगरोरी।
ग्वाल नमा करि है कछु फैसन, भूलि गये ब्रज की बह होरी।
खोजत खोजत हार गयौ, न मिली ब्रज मे कहु ग्वालिन भोरी ।।

□

रग अबीर कहा उडि है अब धूरि के ठट्ठ उडै चहुँ ओरी।
भग बदाम कहाँ छनि है अब लाल परी मदिरा झकझोरी।
चग धमार कहाँ बजि है अब नाचहि छोरन के सग छोरी।
ढग गमारन के लखिकै मन ढूढि रह्यौ कहूँ ग्वालिन भोरी ।।

□

घिरि घिरि कजरारौ घन,
गरजे बजभारौ न्यारौ।
दामिनी दमक्कै कैधो,
सापिनी लपक्कै है।
पीत पटवारौ भीनी।
भीनी गध देन हारौ।
बावरौ बसत मेड।
मेड पै उचक्कै है।

एसो अनहोनो रूप।
दुनियाँ मे नाय देखो।

जैसो याहिसाल ब्रज।
बीथिन मे झलक्कै है।

गढयो थोक थोकन मे।
डाडो उत होरी को।

सावनी फुहार सी।
इत 'बूँद हू सरक्कै है।

□

सागर हू मरजाद तजै।
तजिकै रवि तेज चहो सियरावै।

धूम तजै अगिनी की लपट।
तजिकै ससि सेत चहो पियरावै।

बूढे की नारि गुमान तजै।
बसुधा तजि धीर चहो खिसियाव।

जो पै चहो जग मे सनमान।
तो भीर परै न कहूँ रिरियावै।

□

झूठि बोलिबो भयो है आज सभ्यता को अ ग
झूठि बोल बोल नेता बडे बनि जाइये।

बायदा पै बायदा करो हो जैसी जहाँ माँग
बायदनु की बात पै न ध्यान कहु लाइये।

झूठि बोलिबे ते मिले चाहो जैसे छप्पन भोग
सत को बनाय भेस लूट लूट खाइये।

लाख अरु करोरन के आसरम बनाय लेऊ
ज्वान ज्वान चेलिन पै पाव दब बाइये॥

गेरूआ रँगाय केस दाढी हू बढाय
सँग भीड सी लगाय, गोरी चेली रख लीजि

बिनु बात मुस्काय नेकु पूतरी झुकाय,
हौले, होले बतराय, फिर आख मीच लीजि

ऊँचो आसन जमवाय और माइक लगाय
बात गढ के सुनाय उपदेश खूब दीजि

अखबार छपवाय द्वार-द्वार पहुँचाय,
बेसुमार धन पाय, सोमरस पीजि

□

जिन बातन ते कहुँ बात बडे,
तिन बात भलेहि किए न किए।

जिन दानन ते नहिं दभ घटे,
तिन दान भलेहि दिए न दिए।

जिन पान किए नहिं प्यास बुझे,
तिन पान भलेहि पिए न पिए।

बलिदान न हो जननी जन पै,
तिन प्राण भलेहि जिए न जिए ।।

□

रग अरु अबीरन की बात आज कौन करै,
फूलनि के गजरे हू कौन पहिरात है।

एसो बदरग, रग फाग कौ बनाय दीनौ,
देखि देखि ढग औत पीतो जरौ जात है।

केसरि कस्तूरी औ चदन कौ लेप कहाँ,
प्रेमी बतियन कौ पतझार सौ दिखात है।

ऐसी मँहगायी की होरिका सी मँगरै है,
झल्ल सी उठत और जियरा जरात है।

वहे फगुनौटी व्यारि गोरी गाँव की गँवारि,
चली गुरगाटो मारि गुबरोटी हाथ है।

देखे सग नदलाल, हुरियारे ग्वाल बाल,
छिपी पट के पिछारि बडी मुस्कात है।

घेरि लीनी चुपचाप, नेकु घु घटा उघारि,
करे सेननि सौ मारि अति ही लजात है।

लखि मोहन के ढग जरि गये सब अग,
राधा झीके सखि सग जियरा जरात है।

□

आयौ रितुराज छायो गध को सुराज
आज रूप रग राग फूलनि सजात है।

गैल घाट कु ज कु ज देखि कलिन के पु ज,
गु ज गु ज झूम यो अलिन की जमात है।

धरि धरि अधरान करि-करि मधुवान,
मधु मधुपी को बाल बेरि बेरि बोरात है।

छूटि छूटि के पवन झकझोरे मेरो मन
तेरे बिनु प्रान–धन जियरा जरात है।

□

सीरी सरसावै व्यार देह कौ कँपावे और,
मद–मद आवै गध कु ज महकाई है।

झर झर झरकावै पीरौ पात न दिखावै,
डार डार भर जावै कोपलिया छाई है।

कलियन चटकावै पात भौंरन बुलावै,
पान मधु कौ करावै यो अनोखी रितु आई है।

घर ते जो निकसै तो आखिन परसै यहि,
बागन वन बीथिन बसत सुहाई है।

नैनन तैं सैनत तैं, बैनन तैं बतरावै,
रग औ अबीरनु की झोरी भरवाई है।
गैलनु मे गलियन मे गीत गवे गाम गाम
चँगनु पै चाचरि धामार धुनि गाई है।
जगर मगर झल्ल करै होरी मँगरे पै,
मिलकै जकारै जय होरिका सुभाई है।
दगरे मे रसिया है छत्तन अटान गोरी,
ब्रज की सी होरी बस ब्रज मे सुहाई है।

□

कोऊ हुलसाके हाथ चँग लैके गावै फाग,
काहू दुखिया ने रैन रोय कै बिताई है।
प्रीतम के सँग कोऊ हरसाकै खेले रग,
रग ते कुरगिनी सी कौऊ दौरि धाई है।
नैनक पिचकारी भर कोऊ रग डारै आली
कोऊ मिसकारी भर अँसुआ सिराई है।
आयौ न कत नाहि भेजो है सदेस कोऊ,
वजभारी होरी यो न विरहिन सुहाई है।

कवित्त

नारी कूँ जनम देय नारी को मान घटै,
घर मे हू बाहर हू होत भौत ख्वारी है।
सास नन्द बोले बोल पति हू निरास होय,
झीकें "सब भांति तैने इज्जत बिगारी है।
छेड़े हैं यार–बास, पास औ परोस बारे,
बेटी को बाप कहकै देत नित गारी है।"

होगो सनमान कबहुँ याहि देस माँहि भलै,
आज दीन हीन भयी भारत की नारी है ।

□

छोरा कौ जनम भयौ सुनकै उछाह होत,
घर घर परसाद बटै बजै थारी है ।

छोरी कौ नाम सुन जूडी सी चढन लागै,
मातु पिता भाइन नै हुलिया उतारी है ।

छोरा कूँ मोहन भोग छोरी कूँ बचौ खुचौ,
छोरा की उतरन ही पहिरत विचारी है ।

होगो सनमान कबहूँ यदि देश माँहि भलै,
आज दीन हीन भयी भारत की नारी है ।

□

लछमी है दुरगा है, विद्या की देवी है ।
चडी को रूप धार राकस सहारी है ।

पूजा की मूरत है वेद औ पुरान कहै,
भावना ते भगती ते आरति उतारी है ।

सो ही बस रेलन मे और मेले ठेलन मे,
कितनौ अपमान रोज भोगे बिचारी है ।

होगो सनमान कबहुँ याहि देश माहि भले,
आज दीन–हीन भयी भारत की नारी है ।

□

ब्रज की रज धोय धोय कालि दी श्याम भई,
नभ ते घन श्याम, श्याम जल हूँ बरसाइ गे ।

आओ तो देख लेओ कुजन करीलन मे,
पात पात श्याम गात सोभा सरसाइ गे ।

गोबरधन श्याम बरन, पैड–पैड श्याम चरन
परिकम्मा मारग मे श्याम मिल जाइ ये ।

ऐरे मन धीरज धरि फागुन तौ आमन दै,
वेर–वेर लाल होरी खेलन कूँ आइ गे ।

□

टेरि–टेरि ग्वालन कूँ बसी बट छाह तले,
जमुना के घाटन पै लीला रचवाइ गे ।

घेरि घेरि गाय अरु बछरन के टोलन कू,
विदरावन कु जन मे बसी बजवाइ गे ।

फेरि–फिरे कोप करै इन्दर ब्रज मडल पै,
छिगुली पै गिरिधर सौ गिरिवर उठवाइ गे ।

हेरि–हेरि राधिका कूँ सखि सग रग लिये,
वेर–वेर लाल होरी खेलनि कू आइ गे ।

पद

औघट घाट भयौ विंदरावन ।
भादौ सूखौ बीत जात है ऐसौ ही बीतौ सावन ।।

मन्दिर–मदिर झाकी दशन, ठाकुर कौ उत्थापन ।
ऐसी घाम परत कुँजन मे भूल जाय परछावन ।।

बसीबट सूनौ सूनौ सौ, जल बिन जैसे बासन ।
जमुना तट कछु ऐसो लागै, ज्यो बालक विन आगन ।।

अबकै कुम्भ जुरौ सन्तन नै आय लगाये आसन ।
बरखा बिन इतरात फिरै ज्यो भयो धूरि कौ शासन ।।

□

गरजौ बरसौ रे अभिमानी ।
बिन पानी जीवन धारा की कोऊ नॉय कहानी

होगो सनमान कबहुँ याहि देस माँहि भलै,
आज दीन हीन भयी भारत की नारी है ।

□

छोरा कौ जनम भयौ सुनकै उछाह होत,
घर घर परसाद बटै बजै थारी है ।

छोरी कौ नाम सुन जूडी सी चढन लागै,
मातु पिता भाइन नै हुलिया उतारी है ।

छोरा कूँ मोहन भोग छोरी कूँ बचौ खुचौ,
छोरा की उतरन ही पहिरत विचारी है ।

होगो सनमान कबहूँ यदि देश माँहि भलै,
आज दीन हीन भयी भारत की नारी है ।

□

लछमी है दुरगा है, विद्या की देवी है ।
चडी कौ रूप धार राकस सहारी है ।

पूजा की मूरत हे वेद औ पुरान कहैं,
भावना ते भगती ते आरति उतारी है ।

सो ही बस रेलन मे और मेले ठेलन मे,
कितनौ अपमान रोज भोगे बिचारी है ।

होगो सनमान कबहुँ याहि देश माहि भले,
आज दीन–हीन भयी भारत की नारी है ।

□

ब्रज की रज धोय धोय कालि दी श्याम भई,
नभ त घन श्याम, श्याम जल हूँ बरसाइ गे ।

आओ तो देख लेओ कुँजन करीलन मे,
पात पात श्याम गात सोभा सरसाइ गे ।

गोबरधन श्याम बरन, पैड–पैड श्याम चरन,
परिकम्मा मारग मे श्याम मिल जाइ ये ।

ऐरे मन धीरज धरि फागुन तौ आमन दै,
वेर–वेर लाल होरी खेलन कूँ आइ गे ।

□

टेरि–टेरि ग्वालन कूँ बसी बट छाह तले,
जमुना के घाटन पै लीला रचवाइ गे ।

घेरि घेरि गाय अरु बछरन के टोलन कू,
विदरावन कुजन मे बसी बजवाइ गे ।

फेरि–फिरे कोप करै इन्दर ब्रज मडल पै,
छिगुली पै गिरिधर सौ गिरिवर उठवाइ गे ।

हेरि–हेरि राधिका कूँ सखि सग रग लिये,
वेर–वेर लाल होरी खेलनि कूँ आइ गे ।

पद

औघट घाट भयौ विंदरावन ।
भादौ सूखौ बीत जात है ऐसौ ही बीतौ सावन ।।

मन्दिर–मदिर झाकी दशन, ठाकुर कौ उत्थापन ।
ऐसी घाम परत कुँजन मे भूल जाय परछावन ।।

बसीबट सूनौ सूनौ सौ, जल बिन जैसे बासन ।
जमुना तट कछु ऐसो लागै, ज्यो बालक विन आगन ।।

अबकै कुम्भ जुरौ स तन नै आय लगाये आसन ।
बरखा बिन इतरात फिरै ज्यो भयो धूरि कौ शासन ।।

□

गरजौ बरसौ रे अभिमानी ।
बिन पानी जीवन धारा की कोऊ नाय कहानी

कितनी सही चपेट समै की रेत भरी झोली पसराये
सामन की फुहरन मे भीजै मन मे सपने खूब सजाये
अब तौ अखियन खोल सुनी रे तू है औघड दानी
गरजौ बरसौ रे अभिमानी ।

चमकै जब-जब बीजुरिया तौ रोम रोम अपनौ खिल जावै ।
उमडे जब जब बादरिया तो उड उड मन पाखी मडरावै
धरती ते लग जल जाबौ पर नैकु न बरसै पानी
गरजौ बरसौ रे अभिमानी ।

सूखे क ठ होठ पपडाये कैसै बात बताऊ मन की
खामौसी कौ बोझ उठामे, कैसै दोऊ गठरिया तन की
धीरै धीरै रीत रही है गागर धरी पुरानी
गरजौ बरसौ रे अभिमानी ।

आँख पसारे तोय निहारें, सूखी खडी खेत की फसलै
नाले नदी बिचारी पोखर चाह रही बाहने मे कसलै
झर झर ! प्यासे जीव पुकारै लौटा दे जि दगानी
गरजौ बरसौ रे अभिमानी ।

□

सुनि बदरा कजरारे !
अब तो घन सौ जीवन हारे। सुनि बदरा कजरारे ।
उमड घुमड घिरिये निस बासर काहे कूँ बजमारे ।
अब तौ घन सौ जीवन हारे ।।

टूटी छान चुचामत ऐसै जैसै बहत पनारे ।
तपूँ रसोई का विधि बहिना रोवे बालक वारे ।
अब तौ घन सौ जीवन हारे ।।

खूँटा बँधी तुरामत गैया घोटुन है रहे गारे ।
गिर्यौ मुसैरा, होकै भूखी, इनकूँ धीर बँधारे ।
अब तौ घन सौ जीवन हारे ।।

टूटे बंध गाम बहि जामे सुनि-सुनि फटे हियारे।
गरे लगाय रहू लरिकनि कू छिन हू दूर न टारे।
अब तौ घन सौं जीवन हारे।।

पानी भरे खेत बौराये दीखत ज्यो नद नारे।
चौपट फसल बाजरे, तिलकी, बचौ नही तिनका रे।
अब तौ घन सौ जीवन हारे।।

कबहू रूठि जाय तौ मारे बूंद-बूंद तरसा रे।
अबकै नेह बढायौ ऐसौ सब है रहे दुखारे।
अब तौ घन सौ जीवन हारे।।

सुनि बदरा कजरारे अब तौ घन सौ जीवन हारे।।

गीत

घेरि लई नद लाल, ग्वालिनिया भोरी।
केसरिया रग डार खेल गयौ होरी।

नैनन से रतनारी रोरी सी घोले।
लाज ते कमान भई, झुकराती डोले।

उठलाकै बाह गही करि है बर जोरी।
केसरिया रग डार खेल गयो होरी।।

रग भरी पिचकारी का्हा ने मारी।
घु घटा जो उलटि गयौ देन लगी गारी।

मुस्काकै झकझोरै देखौ खिलकोरी।
केसरिया रग डार खेल गयो होरी।।

भूली घर-वार लाल देखिकै सलौनो।
उदमादी नारि भई, मार गयो टोनौ।

दुबकाकै, फैंक भज्यौ रग की कमोरी।
केसरिया रग डारि खेल गयौ होरी।।

देखौ ब्रज गलियन मे मच्यौ है हुरँगा ।
लठामार होरी हू लागै हुरदगा ।

हुलसाकै चग बजै भग छनै कोरी ।
केसरिया रग डारि खेल गयौ होरी ।

ब्रज महिमा

मन भावन प्यारौ देस विरज जामैं अति प्यारौ ।
जमुना तट ब यौ विसेस, कदम कु जन बारौ ।।

मधुवन घूम महाबन घूम्यौ अरु घूमौ वि दरावन ।
बरसानौ नदगाव कामवन, गोकुल और लठावन ।
चौरासी कोसन मे फैलौ बन–बन घूम घुमारौ ।
भयौ है मन मतवारौ
जमुना तट ब यो विसेस, ।।

सात कोस गिरिराज चरन मे पसरी सुभग तरैहटी ।
जतीपुरा, आन्योर, पू छरी, राधाकुण्ड समेटी ।
नर नारी परिकम्मा कर रहे दे दैकै जैकारौ ।
विरज रज अनियारौ
जमुना तट बन्यो विसेस ।।

पीलू नीम, बबूर छौकरा हीस करील जबासौ ।
गेहू के सग उगै खरतुआ सरसौ चना रभासौ ।
हरे भरे खेतन लहरावै, पुरबा कौ सेकारौ ।
सुहानी कु जन वारौ
जमुना तट ब यो ।।

सामन भादौ भरै सरोवर कमल कमलिनी फूलै ।
तीज सलूनौ परै हिडौला छोरी–छोरा झूलै ।
कजरी और मल्हार गवै सग गू जे गैल गिरारौ ।
सु-यौरी ब्रज झनकारौ
जमुना तट ब-यौ ।।

खार खडियार, खरे कहवैया खारी पानी पीवै ।
खरी-खरी बतिया बतरावै बतरस पी कै जीवै ।
गलियन ग्वाल मचावै रौरा नाचै दै ठुमकारौ ।
नचावै वशी वारौ ।
जमुना तट ब यौ ॥

विदरावन की गली गली मे कान्ह करी नित लीला ।
चोर चोर दधि माखन खायो घर घर छल छवीला ।
अब लौ याद करै ब्रजवासी ग्वालनु कौ किलकारौ ।
खिलारी ब्रज कौ यारौ ।
जमुना तट बन्यौ ॥

क-गीत —

माग लाऊँ मे द्वै दिन उधार ।
लौह आवे जो बरखा बहार ॥
खेतनि मे खन्नाटौ मारै,
सूखे फसल झुरै झमकारै,
नैक हरियावै अरहर की डार ।
लौट आवै जो बरखा बहार ।

द्वारे खडी रँभाव गैया ।
प्यासी मरि रही ताल तलैया,
पूज आऊँ मै पोखर की पार ।
लौट आव जो बरखा बहार ।

रात दिना मोय नीद न आवै,
लरकनि की चिन्ता घुलसावै,
धरूँ तुरसी पै दियरा उसार ।
लौट आवै जो बरखा बहार ॥

कोऊ देव न आडे आयौ,
फूल चढाये भोग लागायौ,

अबक ग्यारस उपासूँगी चार ।
लौट आवै जो बरखा बहार ।।

बूँद-बूँद कूँ धरती तरसै
हरौ भरौ तिनुका न दरसै,
बाट आती मै घर घर फुहार ।।
लौट आवै जो बरखा वहार ।

माग लाऊँ मे द्वै दिन उधार ।
लौट आवे जो बरखा बहार ।।

गीत–

बाबरी सी डोल रही पछआ बयार ।
बूझ रही धरती सौ बदरा कौ प्यार ।।
धूरि के गँगूट उठैं आसमान घेरि कै,
बतरावै खेतनि सौ मड मेड टेरि कै,
छिपी कहा निरमोही सावनी फुहार ।
बूझ रही धरती सौ बदरा कौ प्यार ।।

हरी भरी बगिया मै पतझार छाई,
ललछौही कोपल क्यो लौट क न आई,
रूठ गई अबकै क्यो मधुरितु बहार ।
बूझ रही धरती सौ बदरा कौ प्यार ।।

अबकै न तीज मनी श्रावणी सलूनौ,
जनमाठो निकसि गयौ बूँद बिना सूनौ,
तरस मरै बीतै जो भादौ सौ त्वार ।
बूझ रही धरती सौ बदरा कौ प्यार ।।

घिरि घिरि कै आवै कब मेघा कजरारे,
मारै कब बीजुरिया झम झम झमकार,

ऊँपर कूँ ढूँके सब नैना उधार ।
बूझ रही धरती सौ बदरा कौ प्यार ।।

गीत—

दफ्तर दफ्तर डोल रह्यौ है,
भाला पडौ झमेले मे ।
ठाले बठे ज फत मढ गई,
रावे खडो अकेले मे ।

कौन भला याकूँ समझावै,
दुनियादारी कौ चक्कर है ।
जो जितनी फाइल उलझावै,
सो उतनो काबिल अफसर है ।
आगौ पीछौ मत कर भैया,
पैसा चला अधेले मे ।
ठाल बठे आफत मढि गई
रोवे खडौ अकेले मे ।।

करजा को आस्वासन दै क,
सेवक जी ने वाय फँसायौ ।
कही गरीबी दूरि भगालै,
बडे भाग तै मौको आयौ ।
छोडो यहा तलक लाकै,
ज्यो बालक रोवे मेले मे ।
ठाले बठे आफत मढ गई
रोवे खडौ अकेले मे ।

नीचे के अफसर ते लेकै,
ऊपर तक सब एक तन्त्र है ।
ये समताबादी समाज है,
रिस्वत मे ही लोकतन्त्र हैं ।

भीड त त्र मे तू भी घुस जा,
या दुनिया के रेले म ।
ठाले बठे आफत मढि गई,
रोवै खडौ अकेल म ।।

□

कितनी करे चाकरो भैया कितनी पल्लेदारी ।
जीवन कौ रस लूट ल गई उनकी तावेदारी ।।
फटे पुराने कपडा पहरे, रूखा सूखौ खायौ,
टूटी फूटी खाट मडैया, घास फूस सो छायौ,
इतने हू प सहनी पड गई उनकी ठस्सेदारी ।
जीवन कौ रस लूट लै गई उनकी तावेदारो ।।

बालक-वारे और मेहरिया रात दिना दुख पावै,
खून पसीना एक करै तउ रोटी न मिल पावै
खेत मिले न फसल मिली न हमकू हिस्सेदारी ।
जीवन कौ रस लूट ल गई उनकी तावेदारी ।।

सपने है गये चना चवैना दूध दही न खायौ,
बिरथा ज म, मिलौ धरती प जीवे भर कौ ठायौ,
ढोवत–ढोवत कमर झुकी पै हुई न खातेदारी ।
जीवन कौ रस लूट लै गई उनकी तावेदारी ।।

पेट पीठ मिल एक है गये आखिन म दम आ ी,
दो रोटी की खातिर भैया सिगरी उमरि गमायी,
पीरी परि गई देह हमारी, रूखौ तौ गद्दारी ।
जीवन कौ रस लूट लै गई उनकी तावदारी ।।

ऐसें काम चलैगो कब तक, नीचो कब तक दिगे,
जो कछु हाथ पडे मारिगे अपनो हक ले लिगे,
पोल खुलगी दुनिया देखै उनकी कारगुजारी ।
जीबन कौ रस लूट ले गई उनकी तावेदारी ।।

ठौर-ठौर दरक गयी धरती की छाती ।
कोऊ तौ लिख भेजो इन्दर कू पाती ।।
कोऊ तौ लिख भेजो मेघा कू पाती ।।

लाल लाल आख दिखा सूरज डरपावै ।
कन कन झल्लाय रोम-रोम झुलसावै ।
पजरोटी घाम भयी अब न सही जाती ।
कोऊ तौ लिख भेजौ इन्दर कूँ पाती ।।

पीपर बमूर सूखे, नीम आम सूखे ।
छोकरा करील, पीलू आक ढाक सूखे ।
झगरोटी ब्यार घास पात सोख जाती ।
कोऊ तौ लिख भेजो इन्दर कूँ पाती ।।

रीते घट भभक रहे घाट घाट पनघट पै ।
प्यास की उसास जुरै कैसे या झझट पै ।
बदरोटी बूँद कहाँ, सास जो जुडाती ।
कोऊ तौ लिख भेजौ इन्दर कूँ पाती ।।

चोच खोल चिचियाती डोले रे चिरैया
बूँद बूंद तरस गई रम्भाती गैया ।
कजरोटी मेघ घिरौ । जीब के सगाती
कोऊ तो लिख भेजो इन्दर कू पाती ।।

□

ये हरियल बातास भौत ही भावै है ।
धीरे धीरे वहे बडौ सरमाबै है ।।
गरज गरज गहरावै चमकै बीजुरिया,
लरज लरज हरसावै झूमै बाजरिया,
मक्का ज्वार उलाहनौ दैवे खडी खडी
चौरा, मूग रमासौ करते चाकरिया,
पोखरिया हुलसावै जल लहरावै है ।
धीरे धीरे बहे बडौ सरमाबै है ।।

वीर बहूटी सुरख मखमली वेस मे,
लुक छिप खेले हरी दूब के देस मे,
तितली रग समेटे पाखे तोलती,
भवरा काजल आजे नैन प्रदेस म
रिम झिम मोती झरे पौन झरवाब है।
धीरे धीरे बहे बडी सरमाबै है ॥

परदा उठते रग विरगे फूल खिले,
परदा गिरते अधियारे के दूत मिलें,
रग मच मैला मटमैला दीखता,
पात्र विचारे सहमे सहमे नही हिलें
प्रथम अ क है और विदूसक गाबै है ।
धीरे धीरे बहे बडी सरमाबै है ॥

□

रजनी की गोदी मे चदा किलकारे ।
किल किल किलकारी सुन घिर आय तारे ॥
नीलमणि अगना मे ठुमक ठुमक डोलें,
बतरावें, रार करै तुतराकै बोलें,
तुनक–तुनक झगरै तौ मैया पुचकारे।
किल-किल किलकारी सुन घिर आये तारे ॥

कोहरायी बदरी जो धूम सी उडानी,
छोरन की अ खियन म भर आयो पानी,
अ सुअन मे ठिनक ठिनक सिसके हिचकारें ।
किल किल किलकारी सुन घिर आये तारे ॥

दूध की मथानी सी चादनिया ढुलकाई,
सरर–सरर फैल गई धरती ज्यो सरसाई,
घुटरुन बल दौर दौर लुढक जाय वारे।
किल किल किलकारी सुन घिर आये तारे ॥

सामुल ननद जिठानी, कदर मेरी काहू न जानी ।
कैसै कटै जिन्दगानी कदर मेरी काहू न जानी ।।
बाध भरौटा न्यारऊ लाऊ,
चला मसीन कुटी कर बाऊ,
करू ग्वार की सानी, कदर मेरी काहू न जानी ।।

दूर गाम त कूआ भरनौ
खेचत खेचत है जाय मरनौ,
दिन भर ढोऊँ पानी कदर मेरी काहू न जानी ।।

भोरो-भारौ है घरवारौ,
जाकौ नेकऊ नॉय सहारौ,
कासौ कहू कहानी कदर मेरी काहू न जानी ।।

उठू सिदौसी सोऊ अमेरी,
सिगरे दिन खाऊ चकफेरी,
नस नस देह पिरानी, कदर मेरी काहू न जानी ।।

छोटे छोटे बालक बारे,
घर कौ धन्धौ तेउ सबारे,
कोऊ न करै निगरानी, कदर मेरी काहू न जानी ।।

जी बोऊ मरन भयौ बैयार कौ,
नैकु सहारौ नाय पीहर कौ,
ऐसेई उमर बितानी, कदर मेरी काहू न जानी ।।

बारी सी गौने ते आई,
ज्वानी मे बूढी है आई,
पूरी होय कहानी कदर मेरी काहू न जानी ।।

□

रितुराज वसत रम्यौ जबते, ब्रज मडल की अमराइन मे
तब ते बसुधा बिगसी, हुलसी खुलसी गई ज्यो वनराइन मे ।

सरसी सरसौ वरसी घनसौ जब केसरि सी कछु क्यारिन मे ।
इत जोति झरै नभ पूनम तै उत प्रीत जगै ब्रजवासिन मे ॥

□

लछमी पति श्याम सखा बनिकै ब्रजबीथिन मे मचिकै नचिकै ।
ब्रज गोपिन के सग रार करै, रुचि रास रचें रचिकै पचिकै ।
कबहु दधि माखन लूटि, चखै पुनि हेरत है अँचकै बचिकै ।
कबहु हुरियार बने चलि हे, सग ग्वालन के उचिकै लचिकै ॥

□

जब पूनम की विथुरी जग मे, उजरी उजरी वुरि चादनियाँ ।
हरखी हिय मे प्रिय प्रेमलता, सिहरी–सिहरी नव पल्लवियाँ ।
ब्रज की रज मे मिलिकै चमकै शिशु की मनु दाँतुलिया ।
विदरावन रास रच्यौ हरिजू खनकै, गमकै पग पैजनियाँ ॥

□

यहि नेह भरी रितु फागुन की बन कुजन म इतरात फिरै ।
महकै नव पल्लवि प्रेमलता, कछु चदन सौ बिखरात फिरै ।
जब घेरि घुमेरी घिरे बदरा, नभ मडल हू सिहरात फिरै ।
दुति पूनम की उतरी धर पै अ ग अ गन यौ हरसात फिरै ॥

सवैया

टेरि लिए सिगरे हुरियार, सुरँग घुराय भरी पिचकारी ।
फेटनि लाल गुलाल सकेलि, अबीरनु पोटरि कँधनि डारी ।
नाचहि गावहि चग बजाय, सु फागुन रीति अनूप निकारी ।
टोल बनाय इतै ब्रज छैल, उतै ब्रज–बालहि गावहि गारी ॥

□

कोऊ अबीर उडाय भज्यौ अरु कोउ गुलालनि पोटरि मारै ।
धूरि उठाय मलै मुख पै अरु कोउ ललानि पै कीच उछारै ।

रग फुहार चलै इत ते, उत ग्वालिनि हाथनि बास सँभारै ।
मार करै इत सौ पिचकारिनि नैननि बान उतै तकि मारै ।

□

जे कछु सील सनेह सुभाय रहे, ब्रज बीथिन मै विथुरगये ।
ते सब सार सँभार समेटि लिए, गिरिराजहि अग लगाये ।
आय घिरी लखि स्याम घटा, मन मो॰ भयौ हिय नाय समाये ।
यो ब्रजधूरिहि रूप मिलौ, घन सो तन पाथर छार मिलाये ।।

□

इदु छटा छितराय रही, छिटकी चँहु ओरहि सद जुहाई ।
न्हाय रह्यौ गिरिराजहु कौ तन, मानहुँ दूधहि धार चढाई ।
ज्यो ब्रजधूरहि पुज सहेजहि, मोद भरे पिनु अक लगाई ।
बूडि गये सब सावरि रगहि स्याम घटा घिरिकै घहराई ।।

□

डोलि रह्यौ ब्रज कुजन मे रितुराज समीरहु सग लगाई ।
रँगनि पोटि लुटाय दई गिरिराजहि आगन रौरि मचाई ।
झूमि उठी ब्रज धूरि समीरहि धूम मनौ ब्रज मडल छाई ।
आय मिली जब स्याम घटा ब्रज बीथिन मे रस-धार बहाई ।।

□

रग अबीर गुलाल उडै इत केसरि चदन के भये गारे ।
चगनि सग उचँग उठै, अलि ग्वालन के निरखो ठुमकारे ।
गैलहि घेरि लियौ अधवीचहि, गोपिन कीचहि स्याम सँवारे ।
स्याम छटा निरखे ब्रज धूरि, सु श्यामहि रणुहि रूप निहारे ।

पावस छियासी

बान गगा
न तौ उफनी
न झगियायी और

न कगार काट कूट कै
घानी सी करी अबकैं ।

कगार के पास परौस के रूख
ऊँचो माथौ
करकै ठाडे हैं
नहीं तौ झुरखुराओ करैये,—
खिसिर–खिसिर
घिघियाऔ करैये
इन दिनान मे
बान। की लहरन कौ
पँठ टौ
मोहनो फेर दियो करेजौ
मगर की। पूँछ कौ सौ
फटकारौ लगयौ ।

मुरचा–मुरचा
पानी हू पार करिवौ
बैतरनी पार
करिवौ है जाय

पर अबकै
सिराय गयी बिचारी
बाना
भडारै मे
बूँदऊ नाय परी
महीना डेढ महीना तैं ।

असाढ मे नैकु
चमकी बीजुरी
पर अबतौ
बादरन की एकहू
फिटक सीअ नाय दीखै।
घाम परै जेठ की

दुपहरी की सी
या सामन मे या भादो मे
पार की रेत बारू
चिलकै
आखन मे
चका चौंध भर जाय।

होठ पपराय गये एँ
किसानन के।

आखनु की पूतरी
कारी परि गयी।

और बेर
नन्ही-नन्ही बुंदियान ते
हुलसाय
ढोलक पै गवैई आल्हा
फरक उठैई
ज्वानन की भुज।
कछु करि गुजरवे कूं।

पर अबकै
गाम गोटन मे
चौपारऊ जमुहायी लै कै
इन उन कूँ
ढूंक कै रह जाय
सूनी परीए बिचारी
अबकै।

पोखर की पार पै
डरै औ झूला और साल
घर-घर तै निकसिकै
इकठौरी है जामैई
छोरी छापरी

सिगरे गाम की
झूलन प झौटा ल-लै कैं
मचकी बढायवे की
होडि सी लगि जावै ई
पर अबकैं
बा धुरियाये—
पोखर घाट प
कौन जावै,
कौन डारै झूला
कौन मल्हरावै तौ
कौन बढावै मचकी ।

रमच दी वारे
बड के नीचे
दगलऊ नाय जुरौ
अबकैं
रूई के फाये सी
फुहारनु ते
बचिवें कूँ याकैं नीचे
उगार करैई
अधमीची आखन वारी
सुस्ताती कपिला
गैया नाँय दीखे
अब कैं ।

हरे–हरे
कचियल पीपर पातन कूँ
चपर चपर
चपियाऔ करैई
छेरी
गुम्मन गूजर की
पर खडी है उदास
विचारौ, बचे खुचे
खेजन नै सथारतौ

या पार पै
अबकै ।

बाना न तौ उफनी
न झगियायी
ना घाती सीसी करी
काट-कूट कै कगारन की
अबकै
पीपर कै चौडे-चौडे
पत्तान मे सीक ऊरस कै
डोंगी वनाय
तैराओ करैए नदिया की
धार मे बालक-वारे
पर सुट्ट बैठिकै
झीक रहे है विचारे
अबकै ।

खेतन मे सन्नाटौ डोले ।
पत्ता खन्नाटो मारै
हवा के सग ।

ज्वार-बाजरे और तिलकी
सूख गई फसल
पत्ता हू सूग गये सटकारे-से
हरो तिनुकाऊ
नाय दीखे
अबकै ।

या तरियाँ ते धोको
दे जायेगी बाना
ऐसौ भरोसो नाँय हतो
काऊए ।

कै तो बूढ मे डूबें
कै सूखा की झरपट झेलें
कछु ऐसी

अदाबदी करैं
बाना
इत तीर कैं
रहैवया बिचारेन ते

चौंकि बाना
न तो उफनी
न झगियायी
न घानी सी कारी
कगारन की फाट कूट कें
अब कैं ।

बाना नाँय चढी
निठठ सूखी
परी है बिचारी
अबकैं ।

ब्रजभासा गद्य विकास की चिन्ता

गये पाच सौ सालन ते ब्रजभासा उत्तर भारत माहि साहित्य की भासा को रूप धरिकै एक ऊत्तर राज करत रही है । कृष्ण भक्ति अरु सिंगार रस को रीति कालीन दरबारी साहि य जितनौ ब्रजभामा मा ह रच्यौ गयौ उतनौ ससार की काहू भ सा मै इकठौरौ नाय रचौ गयौ । या बात की पुष्टि उन भासान के इतिहासै पढै तै पतौ चलै है पर तौऊ अचरज होय कै काव्य को इतनौ घनौ भण्डार हात ऊ गद्य साहित्य की रचना मे कजूसी ाहै कू बरनी गई जो थोरे भौत पुराना वार्तान अरु छाटी मोटी कहानी-किस्सान क ्लावा ध्यान ीचवे लायक साहित्य लिखित रूप मे ढूढै तैऊ नाय मिलै है । सा तो अभाव आजु ब्रजभामा के विद्वान कूँ खटकै है ।

राजस्थान ब्रज ासा साहित्य अकादमी के प्रादुरभाव भयै पाछै तौ या बात पै औरऊ अधिक ध्यान दीयौ जावै लगौ है । चौकि काहू भासा या साहित्य अकादमी कौ निरमान ता भासा कै सरूप की सरचना, सरच्छन अरु विसतार के काजै हुओ करै है । ब्रजभासा अकादमी कौहू काम ब्रजभासा कौ विस्तार अरु सरच्छन करनो है । सौ विद्वानन की चि ता करिवौ उचितै । पर कबहुँ-कबहुँ जब जा प्रकार कौ अनुभव होयवे लगै कै ब्रजभासा के विद्वान, पडित और मनीसी हि दी खडी बोली कूँ—जा मै गद्य कौ विकास बहौत तेजी तै भयौ है—ब्रजभासा कौ मारग रोकवे बारी भासा मानवे लगि जायै तौ बडो अचरज होय । उनकौ माननौ है कै जा गद्य कौ विकास ब्रजभासा माहि होनो हतौ सौ अधबीचहि हि दी खडी बोली नै लूट लियौ और ब्रजभासा गद्य सरूप धारना करिवे तै पहलै ही मुरझा गयौ । अरु हि दी तौ आज गद्य साहित्य की विश्व भासान मे तौ एक भासा है गईए जबकि ब्रजभासाए पद्य म हू टिकवे के लालै पडि रहै है ।

सौ ब्रजभासा के विद्वानन कौ हिन्दी सौ ईरषा करिवौ कोऊ अचरज की बात नाय हतै । अकादमी कै केऊ आयोजनन मै आपसी बातचीतन मै जो बात स्पष्ट रूप तै उभर कै आयी कै अधिकाश ब्रजभासा के विद्वान पानी पी पी कै हिन्दी कूँ कोस रहेएं । उनके मते मे ब्रजभासा के विकास माहि सबते बडी बाधा हिन्दी ने खडी करि रखी है । कोऊ महावीर प्रसाद द्विवेदीए सबते जादा दोसी मानै कोऊ भारतेन्दु हरिश्चन्दए

अरु कोऊ रामचन्द शुक्लै दोसी मान है। पर सबको दढ निहचै एकैए कै बजभासा कूँ रोक रही है तौ बू है हिंदी भासा और कोऊ इतनौ बडौ दुश्मन नाय। अरु याकौ इलाज जी ही हते कै हिंदी कौ हर स्तर पै विरोध करौ जाय तौ ही ब्रजभासा कौ विकास होगो। मेरे विचारते जी धारना भ्रांति ते भरी भयी है [या लेख के माध्यम ते उन विद्वाननु की सेवा मे विनम्र निवेदन करिवै कौ प्रयास कियौ है। उपयोगी होय तो अपनइयो नाँहि तौ मौयकूँ चार गारी दैके लेख थूक दीजौ।

इतिहास के कछु पन्नानु कूँ उलटि कै देख, तौ हम पतौ लगि जायेगौ क ब्रजभासा–जोकि मुगल दरबार त ह पहलै तै पद्य और सगीत की भासा कौ गौरवमय स्थान प्राप्त कर चुकी हती ही—सिगरै भारत मैं मगीत की अरु कृष्ण भक्ति के पदन की भासा बन गई। राज दरबारन मै सिंगार रस तै सराबार है कै सगीत कारन कै कठ की सोभा बढात भई साधारण जन की भासा बनती जा रही हती। पटना (बिहारी) अरु पजाबी भासा कौ ममज्ञ गुरु गोविंद सिंह जू अरु उनतऊ पहले के गुरुन ने ब्रजभासा के कवित्त रचै हते मरहठा राजा शिवाजी के दरबार म भूषण कवि ब्रजभासा मे कविता रच रहै हते तो अकबर के दरबारी बीकानेर के राजा पृथ्वीसिंह जोधपुर के जसवन्त सिंह और मेवाड की मीरा हूँ याही भासा म पद रचना कर रही हती। सुदूर मणिपुर मे कृष्ण लीला, उडीसा बगाल, बिहार, गुजरात, महाराष्ट्र पूरब, पच्छिम ऊतर दक्खिन चारो ओर ब्रजभासा काव्य की रचना है रही हती। अरु याकी परम्परा भारतेन्दु हरिश्चन्द्र तक अबाध गति सौ बढती भयी आ पँहौची। पर गद्य की दिशा मे मामलौ बिरकुल उलटौ है गयौ।

ब्रजभासा गद्य कौ विकास स्वय ब्रजभासा के माधुर्य गुन कै कारन बाधित भयौ है। रचना कारन की ऐसी धारना रहीए कै ब्रजभासा की कोमल कान्त पदावली मे गद्य की कटकमयी, कठोर और खुसक विसयावली कौ बरननु करिवौ ब्रजभासा के सग क्रूरतम अत्याचार करिवौ है। ब्रजभासा की मधुराई तौ याके सुदर गेय पदनु मै तेजयुत कवित्तन मे अरु पछरी से खन खनाते सवैयान मै हतै। गद्य की ककरीली, कठोर अर पथरीली भूमि पै घसीटव तै याकी कोमल देह छिलकै लहू लुहान है जायेगी सौ गद्य लिखिबे कौ प्रयास, अनायास ही अवरुद्ध है गयौ। आगे चलिकै जब देश की कई भासान मे अगरेजी के प्रभाव सौ उपन्यास कहानी, निबध आदि गद्य रचना हैवै लगी तौ या भासा के रचना कारन ने हिंदी खडी बोली कौ प्रयोग करिवो आरम्भ करदीनौं, ता समय हू ब्रजभासा की मधुरता ही आडे आई। अरु जी मात्र काव्य भाषा बनिकै रहि गई। एक उदाहरण दैकै हम अपनी बातै पुष्ट करिगै—सन् 1913 मार्च मे सरस्वती पत्रिका माहि बालकृष्ण भट्ट अपने लेख "शब्द की आकर्षण शक्ति" मैं लिखौ हतौ कै—

'अब तक मन मैं उठता है कि शब्दो मे इतनी मिठास और आकषण शक्ति के रहते भी खडी–बोली मे कविता की मोहनी मूर्ति का दशन क्यो नही होता
हिन्दी से ब्रजभासा के काव्य-ग्रन्थ निकाल दिये जाय तौ वस्तुत हि दी भाषा हि दी न रहे ।''

भट्ट जी ब्रजभासा कूँ काव्य की भासा के रूप मे मा यता देत रहे अरु बिना चाहे हू खडी बोली हि दी कूँ गद्य की भासा मानते रहे । ऊपर के वाक्यन तै या बात की पुस्टि है जायेगी ।

तौऊ जहा तै बात शुरू करी हती बात माही की माही रह गई है यानी ब्रजभासा मे गद्य कौ विकास क्यो नाय है पायौ । हि दी नै याकौ मारग रोक लीनो या कौऊ औरहि कारण हतौ जाके कारन तै ब्रजभासा का विकास अवरुद्ध है गयौ । ब्रजभासा कौ हरेक विद्वान सिगरौ दोस हि दी के माथै पै मढिकै निश्चित है जाय पर या बात कौ उत्तर एकहू विद्वान नाँय देवै कि इतने बरमन तै ब्रजभासा के विकास के का प्रयास है रहे है तौ टाँय-टाँय फिस्स वारी कहावत चरिताथ है जाय ।

हि दी के आधुनिक विद्वान, ब्रजभासा मे विकास की कोऊ सभावनाए मानवे त मना करै उनके विचार तै ब्रजभासा तौ अब असभ्य लोगन की गँवारू भामा मात्र रहि गई है । पन आँख खोलकै ईमानदारी ते देखे तो जी बात सिद्ध है जायेगी कि हिन्दी के कलेवर माहि ब्रजभासा की येगरी नाय सिमी होती तो हिन्दी हू नकटी बूची भासा बनिकै रह जाती । ब्रजभासा बोलिबे बारैन की सख्या आज करोडन मे है और समझिवे वारेन की सख्या तो पूरे देश मे और हू अधिक है पर सवन हिन्दी कूँ अपनौ पूरौ समथन दीनौ तब जाकै हि दी कौ विकास भयौ है । इतिहास मे कबहुँ ऐसौ हू समै आ जाय हते जबकै अपनौ स्वारथ त्यागकै दूसरान कौ विकास करनौ पड जाय । सौ ब्रजभासा नै अपने स्थान पै हिन्दी कूँ बढावौ दीनौ क्योकि हि दी ता समै सिगरै भारत मे समझी जावै लगी हती । राष्ट्रीय-आन्दोलन, आय समाज आदोलन अरु अन्य सुदेसी आदोलनन मे हि दी कौ विकास हैवै लगी । सौ ब्रजभासा भासी हू राष्ट्रीय धारा मे घुल मिल गये अरु हिन्दी विकास मे सहायक भये । या कारन तै हिन्दी भासी विद्वान ब्रज भासाए कमजोर मानकै हिन्दी कूँ समरिद्ध भासा मानवे की गलती करै तो यातै हिन्दी कौ तौ भलौ नाँय होयगो हा ब्रजभासा को नुकसान जरूर है जायेगो ये दोनो भासा एक दूसरी की विरोधी नाय हतै पन सहयोगिनी है । बल्कि ब्रजभासा तौ हिन्दी की जननी है ।

कछु विद्वान या बात सुनकै चौंकिगें कि ब्रजभासा हिन्दी की जननी है। पर हमारे पास या बात सिद्ध करवे कूँ तर्क हतैं प्रमान हतैं। इतिहास मैं झाकिवे ते एक बात कौ पतौ चलि जायेगौ कै हमनैजो बात ऊपर कही हती कि ब्रजभासा पिछले पाच सौ बरसन तै काव्य की भासा रहीए ता रामय छिट-पुट गद्य कौ हू निरमान हौतौ रहौ है। करौली भरतपुर, ओरछा अरु मध्य भारत के अनक पुरान राजान के राज-काजन मे ब्रजभासा कौ प्रयोग गद्य के रूप मे हो तौ हतौ। नाके अलावा, साधारण चिट्ठी पत्री जैसे—

'सिद्ध सिरी जोग लिखी—(स्थान)—तैं आगे सब पचन कूँ (नाम) की राम राम वचना जी।" या प्रकार की चिट्ठी को नमूनौ पूरे भारत म दखो जाय सकै है। व्यौपारी अपनौ खातौ वही अरु अ य काम काज ब्रजभासा माहि करते पुराने वार्नान मे धारमिक कामन मे ब्रजभासा कोई प्रयाग होवेओ एक उदाहरण औरऊ दयो जा सकै है—"जुलाई 1901 की सरस्वती म रघुनाथ प्रसाद की कविता 'लखनऊ वरणन" ब्रजभासा मै छपी उसी अ क मे महावीर प्रसाद द्विवदी री कवि कत्त व्य' लेख है जहाँ वे हि दी साहित्य के विकास के बारे मे अपना काय क्रम प्रस्तुत करते है। इसम उन्होने पद्य की भाषा के बारे म लिखा है—

"गद्य और पद्य की भाषा पथक पथक न होनी चाहिए। यह एक हि दी ही ऐसी भाषा है जिसके गद्य मे एक प्रकार की और पद्य म दूसरे प्रकार की भाषा लिखी जाती है गद्य को प्रचार हि दी मे थोडे दिन से हुआ है। पहले गद्य न था, भासा का साहित्य केवल पद्य मय था गद्य साहित्य की उत्पत्ति के पहले पद्य म ब्रजभाषा ही का सावदेशिक प्रयोग होता था यह निश्चित है कि किसी समय बोल चाल की हि दी भाषा ब्रजभाषा की कविता के स्थान को अवश्य छीन लगी।"

—"महावीर प्रसाद द्विवदी' ने रामविलास शर्मा प 228

उक्त उदाहरण ते केऊ बात सिद्व है जायेगी। कै सन 1901 लौ गद्य और पद्य की भासान मे भेद हतो ब्रजभाषा ता समय हू सावदेशिक पद्य की भासा हती। और हिन्दी गद्य वा समय अपनी ससव अवस्था मे हतौ। अरु ब्रजभासा गद्य कौ व्यौहार जन जन कै प्रयोग मे हौ तौ रहौ। ऊपर के उदाहरण त एक बात और हू सिद्ध है जाय कि हि दी ता समय बोल चाल की भासा हती साहित्य की भाषा नाय हती। यानी ब्रजभाषा तौ काव्य की भासा यानी सभ्य समाज की भासा हती अरु हिन्दी मात्र बोल चाल की या असभ्य जनन की भासा हती।

भासा विज्ञान कौ सिद्धान्त हुते कै साहित्य की भासा कछु और होय अरु बोलचाल की दूसरी भाषा हू समाज मे चलन मे होयो करै । जैसे बैदिक-सस्कृत साहित्य भासा-हुती, तौ बोल चाल की दूसरी भासा, जाकौ सग्रह करिकै पाणिनी ने अष्टाध्यायी व्याकरन बनायी अरु ना भासा कौ नाम लौकिक सस्कृत धरौ सस्कृत साहित्य के समय पाली-प्राकृत, और इन दोनो के साहित्य के मुकाबले अपभ्र श अरु ताके सग अवहट्ठ अरु फिर आजकल की ब्रज अवधी, पूर्वी-हिन्दी, पच्छिमी हि दी, लँहदा सिंधी, पजाबी बुदेलखडी बघेली, गुजराती मराठी आदि अनेक भासा ये आई जिन भासान मे साहित्य रचना हैवे लगी तौ बोल चाल की दूसरी भासाहू प्रचलित हुतै । हि दी मे साहित्य रचौ जा रहौ है तो या क्षेत्र म ब्रजभासा बोल चाल मे काम आ रही है ।

हमैं ब्रजभासा के विद्वानन तै एक निवेदन और हू करनौ है कि भारत आज एक राष्ट्र के रूप मे उभर रहो है ताकि एक ही भासा होनी चाहिए सौ हिन्दी राष्ट भासा के रूप मे विकसित है रही है । पिछले 50 बरसन म हिन्दी भासा के गद्य और पद्य मे लाखन पुस्तकन की रचना भई है । 1901 मे हि दी गद्य और पद्य कूँ लैके चि ता-तुर द्विवेदी जी जो कहुँ आज होते तौ या विपुल साहित्यै देखकै दातन तर अँगुरी दवाय लैतै । इतने अलप समै मे इतनौ विपुल अरु विविध साहित्य रचौ गयौ के अँग-रेजी के देशी विदेशी लेखक अरु विद्वान पजरिवे लगि गये है अरु हि दी कूँ अन्य अनेकन विधिन सौ पीछै धकियाव कूँ प्रयत्न कर रहे हुतै । ऐसे समै मे हिन्दी कूँ जनम देवै वारी ब्रजभासा के विद्वान हू हिन्दीए बेमतलब गारी दिगे या याकूँ रोकिबे को प्रयास करिंगे सौ बै जा डार पै बैठे वाही डारै काटबै कौ कारन बनि जायेगे । सौ या तरिया तै बुद्धि के द्वार खोलिके उदार मना है कै सोचबे की आवश्यकता है ।

एक बात हम निहचै तै कहि सकै है कि इतिहास क्रम तै अब ब्रजभासा गद्य के विकास कौ समै आय गयौ है । क्योकि आज हि दी साहित्य की भासा के रूप मे गद्य और पद्य मे छाय रही है अरु याकी समरिद्धि के काजै ब्रजभासा के शब्दनु कौ निर्बाध प्रयोग हि दी माँहि है रहौ है तो शीघ्र ही ब्रजभासा हि दी सौ सुतन्तर खडी है के साहित्य रचना करैगी । यातै ब्रजभासा के विद्वानन कौ उत्तरदायित्व और हू बढि जायै । ब्रजभासा मैं गद्य रचना और नये प्रयोगन तै युक्त नये पद्यन को निरमान करनौ होयगो । कोऊ साहित्य व्यापक जनता कौ साहित्य तबहिं बनि सकै जब जनता के सुख दुख, आसा-आकाच्छा, नये नये बैज्ञानिक विषयनु कौ गद्य साहित्य रचौ जाय सौ याक काजै बडौ प्रयत्न करनौ पडै कोरी गारी देवे तै काम नाँय चलै ।

हिन्दी अरु ब्रजभासा एक दूसरी की बाधक नाय बरन पूरक है । भारत तौ बहु भासा भासी देश है । हर भासा कौ बिपुल और विविध साहित्य है ता कारन तै बे भासा

हि दी कूँ अपने तै पाछे विकसित भई मान कै राष्ट्रभासा मानवै मै ह हिचक करै है। जैसे बगला, तमिल, तेलगू, गुजराती मराठी आदि कोऊ भासा हि दी तै पहलैई अस्तित्व मै आ गई हती या बात मै कोऊ समै नाय। हा ब्रजभासा जा समै समस्त भारत की एक मात्र काव्य भासा हती ता समै इन भासान मे साहित्य रचना वहोत कम हती। अँगरेजी के प्रभाव त बगला और तमिल आदि भासान म गद्य की रचना पहल तै हैब लगि गई। ब्रजभासा तौ अपने काव्य के कारन गर्व कौ अनुभव करै हती सौ गद्य मे रचना त दूरहि रही। आग चलिकै गद्य मे रचना करिवै को बोझ हि दी न अपने कधान प उठाओ है और आज जी सिगरै देस की सगतै विकासित भासा है। या प्रकार सौ हिन्दी ने ब्रजभासा की पूरक भासा को काम कियौ है।

ब्रजभासा समथकन कूँ इतनौ तौ जान लैनौ चहिए कै इतिहास कौ पहिया उलटौ नाय घूमौ करै। जौ भासा एक दफै आगे कूँ बढि गई सौ अब पीछै नाँय लौट सकैगी। तौ फिर गारी देवै और कोसवे ते काम ना सरैगो। अब तौ उदार चित्र तै अन्य भारतीय भासान कै शबदन कूँ अपने कलेवर मे समेटि कै उपन्यास कहानी, नाटक अरु नवीनतम विषयन मै निबन्ध लिखे जाँय पुरान छन्दन को मोह त्याग कै नये छन्द अरु मुक्त छन्दन मे काव्य रचना करी जाय तौ जाक ब्रजभासा, सम्मानित साहित्य भासा को पद ग्रहन करि सकैगी।

साहित्य के विकास कै सग सग, ब्रजभासा को व्याकरन और शबद कोसहू बनायौ जानौ चाहिए ब्रजभासा मैं भारत के हर छेत्तर की भासान क शब्दन कू पचायवे की बडी भारी छमता हत सो जी भासा बडी शीघ्रता तै समस्त भारत को लोकप्रिय भासा है सकै है पर याकै काजै बडी मेहनत करिवे की ठान लिगे तब कछु है सकै है। कोरे विरोध करैतै काम नाय चलैगो।

राजस्थान ब्रजभासा साहित्य अकादमी को गठन सिगरै भारत म ब्रजभासा को एक मात्र ऐसौ सगठन कह्यो जायेगो जाय सरकारी सरच्छन प्राप्त है अरु जो ब्रजभासा के विकास के काजै "ब्रज शतदल" नामक एक सुन्दर पत्रिका कोहू प्रकासन करि रह्यो हतै। या माध्यम तै ब्रजभासा कूँ विकसित हैवै को पूरो मौको मिलैगो। नयी रचनान ते नये बिषयन कूँ प्रकट करिवे कूँ प्रेरित करयौ जा सकै है। अकादमी तै जूरे समस्त विद्वानन तैं हमै यैही आसा करनी चाहिये कै वे काहू भासा को अन्ध विरोध अरु ब्रजभासा के प्रति अन्धसिरधा त प्रेरित है कै ऐसौ बातावरन नाहि बननि दैं जासो ब्रजभासा कूँ तो कोऊ लाभ नाय होय अरु हिन्दी कूँ एक गडढा और हू खुद जाय। आप सबहि जानौं हौ कै हिन्दी कूँ अपने जनम के समै तैं ही विरोध सहनौ पडि रह्यो है अँगरेजी तौ

विदेशी भासा है कै या की विरोध करि रही है पर देशी भासा हू याकौ विरोध करि रही है तमिल आदि दक्खिनी भासा तौ जैसे याके नाम तै ही चिढ जावे है अरु याकौ विरोध करकै ही वहा की राजनीति चलि रही है । कम ते कम ब्रज अवधी आदि याकी भगिनी भासान कूँ तो याको विरोध नाय करनौ चाहिये। जी बात निचित है कै हि-दी विरोध करै तै नॉय रुकेगी। अत ब्रजभासा के विद्वानन त विनती हैकै अपनौ विकास करै तै, नयी रचना करै तै, आगे बढि सकँ है। ब्रजभासा कै गद्य कै विकास की चि-ता करै तै काम चलैगौ हिन्दी के विरोध करै ते काम नाय चलैगौ।

—रामबाबू शुक्ल

कवि गिरिराज मित्र

कविवर गिरिराज प्रसाद मित्र भरतपुर अचर के कबीर कहे जाओ करैं। सादगी फक्कड पनौ अरु गुनी जनन कौ सग बिनकी विशेपता हती जौ बिन्नैं लिखी है—

अति उछाह ही सौ कियो म गुनियन कौ सग।
सुनि सुनि रचना रसभरी नूतन उठी तरग ।।

पूरी गिरस्थी तीन छारा दो छोरी अपनी अरू एक बडे भैया की छोरी बिनके सगई रहती। परि बिनकी जीवाचर्या मे कोऊ खास अ तर या बात ते कबहूँ नाय आयौ। गिरस्थी अपनी जगै तो कविता अपनी जगै। बिन्नैं दोनोन कौ ही निरवाह की हौ। ऐसे फक्कड अरू घुमक्कड कवि कौ जीवन वत्त लिखबौ बडौ टेढौ काम हतौ। पर या पत्र के लेखक कू जीवन भर अपने घर के सामई रहबे के कारन बिनकूँ नजीक ते देखबे कौ औसर मिलौ सो जैसौ देखौ जानौ सो लिख दीनौ है।

'मित्र' जी के व्यक्तित्व कौ औखिन देखो रूप कछु या तरियाँ कौ हतौ। कै पहलौ दफे कोऊ बिनकूँ देखतौ तौ भरोसो नाय कर सकैओ कै जी कोऊ कवी है। मैली गजी के गाढे की धोती अरु बैसेई कुरता टोपी। पामन मे जि दगी भर कबहूँ जूती नाय पहरी। कबहू काऊ व्याह सादी म जानौ परौ अरु जूता पहिरैऊ तौ कपरा के टागर सोल के गाँधीवादी जूना ई पहिर। बिनकौ प्रयोगऊ यदा कदा करिवौ। कह आवे जावे कूँ ही करैं हे। वे तौ गरमी, सरदी, बरसात हर मौसम मे उराहनई जौलौ करे हे। सच्चे दरिद्र नारायन के रूप श्री गिरिराज प्रसाद जी मित्र नें खुद लिखौए कै —

पाइन मे पहनी नही, रहू नसा ते दूर।
कबहुँ चबाऊँ पान ना, पास न रहै गरूर।।

गरीबी अरू निर्धनता की प्रबल वेदना—

'मित्र' जी की सादगी ते रहबे के पीछै गरीबी तौ हती ही कछु गाधी जी कौऊ प्रभाव हतौ। जा तरियाँ ते गाधी जी ने चम्पारन म गरीब कूँ देखकै (जापै मात्र एकई

वस्त्र हो बाई कूँ धोयकै, सुखाय कै पहिर लेई) एई ही बस्त्र पहिरबो शुरू कर दीनौ। 'मित्र' जी ऊ बाही तरिया सौ कवि हृदय की करूण भावना ते प्रेरित हैकै नगे उराहने से रहौ करै हे कछु ऐसोई कारन बिनके मन मे रहो होयगो। एक रचना के माध्यम ते बिनक मन की पीर कौ पतौ लगि जावै–

अन धन तौ भरपूर हो, होय दुधारू गाय।
चैन लहे राजा प्रजा, दुख दारिद नसि जाय ।।

'मित्र' जी को जीवन एक सत को सौ जीवन हतौ। जीवन मे अनेक तरिया के छोटे बडे काम करिकै घर गिरस्ती कौ पालन करौ बि नै। कबहुँ काऊ तै कछु मागौ नही। अपने तीन पुत्रन तेऊ कछु नाय मागौ। अपने अतिम समय तक थैला चिपकाय कै बेचते रहे। मरे पीछेऊ इतनी रद्दी बची कै बाही कूँ बेचकै बिनको किरिया करम कर दीनौ। काहू कौ एक पैसा खरच नाँय करवायौ।

'मित्र' जी को जनम भरतपुर मे खेरापति मौहल्ला लछमन मदिर के पास एक सम्प न वैश्य परिवार मे भयौ। आपकी माता कौ नाम चम्पावती अरू पिता कौ नाम नारायन लाल एव एक मात्र बडे भैया कौ नाम किशोरी लाल हतौ। आपके बडे भैया बडे अच्छे कवि हे। आपने एक दोहा अपने जीवन के बारे मे लिखौ है–

मो माता चम्पावती पितु नारायन लाल।
कवि किशोर भ्राता बडे, जिनको काव्य रसाल ।।

कवि किशोरी लालजी कौ हू काव्य खूब ढूँढौ खकोरो पर कहू ठौर ठिकानौ नाँय मिलौ। मित्रजी के मुख तेई कबहुँ-कबहुँ बिनकी रचना सुनवे कूँ मिल जावेई। भरत पुर की एक परम्परा रही कै एक बगीची बाय भक्ख (वायु भक्ष) पै हर इतवार कूँ कवि इकठौरै हैकै अपनी रचनान कौ पाठ करौ करेये। एक दूसरे की अनुपस्थिति मे सुनी सुनाई रचनान ने सुना देवेहे। सो मित्र जी अपने भैया की अनुपस्थिति मे बिनकी रस भरी रचनान कूँ सुनाओ करै हे। या प्रकार सौ अपने बडे भैया ते प्रेरित हैकैई इन्नै सबदे पहलै कविता करबौ सीखौ होयगौ। बाद मे दोऊ भैयान मे मतभेद है गयौ तौ किशोरी लालजी उज्जैन चले गये। कोऊ तीसैक साल रहकै लौटे। तब तकि मित्रजी ही बिनके काव्य कौ आनन्द हमे देत रहै।

'मित्र जी अग्रवाल वैश्य हते अपने विस्सै मे बिन्नै लिखौए–

छत्र हूट गयौ सीस सौ रही न कर कर बाल ।
मित्र तराजू हाथ मे, हम बनिया के बाल ।
अग्रसैन महाराज की, हम प्यारी सन्तान ।
अगरौ हयौ पुरखान कौ सुन्दर सुभ स्थान ।।

अपने गौत्र कौऊ बरनन कविता ही मे की हौ हतौ तथा अपनौ ऋषि गोत्रऊ बतायौ–

मैत्रेय रिषि कुल गुरू मित्र बखाने जॉय ।
टूटे फूटे बोल मे 'मीतल' गोत बतॉय ।।

बिनकी जनम तिथि क्वार बदी साते शनिवार सम्वत 1957 तथा अंगरेजी महीनान मे 15 सितम्बर 1900 ई हते जो स्वय बिन्नै कविता मे लिखौ है–

मित्र जनम उनईस सौ, सत्तावन सुखसार ।
क्वार बदी सातै नृपहि, मित्र सनीचर वार ।।

बिनके माता पिता कौ देहान्त बचपन मेई है गयौ । बडे भैया अरू भाभी ने पालन पोषण कीन्हौ । पीछै एक कन्या कूँ जनम दै कै इनकी भाभी कोऊ देहान्त है गयौ । किशोरी लाल जी ने अपनी पुत्री कलावती अरू गिरिराज प्रसाद छोटे भैया कूँ अपनी सुसराल जिला मथुरा म 'बाद' मे भेज दी हौ । सौ इनकौ बचपन म्हाँ ही बीतौ । या उथल–पुथल मे मित्र जी विधिवत पढ नाँय पाये बिन्नै अपनी शिक्षा के विषय मे लिखौए—

दो दर्जा मै पढ सक्यौ, गुरु अनेक बनाय ।
अर्बी उर्दू कायदा सीखौ मै मन लाय ।।

आपने कविता करबौ कैसे सीखौ या विषय मे लिखौए–

अति उछाह ही सौ कियौ, मै गुनियन कौ सग ।
सुनि सुनि रचना रस भरी, नूतन उठी तरग ।
दीक्षित गोकुल चन्द्र की, पदरज सीस चढ़ाय ।
टूटे फूटे शब्द कछु, जोरन लग्यौ सिहाय ।।

बड़े भैया की सुसराल 'बाद' ते लौट कै आप अपने ताऊ नत्थी लाल सतरण्डा जो हलवाई कौ काम करै है के पास रहवे लगे। हलवाई कौ काम की हो। ताऊ ने इनको ब्याह भरतपुर मई कुम्हेर दरवज्जे के पास रहबे बारी एक विधवा की पुत्री सौमोती ते सम्बत 1981 मे कर दीयौ। इनकी पत्नी सौमोती जीवन भर कठोर परि-श्रम करिकै गिरस्थी के पालन पाषण मे इनको साथ देती रही। तीन पुत्र और दो पुत्रीन कौ बडौ परिवार। मग उडे भैया अरू बिनकी पुत्री सबकौ साथ साथ रहिबौ और मित्र जी जा काम म हाथ डारते बू काम ही टोटो दे जातौ। या तरियाँ सौ आर्थिक तगी आ गई बडौ भैया नाराज है कै उज्जैन चलौ गयौ। मित्रजी ने अपनौ पुरखान कौ मकान अरु सुसराल कौ मकान वेचकै टोटो भरौ। अटल बन्द मडी मे अनाज की आढत की दुकान बद करनी परी। लछमन मदिर के नीचे नाज की खेरीज की खुदरा दुकान खोली पर वूऊ नाग चली। टाटो दैकै फिर किताब बेचबे कौ काम सिरू की हो। एक टीन के बकस मे किताब भरिकै मेले ठेलन म ले गये। नीचे धरती मे ई चद्दर बिछाय कै बेचबे लग जावैए। बहुत दिनान तक या तरिया से गिरहस्थी को पालन की हो। जब बिनको बडौ लडका समझदार है गयौ तौ बानै 'बतासे' बनायवौ सीख लीनौ अर धीरे-धीरे अपने छोटे भैयन कूँ सिखा दी हा। सो घरको ढर्रा ठीक तरिया ते चलवे लगौ। मित्र जी ने अब मेले ठेलेन मे घूमबौ बद कर दी हौ। रद्दी कू खरीद कै थला बनाय कै (कागज के) बेचकै अपनौ खर्चा निकार लवेए अरू अतिम समय तानूँ फिर याही काम म लगे रहे।

पुत्र कौ ब्याह अधी छोरी ते कर लीनो —

सामाजिक अरु घर गिरस्थी के कामन मेऊ बिनको फक्कडपने को सुभाव बदलौ नाहौ। अपने सबते बडे पुत्र कौ ब्याह एक अधी छोरी ते कर ली हौ। सा कैसै ? एक बनिया के, जोकि बडौ भारी गरीब हतौ, एक जनम की अधी छोरी भई। छौरी जब सयानी ब्याह लायक भई तो बाप ने एक दिना 'मित्र' जी ते अपनो दुख रोय दीनो। 'मित्र' जी तो भावुक कवी हतेई हे सो बाकूँ बचन दै दीनौ कै तेरी छोरी कौ ब्याह हम अपन बडे छोरा 'बाबू केई सग कर लिगे।' सो थोरे दिना पीछे ब्याह कर लीनौ अरु आज बू बहू और छोरा अहमदाबाद मे रहवै। ऐसेई छोटा छोरा अरु दोनो छोरीन को ब्याह ऊ गरीब घरन मे की हौ पर आज वे सब अच्छी हालत म हते।

'मित्र' जी सिरु तेई आय समाजी विचारन के हे। पूजा पाठ मदिर आदि मे जाबौ बिनके यहा निषेध हौ। आडम्बर ते जाई मारै हमसा दूरई रहे। वे लिखे है कि—

> गोरो भूरौ तन नही, चलूँ न चटक दिखाय।
> मित्र सिनेमा देखिबो, मन कूँ नाय सुहाय ॥

बे नियमित रूप ते इतवार कूँ आय समाज मंदिर मे जाओ करेए अरु यज्ञन मे भाग लैवेहे । जहा तक बिनकी पेस गई घर मे देवी देवतान की पूजा पाठ ब दई राखी । श्राद्ध करिबौ, टोना टोटका सेढ, चामढ पूजवौ आदि अन्ध विश्वास अरु ढोंग के काम बिनके सामने घर बारेन ने न मनाये चौंके बे जानें हे के 'कबीर' जी नाराज है जायिगे ।

छोटो होय या बडो सबते जी' कारे करिकैं बडे आदर सौ बोलो करेहे । कबहुँ छोटेन तेऊ 'तू तडाक' करिके बोलते ना सुन । या प्रकार सौ मानव मात्र के प्रति बिनके मन मे सम्मान कौ भाव हौ ।

कुल मिलाय कैं 'मित्र' जी एक सादा जीवन जीवैं वारे, सरल स्वभाव भावुक हृदय बारै, शिष्ट भाषी, सहज रहन सहन बारै कवि हते ।

प्रकासन कू रोमती-बिलखती रचना–

मित्र जी की रचनान को एक बस्ता श्री हिन्दी साहित्य समिति की तिजूरी मे धरौ है । याके अलावा कोऊ छपी पुस्तक नाय मिल । बिन्नैं एक किताब अपन पइसान तेऊ छपबाई है। उनमे धडे का धडाका' एक गद्य रचना है ।

जामे नम्बर लगाकैं जुआ खेलवे की बुराई करी गई है । वा समय समाज म एक बुराई कूँ दूर करिवे के काजै मित्रजी नै वा पुस्तक कूँ छपवाय कैं मूप रचौ । मित्र जी बिन दिनान मे मेले ठेलेन मे शहर कस्बान म किताब बेचब का काम करौ करै हे । वा पुस्तक के अलाबा और कोऊ पुस्तक छपी होय या बात का प्रमान नाय मिलै । बिनके पुत्रन ते जानकारी मिली कैं एक शभुनाथ गुप्ता नाम क व्यक्ति जो आज कल करौली महाविद्यालय मे व्याख्याता है, वे बिनकी रचनान को रजिस्टर बनाकैं छपवायबे कूँ लै गये पर बिन्नैंऊ आज तक बिनकी एकऊ रचना नाय छपवाई । श्री हिन्दी साहित्य समिति नेऊ भरौसौ दिबायौ कै जल्दी ते जल्दी बिनकी रचनान कूँ छपवाय दिगे पर 'चम्पा लाल मजुल' 'कुलशेखर' जी अर भौतेरे अग्यात कबीन की भाँति बिनकी रचनाऊ धूरि चाट रई है । बडे प्रयत्नन ते मन्त्री जी ते अलमारी खुलवाय कै पुरान बस्तान म ते खोज बीन के जो कछु मिल सकोए बू ही ढग त सजाय कै प्रस्तुत कर दिगा है ।

ब्रज भाषा मे नये भाव अरु शिल्प कौ प्रयोग–

मित्र जी के काव्य कौ अवलोकन करिबे ते एक बात कौ निहचै है जाय कैं बिननैं ब्रजभाषा कौ परम्परागत काव्य ई नाय लिखौ बरन् नये ते नये विषय अरु नये ते नये

सिल्प कौऊ प्रयोग कियौ। हालाकि बिन्नैं सबते अधिक दोहा लिखे और बिहारी की तरह दोहान मेई गागर मे सागर भरिबे की कला अपनाई पर बिननै कवित्त, सवैया गीत कुण्डली आदि सबई प्रचलित, छदन कौ प्रयोग अपनी रचनान मे कियौ। बे कबहु-कबहु बातन मे बताऔ करैऐ कै बिनकौ बिचार 'बिहारी' की नाई दोहन की "सतसई" बनायबे कौऊ है। पर बे ऐसौ नाय कर पाये। उनकौ दूसरौ विचार अकारादि क्रम सौ दोहान को सकलन करिवे कौऊ हतौ ताको एकाध रजिस्टरऊ बनबायौ पर बू आज कल 'शभू नाथ गुप्ता" के पास बतायौ। बिनके रद्दी कागजन मे ते छाट–छूँट कै जो कछु मिल सकौ बू ही ठीक ठाक ढग ते यहाँ प्रस्तुत कियौ गयौ है।

बदना प्रसग परम्परा-नवीनता अरू सरसता—

सरस्वती बदना, गणेश बदना, तथा औरऊ कैऊ प्रकार की बदना मिलै सो हम सबते पहले 'बदना' शीषक ते बिनकी रचनान कौ अवलोकन करिंगे। इन रचनान ते एक बात कौ पतौ चलि जाय कै मित्र जी देवी देवतान मे अन्ध-स्त्रद्धा नाय रखेए वरन उनकौ जो रूप समाज के काजै उपयोगी हो बा रूप की ही बदना करिवे की प्रेरणा दैवै हे। देखौ–

सरस्वती बदना–

मेरे हृदय मे आय आसन लगाकै मातु,
अपनी पताका को ऊँची फहराइ दै तू।

पन्ना, पुखराज, मणि, माणिक, गोमेद, हीरा,
मेरी पद रचना मे ढग सो सटा दै तू।

कीमत बढादे मात वाणी की सुवाकवाणी
बालक अपने की तुच्छ हटकौ निभा दै तू।

मुख सरसा दै वरसा दै रस आनद कौ,
देश कौ समाज कौ सु सेबक बना दै तू।

ललित बना दै टप कादे रस आनन्द कौ,
सुनबे बारै कू मन्त्र मुग्ध सौ बना दै तू।

मेरे शब्द की पुष्प बाटिका सजा कै रम्य,
भ्रमर भ्रमादै औ सुगन्धि सरसा दै तू।

जोति चमका दै अरू प्रतिभा जगा दै मातु,
वीणा पाणि वीणा के तार झन-झना दै तू ।
दास गिरिराज उर भाव उमगादै मजु,
जन के हिये की कली सुभग सजा दै तू ।

पहले छद मे वाणी की कोमल रत्नन ते आकी गईए और दूसरे मे पुष्पन ते और बाटिका ते बाणी कौ श्रृगार करिवे की बात कही है । मित्रजी नै गणेशजी की बदनाऊ परम्परा ते हटकै करीए—

गणेश बन्दना—

पूजन की चाह भरौ भाव औ भरौसो रहै
गिरिराज कष्टन अरिष्टन हरन है ।
सुर पूजैं, मुनि पूजैं, पूजैं बाल बद्ध जन,
मोदक अहारी मोद मन मे भरन हे ।
पूजै सुभ काजन मे सकल समाजन मे,
ज्ञान गुन खान चारू फल के फरन हे ।
देलन के देव ऋद्धि सिद्ध दैन हारै भार
गनन के राजा के अनूपम चरन है ।

मित्र जी अग्रवाल वैस्य हते पर परसुरामजी की बदना जा तरिया त करोए बाते बिनकी जाति, धरम की ओछी बातन ते उठकै समाज म समभावी कवि की सी छवि हमारे सामई उभर कै आवै ।

अपनी माटी को ओज—

मित्र जी भरतपुर के रहवैया हते । बिन्न अपनी जनम भूमि अरू बारे वीरन को नाम ऊँचौ करिबे कौऊ कविता लिखी हे । महाराजा सूरजमल जिननै भरतपुर कौ हर तरिया सौ नाम ऊँचौ की हौ हतौ । जयपुर राज्य म भए माधौसिह और ईश्वरसिह की गद्दी की लडाई मे ईश्वरसिह कू जितायवै बारे हत । मित्रजी न बाकौ सु दर वरनन की हो है—

दोहा

सूरज मल महाराज नै, किये बडे सग्राम ।
जिनकी कीरति आज लौ, गावत कवी तमाम ॥

कवित्त

सवाई ईश्वरसिंह जैपुर के महाराज
पत्र भिजवायौ बडी नम्रता के साथ है।
माधोसिंह के है सग दच्छिन कौ मल्हार राव,
दल बल भारी जग बल विख्यात है।
कीजिये सहाय गिरिराज ब्रजराज आय,
और न सहारौ दीन केवल अनाथ है।
नैया डूबती ही जाय वेगि ही सम्हारौ आय,
लाज को रखाऔ इलाज आप ही के हाथ है।

दोहा

पढि जैपुर की पत्रिका उर अति उठी उमग।
फडक उठे भुज द ड अरू, छायौ रण कौ रग।

कवित्त

देर नही कीनी, कीनी पल मे तैयार बडी
सगर कौ साज जानै सकल सजायौ है।
जैपुर मे जाय कीनौ मेल कौ प्रयास पर
विफल रह्यौ है कछु बस ना बसायौ है।
तब अडवीलौ ज्वान अड गयौ आन ही पै
रण खत कूदौ सिंह, सिंहनो कौ जायौ है।
पमर पठान मरहटटा औ बघेले भाजे
गिरिराज दच्छिनी हू पैर न जमायौ है।

जाॅत-पाॅत के विरोध मे मानवता की आराधना—

कविवर मित्र जी ने पुराने विसै लकँई कविता नाय रची वरन् नवीन अरू आधुनिक बिसैन पैऊ मौलिकता सौ कविता रची। अछूतन के प्रति बिनकौ भाव देखवे जोग है।

जोति चमका दै अरू प्रतिभा जगा दै मातु,
वीणा पाणि वीणा के तार झन-झना दै तू ।
दास गिरिराज उर भाव उमगादै मजु,
जन के हिये की कली सुभग सजा द तू ।

पहले छद मे वाणी की कोमल रत्नन ते आकी गईए और दूसरे मे पुष्पन ते और बाटिका ते बाणी को श्र गार करिवे की बात कही है । मित्रजी नै गणेशजी की बदनाऊ परम्परा ते हटकै करीए—

गणेश बन्दना–

पूजन की चाह भरौ भाव औ भरोसो रहै
गिरिराज कष्टन अरिष्टन हरन है ।
सुर पूजैं, मुनि पूजैं, पूजैं बाल वृद्ध जन,
मोदक अहारी मोद मन म भरन है ।
पूजैं सुभ काजन म सकल समाजन मे,
ज्ञान गुन खान चारू फल ए फरन है ।
दलन के देव ऋद्धि सिद्धि दैन हारे भार
गनन के राजा के अनूपम चरन है ।

मित्र जी अग्रवाल वस्य हते पर परसुरामजी की बदना जा तरियाँ त करीए बाते बिनकी जाति, धरम की ओछी बातन ते उठकै समाज म समभावी कवि की सी छवि हमारे सामई उभर कै आवै ।

अपनी माटी को ओज—

मित्र जी भरतपुर के रहवैया हते । बिन्नैं अपनी जनम भूमि अरू बाा वीरन को नाम ऊँचो करिबे कौऊ कविता लिखी है । महाराजा सूरजमल जिननैं भरतपुर को हर तरिया सौ नाम ऊँचो की हौ हतो । जयपुर राज्य म भए माधौसिह और ईश्वरसिंह की गद्दी की लडाई मे ईश्वरसिह कू जितायवे बारे हत । मित्रजी न बाको सु दर वरनन की हो है–

दोहा

सूरज मल महाराज नैं, किये बडे सग्राम ।
जिनकी कीरति आज लौ, गावत कवी तमाम ।।

कवित्त

सवाई ईश्वरसिंह जैपुर के महाराज
पत्र भिजवायौ बडी नम्रता के साथ है।
माधोसिंह के है सग दच्छिन कौ मल्हार राव,
दल बल भारी जग बल विख्यात है।
कीजिये सहाय गिरिराज ब्रजराज आय,
और न सहारौ दीन केवल अनाथ है।
नैया डूबती ही जाय वेगि ही सम्हारौ आय,
लाज को रखाऔ इलाज आप ही के हाथ है।

दोहा

पढि जैपुर की पत्रिका उर अति उठी उमग।
फडक उठे भुज द ड अरू, छायौ रण कौ रग।

कवित्त

देर नही कीनी, कीनी पल मे तैयार बडी
सगर कौ साज जानै सकल सजायौ है।
जैपुर मे जाय कीनौ मेल कौ प्रयास पर
निफल रह्यौ है कछु बस ना बसायौ है।
तब अडवीलौ ज्वान अड गयौ आन ही पै
रण सत कूदौ सिंह, सिंहनी कौ ज्यायौ है।
पमर पठान मरहटटा औ बघेले भाजे
गिरिराज दच्छिनी हू पैर न जमायौ है।

जाँत-पाँत के विरोध मे मानवता की आराधना–

कविवर मित्र जी ने पुराने विसै लैकै ई कविता नाय रची वरन् नवीन अरू आधुनिक बिसैन पैऊ मौलिकता सौ कविता रची। अछूतन के प्रति बिनकौ भाव देखवे जोग है।

दाऊजी दयालु भक्ति देख कैं दयालु भये
भोजन सजाय ग्रह भक्त के पधारे है।
जगन्नाथ हू के इन ही की प्रीति प्यारी
खुले रहे आठो याम इन को दुआरे है।
गगा मन चगा भयौ इन ही के प्रेम माहि
गिरिराज विपरीत भाव क्यो तिहारे है।
राखिये सहारे इन कीजिये न न्यारे नैकु
आरिन के तारे ये अछूत हू हमारे है।

दहेज विरोध का एक कवित्त देखिये—

पूण उपहास या हिरास हौनहार हा है।
अग्र जाति क्या ये रसातल को जाएगी।
अभिनय देखते हे दिन रात भाइयो मे
ऐसी अनरीति कब कौन कौ सुहाएगी।
बढ़ते दहेज जाते, भाते से भये हे सब
बुद्धि विपरीत विधी कहाँ ठहराएगी
गिरिराज स्वार्थियो की धष्टता रहेगी नाहि
खुद न रहेगे हा कहानी रह जाएगी।

सगार की मनोहर छटा–

मित्र जी ने अनेकन विषय लैके कविता निखी श्रृगार मे, **रूप वरनन मे ऊ बन्नै कोर** कसर नॉय छोडी प्रथम मिलन नखसिख वरनन, दम्पति प्रेम यानी श्रृगार **ौ हर अग** बिनके द्वारा अपने काव्य मे वणित कियौ गयौ है वानगी देखिये–

एक ही सुघड नारि आई हाट बाट माँहि
सुखमा बनाय स्वच्छ अपने बदन की
नैनन की सनन मे मत्र मोहिनी है मनो
कहा लो बडाई करो चचलता पन की
गिरिराज ताहि देख मन मे सराहे धीर
बदना करहि बडी विधि के कारन की।

बैठे कर नीची नारि हरिजन चुप्पी साधी
परन निगाह लागी तापै हर जन की ।

रूप वरनन कौ दूसरौ रूप देखिये–

रूपे ते उजारी फूल वारी सी मयक मुखी,
आई ही इतै ही जानै कितमे बिलै गई ।
आज लौ न देखी, देखी जैसी वह सुन्दरी ही,
जाकौ रूप देखि रति-रम्भा हू लजै गई ।
गिरिराज पल छिन कल न परै है मोय,
मेरे हिय माहि तौ कटारी सी चुभै गई ।
जानूँ हूँ न कौन ही कहा की बो रहन बारी,
आई आग लैन कौ सु दूनी आग दै गई ।

हास्य व्यग की करारी मार–

हास्य व्यग मे तो मित्र जी कौ मुकाबलौ नाय । साची बात तो जि है कै मित्र जी मूल रूप सौ हास्य व्यग के कवि हे । बिनके करारे व्यग की चौट हँसते हँसते भीतर तानूँ पहौचै है । सुनबैया कू सजन की प्रेरना अरू चेतना दे हे । इनकौ व्यग देखौ––

होरी कौ उत्पात लखि पजरत है मम गात,
जेठ ससुर हू कहत हे तू भाभी कित जात ।
तू भाभी कित जात बात सुनजा इक मेरी ।
छोटो तेरौ कत भरै नही तबियत तेरी ।
कह गिरिराज प्रवीन नाहि यामे कछु चोरी ।
है फागुन कौ मास खेल जा हम सग होरी ।।

मित्र जी बैसे तो अपने आपकूँ दरजा दो तक पढौ भयौ बताऔ करे है पर काव्य के सबई रूपन कौ बिनै ग्यान हतौ । छन्द हीन कविता सुनिकै बिनके जो बिचार बने बे बिनने बडी व्यग्यात्मक शैली मे लिखे है—

एक दिन हम तुम साहित के प्रेमी दोनो
साहित सुधारै और हित की बिचारिंगे ।

मात्रिक औ गण भेद भेद वण कामी त्यागि
गिरिराज आधुनिक भाव उर धारिगें।
ललित पियारी काव्य अति ही अनूठी करैं
दोप जो निवासैं बे तो मूढ झर मारिगे।
शब्द अथ मिलि जसे छ द बनता है शुद्ध
त्योंही स्वच्छ द छ द बाटिका बगारिगे।

नया पैसा चलौ तौ बाकी मूल्यहीनता को नकै एक सु दर व्यग बिननैं रच डारो। एक कुण्डली देखौ—

पैसा लेकर के नया, घूमा सभी बजार,
दूध दही की कहा चलैं मिलौ न मित्र अचार।
मिलौ न मित्र अचार, बहुत मन मे झुँझलायौ
कौडी की दर नाय हाय पैसा कहलायौ।
इससे ता गिरिराज जमाना आवै ऐसा
जिसकी कीमत होय वही कहलाव पैसा।

हिन्दी कू समर्पित विशिष्टता के कवि—

कवि मित्र जी कौ जोवन विविधतान ते भरौ हतौ। पतग उडते देख बिनकौ मन पतग बनि जावेऔ। सो लिखि डारी कविता पतगन पैऊ। देखो छ द—

मन मानी सब तान तोडते नभ मे उडते
जिनके रग अनेक पतग देखे हम जडते।
तिनगे झिप्पा खाय पतग इक नीचे आयौ,
पै वायू बल पाय बहुरि ऊपर कौ धायौ।
बरनत कवि गिरिराज काट दई कारी पीरी,
अध कट्टा रह गयौ भाज गये सिगरे भीरी।

ऐसी अद्भूत प्रतिभा के धनी कवि मित्र जी हिन्दी के हू पूरी तरिया ते हिमायती हते। पर कितने सुन्दर और उदार ढग सौ हि दी कौ पक्ष लीनौ देखिवे जोग है हिन्दी के लिए आन्दोलनऊ करिबे बारेन कूँ बडाई देते भये कह रहे है—

अमर तिहारी कीर्ति अमर रहेगी सदा,
हित हिंदी के ठान तुमन जु ठानी है ।

गोलिया स लाठियो से पीछे ना धरैंगो पग,
गिरिराज बानी परै तुमको निभानी है ।

सग के महायक भी साहसी है धैयवान
करामात गैरौ की जिनको मिटानी है ।

प्रातीय भाषा सब प्राती रहैगी अरु,
विजय प्राप्त कर बनै हिंदी महारानी है ।

आदर्स अरु यथार्थ मे लिपटे दोहा-काव्य—

हमने ऊपर देखौ कै कवि मित्र जी ने विविध छदन मे अनेक बिसै लैके अनेक रसन मे कविता लिखी । याके अलावा बिनकी रचनान कौ भौन बडौ भाग दोहान के रूप मे सकलित है । अकारादि क्रम सौ लिखे हजारन दोहा अनेकन विषयन कूँ, काव्य के अनेकन अग प्रत्यगन कूँ समेटे भये कवि की कीर्ति-पताका कू फहराय रहे है । दोहान की हू थोडीसी बानगी अकारादि क्रम सौ हम यहा देखिगे । सुभाष चन्द बोस की बीरता कौ बरनन देखा

अपन कीनो देश पै, बोप काष तन धाम ।
भारत पूत सपूत तू तेरे अनुपम काम ।।

अरि अरि अरि मुख तोरिये भरि भरि भरि हुकार ।
करि करि करि करतब घने, धरि धरि मारहु मार ।।

इन राखौ अखियान मे, प्रेम पसार पसार ।
कह अछून इनके बदन, हनो न मित्र कटार ।।

ईख समुझि मन मैमना, कहा रह्यौ मिमियाय ।
बास भेरियन कौ निकट सब मालुम परि जाय ।।

उछरि उछरि के मेढुका, बने फिरै बलवान ।
सोये परे भुजग लखि, रहे बखेर गुमान ।

उन्नति हिन्दी की करैं, कहै हमे बहकाय ।
अगरेजी अनिवाय है, कैसौ सुगम उपाय ।।

नये फैशन के प्रति एक हास्य को भाव देखे—

ऊ ची ऐढी तै सदा, बनी रहत है शान ।
तनौ रहे तन तीर सौ, कमर न होय कमान ।।

बिहारी जैसी बहुज्ञता को एक उदाहरण देखो—

कपरा कुटतै मे लखौ, कपरा करी पुकार ।
मित्र न मैलौ हूजियै, नातरू परि है मार ।।

भरतपुर की भूमि और रहवयान की विशेषता देखो—

करूओ जल खारी विसौ, बर बीरन की खान ।
भारत मे गढ भरतपुर, जाकी ऊ ची शान ।।

अलकार का अनायास, सहज प्रयोग देखो—

खोई मे खोई भट्ट, खोई पाई नाहि ।
सोई सो खोजन फिरौ, खाई सी जग माहि ।।

अछूतन के प्रति बिनकी चि ता को एक रूप और ऊ देखवे जोग है ।

गौ पारत शुचि भाव सौ पूजै देव सपूत ।
कटहि मरहि जो धम पै, कहौ न तिनहि अछूत ।।
गोरी भूरि गुन भरी, बोली मीठ' सिहाय ।
अति असाध्य को साध्य कर, जीवन दऊ बनाय ।।

कविवर मित्रजी मे धरती अरू प्रकृति कौ प्रेम अटूट हो देखो—

घीकु वार के कुसुम की छबि छबि सौ अधिकाय ।
जनु नटवा चढि बाँस पै कला रह्यौ दिखराय ।।

प्रिय के प्रति समरपन की एक बानगी देखो—

चूरी बाही रग की, मै पहरू हरषाय ।
जा रग मे पिय रग रहे, सो रग मोय सुहाय ।।

श्रृंगार कौ एक रूप प्रयोग दखिवे जोग है—

छाती प थाती धरी, कारीगर हुसियार।
लै न सकें कोऊ लूट कै, लगै रहौ लगवार।।

ब्रजभाषा के अनेक गुनन म ते मित्र जी ने जो ढूँढे छिन्न देखौ—

जित मोरौ मुर जात उत लचकदार रसदार।
सब्द, सब्द धुनि ताल मे ब्रजभाषा छबिदार।।

अलकार कौ प्रयोग देखौ –

झगरत मे झगरौ मिलै, झगरत झगरत जाय।
झगरत ही झापट परै, झट झगरौ झर जाय।।

टागी किलप सुहावनी, काढी सुन्दर माग।
तनी पुरानी सभ्यता, भलौ बनायौ स्वाँग।।

ठाडी मोहित कर रही अग प्रत्यग उघारि।
बाजारू रीझै भल गुनी करहि नहि प्यार।।

डडा के बल रीछ अब, तोड रह्यौ है तान।
जो पर बस पर जात है तिनकी रहत न शान।।

ढग ते चल तजि ढोग ढप ढके पलक तू खोल।
ढकौ धरौ है भीतरै, मती बजावै ढोल।।

तू सुभास मसार मे, जन्यौ सिहनी मात।
पाहन हू पानी भये मानव कौन बिसात।।

भरतपुर से जुरौ एक ऐतिहासिक प्रसग देखौ—

दच्छिन लायौ लूट कै औरग शाह सुजान।
गधै खार मे लूट सा लूटी जट्टन आन।।

धम ध्वजा धन धाम प, कर अपनौ अधिकार।
धक्कम धक्का ते बनी, धीगन की सरकार।।

नारी करै न नौकरी, नौकर की दर जाय।
जो नौकर बन कै रहै, तौ पतिव्रत नसि जाय।

पीपर, पाकर, सेववर, जामुन, आम, अनार।
छाढि ढाक सेमर चढयौ मित्र, न कियौ विचार।।

एक ऐतिहासिक प्रसग—

फायर करवे कौ उठे बाके बीर जबान।
मुसी श्रद्धानन्द नैं, दीनी छाती तान।।

विषसम बढती जा रही विपय विदेशी बान।
बदल जाऊ बदलाब दै जो चाहौ कल्यान।।

भूषन, भूपन लहत है, भूपन भूपन सात।
भूषन घर की बात है, भूपन घर की बात।।

ब्रजभाषा कौ प्रससा मे एक दोहा और हू देखौ—

मधुर मनमोहन मन भरी सुधरी सुखद महान।
अगरी मगरी रसभरी, ब्रजभापा गुन खान।।

हजारन दोहान मे ते थोरे से यहा दोन है। अभाव अरू गरीबी के सत्रास कू जीवन भर ढोबे बारे कवि गिरिराज ने जीवन भर जहर पीय के समाज कूँ अपने काव्य को इमरत प्रदान कीनौ है। सिगरे जीवन थैलिया बनाय क पेट पालन कीनौ। दर्जा दो तानूँ पढे। परि कविता के छेत्र मे बिनको सानी ढूढबौ भौतई दुस्कर है। आगैं समय पै इनकूँ छपवायबे कौ प्रयत्न करौ जा रहौ है। भविष्य बतावैगौ कै कहा होयगो।

—रामबाबू शुक्ल

लाल कौर

या तरिया सो मनई मन डरपतै सहमत आगे बढते जा रहे। सहर दो कोस रह गयो होगो इतेक मे जाने का भयो के धरमी ने साईकिल मे किच्चाय के बिरेक लगाये। देखा देखी मैने हू गाडी रोकी। धरमी टक्कटी बाध एक पेड माऊँ हूँक रह्यो। मेरी हू टगोरी बँध गई। हलचल देख मेरोऊ हाल खराब है गयो। पसीना छूट परे, होठ सूख गये। कँठते चीख निकसते-निकसते रह गई। डर के मारे झिझकतो सो, खुसुर पुसुर करके धरमी बोलो—

'कछु समझ मे आई। इतेक रात गये या अँधेरे बियावान जगल मे कौन है सके।'' बाह पकरि मेरे पास आकै बोलो।

एक झटका सो लगो। आखऊ खुल सी गई। धरमी के चेहरा पै उभर, आये भय के भाव पढे। हिम्मत बटोर के कही—

'लाला। कछु चक्कर तो हत। पर है कौन? कौऊ भूत बलाय तो नाँय? पतो न लगे।'' डर के मारें हालत खराब है गई सहमतो सो आगें बोलो—

'टोका-टाकी ते कछु फादा नाय। चुपचाप निकस चलो।' चलती जमातै डण्डौत करिवो ठीक नाय होय। जाने कहा बलाय गरे परि जाय। तोय मालुम तो हतै ई कै हमे जल्दी ते जल्दी सहर पौहचनो है। इन खामखा की बातन मे उरझबो ठीक नाय। मैं एकहू मिनट म्हाँ रुकबो नाय चाह रहो। पर धरमी को मन बहाते टरबे कूँ नाय कर रह्यो। जाने कहा दीख रहो बाये सो म्हा टिकबे कू खुसामद सी करके बोलो—

'भैयाजी! सहर तो पौहचनो है सबेरे तक पौहच जामिगे। पर या अनहोनीए देख कैई चलिगे। इतेक रात गये या जगल मे अकेली वैयरबानी सी कौन है सके याए नैक देखतै तौ 'चलें' कहते कहते धरमी मचल सो गयो।

मैं बडे अचभे मे पड गयो कै जो धरमी नेक देर पहलें इत-उत की बतरा कै करे भगामतो आय रहो। या अकेली बैयर सी कूँ देग इतेक जोस मे आ गयो है। या बिचारेए कहा पतौ कै जी कौन है ? कोऊ भूत बलाय होय कै कोऊ बिगरी बैयर होय अरु काहू ददुआ के सग भाग आई होय, या तू दुबक कै कहू बैठा होय। मोकौ देख कै टूट परौ तो झाम बना देगो। कै कह काऊए मार-मूर कै भाग आई होय और पुलिस-फुलिस मे फँसा देय। सो मो धरमी कू समझाते भा कही।

'लाला ! आज कल बखत खराब चल रह्यो है। काहू कौ भरोसो नाय। सो चुपचाप यहा ते खिसक चलौ। या ही मे सार है।'

धरमी पै मेरी बातन को रिजमा भर असर नाय परौ। 'सौ दई और लुक्क पैई लई' बारी कहाबत घट रही। सो मचलतो सो बोलो—

'भैयाजी मरबो जीबो तो भगवान के हाथ होय। पर या अनोखी बाते देख कँऊ बिना देखे चले जाय तो हमते जादा अभागो अरु कौन होगो। चाहे कछु है जाय मै तो या कौ निरनै करकेई चलूगो।' बडी जिद्द सी करकै बोलो।

सुन कै भीतरई भीतर मै भभक उठौ। जी पट्ठा कछु समझई नाय रहो। हमारो सबते पहलो काम जल्दी ते जल्दी घर पौहच बाल बच्चान कू ढाढस बँधायबे को है। पर याकू तमासो सूझ रहो है। सो झूझरायकै मैने बाकी साईकिल को हैंडिल पकरौ, अरु जबरई ते घसीटलो सो आगे कूँ चल दीनो। डाटत भये कही—

'यार धरमी ! घर मे मैया की माटी परी है अरु तू या अनहोनी है देखबें कू मचलै। नेकऊ कछु हे गयो तो दुनिया कौ मौहडो पकरिबो कठिन ह जायगा। सो जल्दी घर पौहच कें घरैयान कू तसल्ली देओ। ऐसी बैसी बातन मे बगत खराब करिबो ठीक नाँय।

मेरी डाँट कौ धरमी पै असर सौ प ौ। मैया मरे कौ याद ताजा है गई सो मौहडो लटक आयो। सुट्ट लगाय, चुपचाप पडल मारतो, साईकिल भगाबे लगा।

अब ते दो घण्टा पहले मै याही रास्ता ते निकस कुम्हेर गयौ। धरमी कुम्हेर मे बिजली बिभाग मे नौकर है। बैसे मेरो परौसी है। साँझ कू बाकै घर म रोबाराट सुन पौहचो तो बाकौ ल्होरो भैया मोते लिपट धाड मार कै रोबे लगो। पतो चला बाकी मैया मरि गई है। हरिया घर मे अकेलो है। बडे भैया बिना हिम्मत कौन बँधावेगो।

पर बडे भैया धरमी कू खबर कैसे होय। बिचारे की दुबिधा देख रात मेई धरमी कू खबर देकै सग लिबाय कै लावे चल दीनो। घर ते निकसबे मे दस बज गये सो धीरे धीरे चलकै अँधेरी रात मे कुम्हेर पौहचो। बैसे जी रास्ता मेरो अच्छी तरिया ते देखो भारो हतो। पिछले बारह बरस ते या रस्ताए खूद रहो हू। गाम उहरा मे स्कूल मे मास्टरी कर रहो हू। हाँ इतेक गहरी अरु अँधेरी रात मे आज तक ना निकसो। सो भीतर ते डर की झुरझुरी सी लगी रही। मैया मरिबे की खबर सुन धरमी डगमगाय गयो। एक दम गस खाय कै गिर परौ। मेरे दम दिलासा देबे ते होस मे आय कै, तुरतै सहर चलिबे की ठान लई। सो रात बारह बजे चलिकै एक डेढ बजे बाई ठौर पै पौहचे हुगे। जा ठौर पै वू बैयर हमे मिली और जाय देख कै धरमी एक दम बिरेक लगाय कै खडो रह गयो।

हमे देख बू बैयर बानी पेडन की ओट मे दुबकबै की कोसिस कर रही हती। धरमी बाकै देखबे की जिद कर रहो। पर मेरे घसीटबे ते वहा ते चल तो दीनौं पर बेर बेर पीछे कू मुड मुड के जरुर देख लेओ।

अगले मोड पै पौहँच जसेई धरमी ने पीछे मुड कै देखो कै बो सडक पै आकै जल्दी जल्दी हमारी साईकिलन माऊ उडती सी चली आय रही। एक छोटे से पुल पै पेड की घमाघस्य नाय हती। सो उजीतें मे मैने देखो कै वू अच्छी भली बैयर बानी है। जादा लम्बी तो नाय, पर गुट्टी हू नाय हती। चाल ते पतो चलो कै बू कोऊ नई उमर की है। जल्दी जल्दी चलिकै, बू हमारी सायकिलन माऊ बढती चली आ रही हती।

बयर की चाल और फुर्ती देख मन मे फिर ससै है गयो कै जी जरूर कोऊ मुसीबत है। दो दो मरदन कू देख कैऊ इतकू निधरक चली आय रही है तो जरूर कोऊ भूत बलाय है सके। मेरी सिट्टी पिट्टी गुम है गई मेरी चुप्पीए देख धरमी को मन उगमगाओ, सो बोलो—

भैया! जी का बलाय है। इतेक हिम्मत करकें जी अकेली, दन्नाती चली आ रही है। याकौ साचो पतो लगानो होय तो इतकू झाडीन मे दुबक लेओ। जो कहुँ काऊ मुसीबत की मारी होय और हम याकी कछु मदद कर सकें तो कर दिगे। पर पहलें ताय छान कर लै।'

धरमी की बात मे कछु दम सी दीखी। सो झाडीन मे उतर कै बैठ गये। थोडी देर पीछे बू अकेली इत-उत ढूकती चाक-चौकन्न चली जाय रही। आगे-पीछे कहूँ कोऊ

नाय दीखो अब हमारी उथल पुथल बढी कछु भरामो सो है बै लगौ कै जी कोऊ विपदा की मारी है ? पर मदद कैसे करै। याकू भरोसो कैसे दिवामे। हम चुप चाप खुसर-पुसर कर रहे। नेक देर पीछै सडक पै आय गये। धीरे धीरे पदन चले। पर साइकिलन की खड खड तो होय। पर हमने देखो कै बाने पीछे मुड कै नाय देगा। बडे भरोसे ते कदम जमा जमा कै चलती जा रही। देख कै हमारी हालत और हु खराब है गई। धरमी की हालत इतेक खराब है गई। डरपतो मौ मेरे माऊ दूकौ।

मरद बैयर माऊँ जबई तक लपकै जब तक वू लिहाज करै झिझकै, कै डरपे जब तनकै खडी है जाय, आखन मे आख डार कै बिना सहमे ह्व कै तो अच्छे अच्छे सिट्टी पिट्टी भूल जाय।

हम दौनो अपन मन मे कछु या तरिया ते सोचते जा रहे हते कै यातै कैसे बोले, का पूछे कछु मुसीबत न आ जाय। इतक मेई हम कहा देखे कै वू तौ मुडकै खडी है गई। दोऊ हाथ अपनी कमर पै ला कै बोली —

'तुम दो जन औ अरु मरद बच्चा हो अरु मोय इक्ली समझ कछु ऊँची-नीची मत सोच लीजौ। मै ऐसी बैसी बैयर नाऊँ या आधी रात मे घर ते कछु सोच समझ कै काहू बिरते पै निकसी ऊँ। ना तो मोय मरिवे को डर है अरु ना कछु सरम लिहाज सो मोय छेडवे की बातऊ मत सोचियो। चुप चाप अपन रस्ता चले जाओ। नाय तौ पछतानौ परेगो।' एक ई सास मे बा कू या तरिया सो बोलते देख हमारी सिट्टी पिट्टी भूल गई।। डरपतो सौ मै बोलो—

'पर ! हमऊँ चलते फिरतै कोऊ लफगा नाय घर के आसूदा है। मे तो सरकारी इस्कूल मे मास्टरऊ। ई धरमी मेरो परौसी है। याकी मैया मरि गई सो खबर देबै रात मेई आनो परो। ना तौ हम ऊची नीची सोचे ना छेडा खानी की। हम तौ खुदई बडे मुसीबत मे है। हा मन मै जी जरुर सोची कै कौऊ दुखिया होय अरु हम कछु सहारौ दै सकै तो दे। या मारे रुके है। अब जो तू नाय चाहबे तौ चले जाविगे।' इतनी कह मै आगे बढवे लगो।

बैयर जी तो समझ गई कै ये बिचारे मुसीबत के मारे है पर फिरऊ मरदुआ है कहा भरोसो ? सो बाई तरिया ते बोली—

भैया ! तुम मुसीबत के मारै ओ या मारै ई मै तिहारो रस्ता खोटो ना करनौ चाहूँ। सो तुम अपनी निबेटो। मेरी तो राम रखवारौ है। घर छोडो तो मरबे जीबे

की चिता नाय। जो कछु होगो देखो जायगो। तुम अपनो काम करौ।' इतनी वेबाकी ते बत्ता तोर जबाब दीनौ कै हम दखते ही रह गये। पर धरमी पै नाय रह्यो गयो नयो खून हो सो जोस खायकै बोलो —

'बहिना। बिपदा तौ हम पैऊ कम नाय पर या अँधेरी रात अरु बियाबान जगल मे या यरियाँ ते उाट कै जाब कू मन नाय मानै। हमऊ तौ आदमी है। हमारैऊ मैया भैन है। उन्नै मुसीबत मे नाय छोड सकै तौ तोय छोड कै कसे चलै जाय। सो तू हमारी चिता छो॰ बता तोय कहा पौहचामै।' धरमी ने बडे भरासे ते कही पर बापै कोऊ असर नाय परौ। वू तौ एक दम मुडकै सडक पै चल दीनी हम दोनो ठाडे देखते रह गये। मैंन मन म सोची कै कोऊ बैयर काहू आदमी पै इतेक जल्दी बिस्वास कैसे कर सकै। पर अब करैं कहा? मन तौ या दुखियारी कू अकेलो छोडबो नाय चाहबे अरु या कू हमारौ बिम्बास नाय होय। कछु सोच कैं हमऊ धीरे धीरे बाके पीछे चल दीनै। मन जोर ते बोलकै इतेक जरूर कह दीनौ कै—

'लाली तू चिता मत कीजौ हम धीरे धीरे तेरे पीछे चल रयै है। तू हम पै भरौसो नाय करै अरु हम तोय इकली नाय छोड सकै तो ओरुऊ रस्ताऊ कहा है सकै? सो निधरक है कै आगे आगे चली चल कछु आफत आवेगी तो हम हतै। डरियो मत' मेरे इतेक कहतेई वू रुकी पीछे मुडी अरु बोली—

भैया ओ! मैं तौ खुदई मुसीबत की मारी ऊँ। या मारै तुमेऊ मुसीबत मे ना देखबौ चाहूँ। नई तौ या जगल मे इतेक रात गये कोऊ सहारौ देबै तौ कोऊ मना नाय कर सकै। अब तुम बुरौ मान रहे ओ तो मै तिहारे सग चली चलूगी।' इतनी कह कै वू बैंठबे कू तैयार है गई। धरमी ने इसारौ कीनौ तो बाई की साइकिल पै बैठ गई। हम तेजी ते पडल मारते चल दीनै। रस्ता मे एकाध टिरक जीप मिलै बौ सडक ते नीचै खेतन मे दुबक गये। अरु हम सहर कै पास रेल की चौकी प पौहच गये। चौकी ते पहले-ई हमने सलाह मिला कै पटरी कै सहारे-सहारे इस्टेशन पौहच या बिचारीए आगरे बारी रेल गाडी म बैठारबे की सोची। सो चौकी ते मुड कै चल दीनै। एक चौकीदार खर्राटे मार कै सोय रह्यो हतो। अरु कोऊ हत नाओ धीरे-धीरे टौरी केकड बचामते जा रहे।

लाल कौर आगरे के पास काहू गाम की रहवै बारी ई। मैया बाप तीन भैया अच्छो भलौ परिवार। खातो पीतो घर। ब्याह मे खूब दान दायजो दीनौ। पर बाकै सुसरालियान कौ मौह सूधो नांय भयो। नेक नेक करकें कैऊ बेर रुपैया ऐंठ लीनै पर

लाल कौर कू कछु ना कछ बहाने ते दुख देनेई रहबै ये। मैया-बाप बड़े दुखी है गये। कैऊ बेर बापऊ आकै समझाय गयौ पर इनको रवैया नाय बदलौ। महीना पन्द्रह दिना तौ ठीक रख है। पर फिर काहू ना काहू बहाने ते तग करिबे लग जाय है। इकली बैयर कहा कर सकैई ?

'कौने ? जहाँ हो बई खड़े रहौ। हिलियो मत। कड़कदार अबाज ने हमारे पायन तरे की माटी निकार दई। पेट म पानी है गयौ। जो कहा मुसीबत आ गई ? कोढ मे खाज फैल गई। पर हम कहा कर सकै हे सौ चुपचाप ठाडे रह गये। पास आकै टारच की रोसनी मौहडे प मार एक जनौ बोला—

'इतेक रात म कहा जा रहे आ ? जी बैयर कौन कहाँ ते भगा लाये हो ? कहा जा रहे ओ ? साची साची बता दीजौ नई तौ जेल की हवा खवा दुंगो।'

मेरे काटो तौ खून नई। बाकी कड़कदार आबाजए सुनकै मेरी थर थरी सी बँध गई कहा कहू। कहा जबाब दऊ समझ म नई आव। मैं सोच-विचार कर इ रह्यौ कै लाल कौर लपक कै बोली—

''नेक जबान सभार कै बोलिया। तेरे यहाँ भैया अपनी भैनन कू भगाकै ले जात हु गे जी ऐसे बसे नाय। काऊ की मैया मर जाय तौ सुनकै बाय नीं आ सके ? तोय आ जायगी। लबर लबर बतरा भलइ तीजौ। खुद पै आवै परै जब पतौ चल।' इतनी कडक अबाज मे लालकौर बाली कै पूछबे बार की बोलती बंद है गई। अपनौ सौ मौहडो लै एक तरफ हट गये। हम आगै चल दीनै। कपड़ा लत्तान तै लगौ कै बे रेल की चौकीन के चौकीदार है। अपनी ड्यूटी पै जाय रहे है। रात पौहचे पीछे ई पहले चौकीदार छुट्टी करिगे। रात मे दो तीन आदमीन कै पैसार सुन डरप गयै। फिर अपनी नौकरी कौ होस आते ई रौब मार कै कडक अबाज म बोलबे लगै। घर मे कुत्ताऊ सेर है जाय बारी कहावत है रही। बे रेल के नौकर अर हम मामूली से आदमी। पीछे हिम्मत करकै बेऊ आगे बढि गये अरु हमऊँ मनई मन एक दूजे ते डर-पते से चल दीनै। नेक आगे बढि गये तौ जान म जान आई। जब जब लाल कौर पै जो बीती बू याद आ जावेई तौ मन मे या समाज के बाजै घिन है जावे ए।

या बिचारी बैयर जात ने कहा बिगारौ है कै हर तरियाँ कौ अन्याव झेलनौ परै। पीहर मैऊँ छोरा पै लाड जादा होय छोरी पै थौरो। छोरा कू दूध छोरी कू छाछ। बढिया बढिया खायबौ पीबौ पहिनबो औढबो छोरान कू, बासी कूगो फटौ

टूटौ छोरी कू । बन्नी है जाय तो सात फेरा डार चाहे जाकू सौप दे। या मारै ई छोरान के भाव बढि गये है। मनमानौ दहेज लैकेऊ पेट नाय भरे।

लाल कौर कू हर तरिया के कष्ट मिलबे लगे खायबे पहिरबे मेऊ कमी आबे लगी। गारी गरौच मार-पीट हैबे लगी। चरित्तर पैऊ कीचड उछटो। कलक लगे। अब काहू तरिया ते मारबे की सोच रहे हतै। पतो चलिगो सो रात मे ई जान बचा के भाग आई। अरु हमे मिल गई।

लाल कौर की कहानी इकली कहानी नाँय रोजई ऐसी घटि रई हैं। पर इलाज कछु नाय। सोचते सोचते। रोगटा खडे है गये। कछु या तरिया तै लालकौर ने अपनौ दुख सुनायो। दुख मिटायबे की सौचते रहे। सो इस्टेसन पै पौहच गये।

भरतपुर को इस्टेसन जादा बडो तो नाय पर फिरऊ छोटी बडी दोऊ लाईन हती। चार पाच पलेटफारम हैं। रात की गाडी दो बजे तक चली जाय सौ पूरौ इस्टेसन खाली है जाय। आगरे की गाडी सवेरे आवै। सबेरौ हैबे मे दो घटा की देर ई। सो आखिरी पलेटफारम पै सूने मे बैठबे की सोची। रस्ता मे पटरी पै एक मालगाडी ठाडी। बाय घूम पलेटफारम पै पौहचे। पीछे देखो तो लाल कौर नई दीखी। सोचौ आ रही होगी। कहुँ पीछे रह गई है। पर थोडी देर बाट देखी बू नई आई। धरमी बोलौ कछु दार मे कारौ है। नाय तो अब तक आ जाती। कहुँ कोऊ बदमास तो पीछे ना लग रह्यौ जो उठाके लै गयो होय। पहलेई विपदा की मारीए काऊ और आफत मे पड जाय। बैयर की जात कू कदम-कदम पै खतरा होय। सो मैनै धरमी भेजो। ढूँढ खखोर कर कहुँ आस पासई मिल जायेगी।

धरमी उतकू गयो। हारौ थकौ मेने बेच पै पीठ टिकाई कै झपकी सी लग गई। साइकिल पै पाव धर रखे। सो काऊ ने पावन ते हाथ लगायो। भडभडाय के खडो है गयो। बू बिचारौ डरप गयो। गिडगिडाय कै बोलो—

'भैया! रिस मत है जईयो मुस्बित कौ मारौ तुमते कछु पूछबौ चाहबेओ।' बडी नेमाई ते बोलो। मैने बैच पै बैठ लम्बी सास छोडी। आज सब मुसीबतन के मारे मोइते टकरायिगे। मनई मन सोच सभर कै बोलो—

'हा हा! तूऊ अपनी मुसीबते बता। आज को दिनाई कछु ऐसो हैं जो मिलै सो ऐसोई।' दम दिलासा देतो मैं बोलो—

हाफनी रोक कछु भरोसो मान कै बोलो–

'भैया जी ! रात मे मेरी घरवारी भाग गई है। सबरो गाम बाकू ढूढबे निकरो है। गाम की नाक कट गईए सो सब रात भर डोलने डोलते बा रेल की चौकी तक आ गये। चौकीदार ने कही कै दो साइकिल बारे अरु एक बैयर इस्टेसन माँऊ गये है। रस्ता मे उनै मिलै बताए। आपनै देगे होय तो बताओ कितकू गयै हे।' आगे-पीछे इत बितकू घबराओ सो देखतो मोते बात कर रहो हतो।

अब मेरी घबराहट बढिबे लगी कहू या बखत धरमी हातो ता जी सक मे हमे पकरवा देतो। अच्छा भयो जो बू ह्याते चलो गयो पर लौट के आबै तब तक मोय दो काम करिने हे पहला जी पतो लगानो कै जी लालकौर की घरबारी ई है अरु दूसरो याकै सग कितेक आदमी है। कहूँ पुलिस तो नाय। सो मैन भूल भुलैया दे कै पूछो–

घरबारो कैसे भाग आई। कछु लडाई झगरो है गयो का ? कौन सो गामे। भैया तू तो कह रहो कै सगरौ गाम ढूढ रहो है पर तू ता अकेलो ई है।' मैने एक सग इतेक प्रसन कर दीनै कै बू अक्क-बक्क भूल गयो। बडे सभर कै बोलो–

'गाम तो मेरो रमचन्दी कौ नगरा है। घर म कहन सुननऊ है जाय पर घरै छोड कै ऐसे कोऊ ना भागै पर बू तो चाहर बाटी है न आगरे माँऊ की सो नेक बात पै ठस्सा दिखायकै चल दई है।। गाम बारे सीधे थाने पै चले गये है दो तीन जने मेरे सग है सो एसेई पलेटफारम पै ढूढ रये है। तुमने कहू देखी होय तो बता देओ।' मोपै भरोसो करकै बाने सब बात बता दीनी। अब मेरी हालत और ऊ ज्यादा खराब लाल कौर कहूँ पीछे रह गई और याके सगकेन के हाथ पड गई होगी तो भौत बुरो होयगो। बैसे अपने जाने ता या कू जल्दी टरकाओ। सो मे बोलो–

'भैया। एक लैहगा फरिया बारी बैयर दो साईकिल बारेन के सग दीखी तो हती पर बे तौ अबई नेक देर पहले या मथुरा बारी पटरी के सहारे आगै कू बढ गये। तुम आगरे माऊ की कह रयेओ बे मथुरा माँऊ गये पुल तक मैने अपनी आँखन ते देगे। कै तो बू काऊ मथुरा माऊ कैन के सग भाग आई है। कै बे तौ कू धोको देबे कू पहले मथुरा जामे फिर आगरे जाय। सो तू लपक कै मथुरा बारी पटरी के सहारे सहारे चलो जा।'

मेरी बात को बापै सीधो असर परौ। बा ने सग केन कु अबाज दई और मथुरा माऊ भागे। अब मै लपको। कहुँ धरमी और लालकौर इतकु ई नई आ रहे होंय

और इन दुस्टन की निगाह परि जाय । धरमी और लाल कौर या जगह नाय हुत तो अच्छोई भयो । नई तो अबई पकरै जाते । बू बिचारी तो जाने कितेक जुलम सहती बा कै सग हमारीऊ खूब मरम्मत होती । मैने लम्बी सास छाडी जसे कोउ बाझ उतर गयो होय । पर आफत अबई मूड पैई मडराबेई । मोय अब धरमी और लालकौर की चिन्ता है बै लगी । सबरो पलेटफारम ढू ढ लीनौ पर दोउन मे त एक उ ना मिलौ । रात को बखत काउ ते पूछबे काउ नाय । जाने कौन कहा समझ ले ।

मेरे मन मे एक पछताबो और है बे लगौ कै हम इस्टेसन काहै कु आ गये । रेल की पुलिस के हाथ पड गये ता बैसेई मारे जामिगे । उथल पुथल सी है बे लगी । पसीना आ गये । अब मै जल्दी जल्दी इधर उधर भागबे लगा । चप्पा चप्पा छान मारौ पर जाने कहा बिलाप गये । धरती निगल गई कै बादर पी गये कहाँ गये । हैरान है कै मै एक लग अधेरे से मे बठ गयो ।

भुक भुको सौ है गयो । पर बे दोऊ नाय दीखे । मैने साईकिल उठाई इस्टेसन ते बाहर आयो इत उत कू ढू ढो कहु बाहर ही आ गये होय । पर बे कहु नाय मिलै । बाहर चाय की होटल खुल गई एक जान पहचान की दुकान प साइकिल टिका फेर पैदल पलेटफारम पै घूमौ । पर ब दोऊ नाय मिले । आगरे बारी गाडी आ गई मै इत उत भाग भाग कै देख रहो । कहु लाल कौर गाडी मे चढती मिल जाय । मन मै आई कहू धरमी की नीयत ता खराब नाय है गई जो बाय लैकै भाग गयौ होय । फिर सोची बाल बच्चा बारौ है । मैया मरी परी है ऐसो ना कर सकै । पूरी गाडी देख लई पर लाल कौर मिली ना धरमी ।

गाडी चली गई । पलेटफारम फिर सूनौ है गयो । घूम-घूम कै एक दफे और देखो पर कोऊ ना मिलौ । मैने सोची के बे काऊ पुलिस बारे के हाथ पड गये सो पकडे गये । थाने मे बैठे हु गे पर थाने मे जाकै पूछबो खतरा ते खाली नाय । कहा करु । कछु समझ म ना आ रही । इस्टेसन ते बाहर आकै साईकिल उठाई । थाने के सामने ते दो दफे निकसो । पर अबई तो पुलिस बारै सोकै ई ना उठे । भीतर तक सौवासो पड रह्यो । अब कहा जाऊ । सोच सोच कै चल दीनौ । घर चल क देखू कहु धरमी घर तो नाय पहु च गयो । लालकौर ने घरवारौ देख लीनौ होय । धरमी के मिलते ई बू बस अडडे पै चली गई होय । बहा तै धरमी सीधो घर पौंहच गयो होय । सोचतो सोचतो घर पोहचौ । मोय देख रोवाराट जादा है बै लगौ । इत उत देखौ तो धरमी कहु नाय । बे बिचारे बाहर कू देखे के मेरे सग होयगौ । जब नई दीखौ तो मोते पूछी । मेरी हालत

खराब। कहा जवाब दऊ। झूठ बौली कछु इ तजाम करबे गयो है आतो होयगो। धीरज बधाय कै बाहर आयो, साईकिल उठाई बस अडडे ढूढे। भरतपुर में तीन जगह बस अडडे है सब जगै देखो कहुँ कोऊ ना मिलो। नौ बज गये कहु गाम बारेन के हाथ नई परि गये होय उनके सग पुलिस हती सो कुम्हेर थाने पकरि कै ते गई होय। अब फिर कुम्हेर जाऊ। रात भर जगो। साईकिल चलाई। हैरान है गयो सो हिम्मत नाय परी पर कछु तो करनोई है।

आगरे माऊ की चुगी चौकी तक जा कै और देखू ऐसे सोच चल दीनो। बहाऊ कोऊ नाय मिलो। नेक आगै बढ कै एक लग पसार कर बे बठो। लौट कै आयो। साईकिल कै पैडल प पाम धर खडो सोच रहो कै आगरे माऊ ते घरमी आतो दीखो। हाफनी भर रही पसीना मे नहा रहो। मोय देख फीकी सी सी हँस क उतर परो। बोतो—

'भैयाजी! लालकौर ने घर बारो देख लीना हतो। माय देख रावे लगी बाली गाडी ते नई कोऊ बस मे बेठार देऔ तो प्रान बच। मन बू सा किल पै बठारा बम अड्डे मौऊ चल दीनो। आप त कहबै को बखत नाओ। जू दुस्ट तिहारे पास खडो देख लीनो सो लालकौर ने समझ लई कै अब पकरै जावेगे। मा चपचाप इस्टेसन त बाहर चलबे लगी। मे सग-सग बाहर आयो। साईकिल पै बेठार चल दानो। पहनी बस सबेर सात बजे जायगी सुन कै हबा खिसक गई दिन है तेई ब बस अड्डे पऊ आ जायगे तो फिर कहा करिगे। बू बोली—

'भैया! आगरे बारी सडक कौनसी मोय बता देओ। अबई दो घटा रातै। घनेऊ दूर निकस जाऊगी। फिर आगे जो कछु होगो देखी जायगी। तुम घर जाओ मैया को किरिया करम करो।'

मैंने बू साईकिल पै बैठारी फतहपुर सीकरी बारी सडक पै चल दीनो। सोचतो जाय रहो कै कहा करू एक लग मैया को किरिया करम और एक लग या जीमती अबला की रच्छा। निस्च कीयो कै मैया को किरिया करम दो घटा पीछेऊ है जायगो। पर जी काऊ झझठ मे फस गई तो जीमतेऊ मर जायगी। सो सूधो बाकै गाम लै पौहचो गाम कै गौडे मे छोड चलो आयो।' धरमी ने अब तक जो कछु घटी सब बता दीनो। मोय बडी तसल्ली भयी लाल कौर घर पौहच गई। मन को बोझ उतर गयो। मैन बैसेई पूछी गाम मे सग चलबे की जिद तो करी होयगी।

'भैया जी ! बस आगे मत पूछौ। गाम के मौडे मे उतर बौली मेरे मैया बाप तोय देख कै बडे खुशी हुँगे। पर तैरी मैया की माटी बिगर रई होगी सो तिहारो घर पौहच-बौऊ जरूरी है सो भैया घर जाऔ। इतेत कहकै बाकौ गरौ भर आयौ आखन क आसू रोक गाम माऊ भागी। मैऊ दो छिन खडो रहकै चल दीनौ।' मैने देखौ कै धरमी की आखन मैंऊ पानी भर आयौ है। जा कामै मे करबे की सोच रहो धरमी कर आयौ। मेरे मन में धरमी कौ बडौ सम्मान बढ गयो। लालकौर मेरी आखन के सामने घूमबे लगी। कितेक द्रिढताई बाकै चेहरा पै सौचकै मौहते अनायास निकस गई "बाहरी लालकौर।'

—राम बाबू शुक्ल

होलीकेश्वर महादेव के पास

खेरापति मोहल्ला, भरतपर

छद औं सुछद भावबोध कौ कवि राम बाबू शुक्ल

आज के ब्रजभाषा-कवि राम बाबू शुक्ल कू मैं बौहत पास सौ जानूँ, बिन सौ मेरी जान-पिछान भाषा बोली, कामकाज, बिचार अरु आदमियत सगरे स्तरन की ए। मोसौ बिनकी ब्रजकविता पै अपने बिचार रखिबे की बात कही गई ए। दरअसल, पहलै मै अपन भीतर या बात ए साफ करनौ चाहू कै जब खडी बोली हिंदी मे आज खूब अच्छे ऊँचे स्तर की कविता अरु गद्य साहित्य लिख्यौ जा रह्यौ है तौ ब्रज म कविता और गद्य साहित्य रचिबे सू कहा निकसगौ। ब्रज भी बीत गई हमारे रहा रह्यौ, पूरौ मध्यकालीन साहित्य ब्रजभाषा अरु अवधी हि ी म इ तौ लिख्यौ भयौए फिर आज ऐसी कहा जरूरत आ परी कै एक छूटे भए रस्ता प हम फिर चलिबे की सोच ? इ सवाल मेरे मन माहि बार बार आवै अरु याकौ हल भी मेरौ मन य। तरिया करै कै जब काऊ समाज क भीतर सिच्छा अरु असिच्छा की खाई बौहत चौ जावै तौ सिच्छित वग अपनी बोली भाषाए बी बदल कै अपनौ एक अलग ही बग बनाइ ल अरु वा बग के किले माहि कैद ह्वै कै समाज के बाकी बगन सौ अलग थलग पर जाय। हम देख रये है कि हमारे देश कौ सबसौ ऊचो बग अंग्रेजी भाषा कू इ अपनी भाषा मानै या बग कौ सगी साथी बीच कौ बगऊ अपनी पीढीन कू अँग्रेजी पढ़ाइ कै ऊँची छलाग लगाइबे के काम मै लग्यौ भयौ ए, इ बग खडी बाली हिंदी अरु अंग्रेजी दोनू भाषान की दुविधा मे ना माया मिली ना राम कू बो चरितार्थ कर। इनकै अलावा एक तीसरौ बौहत बडौ किसानन कौ, मजूरन कौ, स्कूल मास्टरन को, छोटे व्योपारीन कौ, किलरक बाबू चपरासीन कौ ऐसौ वग ए, जो आजऊ अपनी भाषा बाली कौ इ व्यौहार करै। जा बरग कौ अपनो जीवन ब्यौहार ए अपनी सस्कृति ए, या बरग की सस्कृति म ऊ र अरु बीच के बरगन की सस्कृति सौ फरकऊ है। आज खडी बोली हिन्दी म लिखिबे बारे ज्यादातर साहित्यकार सहरन कै बासी है गए है अरु बिनकौ समाज के निचले बरग के जीवन सौ बौहत कम सम्पक रह गयौ है। पुरान रचनाकारन म तौ ई सम्पक बचौ भयौ है। यई सम्पक की बज ते नागार्जुन की हिन्दी कविता मऊ बिनकी मैथिली कौ सस्कार साफ-साफ दिखाई परै त्रिलोचन की कविता म अवधी कौ सरकार है केदार नाथ अग्रवाल की कविता म बुदेलखण्डी कौ सस्कार है अरु विजेन्द्र की कविता म ब्रजभाषा कौ सस्कार है। या सस्कार ते इनकी खडी बोली म लिखी गई हिन्दी कविताऊ अलग सौ पिछानी

जाय । पर आजकल के रचनाकारन मे इ सस्कार बौहत कम रह गयौ है। जैसे जैसे बर-गन के बीच की खाइ चौरती चली जा रही है, बैसे बैसे भाषा-बोली की दूरी बी बढती चली जा रई है । सस्कृति के छेत्र मे ई आज कौ बौहत बडौ सकट आ परयौ ए क जीवन मे लगाव की जगह, अलगाव आ रह्यौ ए । आज के निचले बरग की सस्कृति की रचना बिनकी बोली-भासान मे ई ह्वै सकै । यई जरूरत है आज ब्रज, अवधी, बुदेली आदि जनभासान मे रचना करबे की ।

पर हम या बात ए बी समझ ले क अब ब्रजभासा मे पुरानी बातन कू दुहरावे की जरूरत नाय । कृष्ण राधा के माध्यम सौ जो भाव सूर, रसखान, रहीम आदि बडे कवि प्रगट करि चुके है, यदि आजऊ हम बिनकू ई दुहरामिगे तौ ब्रजभाषा कौ भलौ करिबे की बजाय नुकसान ई ज्यादा करिगे । जरूरत आज ब्रजभासा साहित्य के माध्यम सौ वा जीवन की सचाई कू सामनौ लाबे की ए, जानै इन्सानियत कू बचा रख्यौ है । वा भावबोध कू बचा रख्यौ ए, जो जीवन मे लगाव कौ बिस्तार करै ।

रामबाबू शुक्ल की कबिता या दिशा कौ सकेत करती दिखाई परै । बिनकी कविता मे हमारे गामन की प्रकृति कौ जो सरूप दिखाई परै, वाकी बज ब्रजभासा की जमीन सौ उनकौ निकट कौ नातौ ए । तबी तौ बे पीरी पीरी सरसौ के बारे मे या तरिया सौ लिख सके एँ—

पीरी सरसो
भयी सुनहरी
लाज-सरम ते
झुकि झुकि जावै ।
दाने भरी फरी
पक पक कै
झोटा लै लै
नाच नचावै ।

सरसो किसानन की रानी ए । पर वाकौ सुभाव समद्धि माहि ऐठबे-अकडबे कौ नाय हो कै लाज सरम ते झुकिबे कौ सुझाव होय । यई हमारे लोक कौ सुभाव ए । जीवन मे उत्साह कौ उदाहरणऊ है हमारी सरसो । हमारी किसानी सौं बरसात कौ बौहत पास कौ सम्बध रह्यौ ए पर प्रकृति मे बी हमै कई बिरियाँ असतुलन दिखाई परै, 'कबी तौ घी घना, कबी मुट्ठी चना अरु कबी ऊ बी मना' कौ सौ हमारी प्रकृति कौ सुभाव बन गयौ है । जा सुभाव पै शुक्ल जी नै खूब डट कै लिख्यौ ए । जैसे—

बरसे तो
मनमाने बरसें
कर दे पनियाढार।
रूठ जाये तौ सूखा मारै
जैसे परै पीठ पै मार ।।

याके उल्टे दूसरे छोर पै सूखा, ई सूखा अकाल ई अकाल। पिछले कँई सालन सौं हमारौ ई अनुभव चलि रह्यौ ए कै बरसात बौहत कम होय। अब मघा झकोर झकोर कै ना बरसैं। हर बरस कहूँ न कहूँ सूखा की सभावना बनी रहै। या अनुभव कौ चित्रण शुक्ल जी नै च्यारूँ मेर ते करयौ ए। एक तौ कमर तोड मँहगाइ नै गरीबन कौ जीनौ हराम कर राख्यौ है, ऊपर सौ बजमारौ बदराऊ आख दिखावै। है ना कोढ मे खाज की बात। एक गीत माहि शुक्ल जी नै या तरिया लिख्यौ ए—

खेतनि मे खन्नाटौ मारै
सूखे फसल झुकै झमकारै,
नैक हरियावै अरहर की डार।
लौट आवै जौ बरखा बहार ।।
द्वारै खडी रँभावे गैया
प्यासी मरि रइ ताल तलैया
पूज आऊँ मै पोखर की पार ।।
लौट आवै जो बरखा बहार ।।

सूखा के समै पछुआ बयार बी बाबरी सी डोलती दिखाइ परै अरु धरती सौ बदरा के प्यार कौ पतौ पूछै—

धूर के गगूट उठै आसमान घेरि कै
बतरामे खेतनि सौ मेड-मेड टेरि कै
छिपी कहा निरमोही सावनी फुहार ।।

यइ क्रम मे बिनकौ इन्दर कू पाती' नाम कौ एक प्रसिद्ध गीत ए, जाय बे मौकौ परतेइ सुनाइबे ते ना चूकैं—

ठौर ठौर दरक गयी धरती की छाती।
कोऊ तौ लिखि भेजौ इन्दर कू पाती ।।

रामबाबू शुक्ल नै ब्रजभाषा मे परम्परा कौ निर्बाहऊ रूढिन की सीमा तक जाकै करयौ है पर बिनकी कविता कौ इतनौ इ पक्ष नाय अगर बिनकी कविता पुरानी चेतना बारे कवित्त सवैयान तक उ बँधी रहती, तौ बे ब्रजसाहित्य मे कछू बी नयौ ना जोर रये होते । बिननै गीतन मे नइ नइ कल्पना करी एँ, रात कू मा बनाइकै बाकी गोदी म चन्दा की किलकारी सुनवाई हे अरु तारेन कौ ऊधम मचवायौ है—

रजनी की गोदी मे चदा किलकारे ।
किल किल किलकारी सुन घिर आये तारे ।।
नीलमणि अगना मे ठुमक–ठुमक डोले ।
बतरावै गार करै तुतराकै बोले ।।
तुनक तुनक झगरे तौ मैया पुचकारे ।

इन कवितान मे रामबाबू जो कौ सबसौ जोरदार पक्ष बिनकी नयी सैली–मुक्त छद मे लिखी भई कवितान कौ है जिनमै बिननै आज के सवाल उठाए है । मै पहलैऊ या बातए कह चुक्यौ हू कै हमारे हिन्दी अचर माहि आजऊ उत्पादन कौ मूल साधन खेती बारी कौ सम्बध बरसात सौ ह । बरसात की कमी को मतलब ए, हमारे अचल के जीवन की रामकहानी म हर फेर ह्वै जामनौ । सारौ उत्साह ठण्डो परि जामनौ । जा स्थिति कौ चित्रण शुक्ल जी नै अपनी मुक्त छद मे लिखी भई 'पावस छियासी' नाम की लम्बी कविता मे करयौ ए । भरतपुर कै पास बारे इलाके की एक महत्त्वपूण बरसाती नदी है बान गगा, जाय ह्या के निवासी बानाऊ कहै । कई सालन सौ बरसा की कमी तै बानगगा कौ उफननौ इतरानौ बद ह्वै गयौ ए या कारन यापै निभर जीव जगत कौ सुभाव ई बदल-सो गयौ ए । सन गुनीस सौ छियासी मे कवि कू जो अनुभव भयौ, बू बिननै बौहत जोरदार ढग सौ व्यक्त करयौ है—

बान गगा
ना तौ उफनी
ना झगियायी
न कगार काट कूट कै
घानी सी करी अबकै ।

ई बदलाव ना जानै कितेक बदलाव एक सग करि गयौ है । या बजै ते आदमी कौ सिगरौ उझाह उमग उत्साह सीरौ परतौ चलौ गयौ ए । जब आदमी कू खाबे पीबे अरु रोटी-लत्तान कौ ई इन्तजाम ना होयगौ तौ बू राग-रग की बात कहाँ ते करैगौ—

और बेर
नन्ही नन्ही बुंदियान ते हुलसाय
ढोलक पै गवैं ई आल्हा
फरक उठै ई ज्वानन की भुजा
कछु करि गुजरबे कू।

बरसात की कमी कौ सबसौं ज्यादा असर गरीबन की झौंपडीन पै परै, बिनके ढोर-डगरन पै परै, चिरा-चूकलान प परै। अबकै रमच दी बारे बड के पेड कै नीचै हर साल जुरबे बारौ दगलऊ नाय जुरौ। और कहा बदलाब भयौ ए, वाय रामबाबू जी के सब्दन मे ई सुनौ—

हरे हरे कचियल पीपर पातन कू
चपर चपर
चपियाऔ करै ई
छेरी
गुम्मन गूजर की
पर खडौ है उदास
बिचारौ बचे खुचे
खोजन नै सवारतौ
या पार पै
अबकै।

रामबाबू जी छद अरु सुछद दानू परम्परान क कवि है। पर बिनकौ सुछद भावई आगै चलैगौ तौ।ई बात बनैगी। पुरानी बातन कू दुहराबे कौ मतलब तौ औठ झोटई बटोरनौ ए। सवैया कवित्त, कुण्डली दोहा सब छन्दन पै हाथ अजमानौ तौ ठीक ए, पर ई जरूर सतोल लनौ चहिए कै जो बात कही जा रई ए, बू हम ञ्हा लै जा रई ए। रामबाबू जी पै सतोलबे बारी अटकल मौजून है, याकौ मोय पूरौ भरोसौ है।

—डॉ जीवन सिह
मुक्तिबोध, 1/14 अरावली विहार,
अलवर

'जन-जन की पीडा कूँ बानी दैबे बारौ साहित्य ही आदर्श साहित्य होय'

श्री [illegible] शुक्ल सौ साक्षात्कार

☐ आपने काव्य रचना कैसे आरम्भ करी ? प्रेरणा कहा ते मिली ?

श्री हिन्दी साहित्य समिति घर ते नजीकै । सो अखबार पढिबे किताब पढिबे जायबे कौ औसर लि जातौ । कबहुँ कबहुँ अच्छे कविन केउ दरसन है जाते । बिनकी रचनन कूँ सुनिकें मन माहि हुलास परा हे जातौ हमतौ अपनी रचना लिखि कै कवि बनिगे । कवि सम्मेलन रस दरबार, कवि चम्पालाल जी मजुल कवि गिर्राज प्रसाद मित्र सौ निकट कौ परिच, इन सब बातन ते लिखिबे को प्रेरना मिली । गीत कवित्त आदि लिखेऊ । परिवा समे जि भ्रम सौ नाजो कि हम कवि बनि गये है सो पहली रचना इत बित कूँ खोय गई ।

☐ कवि सम्मेलन म जायबे को शौक कैसै लग्यौ ? पहल पहल कैसौ अनुभव भयौ ?

श्री हिन्दी साहित्य समिति मे कवि सम्मेलन मे कवित्त सुनायबौ सिरू करयौ । सबते पहलै मुक्त छन्द को कविता सुनाई । परिवे श्रोतान कूँ कम पसन्द आई । सग के कवि गाय कै सुनायते सो हमनेउ गीत लिखे अरु गजलऊ लिखी । सुनाई लोगन कूँ बडी अच्छी लगी, सो सुनायबे लगि गये । परि कवि सम्मेलन कौ स्तर भौत ही गिर गयौ । हास्य की अरु चुटुकलान की पूछ भौत होय कै अच्छे गवया अपनी हलकी फुलकी रचनायें गाय कै कवि बनि जाय । अच्छे कविन कूँ कोऊ नाय पूछै । न्यो कवि सम्मेलनन मे जायवे कौ मन नाय कर ।

☐ आपने साहित्य प्रकाशन की ओर ध्यान क्यों नाय दियौ ?

साहित्य कौ प्रकासन अपने हाथ की बात नाय । पत्र पत्रिकान के सम्पादक अरु पुस्तकन के प्रकाशक बिना जान पहँचान और सिफारिस के कछु नाय छापे । मेरे मन मे एक औरउ बात उठेई कै इतेक लिख्यौ जाय रह्यौ, इतेक छपि रह्यौ परि दुनियाँ पै

कछु असर नाय परि रह्यौ, अपने बाई तर्फ पै चलि रही है। सिनमा आकासवानी दूरदशन और कैसिटन ते इतेक गीत गाये जा रहे परि कोउ प्रभाव नाय दीखै। जनता की रुचि कछु मरि सी गइय। सा रचितान कौ उ कछ असर नाय होय। ऐसो लग, क लो ऐसा लिख्यो जाय ज्याते पैसा मिल य। फिर लि ो ब द करि दियो जाय। या कारन प्रकासन की रुचि नाय जगी।

☐ याकौ कारन हम साहित्य की प्रभाव हीनताउ कौ मान सक ?

साहित्य तौ सबई तरह कौ प्रकासित है रह्यौय।

☐ आपनें खडी बोली अर ब्रजभाषा दाउन म साहित्य रचना करी, कहा अ तर अनुभव भयौ ?

ब्रजभाषा मधुर भाषायै, परि बोलिबे म जा रा जान ा ायै साहित्य रचना करिबे मे बनाबट सी मालूम होय।

☐ ज्या भाषाय हम चौबीसो घण्टा घर म बोल त बने बा ा अपन ा ा लगै ?

खडी बोली ब्रजभाषा तेई विकसित भईए अरु आज लिखिबे पढिबे की मुख्य भाषायै, सो खडी बोली म रचना करिबौ अच्छौ लगै पार कहू ा र्ं च उठ तौ ब्रजभाषा लिखी जाय। जबते ब्रजभाषा अकादमी बनी अरु ब्रजभाषा की रचना मागिबे लगेएँ तबतेई ब्रजभाषा रचना जादा लिखी । वैसे बो ा र ा ा की दृ टि ते खडी बोली को ब्रजभाषा ते जादा प्रभाव बटि गयौय।

☐ आपकी प्यारी विधा कौनसी है अरु क्यों ?

कविता कहानी, निब ध सब कछू लिख्यौय। क वि ा लि ि ा म ा ा आन द आव परि अखबारन म कालम लिखिबे म जादा सा ा ा ा। एक साप्ताहिक म दा बरस लगे एक कालम लिख्यौ– चलौ गाव की ओ ा। ा ा र ा ा रस' के सम्पादक सिरी हरभान सिंह बैसला की प्रेरना त ि ि ा ि ा। कहानी विधा ने लिख्यौ जि कालम पाठकन कूँ इतेक पस द आयो कै सम्पा महाशय ने लगानार दो बरस तक धारावाहिक रूप ते छाप्यौ। म समझ आज सबते जादा सफल विधा, कहानी विधा म अखबारन म कालम लिखिबौ मान्यौ जानो चइयै।

☐ इन विधान माहि ब्रजभाषा कौ कसौ सरूप होनो चइयै ?

ब्रजभाषा आज एक बोली बनिगइये । पहलै तौ ई साहित्य की प्रमुख भाषा हुती । परि अब गद्य लिखिबे म पूरी तरह समर्थ नाय हौ, और भाषान के शब्दन समेत याकौ एक मानक सरूप बनाय के विकास कियौ जाय तौ फिरते जि भाषा साहित्य की भाषा बान सकै । ारी थोरी दूर पै भाषा म अन्तर आय जाय सो याकौ मानक सरूप तौ बनानौई परैगो ।

☐ आपके विचार म निधारार ब्रजभाषा कौ मानक सरूप कहा हुनो चइय ?

काउ भाषा कौ मानक रूप अलग-थलग विद्वान ने अलग-अलग नाय होय । एकइ रहना चइयै नहीं तौ पाठकन म भ्रम फैले ते भाषा की विश्वसनीयता खतम है जात ब्रजभाषा न सहज रूप ते प्रयुक्त अन्य भाषान के शब्द याका छिमता बढायवे मे सहायक है सकै ।

☐ ब्रजभाषा काव्य रचना की पारस्परिक शली पै आपके विचार ?

भक्ति काल अरु रीति काल म काव्य रचना की प्रमुख भाषा के स्थान प ब्रजभाषा विराजी रही । लगभग पान सौ बरस तक ब्रजभाषा मे इतेक रचना लिखी गई कै बू युग हिन्दी साहित्य कौ स्वर्णयुग कहलावै । वा पारम्परिक शैली मे आज कछू लिखिबौ पुरानी रचनान की नकल सी लगैगी । या कारन पुरानी शैली की जगह अब ब्रजभाषा मे हू नयी शली की रचना होनी चइयै । ब्रजभाषा अकादमी या कामे कछु करि सकै ।

☐ ब्रजभाषा माहि साहित्य सिरजन की गति के बारे मे आपके विचार ?

ब्रजभाषा साहित्य कौ सिरजन ब्रज क्षेत्र मे ही है जामे भरतपुर, मथुरा क्षेत्र विशेष रूप ते ब्रजक्षेत्र मान जाय । वैसे ब्रजभाषा के पाठक अरु श्रोता कम है रहेयें या कारन ब्रजभाषा साहित्य कौ सिरजन कम है रह्यौय । और भाषान म सरकारी जतनन के अलावा सामान्य जन की पत्रिकान के प्रकाशन के कारन बिन भाषान कौ विकास तेजी ते है रह्यौ । परि ब्रजभाषा मे अकेली अकादमी की पत्रिका के अलावा अभिव्यक्ति कौ और कोउ साधन नाय सोया भाषा मे साहित्य सिरजन की सुतन्त्र प्रेरना मिलबौ कठिन लग । याहीते याकी गति मन्द सी परि रहीय ।

☐ ब्रजभाषा साहित्य के पारम्परिक विषयन के बारे म आपके का विचारै ?

साहित्य समय विशेष कौ प्रतिबिम्ब होय । सो सामयिक विषयन पै लिख्यौ गयौ साहित्य ही पढ्यौ सुन्यौ अरु सराह्यौ जाय । पारम्परिक साहित्य तौ इतेक लिख्यौ गयौ है कै पढि पढिकैं नाक तक अघाय गयेयै । राधाकृष्ण, गोपी ग्वाल, ब्रज की कुञ्ज,

करील, जमुना, गिरिराज आदि विषयन प अब कहा नयौ लिख्यौ जाय सकै। फिर ब्रज मे हूतौ आदमी रहे जिनकी अपनी समस्याउ हते। भूख, गरीबी, शोषण बेरोजगारी महँगाई आज भारत भर की समस्याय सा इन विषयन पै लिखी रचनाई ब्रजभाषा कौ सम्मानित साहित्य बन सकै।

☐ ब्रजभाषा माहि अतुकान्त कविता के सम्बन्ध म आपके कहा विचार है ?

अतुकान्त कविता अरु छन्द बद्ध कवितान म अलगाव की रेखा खेचिबौ ठीक नाय। या, छन्द मे मात्रा और गणपूर्ति कौ बन्धन होय जबकि मुक्त छन्द म आसानी सौं लिख्यौ जाय सकै। मैने ब्रजभाषा म सवैया कवित्त, कुण्डलिया आदि लिखे है। मुक्त छन्द मे ब्रजभाषा म गीत लिखे है। अतुकान्त कवितान म कछू छोटी छोटी रचना लिखी है। मैने अनुभव कियौ है कै छन्दबारी कवितान त मुक्त छन्द की कविता सहज मे लिखी जाय सकै और भाव प्रबल ह म पर नाय पन ौ प्रबलता के ताई सबते बढिया शली अतुकान्त कवितान की ही कही जायगी।

☐ फिर अतुकान्त कवितान म लाग रुचि कम क्यो है ?

ई सुनवे बार लोगन के स्तर के कारनै। जिनै तौ हसी मजाक गायबौ अच्छौ लग।

☐ ब्रजभाषा गद्य कौ कहा भविष्य ह्वै सकै ?

ब्रजभाषा मे गद्य लिखिबौ बनावटी सौ लग। क्योंकि ब्रजभाषातई निर्मित भई खडी बोली ने याकी जगह लैलईय सो अब पाछे लौटिबो कठिन काम।

☐ कविता मे अबतक भौत स आन्दोलन आय। आप जिनते कहाँ तक प्रभावित भये ?

काव्य के क्षेत्र कौ काऊ आन्दोलन रचनाकार कू प्रभावित नाय करै तौ बू साहित्य कार कहलायवे कौ अधिकारी नाय म नो जागगो। क्योंकि काव्य तौ आन्दोलन युग की माग होय। मेरी खन्नी वाली और ब्रजभाषा वानू तरह की रचनान म हर आन्दोलन कौ प्रभाव देख्यौ जाय सकै।

☐ अपनी साहित्य मडली म आप किन साहित्यकारन को नाम लैना चाहौ जिनते आपकू प्रेरना मिली ?

या समै हमारी साहित्य मण्डली म धारा कर ', प्रण चतुर्वेदी ब्रजेश चतुर्वेदी, राजाराम भादू, अशोक सक्सैना, नरेन्द्र शर्मा, रामप्रसाद मधुरेश, हेमन्त भरतपुरी, मूल

च द नादान और हरीश भादानी, नागाजु न, ब्रजे द्र कौशिक, त्रिलोचन शास्त्री आदि प्रमुख है। इनमे हरीश भादानी ते गीत गजल, नागाजु न ते सहज भाव, और त्रिलोचन शास्त्री ते सरल भाषा को पभाव ग्रहन करयौय।

☐ आपन काउ कू काव्य-रचना की विशेषरूप ते ब्रजभाषा माहि लिखबे की प्रेरना दई।

आजकल या प्रकार की गुरु शिष्य परम्परा नाय रही। काउ ने अनजाने मे प्रेरना लै लई होय तौ मोय पतौ नाय।

☐ आप अपने काव्यै कौनसी धारा ते जुरयौ मानो ?

काव्य मे एक ही धारा होय। जन जन की भावना अभिव्यक्ति की धारा। क्योकि काव्य मे एक ही रस है— करुण रस'। या रस कौ ससार सामान्य जन के दुख-दरद ते जुरयौ भयौय। या प्रकार सो जो कवि सामान्य जन कौ दुख- दरद लिखै सो श्रेष्ठ कवि होय और काव्य की यही एक धारा मानी जानी चइयै।

☐ आपके जनवादी विचारन कौ श्रोतान पै कहा प्रभाव भयौय ? कोउ उपलब्धि ?

जनवादी विचार को सीधौ साचौ अर्थ जन जन की पीडा तो जुडाव होय। सो श्रोता जब अपनी और अपने गरीब भैयान की बात सुने तौ बडे सुखी होय। मेरी कविता की जे ही सबते बडी उपलब्धि है। हा मेरी कविता दफ्तर दफ्तर डोल रह्यौ भोला पउयौ इमेने म बहौ पसद करी। या ही तरह ते मेरी फुट पाथो पर' कविताहू बडी रुचि ते सुनी।

☐ आकाशवानी अरु दूरदशन ते आपकी कोऊ रचना प्रसारित भई ?

मथुरा आकाशवानी ते ब्रजभाषा और खडी बोली दोउ तरह की रचना सुनायबे कौ अनेक बार औसर मिल्यौ है। कबहु काव्य गोष्ठीन मे और कबहु अकेने काव्य पाठ करे हे ?

☐ आपके विचार ते आपकी सबते अच्छी रचना कौनसी है ?

हर रचनाकार कू अपनी हर रचना सु दर लगै परि एक ही बतानी परै तौ ब्रजभाषा 'पानग छियामी' जामे बान गगा नदी कौ सूखा कौ हृदय-ग्राही वरनन है। पटिबे जोग रचना है।

☐ आप कौनसी विधाय अभिव्यक्ति कौ सबते अच्छौ साधन मानो ?

विधा सबई प्रभावशाली होय । ज्या समै ज्या को प्रभाव है जाय व् ही उत्तम हाय । मेने दोनूँ विधान म रचना लिखबे को सफल जतन कियौय ।

☐ आप ईश्वर की सत्ता म विश्वास करो ? करो तो का रूप म ?

ई प्रश्न बडौ व्यक्तिगत प्रश्नै । धरम को सम्बन्ध व्यक्ति की रुचि ते हाय । भारत मे कबीर नानक रदास आदि निराकार धारा के कवि भये है तो तुलसी सूर आदि विशेष सम्प्रदाय के कवि भय है । हमारी संस्कृति ईश्वरवादी को सम्मान कर और अनीश्वर-वादी कौऊ । मेरी साम्यवाद अरु जनवाद की तरफ विचारै क धरम क नाम प लोगन मे नफरत पैदा करिबौ या देश कू और सबरी मानवता कू घातकै । ऐसे माने ते कहा लाभ ज्याते नाक कान छ जाय । ऐसे इसुर की सत्ता मानिबे बारेन ते तौ न मानिबे बारे अच्छे होय जो मानव कू मानव को खून बहाते भये नेगिके गिनत जाय । या धरती पै धरम के नाम पै ईसुर के नाम पैं इतेक खून बहौय जितेक अबाँ राजनीति र युद्धन मेउ नाय बह्यौ । ईश्वर के बारे मे मेरे स्पष्ट मतै कै ईश्वर की सता हते तौ कोउ मिटाय नाय सकै और नाय तौ काउ पैदा नाय करि सकै । सो या विषय म काउ तें पूछिबौ और वाय आस्तिक और नास्तिक कहबौ बेकार की बात हाय । ज्याकौ मन भावै ईश्वर कूँ मानो, नाय आवै तौ मत मानो । या समाज की व्यवस्था पै कहा असर परै ।

☐ मै कृष्ण को जनवादी विचारक मानता हूँ, आपका क्या विचार है ?

कृष्ण के विषय म आपकौ विचार उत्तम है । आप बिन्नें जनवादी मानो तौ अच्छी बातै । पर ब्रजभाषा कौ रीति कालीन साहित्य जनवादी साहित्य नाय मान्यौ जाय सकै, ऐसौ मेरौ व्यक्तिगत विचारै ।

☐ आपने ग्रामीण परिवेश कूँ अपनो विषय बनायौय तौ का या वरनन कियौ भयौ सत्य आपकौ भोग्यौ भयौय ।

मेरौ जनम भरतपुर म सन 36 मे भयौ । वा समै भरतपुर एक गाम सौई हत्यौ । मेरे घर मे अब तक गाय भैस रहे है । मेरो ननसार गाम अतार म है । सुसरार गाम खेरिया ब्राह्मण म सन 1956 ते 1971 तक गामन मे अध्यापक रह्यौऊँ याते अलावा मेरे विचार सो भारत कौ सच्चौ सरूप गामन म ही हते । या प्रकार ते मेरी रचनान कौ ग्रामीण परिवेश, साचौ और खुद कौ भोग्यौ भयौय याके बाजे काउ प्रमान की जरूरत नाय ।

☐ ब्रजभाषा कौ साहित्य सिरजन कहूँ राष्ट्रभाषा हिंदी कूँ घातक तौ नही होयगौ ?

☐ आप कौनसी विधाय अभिव्यक्ति को सबत अच्छौ साधन मानो ?

विधा सबई प्रभावशाली होय । ज्या समै ज्या को प्रभाव है जाय वू ही उत्तम होय । मैने दोनूँ विधान म रचना लिखबे की सफल जतन कियौय ।

☐ आप ईश्वर की सत्ता मे विश्वास करो ? करो तो का स्प न ?

ई प्रश्न बडौ व्यक्तिगत प्रश्न । धरम को सम्बन्ध व्यक्ति की रुचि ते होय । भारत मे कबीर नानक रदास आदि निराकार धारा के कवि भय है तो तुलसी सूर आदि विशेष सम्पदाय के कवि भय है । हमारी सस्कृति ईश्वरवादी को सम्मान करै और अनीश्वर वादी कौऊ । मेरी, साम्यवाद अरु जनवाद की गहरी विचार कि धरम के नाम ते लोगन मे नफरत पैदा करिबौ या देस कू और सबरी मानवता कू घातक है । ऐसे मान ते कहा लाभ ज्याते नाक कान छ जाय । एम ईसुर की सत्ता मानिबे वारेन ते तौ न मानिबे वारे अच्छे होय जो मानव कूँ मानव कौ खून बहाते भय नेगिके गिनत जाय । या धरती पै धरम के नाम पै ईसुर के नाम पै इतेक खून बहौय जितेक अब राजनीतिक युद्धन मेउ नाय बह्यौ । ईश्वर के बारे मे मेर स्पष्ट मत कै ईश्वर की सत्ता हते तौ कोउ मिटाय नाय सकै और नाय तो काउ पैदा नाय करि सकै । सो या विषय म काउ ते पूछिबौ और वाय आस्तिक और नास्तिक कहवौ बकार की बात होय । ज्याको मन भावै ईश्वर कू मानो, नाय आवै तौ मत मानो । या समाज की व्यवस्था पै कहा असर परै ।

☐ मे कृष्ण का जनवादी विचारक मानता हूँ आपका क्या विचार है ?

कृष्ण के विषय म आपकौ विचार उत्तम है । आप बिन्नै जनवादी मानो तौ अच्छी बातै । पर ब्रजभाषा कौ रीति कालीन साहित्य जनवादी साहित्य नाय मान्यौ जाय सकै, ऐसौ मेरौ व्यक्तिगत विचारै ।

☐ आपने ग्रामीण परिवेश कूँ अपनो विषय बनायौय तौ वा बरनन कियौ भयौ सत्य आपकौ भोग्यौ भयौय ।

मेरौ जनम भरतपुर म सन 36 मे भयौ । वा समै भरतपुर एक गाम सौई हत्यौ । मेरे घर म अब तक गाय भैंस रह है । मेरो ननसार गाम अवार म है । सुसरार गाम खेरिया ब्राह्मण म सन 1956 ते 1971 तक गामन मे अध्यापक रह्यौऊँ याते अलावा मेरे विचार सो भारत कौ सच्चौ सरूप गामन म ही हवै । या प्रकार ते मेरी रचनान को ग्रामीण परिवेश, साचौ और खुद कौ भोग्यौ भयौय याके काजें काउ प्रमान की जरूरत नाय

☐ ब्रजभाषा कौ साहित्य सिरजन कहूँ राष्टभाषा हिदी कूँ घातक तौ नही होयगौ ?

राष्ट्रभाषा हिन्दी ब्रजभाषा कौई विकसित रूप सो ब्रजभाषा साहित्य ते ता बाकौ विकासई होयगौ। घातक बतई नही होयगौ।

☐ हिंदी अरु ब्रजभाषा के अलावा आपने और कौन-कौनसी भाषा कौ साहित्य पढयौय ?

हिंदी और ब्रजभाषा के अलावा मैने उर्दू और बंगला साहित्य मूल मे पढयौय। अंग्रेजी भाषा कौ अनुवादित साहित्य मूल मे पढयौ हे। हा, रूसी भाषा और फ्रेंच भाषा कौ साहित्य अंग्रेजी मे अनुवाद करयौ भयौ पढयौय।

☐ आपने कबहुँ समस्या पूर्तीन मेऊ भाग लियौय ?

ब्रजभाषा अकादमी द्वारा भेजी गई समस्या पूर्तिन मे भाग लियौय।

☐ आपकू कोई पुरस्कार मिल्यौ ?

आज तक कोउ पुरस्कार नाय मिल्यौ।

☐ अपनी रचनान के विषै कहा ते चुनौ ?

साहित्य कौ विषै जनता मे तेई चुन्यौ जाय।

☐ का आपने कछु व्यंग्यात्मकउ लिख्यौय ?

कोउ नाय लिख्यौ।

☐ नवगीत का है ? आपने ब्रजभाषा मेऊ नवगीत लिखेये ?

गीत भौत पुरानी विधा है। कबीर मीरा, सूर, तुलसी आदि सबने पदन के रूप मे गीत लिखे है। गीतन मे रचनाकार मस्ती ते झूम के अपने हृदय की रागात्मक वृत्ति कौ प्रकाशन करै। नवगीत आधुनिकतान मे सामान्य लोक जीवन की दुख दर्द की कहानी कौ और शोषण के विरोध मे संघर्ष करिबे कौ, संकल्प व्यक्त होय। मैने ब्रजभाषा मेऊ नवगीत लिखे है।

☐ आपको शिक्षक अरु कवि एक दूजे कू कहा तक प्रभावित करै ?

मेरौ शिक्षक अरु कवि दोउ एकमेक है गये है।

☐ आदर्श साहित्य कौ सरूप कहा होय ?

जन जन की पीडा कूँ बानी दैवे बारौ।

☐ आजकल आप कहा लिख रहे ऐ ? आगे की कहा योजना ऐ ?

इन दिनान मै कवितान के संग संग कछु कहानीउ लिख रह्यौ ऊँ।

☐ आप कौनसी विधाय अभिव्यक्ति कौ सबत अच्छौ साधन मानो ?

विधा सबई प्रभावशाली होय । ज्या समै ज्या को प्रभाव हे जाय वू ही उत्तम होय । मैने दोनूँ विधान म रचना लिखबे कौ सफल जतन कियौय ।

☐ आप ईश्वर की सत्ता मे विश्वास करा ? करौ तौ का रूप म ?

ई प्रश्न बडौ व्यक्तिगत प्रश्नै । धरम को सम्बन्ध व्यक्ति की रुचि ते होय । भारत मे कबीर नानक रैदास आदि निराकार धारा के कवि भये हैं तौ तुलसी सूर आदि विशेष सम्प्रदाय के कवि भय है । हमारी सस्कृति ईश्वरवादी को सम्मान करै और अनीश्वरवादी कौऊ । मेरौ साम्यवादी अरु जनवादी को एकई विचार कै धरम के नाम पै लोगन मे नफरत पैदा करिबौ या देश कू और सबरी मानवता कू घातकै । ऐसे साने ते कहा लाभ ज्याते नाक कान छ जाय । ऐस ईसुर की सत्ता मानिबे वारेन ते तौ न मानिबे वारे अच्छे होय जो मानव कू मानव कौ खून बहाते भय देखिके घिघा जाय । या धरती पै धरम के नाम पै ईसुर के नाम पै इतेक खून बहौय जितेक अजहू राजनीतिक युद्धन मेउ नाय बह्यौ । ईश्वर के बारे म मेरे स्पष्ट मतै कै ईश्वर की सत्ता हते तौ कोउ मिटाय नाय सक और नाय तो काउ पैदा नाय करि सकै । सो या विषय म काउ त पूछिबौ और वाय आस्तिक और नास्तिक कहबौ बकार की बात होय । ज्यारौ मन भावै ईश्वर कूँ मानो, नाय भावै तौ मत मानो । या समाज की व्यवस्था पै कहा असर परै ।

☐ मै कृष्ण को जनवादी विचारक मानता हूँ आपका क्या विचार है ?

कृष्ण के विषय म आपकौ विचार उत्तम है । आप बिन्नें जनवादी मानो तौ अच्छी बातै । पर ब्रजभाषा का रीति कालीन साहित्य जनवादी साहित्य नाय मान्यौ जाय सकै, ऐसौ मेरौ व्यक्तिगत विचारै ।

☐ आपने ग्रामीण परिवेश कूँ अपनो विषय बनायौय तौ या वरनन कियौ भयौ सत्य आपकौ भोग्यौ भयौय ।

मेरौ जनम भरतपुर म सन 36 मे भयौ । वा समै भरतपुर एक गाम सौई हत्यौ । मेरे घर मे अब तक गाय भैंस रह है । मेरा ननसार गाम अजार म है । सुसरार गाम खेरिया ब्राह्मण म सन 1956 ते 1971 तक गामन मे अध्यापक रह्यौऊँ याते अलावा मेरे विचार सो भारत कौ सच्चौ सरूप गामन म ही हनै । या प्रकार ते मेरी रचनान कौ ग्रामीण परिवेश, साचौ और खुद कौ भोग्यौ भयौय याके काजे काउ प्रमान की जरूरत नाय

☐ ब्रजभाषा कौ साहित्य सिरजन कहूँ राष्ट्रभाषा हिंदी कूँ घातक तौ नही होयगौ ?

राष्ट्रभापा हि ी व्रजभापा कोई विकसित रूपै सो ब्रजभाषा साहित्य ते तौ बाकौ विकासई होयगौ। घातक वतई नहीं होयगौ।

☐ हि दी अर ब्रजभापा क त्नावा आपन और कौन-कौनसी भाषा कौ साहित्य पढयौय ?

हि दो और व्रजभापा क अलावा मंने उद्दू ओर बगला साहित्य मूल मे पढयौय। अग्रेजी भापा को अधुनातन साहित्य मूत मे पत्यौ हे। हा, रूसी नाषा और फ्रेच भाषा कौ साहित्य अग्रेजी म जनुवाद करयौ भयौ पढयौय।

☐ आपने कबहुँ समस्या पूर्तीन मऊ भाग लियौय ?

ब्रजभापा अकादमी द्वारा भेजी गई समस्या पूर्तिन मे भाग लियौय।

☐ आपकू कोई पुरस्कार मित्यौ ?

आज तक कोउ पुरम्कार नाय मिल्यौ।

☐ अपनी रचनान के विषै कहाँ ते चुनौ ?

साहि य को विपै जनता म तेई चुयौ जाय।

☐ का आपन क छ इ त वत्यात्मकउ लिरयौय ?

कोउ नाय लिरयौ।

☐ नवगीत का है ? आपने जजभापा मेऊ नवगीत लिखेये ?

गीत भौत पुरानी विधा ऐ। कबीर, मीरा सूर, तुलसी आदि सबने पदन के रूप मे गीत लिखे ए। गीतन म रचनाकार मस्ती ते झूम के अपने हृदय की रागात्मक वत्ति कौ प्रकाशन करै। नवगीत आ दान ग मामा य लोक जीवन की दुख दद की कहानी कौ और शापण के विरोध मे सत्रप करिबे कौ, सकल्प व्यक्त होय। मैने ब्रजभाषा मेऊ नवगीत लिखे ए।

☐ आपको शिक्षक अरु कवि एक दूजे कू कहा तक प्रभावित करै ?

मेरौ शिक्षक अरु कवि दोउ एकमेक है गये है।

☐ आदर्श साहित्य को सरूप कहा होय ?

जन जन की पीडा कूँ बानी दैन वारौ।

☐ आजकल आप कहा लिख रहे ऐ ? आगे की कहा योजना ऐ ?

इन दिनान मै कविनान के सग सग कछु कहानीउ लिख रह्यौ ऊँ।

☐ ब्रजभाषा साहित्य की वतमान प्रगति ते आप कहा तक सन्तुष्ट है ?

ब्रजभाषा अकादमी जो काम सौप वाय पूरौ करूँ । ब्रजभाषा मेऊँ नयौ सिरजन होय, ऐसी अभिलाषा हू हते ।

☐ राष्ट्रीय अरु भावात्मक एकता माहि ब्रजभाषा कहा ताई सहयोगी रहीयै अरु रह सक ?

प्राचीन साहित्य मे तौ ब्रजभाषा समूचे उत्तर भारत की अकेली भाषा रहबे का गौरव पाय चुकीयै । जतन करयौ जाय तौ आज हू अच्छी रचना लिखी जाय सकें जिनते राष्ट्रीय एकता कौ काम है सक ।

☐ प्रगतिशील ससार मे ब्रजभाषा की का उपादेयता समझौ ?

ब्रजभाषा जन जन की बोली हे । ई जन जन की साहित्यिक भाषाऊ बनि जाय तो ई या भाषा कौ प्रगतिशील कदम होयगौ । या दिशा मे ईमानदारी सो काम होनौ चहिऐ ।

☐ ब्रजभाषा अकादमी मो आप कहा अपेक्षा राखौ ? कछू सुझावऊ देनौ चाहिगे ?

अब तक ब्रजभाषा अकादमी की उपलब्धि इतेकई कही जाय सकै क राजस्थान मे कछुक सहरन मे लोग जान गये है कै ब्रजभाषा की कोई अकादमी बन गई यै । हा अकादमी ने अन तक जित कवि सम्मेलन करवाये ह बिनते पाँच छै कवीन की रोटी चलि गई यै बाकी बिन नवीन नऊ कोउ खास सिरजन करयौ होय मो बात नाय । ब्रजभाषा अकादमी कू चहियै क अपनौ दृष्टिकोण नये जुग के अनुकूल बनाय के नये नये रचनाकारन कूँ नये-नये विषयन पै रचना लिखिब की प्रेरना दे अरु भरतपुर के पुराने कविन की रचनान कौ प्रकाशन करै जिनकौ साहित्य आज लौ बस्तान मे बन्यौ पर्यौय ।

☐ नई पीडी की ताई आप कहा स देश देनो चाहो ?

नई पीडी अपनी तरिया तै चलैगी । पीछ मुरिके हमारौ मुँह नाय देखैगी । मेरौ यही स देश है आगे बढिबे कौ ध्यान राखै साहित्य पढिबे लिखबे ते हृदय कौ विकास होय । अकेलो बुद्धि विकास ते काम नाय चलै ।

☐ नये ब्रजभाषा रचनाकारन कू कछू स दश ?

मौय अब ताइ या बात कौ पतौ नाय चलि पायौ कै ब्रजभाषा म कछू नये लोगऊ रचना करि रहे ए कोउ लिख रह्यौ होय तौ मे चाहूँगौ कै ब्रजभाषा मऊ नये रचनाकार नई नई विधान म रचना करे ।

☐ ब्रजभाषा पचार प्रसार ताइ कोउ सुझाव ?

अकादमी प्रचार प्रसार कौई काम कर रहीये । नये लागन कौ सहयोग लैके नयी रचना होय तो ब्रजभाषा कौ विकास होयगौ । अकादमी के नये पदाधिकारी ऐसौ करे तौ अच्छी बात हायगी ।

—मेवाराम कटारा

सजग कवि की सहज कविता

समकालीन ब्रजभासा पै ई आरोप लगायौ जाये है कि वामें आधुनिकता बोध के विविध आयामन कौ कछु अभाव खलै है। आज हम बीसवीं शताब्दी के आखिरी छोर पै जी रह्ये पूरी दुनिया पलटा खाय रही है। हमारे ब्रज क्षेत्र कौ लोक जीवनऊ देश-दुनिया ते अलग नाय। हमारे लोक जीवन और समाज पैऊ या बदलाव कौ असर साफ-साफ देख्यौ जाय सकै है। आज कौ रचनाकार सौ दो सौ साल पुराने जमाने के लोक जीवन और समाज कौ चित्रण करकै बड़ी रचना की सजना नाय कर सकै। याके तांई तो वाकू नित नयी बदलती दुनिया अरु अपने परिवेस के यथार्थ पै पैनी नजर रखनी परगी। येई ब्रज की बलिक सबरी भाषान के साहित्य की समकालीनता है अरु यई रचनाकार कौ आधुनिकता-बोध है।

ब्रजभासा मऊ यथार्थवादी साहित्य की बड़ी भरी पूरी अरु समृद्ध परम्परा है। सूर मीरा रसखान [illegible] नजीर अरु भारतेन्दु तक ब्रज काव्य की ई परम्परा हमारे साहित्य कौ गौरव रही है। याई परम्परा ते प्रान तत्त्व लैकै आज ब्रज कौ समकालीन साहित्य रच्यौ जाय सकै है। या परम्परा कू पचाय कै अरु यथार्थ की पूरी जांच परख करकै रचनाकार अपनौ आधुनिकता बोध विकसित कर सकै है।

हमारे समकालीन ब्रज कवि रामबाबू शुक्ल नै याई प्रक्रिया ते गुजर कै अपनी काव्य दृष्टि कौ विकास करयौ है। उनकौ कवि कम सई मायने मे यथार्थवादी है। ऐसौ अकारण नाय कै दिवगत कवि गिर्राज 'मित्र' बिनके प्रिय कवि है। शुक्ल जी 'मित्र' की कविता के रोम रोम सौ परिचित है। मित्र जी की कविता हमारे ब्रज लोक जीवन कौ सम्पूरन चित्रन करे। समाज की विसंगतीन पै मित्र जी तीखौ व्यंग्य करै है। ठेठ ब्रजभासा कौ बहतौ मुहावरौ अरु यथार्थ परिवेश ते सीधौ उठायौ कथ्य अपने फक्कड-पन ते कह दैनो याई मित्र जी की प्रमुख बिशेषता रही। जबई तौ शुक्ल जी ने बिनकू 'ब्रज कौ आधुनिक कबीर' कहकै पुकारयौ। कवि रामबाबू शुक्ल मित्र जी की काव्य-परम्परा के सच्चे सपूत है। बिनकी कविता या यथार्थवादी परम्परा के समकालीन परिद्रस्य कू और विकसित अरु समृद्ध करवे वारी है।

हमारौ ब्रज क्षेत्र खेतिहर समाज की प्रधानता वारौ है। किसान बहुल या अंचल की हंसी खुशी, उमग उल्लास, तीज त्यौहार, सुख दुख, कष्ट अरु समस्या शुक्ल जी की

नर झर ! प्यासे जीव पुकार लौटा रे जिन्दगानी ।

आगे एक और गीत में कवि सूखा की भयावहता कौ मार्मिक चित्रण करें। सूखा ने धरती की आतो ठौर ठौर ते दरक गयी है। पनघट पे रीते घट भटक रहे हैं। घाम की तेजी अब सही नाय जाय। कवि इन्दर कूं पाती लिख भेज ा की गुहार करतौ वर्षा कौ आह्वान करै।

कातिक की फसल उगा न पाती या जीव। आषाढ की वर्षा भई। कातिक बो दियौ। फसल हरिया गयी। ज्वार बाजरे लहराये। फिर इन्दर देवता रूठ गये। खेतन मे बारी सी पछुआ बयार शोले लग परी। पछुआ जब चल तो वर्षा नाय होय ऐसौ मान्यौ जाय। एक चित्र देखौ–

'हरी भरी बगिया पै पतझार छायी
मतवाही कोयल क्यो लौट के न आयी'

जैसे पछुआ धरती ते बरखा के प्यार की परीक्षा ले रही है। गीति काव्य के बारे मे ई धारना है कै कठोर यथार्थ या विधा मे पूर्णता ते व्यक्त न करौ जाय सकै पर शुक्ल जी नै ब्रज भूमि की सबते बडी अरु भयावह समस्या सूखा कौ इन गीतन मे मरम स्पर्शी चित्रण कर्यौ है। ब्रज भ मुक्त छद कम लिख्यौ गयौ है। जो लिख्यौऊ गयौ वामे प्रयोग ज्यादा है कौमल कम। शुक्ल जी की मुक्त छन्द कविता 'ई कैसो पावस ?' या हिसाब ते समकालीन ब्रज कविता की उपलब्धि कही जाय सकै।

'ई कैसो पावस ?' कविता के केन्द्र मे ब्रजभूमि की एक मुख्य नदी बाण गगा है जो 'बाणा' कहकै पुकारी जात है। ब्रजभूमि मे जमुना के बाद या नदी कौ भारी महत्त्व है। या कविता मे कवि ने सूखी परी बाणगा का वर्णन या तरिया ते कर्यौ है कै वर्णन के सदर्भ एक बगल भरिपै बहवे वारी बाणा पै आश्रित किसान समुदाय के सुखी जीवन अरु उल्लास की झलक दै तौ दूसरी बगल सूखी बाणा ते पैदा भये सकट कौ चित्रण है जामे पूरे जन-जीवन की हमी खुशी, बहू बेटीन के नाज त्यौहारन की उमग, बच्चान के खेल कूदन की किलकारी अरु पसु पक्षीन की किलोल सब छिन गये हैं। शुक्ल जी की या कलात्मक कविता कौ यथार्थ बहुआयामी है।

ब्रज के लोक जीवन कौ एकई रग नाय। सूखा ही यहा की प्रकृति कौ सच नाय। अगर सूखा ब्रज के प्रमुख त्यौहार—हरियाली तीज रक्षाबधन, जन्माष्टमी जसे पर्व अरु मल्हार जैसे रागन नै अवसाद मे बदल दे तौ अच्छौ मानसून लोकजीवन मे उमग और उल्लास कौ सचार कर दे। 'हरियल बाताम' हरी दूब के देश मे' मोती की तरिया झरे। कबऊँ बादरन की ओट ते चाद झाक ले तौ कबऊ बिजुरी आख मिचौनी खेलै–

रजनी की गोदी मे चदा किलकै

नर झर ! प्यासे जीव पुकारे लौटा रे जिन्दगानी ।

आगे एक और गीत म क व सू ा का भयावहता को मार्मिक चित्रण करै । सूखा ते धरती की छाती ठौर ठौर त दरक गयी है । पनघट प रीते घट भटक रहे है । घाम की तजी सह सही नाय जाय । कवि इ दर कू पाती लिख भेज ा की गुहार करतौ वर्षा को आ ह्वान करै ।

कातिक की फसल बचा ऐ पानी पान जीव । आषाढ की वर्षा भई । कातिक बो दियौ । फसल हरियाय गयी ज्वार बाजरे लहराये । फिर इ दर देवता रूठ गये । खेतन म बावरी सी पछुआ बयार डोलते लग परी । पछुआ जब चल तो वर्षा नाय होय ऐसो मा यौ जात्रै एक चित्र दखौ

'हरी भरी बगिया पै पतझार छायी
नखरारो कोयल क्यो लौट के न आयी'

जैसे पछुआ धरती ते बरखा के प्यार की परीक्षा लाय रही है । गीति काव्य के बारे म ई धारना है कै शृंगार प्रधान याल्लि ा म पूणता ते व्यक्त न करी जाय सकै पर शुक्ल जी नै ब्रज भूमि की सबन बडी अरु भयावह समस्या सूखा कौ इन गीतन म मरम स्पर्सी चित्रण करयो है । ब्रज भ मुक्त छन्द कम लिख्यौ गयौ है । जो लिख्यौऊ गयौ वाम प्रयोग ज्यादा है कोमल रस । शुक्ल जी की मुक्त छद कविता ई कसो पावस ?' या हिसाब ते समकालीन ब्रज कविता की उपलब्धि कही जाय सकै ।

'ई कैसी पावस ?' कविता के के द्र म ब्रजभूमि की एक मुख्य नदी बाण गगा है जो बाणा' कहकै पुकारी जाती है । ब्रजभूमि म जमुना क बाद या नदी कौ भारी महत्व है । या कविता म कवि ने भरी परी बाणा का वणन या तरिया ते करयौ है कै वणन क सदभ एक बगल भरी बहत भारी बाणा पै आश्रित किसान समुदाय के सुखी जीवन अर उल्लास की झलक है तो दूसरी बगल सूखी बाणा ते पैदा भये सकट कौ चित्रण है जाम पूर जन-जीवन की हसी खुसी, बहू बेटीन क तीज त्यौहारन की उमग, बच्चान के खेल-कूदन की किलकारी अ पसु पक्षीन की किलोल सब छिन गये है । शुक्ल जी की या कलात्मक कविता को प्रभाव बहुआयामी है ।

ब्रज के लोक जीवन को एकई रग नाय । सूखा ही यहा की प्रकृति कौ सच नाय । अगर सूखा ब्रज के प्रमुख त्यौहार—हरियाली तीज रक्षाबधन, ज माष्टमी जैसे पव अरु मल्हार जैसे रागन नै अवसाद म बदल द तो अच्छौ मानसून लोकजीवन म उमग और उल्लास को सचार कर दे । 'हरियल बाताम' हरी दूब के देश मे' मोती की तरिया झरें । कबऊँ बादरन की ओट ते चाद झाक ले तो कबऊ बिजुरी आख मिचौनी खेलै—

रजनी की गोदी म चदा किलकारै ।'

और चादनी को चित्रण दखौ—

'दूध की मथानी सी चादनियाँ ढुलकाई
सरर सरर पसर गयी धरती तू सरसाई।'

कभी मेघ ऐसे घिरे कै वर्षा थमवे कोई नाम नाय । । जैसी सूगा दुखदाई वसई अतिवष्टि। छान चुचाय रही है। बाग्नर म गारो है गयो। भस गा टरक गयो। खेतन की मेड नाय दीख रही। फसल चौपट है गयी। कवि लोकमन की गुहार लगावै–

सुनि बदरा कजरारे,
अब तो घन सौ जीवन हारे।

ई कुदरत की विडम्बना है कै बरखा-

कबहू रूठि जाय ता मार बूद बूद तरसारे,
अबकै नह बढायौ ऐसौ, मत्र है रह दुगारे।'

कवि कौ कुदरत पे बस कहाय पर बाको मन लोक म रम्यो है अरु कविता लोक मन कू वाणी दै रही है। शुक्ल जो घाघ-भडडरी को तरियाँ रितु के रग अरु प्रकृति ते जीवन के द्वद्व व साहचय कू पहचान के आक रहे है।

ब्रज क्षेत्र के गाव कस्बा अरु सहर की अ य समस्यान तऊ कवि अजान नाय। कवि के एक गीत की ग्रामीण खेतिहर नायिका अपने जीवन कू निस्सार पा रई है। नायिका घर गिरस्त अरु खेत क्यार के कामन मे 'सिगरे दिन चककेरी लगावै'। कठोर मेहनत ते बाकी देह की नस नस पीडा ते कराह परै। पूरे घर समाज की उपेक्षा की मार सहती ई नारी हमारे ग्राम समाज की कटु सच्चाई है, गीत म 'कदर मेरी काहू न जानी' पक्ति ते जाको दुख बेर बेर नयी तरिया ते सामई आवै।

हमारे गाम्य समाज कौ ढाचौ अब हू साम ती है। यामे एक तरफ लम्बी-चौडी खेती जमीदारी के मालिक किसान हे तौ दूसरी तरफ बिनकें खेत क्यारन म मजूरी करकै गुजारो करबे बारे खेतिहर मजदूर हे। शुक्ल जी के एक गीत म बहिन अपन भइया के दुखडे को बयान कर रही है। भइया जमीदार की बेगार कर। जमीदार की ताबेदारी नै बाके जीवन कौ सबरो रस लूट लियौ है। भइया की मडैया अभावन कौ घर है, बाकौ पेट पीठ ते मिल गयौ है। बहिन चि ता जतावे कै ऐसे कब तक चलैगौ, अपनौ हक तौ लड कै लैनो परगौ।

हमने सुरु म ई कही कै ब्रज याई देस कौ छोटौ सौ अग है। मेहनतकस वग कौ सोसन अरु भ्रष्टाचार पूरे देस की समस्या है। एक गीत मे शुक्ल जी देस के या भ्रष्टाचार कीऊ खबर लै जाम पइसा अधेला मे चल रह्यो है। शुक्ल जी ने अपने परिवेश, समाज, व्यवस्था अरु तन्त्र की विसगति न केवल सामई रखी है विनपै तीगो प्रहार भी कियौ है।

कवि रामबाबू शुक्ल दुनिया के रेले मे घुसे सजग दृष्टा हैं तौ 'ब्रज गलियन मे मचे हुरगा' के रगन मे पगे सहज कवि है। अहकार, बडबोलेपन अरु छद्म ते परे वे ब्रज अचल के सरल चितेरे है।

श्री माधौप्रसाद 'माधव'
अटलब द मण्डी
भरतपुर (राजस्थान)
आयु–71 बरस

वीर ओज माधुर्य त्रिवेनी

नन्दलाल के लाडले सरस्वती के लाल।
माधौ शर्मा नित करे उन्नत भासा भाल ।।
उन्नत भासा भाल रचत नित छन्द मनोहर।
वीर ओज माधुय त्रिवेनी छहरै झर-झर ।।
अटल ब द पै रहै छ द बोलै कमाल के।
सिंह गजना हरसावत हिय न दलाल के ।।

'दूध की मथानी सी चादनियाँ उलकाई
सरर सरर पसर गयी धरती तू सरसाई ।'

कभी मेघ ऐसे घिरे कै वर्षा थमवे कोई नाम नाय न । जैसी सूना दुखदाई वसई अतिवृष्टि । छान चुचाय रही है । बागर म गारो है गयो । भगरा दरक गयो । खतन की मेड नाय दीख रही । फसल चौपट है गयी । कवि लोकमन की गुहार लगावै—

सुनि बदरा कजरारे,
अब तौ घन सौ जीवन हार ।

ई कुदरत की विडम्बना है क बरखा—

कबहू रूठि जाय ता मार तू न तू द तरसारे,
अबकै नेह बढायौ एसो, मन है रह् दुगारे ।

कवि को कुदरत पे बस कहाय पर बाको मन लोक म रम्यो है अरु कविता लोक मन कू वाणी दै रही है । शुक्ल जो घाघ-भडडरी की तरियाँ रितु के रग अर प्रकृति ते जीवन के द्वद्व व साहचय कू पहचान कैं आक रहे है ।

ब्रज क्षेत्र के गाव कस्वा अरु सहर की अ य समस्यान तऊ कवि अजान नाय । कवि के एक गीत की ग्रामीण खेतिहर नायिका अपने जीवन कू निस्सार पा रई है । नायिका घर गिरस्त अरु खेत क्यार के कामन म 'सिगरे दिन चककेरी लगाव' । कठोर मेहनत ते बाकी देह की नस नस पीडा ते कराह परै । पूरे घर समाज की उपक्षा की मार सहती ई नारी हमारे ग्राम समाज की कटु सच्चाई है, गीत म कदर मेरी काहू न जानी' पक्ति ते जाकौ दुख बेर बेर नयी तरिया ते सामई आवै ।

हमारे गाम्य समाज को ढाचो अब हू साम ती है । याम एक तरफ लम्बी चोडी खेती जमीदारी के मालिक किसान हे तो दूसरी तरफ बिनकें खेत ग्यारन म मजूरी करकै गुजारो करबे बारे खेतिहर मजदूर ह । शुक्ल जी के एक गीत म बहिन अपने भइया क दुखड को बयान कर रही है । भइया जमीदार की बेगार करै । जमीदार की ताबेदारी नै बाके जीवन को सबरो रस लूट लियौ है । भइया की मडैया अभावन को घर है, बाकौ पेट पीठ ते मिल गयो है । बहिन चि ता जतावे कै एसे कब तक चलैगो, अपनो हक तो लड कै लैनो परैगो ।

हमने सुरु म ई कही कै व्रज याई देस को छोटो सो अग है । मेहनतकस वग को सोसन अरु भ्रष्टाचार पूरे देस की समस्या है । एक गीत मे शुक्ल जी देस के या भ्रष्टाचार कीऊ खबर लै जाम पइसा अधेला म चल रह्यो है । शुक्ल जी ने अपने परिवेश, समाज, व्यवस्था अरु तत्र की विसगति न केवल सामई रखी है विनपै तीगो प्रहार भी कियो है ।

कवि रामबाबू शुक्ल दुनिया के रेले मे घुसे सजग दृष्टा है तो 'ब्रज गलियन मे मचे हुरगा' के रगन मे पगे सहज कवि है । अहकार, बडबोलेपन अरु छद्म ते परे वे ब्रज अचल के सरल चितेरे है ।

—राजाराम भादू

श्री माधोप्रसाद 'माधव'

[illegible]

भरतपुर (राजस्थान)

आयु–71 वर्ष

वीर ओज माधुर्य त्रिवेनी

नन्दनार के लाडले सरस्वती के लाल।
माधो शर्मा नित करें उन्नत भाषा भाल॥
उन्नत भाषा भाल रचत नित छन्द मनोहर।
वीर ओज माधुर्य त्रिवेनी छहरैं झर-झर॥
अनन्त [illegible] पै रहै छन्द बोलै कमाल के।
गिरा गर्जना हरसावत हिय नन्दलाल के॥

श्री माधौप्रसाद 'माधव'

परिचै

जनम—14 जनवरी 1921

जन्म स्थान	लखनपुर तहसील नदबई, भरतपुर
पिता को नाम	श्री प न द लाल शर्मा
माताजी को नाम	श्रीमती सरस्वती देवी
काव्य गुरू	श्री कुल शेखर जी
शिक्षा	बी ए, व्यायाम बिशारद
व्यवसाय	अवकाश प्राप्त पी टी आई
परिवार	तीन पुत्र अरु एक पुत्री
प्रकाशित ग्रन्थ (रचना)	फुटकर रचना
अप्रकाशित ग्र थ (रचना)	गोद पचासा
वतमान पतो	मण्डी अटलबद, भरतपुर

भरतपुर के भूसन

सिरी माधोप्रसाद जी 'माधव' ब्रजभासा के अपने ढंग के अनूठे ही कवि ऐं। जा आचर के ब्रज काव्य माहीं जनन ने बिनकूँ 'भरतपुर के भूसन' की उपाधि भौत सोचि समझि के दई ऐ। वीर रसावतार कविवर भूसन रीतिकाल के रससिद्ध कवीन माहि देसभक्ति, रास्ट्रीयता अरु ओज के अनुपम रचना माने गये ऐं। भरतपुर आचर माहि निहचैई कविवर माधोप्रसाद जू माधव ने बू ई ऊर्जा अरु बाई तरिया के तेबर दिखाये ऐं। सुरसुती मैया ने इनकूँ बैसोई डील डौल अरु बैसी ही घन गजना करती भई अबाज हू दै दई ऐ। इन बिसेसतान के संगई माधव जू ने बिसै भासा अरु छंदन कौ चुनाव हू बाई तरिया कौ करयौ ऐ। इन्नें ऊँ अपने काव्य कौ अंगीरस वीर कूँ ई चुनौ ऐ। विधाता कौ विधान हू कछू ऐसौ रह्यौ ऐ कै इनकौ जनम अरु स्थायी निवास हू वीरभूमि लोहागढ माहि मिल्यौ ऐ—जहाँ की माटी, ब्यारि अरु पेड पौधाहू हुंकार भरते मे दीखें है। बे बाई वीर भरतपुर लोहागढ की रज माहि खेले है जहा के बिसै मे सिरी वियोगी हरि जू कह गये ऐ—

यहै भरतपुर दुर्ग ऐ, अति भीसन भयकार।
जहँ जट्टन के छोहरे, दीने मल्ल पछार॥

अर जहा के बारे मे ई कहाबत हू सुनी जाय —

आठ फिरंगी नौ घोरा।
लरे जाट के दो छोरा॥

माधव जू नें अपनी रचनान की सिरुआत अपने परचै सो करी ऐ जामे बिनकौ अंगीरस या तरियाँ सो फूटि परयौ ऐ—

सुन्यौ होगौ जोधा रनधीर वह बाँकौ वीर,
जाने एक दिना दीठ दिल्ली माँऊ डारी है।

फौज मुगलो की अल्ला अल्ला करि हल्ला करे
  देखत ही जाकौ तेग पैर महामारी है ।।
गढ तौ माटी कौ तौऊ नाम लोहागढ पायौ,
  सेना अगरेजी सत्तरह बार हारी हैं ।
सुदर सलौनी यह भूमि सूर वीरन की,
  छोटी सी नगरी भरतपुर हमारी है ।।

याई क्रम माहि माधव जू भरतपुर की वीरता कौ बरनन अपने कवित्तन माहि करते चले गये ऐ । एक एक सबद, एक एक सतीर अरु एक एक छन्द बिनके मनुँआ सो फूटते चले गये ऐ । भरतपुर के सौय कौ इतिहास आप सो आप साकार होतौ चल्यौ गयौ ऐ । एक नमूना देखौ तौ सई–

कैसे थे अडगी जगी वीर लोहागढ माहि
  सूर वीरता की जिन सुनी ये कहानी है ।
दिल्ली चढि धाये रन लाहा उजाये छाय,
  मुगलन छराये करी काट काट घानी है ।
माधव महान वीर मानी अँगरेज हार,
  सत्तर बार जिनकूँ पिबायौ खूब पानी है ।
चिन्ह वीरता के ठोक छाती कह रहे आज,
  किबार अस्ट धातु जाकी जीत की निसानी है ।

□

काल के समान भुजदड सूरवीरो के थे
  देख जिन्हे मुगलो की हिम्मत न हारी है ।
तौऊ मनुआ मे ई बिसबास हू अटूट हतौ,
  अस्ट धातु दिल्ली दरबज्जो बडौ भारी है ।।
देख ताहि हाथी हूल देत है यो बेर बेर,
  हटि जात पीछे फेर बढत अगारी है ।
देख के हतास पाखरिया वीर कुजर को,
  छाती हूल हाथी के स मुख ऊडा डारी है ।।

वीर रस की सास्त्रीय बिवेचना करै तौ या कौ स्थायी भाव उत्साह मान्यौ गयौ ऐ । सचारी भावन माँहि रोस, कोप, होड अर ईस्या प्रमुख माने जाय सके । अनुभादन माहि भ्रूबक, भृज फडकन रोमाच, हुकार अर घन गरजन कू लै सके है । उद्दीपन

माँहि रिपुदल अरु बिनके अस्त्र सस्त्र आय जाय। आस्रय बीरजन अरु आलम्बन सभु-सैन्य दीख परै है। इन सबन के सजोग सो जब उत्साह आनन्द रूप मे पारिनित है जाय तौ बू वीर रस कौ प्लावन करै है।

या निकस पै कसि के देखौ तौ माधव जू की कविताई खरी उतरै है अरु बामे साधारनीकरन की क्षमता साफ दीख परै है। बू रसिक जनन कूँ मधुमती भूमिका पै लै जाइबे की सक्ति राख है। रससिद्धता कौ एक उदाहरण देखो–

या तौ अनेको रन बाकुरों से भरी थी सैन्य
   मुगल सेना कूँ जो कुटी की भाति कूटती।
अल्ला अल्ला करि हल्ला भागते मुगल सारे,
   जाटन की तेग जब जुद्ध बीच छूटती।।
कहै कवि 'माधव' यदि हो तौ ना एक वीर
   कैसे बतलाऔ दिल्ली जाट सेना लूटती ?
आप ही विचार करौ अपने मनन माहि,
   पाखरिया न हो तौ, तौ दिल्ली नाय टूटती।।

भरतपुरी वीरन कौ बरनन सौ–

मेदानी ये वीर बाकुरे रन मैदानी।
थर थर कापे मुगल देखके इनकौ पानी।।
कैसे कैसे वीर विलक्षन, मूँछे जिनकी धार कटारी।
बार सत्तरह गोरी पराटन, जिनते युद्ध बीच थी हारी।
सेरन के से सीने उभरे, कटि केहरि की भाति निराली।
बदन छरेरे सान अनोखी, दिल्ली मे जिन हल गई हाली।।

कविवर माधव जू न अपना करतब भरतपुर तानू ई सीमित नाय राख्यौ। बिन्ने प्रसदिनी राजस्थान की भू कौऊ बरनन खूब रचि पचि के करयौ ऐ। राजस्थानी वीरता कौ बखान इनकी लेखनी सो ऐसें उछरयौ ए जैसें तोप सो गोला उछरे, रनभूमि मे कटि कटि के सीस उछरें अर जुबना भरे मदमाते कदम हवा सौ बात करे। राजस्थान के बरनन माहि वीररस की बानगी देखि लेऔ—

ये वीरन कौ प्रान्त, सिरोमनि भारत कौ है।
अरि सोणित सो गयौ, यहा इतिहास लिख्यौ है।।

ज्योऊ दुस्मन चढ्यौ, जाई ने बाजी ली है ।
दै अपनो बलिदान इग [illegible]ी रच्छा [illegible]ी है ॥
जिये देस के लिये सदा जो मरे [illegible]स के [illegible]ये सदा है ।
व ये सिहन के सपूत जिन [illegible] [illegible] विय [illegible] है ॥

□

रन थभौर के अजय दुग की, आन बनी मतवारी है ।
हल्दी घाटी के कन [illegible]न [illegible] छाई अजब ला[illegible]ी है ॥
दुर्गादास के रन कौसल मे किन खिला उठी [illegible]ी काली है ।
कोटा बूँदी और चित्तौड की देखौ सान निराली है ।

कवि ने अपने वीर रसात्मक काव्य माहि पौरानिक गाथा हू अछूती नाय छोडी ऐ । अगद रावन सवाद मे वीर रस की भुज फरराइबे वारी झलक दिखाई दै जाय । दोहा अरू कवित्तन वीर रस की सरिता सी उमगाय द जाए सहृदय सामाजिक वीर रस माहि बूडि बूडि कें उत्साह सौ हुकार भरिबे लगि जाय । भासा भाव की सच्ची सह धर्मिणी बनि के बाके सगई सग चक्कर खाती दीखै है । छ दन माहि कहूँ तेगा की खटा खट तौ कहूँ तरवारि की लपालप सुनाई दे । ब्रजभासा को सहज रूप रस कूँ भौत सहारौ देके बाय सिद्धि तानू पहुँचाइबे मे सफल है जाय । पाठक म समात्मभाव की सृजना कवि की लेखनी की सार्थकता कही जाय सकै । अगद रावन सवाद सो वीर रस को उदाहरण देखौ—

सुन सकोप रावन कही, कपि विलोक मम बाहु ।
अरिगन के गबन दलत ग्रसत चद जिमि राहु ॥

सुनक कठोर गर्वीले बैन रावन क,
क्रोधवत अगद की दाई भुज फरकी ।
मास छै काँख रह्यौ तात की मुझाऊँ यात,
तजि अभिमान लै सरन रघुवर की ।
सीतापति कोपे तौ त्रिलोक मे बचावै कौन,
आप सहित लका है, सोभा छिन भर की ।
बीस भुज सीस दस पाय गर्वायौ मूढ,
धज्जिया उडेगी दुष्ट तेरे सर सर की ॥

या तरिया सो कविवर माधव जू ने वीर रस की जो सरिता उमगाई ऐ बासो सहज ही वीर रसावतार भूसन की सुधि ताजी है जाय । भूसन म जा देसभक्ति, रास्ट्रीयता अरु

ओजस्विता दीख परै ताकी एक झलक माधव जू के काव्य मे ऊ साफ दीखै है । वैसे इन्नै सिंगार, सा त, हास्य अरु दूसरे सबई रसन माँहि कविताई को सिंगार करयौ ऐ । परि इनकी असली पहचान वीर रस के सजन ने ई बनाई ऐ । सत्तर बरस के है के ऊ इनकी अकड अभई ढीली नाय भई इनके तेवर नाय बदले, इनके काव्य माहि सिथिलता नेकऊ नाय आई अपितु अभई तौ ई नाहर गजना करि ही रह्यौ ऐ । या के बाके डीलडौल केई अनुरूप याके कवित्त सवैया, दोहा अरु याकी अमत ध्वनि नेकऊ हल्के नाय परे । जब तानूँ ई कवि केहरी, सौ बरस पूरे करैगो, तब तानूँ जाने कहा गजब ढाबैगो, कह नाय सके । सुरसुती मैया या पै हाथ राखै याई मे सबकौ भलौ ऐ ।

—डा रामकृष्ण शर्मा

साक्षात्कार माधौ प्रसाद शर्मा 'माधव' सौ

☐ आपनें ब्रजभाषा माहि कविता रचिबौ कब सिरू करयौ ?

मैने 31 जनवरी सन 1976 तानू तौ नौकरी करी ताकै पाछै कविता लिखबौ प्रारम्भ कियौ ।

☐ आपकू कविता करिबे की प्रेरना कैसे प्राप्त भई ?

मे खेलकूद कौ मास्टर हो मे जब जाकी ट्रेनिंग करब कूँ जाऔ करतौ तौ मैने वहा पै देख्यौ ऐसी कौनसी तरकीब है जाते मरौ परिचै सबई ट्रेनिंग करबे बारेन ते है जाय और वहा स्टाफ तेऊ मैरी जानकारी है जाय । मै पी टी आई तौ होई आबाज मेरी भौत तेज हुती । मैने दूसरेन की वीर रस की कवितान कू याद करकें बडे ई जोश ते सुनायबो प्रारम्भ कियौ । जामे लोगन ते मोय भौत उछाह मिलौ फिर धीरे धीरे मैनेऊ कछु वीर रस की कविता लिखबौ प्रारम्भ कर दियौ ।

☐ आपकी प्रेरना के स्रोत कौन कौन रहे ?

हमारे शहर के बाहर एक वायुभक्ष की बगीची है । बा बगीचे पै रबिवार के दिना बा समै के सहर के सबई विद्वान जायौ करै हे । म्हा पै खूब कविता होती—भरतपुर के धुरन्धर कवि, मजुल, कुलशेखर जी, वैद्य राधारमन जी, नदकुमार, सूय नारायण शास्त्री, श्री किशोरीलाल जी आदि आदि । मैनेऊ हिम्मत करके एकादि वीररस की कविता बडी ही ओजस्वी भाषा मे सुनाई मेरे चाचा श्री राधारमन जी ने तथा सबई ने श्री कुलशेखर जी ते कहो कै जा छोरा कू आप सहयोग देऔ । बाई दिना ते बिननै मेरे ऊपर हाथ रख दियौ अरु मोय कवि सम्मेलन म ले जायबे लग और मोऊ ते कविता सुनवायबे लगे ।

☐ आपकू सुधि होय तो बताइबे की किरपा करौ के आपकी सबसौ पैले लिखी भई पक्तिया कौनसी हुती ?

सुन्यौ होगौ जोधा रनधार वह बाकौ वीर,
जानै एक दिन दीठ दिल्ली पर डारी है।

फौज मुगलो की अल्ला अल्ला कर हल्ला करै,
देखत ही जाकी तेग परै महाभारी है।

गढ तो माटी कौ ताऊ नाम लोहागढ पायौ,
सैना बटेन की सत्तरह बार हारी है।

सु न्र सलौनी यह भूमि सूर वीरन की,
छोटी सी नगरी भरतपुर हमारी है।

☐ आपनै ब्रजभापा माहि कौन कौन से छद लिखे है ?

कवित्त, सवैया, कु डली, अतुका त, गद्य काव्य, सामयिकी आदि ।

☐ आपनै अब तानू लगभग कितेक छद लिखे हे ?

ई ता ठीक ठीक नाय कह सकू पर अब मै बिनकू छाटबे मे लग्यौ हू तो कोऊ 500–600 छद के अ दाज मे लिख चुक्यौ हू । जामे खडी बोली केऊ है । ब्रजभाषा केऊ है । कछु उदू के शेरऊ मेन लिखे हैं ।

☐ आपनै कोऊ प्रब ध रचना ऊ लिखी है का ?

कोई नाय लिखी ।

☐ आपके प्रकासित ग्रन्थ कितेक है अरु कौन कौन से है ?

काई नाय ।

☐ आपके अप्रकासित ग्रन्थ कितेक है अरू बिनके प्रकासन की का योजना है ।

मै बिन्नै आपई छाट रह्यौ हू जाके पीछे कछु सोचू गौ ।

☐ आपकू अब तानू कोऊ पुरस्कार या उपाधि मिली है का ? मिली होय तौ बाकौ बिबरन देबे की किरपा करें ।

मोकू छोटे छोटे पुरस्कार जैसे कवि सम्मेलन मे मिल्यौ करै है अनेकन स्थानन ते मिलते रहे है । मै एक बेर मथुरा आकासवानी पैऊ अपनौ कविता पाठ सुनाय आयौ हू पै मैने देख्यौ कै म्हा पै तौ उनकी जौ चिलम भरे बिनकू ई बेर बेर बुलायौ जाय ।

रही बात उपाधि की मोय भरतपुर के कवि मचन पै 'भरतपुर भूषण' के नाम ते पुकारै—महाकवि भूषण की तौ मै चरनन की धूरऊ नाऊ । सायद मोय प्रोत्साहन देबे के मारे जा नाम ते परिच करावै ।

☐ आपके सम्मान कहा कहाँ भये है अरू कौन कौन सी सस्थान ने करे है ?

1 राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी जयपुर द्वारा
2 हि दी साहित्य समिति भरतपुर द्वारा
3 जिला पुस्तकालय भरतपुर द्वारा

☐ आपने पद्य ते हटि क और कहा लिख्यौ है ?
अबई तौ लिख्यौ नाय पर अब जाकी आर बिचार कछु कछु बनबे लग्यौ है ।

☐ आप मच के कवि के रूप मे सौ भाग लनै लगे हे अरु भरतपुर त बाहर कहा कहा भाग लीनौ है ।

तारीख तौ ठीक याद नाय पर बीस एक बरस है गय हुइ गे । कुम्हेर, डीग, कामा बयानौ, नदबई, गौबरधन आदि ।

☐ मच के कविन के बिसै मे आपकौ का बिचार है ?

आज के समै को मच प बोलबे बारे कविन ने भौत ही नीचौ स्तर करा लियौ है बिन्नै तौ ई उद्देश्य बनाय लियौ है कै जनता कू चुटकले सुनाय सुनाय कै प्रसन्न करिबौ अरु पइमा सीधौ करिबौ ।

☐ आप ब्रजभापा कौ सबसौ बडौ रचनाकार कौन कू मानै है ।

कहिबौ बडौ कठिन है ब्रजभाषाऊ कौ अथाह सागर है । जाके सूरदास, रसखान मीरा, धनान द आदि अनेकन कवि ऐसे है जो जा भाषा के हीरा है ।

☐ मच के ब्रजभाषा कविन माहि आप सबसौ ज्यादा प्रभावित कौन सौ भये है ?
ईऊ कहिबो बडौ कठिन है क्योकि हर एक कवि को एक रस नाय होय हास्य रस मे कुम्हेरिया जी की कहन वरुण चतुर्वेदी की पैरोडी ।

☐ ब्रजभाषा माहि आपकू सबसौ सबल छद कौन सौ लगै है ? आपने ऐसे कितेक-कितेक छद लिखे है ?

कवित्त, सवैया । अबई कछु गिनती नाय भई आजकल इ हैं छाटबे मे लग रह्यौ हू ।

☐ आपनै 'अमृत ध्वनि' छद लिखयौ बाकी बानिगी बताओ ?

लका मे निश्चर सुभट, जुरे जुत्थ के जुत्थ ।
'कुलसेखर' हनुम त सो लगे जब्ब रिपु गुत्थ ॥
गुत्थत दुदजन खग्गग्गगहि कर कुधधर उर ।
गज्जत तज्जत कुद्द कुद्द कपि रज्ज जिय सुर ॥
कट्ट कट्ट कर द त कटककत बब्बर वका ।
टुट्ट टुट्ट सिर फट्ट फट्ट तन पट्टन लका ॥

☐ आपकू काऊ और कवि कौ अमृत ध्वनि छद याद होय तौ सुनाओ ?

बीना नाद निनाद सुन चर अचरा चर झार ।
ज्ञान सिन्धु गोता लहै सुनते ही झ कार ॥
सुन झकारम् दुखै जारम कष्ट निवारम् ।
नि मम् ज्ञ न प्रसारम् अज्ञय टारम् ॥
वेद उच्चरत चहु दिस गु जत सुनत प्रबीना ।
कीरहु बोलहि नच्चत मोरै बज्जत बीना ॥

☐ ब्रजभाषा माहि राधा क हाई की लीलान कूँ छोडिके और कछु नाय या कथन सौं आप सहमत है या असहमत ? याके विवध सरूपन पै नेक सौ परकास डारौ ?

ई कहनो तो बिलकुल गलत है । जाकौ मतलब तो ई हुओ कि जिन आदमीन की ऐसी धारणा है बि नै सिरफ ब्रजभाषा म राधा और कृष्ण की लीलान कू ही पढयौ है । ब्रजभाषा मे तो पूरब ते पश्चिम और उत्तर ते दक्षिण तक अनेकन विषयन पै ब्रजभाषा प्रेमीन ने लिख्यौ है । ब्रजभाषा क साहि य कू यदि ध्यान पूवक पढयौ जाय तौ जा साहित्य म राधा क हाई की लीलान नें छाडिकै प्रकृति वणन, राजा महाराजन की सूर वीरता कौ वणन बिनकी तरबारन कौ वणन भौत विस्तत तौर ते पढिबे कू मिलेगौ । अष्टछाप क कविन कौ, पद्माकरजी कौ, सूदन कौ, बु देलखड के कबिन कौ इन विसन पै साहित्य भरयौ पडयौ है ।

रही बात उपाधि की मौय भरतपुर के कवि मचन पै 'भरतपुर भूषण' के नाम ते पुकारै—महाकवि भूषण की तौ मै चरनन की धूरऊ नाऊ । सायद मौय प्रोत्साहन देबे के मारे जा नाम ते परिचै करावै ।

☐ आपके सम्मान कहा कहा भये है अरू कौन कौन सी सस्थान ने करे है ?

1 राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी जयपुर द्वारा
2 हि दी साहित्य समिति भरतपुर द्वारा
3 जिला पुस्तकालय भरतपुर द्वारा

☐ आपने पद्य ते हटि क और कहा लिख्यौ है ?
अबई तौ लिख्यो नाय पर अब जाकी ओर बिचार कछु कछु बनवे लग्यौ है ।

☐ आप मच के कवि के रूप मे सौ भाग लैबै लगे ह अरु भरतपुर ते बाहर कहा-कहा भाग लीनौ है ।

तारीख तौ ठीक याद नाय पर बीस एक बरस है गये हुइ गे । कुम्हेर, डीग, कामा बयानौ, नदबई, गौबरधन आदि ।

☐ मच के कविन के बिस मे आपकौ का बिचार है ?

आज के समै को मच प बोलवे बारे कविन ने भौत ही नीचौ स्तर करा लियौ है बिन्नै तौ ई उद्देश्य बनाय लियौ है कै जनता कू चुटकले सुनाय-सुनाय कै प्रसन्न करिबौ अरु पइना सीधौ करिबौ ।

☐ आप ब्रजभाषा कौ सबसौ बडौ रचनाकार कौन कू मानै है ।

कहिबौ बडौ कठिन है ब्रजभाषाऊ कौ अथाह सागर है । जाके सूरदास, रसखान मीरा, धनान द आदि अनेकन कवि ऐसे है जो जा भाषा के हीरा है ।

☐ मच के ब्रजभाषा कविन माहि आप सबसौ ज्यादा प्रभावित कौन सौ भये है ?
ईऊ कहिबो बडो कठिन है क्योकि हर एक कवि को एक रस नाय होय हास्य रस मे कुम्हेरिया जी की कहन वरुण चतुर्वेदी की पैरोडी ।

☐ ब्रजभाषा माहि आपकू सबसौ सबल छद कौन सौ लगै है ? आपने ऐसे कितेक कितेक छद लिखे है ?

कवित्त, सवैया । अबई कछु गिनती नाय भई आजकल इन्हें छाटबे म लग रह्यौ हू ।

☐ आपनै 'अमृत ध्वनि' छद लिखयौ बाकी बानिगी बताऔ ?

लका मे निश्चर सुभट, जुरे जुत्थ के जुत्थ ।
'कुलसेखर' हनुम त सो लगे जब्ब रिपु गुत्थ ।।
गुत्थत दुदजन खग्गग्रगहि कर कुधधर उर ।
गज्जत तज्जत कुद्द कुद्द कपि रज्ज जिय सुर ।।
कट्ट कट्ट कर द त कटककत वब्बर वका ।
टुट्ट टुट्ट सिर फट्ट फट्ट तन पट्टन लका ।।

☐ आपकू काऊ और कवि कौ अमृत ध्वनि छद याद होय तौ सुनाऔ ?

बीना नाद निनाद सुन चर अचरा चर झार ।
ज्ञान सिन्धु गोता लहै सुनते ही झ कार ।।
सुन झकारम् दुखै जारम कष्ट निवारम् ।
चिदा द नम् ज्ञ न प्रसारम् अज्ञय टारम् ।।
वेद उच्चरत चहु दिस गु जत सुनत प्रबीना ।
कीरहु बोलहि नच्चत मोरै बज्जत बीना ।।

☐ ब्रजभाषा माहि राधा क हाई की लीलान कूँ छोडिके और कछु नाय या कथन सौं आप सहमत है या असहमत ? याके बिवध सरूपन पै नेंक सौ परकास डारौ ?

ई कहनौ तो बिलकुल गलत है । जाकौ मतलब तो ई हुऔ कि जिन आदमीन की ऐसी धारणा है बि नै सिरफ ब्रजभापा म राधा और कृष्ण की लीलान कू ही पढयौ है । ब्रजभाषा मे तो पूरब ते पच्छिम और उत्तर ते दक्षिण तक अनेकन विषयन पै ब्रजभापा प्रेमीन ने लिख्यौ है । ब्रजभापा के साहित्य कू यदि ध्यान पूवक पढयौ जाय तौ जा साहित्य मे राधा क हाई की लीलान ने छोडिकै प्रकृति वणन, राजा महाराजन की सूर वीरता कौ वणन बिनकी तरबारन कौ वणन भौत विस्तत तौर ते पढिबे कू मिलेगौ । अष्टछाप के कविन कौ, पद्माकरजी कौ, सूदन कौ बु देलखड के कविन कौ इन विसैन पै साहित्य भरयौ पडयौ है ।

☐ या समै मे भरतपुर के ब्रजभाषा रचनाकारन मे आपकू सबसौ ज्यादा कौन पसद आवै है अरू बाकौ कारन का है ?

मोय तौ सबते ज्यादा पसन्द या समे भरतपुर के ब्रजभाषा रचनाकारन मे वरुण चतुर्वेदी लगै है जाकौ कारण है—

मुख आभा कछु और है, छन्दन म रस और ।
मीठे मीठे बोल सुना मन है जात विभोर ।।

☐ पढत प्रतियोगिता मे आपने भाग लीयो है का ? याके बारे मे आपके का विचार है ?

लीयौ है–पढत की दैन तौ भगवान की दैन है । कसौऊ विद्वान होय बू लिख सकै पर वाय अच्छी तरिया ते पढके मचन पै सुनाय ना सकै और कम पढयौ आदमी जापै भगवान की कृपा है ऐसौ सुन्दर पढै जाय सुनक जनता छेम हे जाय ।

☐ आपने कौन कौन से रसन माहि कविता लिखी हे ?

वीर रस की कविता तौ मै लिखूई हते जाके अतिरिक्त श्रृगार, भक्तिरस, शान्त रस आदि ।

☐ आपकू भरतपुर को भूसन कह्यौ जाय । याकौ का कारन है ?

जाकौ कारन तो कहिबे बारे ही जानें । मै कहा कह सकू ।

☐ आप अपनी सबसौ बढिया रचना सौ कछु लैन सुनाओ ।

मा जगदम्बे चलौ अयोध्या,
राम ने तुम्हे बुलायौ है ।
दानव सेना पहूच गई है,
हा हाकार मचायौ है । माँ जगदम्बे

मैया ऐसी युक्ति करियौ
तोप तमचा धरे रहै ।
ऐसी मति तू फेर भवानी,
सैनिक सारे खडे रहे ।

शभु निशु भ महाबलकारी ।
मा तुमन सहार किए ।
सैन सहित सब दानब मारे,
भूमि भार उतार दियौ ।

भीर परी तेरे भक्तन पै
द नव दल पै टूट परौ ।
रथ पहुचे बाते पहले मा,
आप अयोध्या जाय अडौ ।

☐ ब्रजभाषा अकादमी सो आपका का अपेक्षा है ?

ब्रजभाषा अकादमी ब्रजभाषा के माध्यम सौ देस कू कल्यानकारी भावनान के ग्यान सौ त्याग, बलिदान देसप्र म कू बढावौ दे सकेगी जाते राष्ट्र की सेवा करबे कौ माग प्रस्तुत कर सकेगी ।

☐ नई पीढी कू आप का स देस देनो इचाहौ ?

नई पीढी तौ आजकल शब्दजाल मे फसके न लय कौ ध्यान रखे न तुक और यति कौ । नई पीढी कू देस को बतमान दसाकू देखके अपनी कवितान द्वारा भ्रष्टाचार काला बाजारी आतकवाद अरु ऊचनीच कूँ दूर करबे कौ प्रयास करनो चइये । देस मे अनुसासन अरु चरित्र कू सुधारवे कू लेखनी उठानी चइये ।

☐ ब्रजभाषा की रचनान सौ देस कौ कछू भलौ है रह्यौ का ?

ब्रजभाषा की कविता मे या यो कहिये कै ब्रजभाषा साहित्य मे बडे ही सरल, मधुर सब्दन के प्रयोग सो मानस के हृदय पटल पर दया धम की ओर ध्यान आकर्षित हैबे लग्यौ है । याते दस म सुधार अवश्य आवैगौ ऐसो हमारी कामना है ।

☐ आपकी भावी योजनान पै नैक तौ परकास डारे ?

मेरी भावी योजना जि है कै कछुऊ मेने अब तानू लिख्यौ है बू बिखरौ भयौ है । बाय छाट छाट के क्रमबद्ध करू फिर बाय काई कौ सहयोग प्राप्त करकें छपवाबे कौं प्रयत्न करू ।

☐ ब्रजभाषा की सेवा के सम्बद्ध मे कछु सुझाव देऔ ?

ब्रजभाषा की सेवा तौ तबई है सकेगी जब जा भाषा के प्रेमी अपने स्वाथन नें त्याग के एकता की भावना ते काम मे जुट जाइ गे ।

—डा० रामकृष्ण शर्मा

साँचे बोलन कौ कवि माधौप्रसाद 'माधव'

ब्रज मे ई उक्ति बहुतइ दोहराई जाए है कै—

लीक लीक गाढो चल, लीकहि चलैं कपूत ।
लीक छाडि तीनौ चलैं सायर सिंह सपूत ।।

निस्चैई या उक्ति मे लीक छाडि कै चलबे कौ मूल भाव मौलिक चेतना अरू सामयिक सोच सौ है । लकीर के फकीर उनिकैं जाने कछू लिख्यौ बू साहित्य समाज कू कछू दै ना सकौ अरु समय के थपडेन के संगइ समूल नष्ट है गयौ । सामयिक सोच काव्य कौ प्रान होय । आगे चलिकैं याकौ युगबोध सम्प बनै है । ब्रजभाषा मे लिख्यौ गयौ साहित्य भावनान ते जुरौ भयौ साहित्य है । स्यात याई कारण ते बात बात पै सटीक तोड दैबे बारी उक्त होटन प तरती भई दीसैं है ।

कबि माधव बीर भूमि लोहागढ के बाकी अन्ना के बाके कवि है । इन्नैं राधाकृष्ण अनुराग अरु प्रेम अलापन मे ई अपनी रचना धर्मिता कू ना खपायौ—इन्नैं तौ पैंड पैंड पै जागरन अरु जिजीविषा कौ मत्र फूँक्यौ है । जी हुजूरी, धौंस चापलूसी इन्नैं ना लोक व्यौहार मे आन दई ना कलम पै चढन दई । इनकौ जि करबौ कितनो साथक है —

कवि होवैं निर्भीक चापलूसी का जानैं ?
साँचे बोलैं बोल, काहु की धौंस न मानैं ।
साचौ कवि है वही, समय कौ मूल्य बतावै ।
हो समाज गुमराह साधकर राह दिखावैं ।
कवि दपन है देस कौ, भलौ बुरौ करकैं मनन ।
सदाचार सदभाव कौ जन मन मे करते सजन ।।

'होली' कौ त्योहार ब्रज के गाव गाव मे मेल जोल भाई चारे कौ मत्र फूकें है । आज के आपाधापी भरे युग मे कवि होली की परम्परा कू दरसामतौ साम्प्रदायिक सौहाद्र कौ कैसो सचेतना भरो मत्र फूक रयौ है—

वेद के विधान सो, विधान भव्य भारत कौ,
मनु और महर्षि कृत काहू की न चोरी है ।
वैर भाव भेद भाव भूलिबे भुलाइबे की,
भारतीय तत्र की प्रशसनीय थ्यौरी है ।
गाऔ बजाऔ हँस चदन लगाऔ भाल,
गालन गुलाल डारौ रग की कमोरी है ।
सवधम सबजात आलिगन मिलन कौ,
भारतीय विधि कौ रसीलौ पव होरी है ।

कवि माधौ नै होरी के माध्यम ते आज की समय की माग कू उजागर कीनौ है । वग भेद की खाई पाटवे कौ सदेसौ दीनौ है । साचे अथन मे माधौ जनता कौ कवि है—जनता ते जुरौ भयौ कवि है । जनता क दुख दद वाके अपने दुख दद है । शासन के प्रति विद्रोह के मुखर स्वर अरु असतोष को भाव कवि नै अपनी कैइ रचनान कौ वण विषय बनायौ है । कवि की दो टूक सपाट बयानी कितनी साची है—

जनता कौ जीवन इहा आज सुरक्षित नाहि ।
आबौ जाबौ तौ अलग, घर मे मारे जाहि ।।
घर मे मारे जाहि विवश धन माल गमावे ।
वायुयान लुट जाय रेल बस कब बच पावै ।।
कहा सुरक्षित रहै कहे सोचे क्या बनता ।
जनता शासन माहि दुखी सब विधि सौ जनता ।।

जहा पै वायुयान तक लुट जाते होय वा ठौर रेल और बसन की तौ बिसातई कहा है ? कवि की चिता या बिगडती दसा कौ कारन तलाशबे की है । बाकौ सटीक निष्कष है—

दसा देस की मीत निरन्तर बिगड रही है ।
नेताओ की फौज परस्पर झगड रही है ।।

नेतान के या झगरे नै देस कू झगरेन मे फसायौ है । या कारन सौ समाज मे असतोष, पारस्परिक कटुता वैरभाव बढयौ है। कवि नै अपनी कैई रचनान मे या असतोष कूँ उकेरौ है । समाज मे गरीबी, तगी अरू भेदभाव बढ्यौ है । कवि की पैनी दृष्टि इन अभाव माऊ गई है । धन्ना सेठन की भरती भई तिजूरी एक ओर कू, मजूर के भूख ते बिलबिलाते बच्चा दूसरी ओर कू कवि मन मे वितृष्णा के भाव भरै है । या असमानता के अभिशाप कू कवि अनदेखी का तरिया करै ? कवि या कौ कारन

तलाशै है—काम के अभाव की बात बेरोजगारी की बात वाकू या के मूल मैं बैठी पावै है।

फिरयौ करू तेली कौ बल बन घानी मे,
इतने पैऊ मिले ना रोटी पेट भरकै।
झूठ साच बोलू औ डोलत हू बौरान भयौ,
ढोवत हू बोझ भार सुनौ इमि खर कै।
मेरे पाप दापन कौ मै ही भोगू गौ भोग,
सुत सुता दारा सब साथी यारजर कै।
सौ सौ कोस ढू ढ आयौ, काम कहू मिलै नाहि,
बिना रोजगारी रोज गारी देवै घर कै।

ऋतु वरनन ब्रजकाल कौ प्रधान अग रयौ है। नायिका भेद की तरिया श्रृगार रस के न्यारे रूपक तलाश कै उहो ऋतून कौ जो वरनन मिलै है—बाले सिंगारी कवि भलैई सतोष कर ले—आज कौ आम आदमी पलाश, पलव कदम्बन पै छाई हरियाली ते कहा हासिल करैगौ ? पैड पैड प कसकते अभाव, नित्त की दाताकिलकिल ते ऊ ऊपर कू उठै जब ना ? कवि नै या पीडा कूँ अभिव्यक्ति दइ है। लीक ते हटि कै बसन्त कौ साची तसवीर देखौ—

भूमरैई चुनौ नाज साग कौ तगादौ भयौ,
सूख खीसा देख याद आई भगवन्त की।
सोच्यौ मन हार हाय कौन पाप कीने राम,
जो पै ऐसी दीनता दिखाई मोय अन्त की।
तात मात भ्रात परिवार पुत्र मित्र आदि,
धन के सखा हे सब बात यह तत की।
आर वार चगौ औ त्यौहार बार नगौ ऐसी,
प्रान सोख आई आज पचमी बसन्त की।

नाज साग की तगी बारे कू बसन्त की सोभा लुभावै नाए—वाक पीते कू पजारे। वाकू प्रानदायी बसन्त प्रान सोख लग है। या ते जादा साचौ चित्र कहा उकेरौ जाय। कवि यथार्थ की भाव भूमि पै बैठौ दीखै। वाकू मिथक, प्रतीकन की उबाऊ शैली पसन्द ना आवै। बाकू रोस है अपने विन प्रतिनिधिन पै जो चुनकै जाते भए हू—चुनन बारेन कूँ भूल जाए। ताडना दतौ भयौ कवि कितनौ साच कर रयौ है—

मेरी ही कृपा सौ आज प्राप्त कीजौ मत्रीपद,
भूल्यौ है असली रूप फूल गयौ सान मे।
भाई विरादरी कू गिनै नाहि नैकहु अब,
कुरसी की खातिर घुस बैठयौ चमचान मे।

मोरी की ईट मेन गेट पै लगाइ दइ,
मागत हौ टूक कछू रही नही ध्यान मै ।
जाली जालसाजी की मोसो लिखत बात नित्य,
ह्वै है मुख कारौ तै कलम कहै कान मे ।।

चारो लग के घटाटोप अ धियारे मे मारग ना सूझ रयौ । लपट चोर लवारन की फौज इत वितकू ठाडी दीस पर । छलिया प्रपचीन कौ जोर बढि गयौ । कवि उपाय की तलाश कै ताई चिंतित दीख रयौ है । साचमाच कवि की चिन्ता आज के स्वस्थ तत्व चिंतक देशभक्त की चिन्ता है । वा देशभक्त की जानै देश की अस्मिता कू प्रानन ते ऊपर करिकै मानौ है—

लपट चोर लबार सबइ मिल, देवत है सब एकइ नारौ ।
भारत नाव फँसी मझधार मे मूक खडे मत याहि निहारौ ।
जातिन जाल विसाल भयो अब, राज करै छलिया छलवारौ ।
माधव बेगि उपाय करौ अब जा विधि दूर भग अ धियारौ ।

कवि 'माधव' कौ ब्रजकाव्य सचेतना कौ काव्य है । इनकी रचनान ते वीर ओज अरु आधुनिक भाव बोध की निझरिणी प्रवाहित है रई है । धरती के या कवि ते ब्रजभाषा कू बहुत आसा है ।

—रामशरण पीतलिया

आधुनिक युग-चेतना कौ पुरानौ कवि माधौ प्रसाद 'माधव'

करील की कुजन बारौ खार-खण्डियार और खरी खरी बतियान कौ बतरस पान करिब बारै ब्रजवासिन बारौ कालिंदी कूल कदबन की डारन की छैया मे अनियारे ब्रज रज मे लोट लोट परिकम्मा मे पैड पैड पै कन्हैया की लीलान को दरसन करिवे बारौ ब्रज क्षेत्र आज लौ सूर, मीरा रसखान आदि की ब्रज माधुरी सौ सरावोर है रह्यौ है। याही कारन आजहू जब कोऊ कवि अपनी कलम उठायकै ब्रजभाषा मे कछु लिखवै बठै तौ बा की छन्द रचनान प कवित्त सवैया और षट्पदी हावी है जाये अरु राधा कृष्ण की लीलान कौ मनोहारी बरनन बाकौ प्रिय विषै है जाओ करै। ब्रजभाषा के अनूठे कवि माधौ प्रसाद 'माधव' तौ जामे वा युग के कवि है जा युग मे भरतपुर मे कवि गुरु 'कुल-शेखर' चम्पालाल 'मजुल' सूयका न शास्त्री, वैद्य राधारमण 'मोहन' प्रभुदयाल 'दयालु' गिर्राज प्रसाद मित्र, आदि ब्रजभाषा के समय कवि रचना कियौ करै य। भरतपुर शहर की नगर परिक्रमा ते बाहर बगीचीन पै काव्य के पठन्त की प्रतियोगिता हुऔ करैई। कविगण अपनी रचनान के सग सग ब्रजभाषा के श्रेष्ठ रचनाकारन की रचनान कौ अपनी बाणी मे हाव भावन सौ पाठ करौ करै यें। बा समय अच्छी कद-काठी और मिलिटरी तै लौटे भये पहलवान जैसे मल्ल कवि माधौ प्रसाद 'माधव' वीर रस की घनाच्छरी और अमत ध्वनि छन्न कौ ओजपूण पाठ करौ करय। सुनि सुनि कै ज्वानन की भुजा फडक उठई धरती डोलबे लग जाईई, आसमान गूँजव लगि जावैऔ। आज लौ वू आवाज मेरे कानन म गूँज रई है याही कारन सौ 'माधव' जो कू ब्रजभाषा कौ आधुनिक 'भूपन' कवि कहिबे म यहा प्रबुद्धन कूँ अच्छो लगिवौ स्वाभाविक लगगो। पर जब तै हमने होस सँभारौ और कविता लिखिवै को और काव्य गोष्ठीन म सुनायव कौ शौक लगौए तब तै हमने 'माधव' जी कौ एक औरऊ रूप देखो। व मात्र वीर-रस या सिंगार रस या राधा कृष्ण कौ रस भरी लीलान के गायक ही नाय वरन आधुनिक युग की विश्व समस्यान म हू रुचि रखें, भारत की राजनीति, चुनाव, भ्रष्टाचार, गरीबी, मँहगाई आदि सब पै उनकी नजर पडिए उनकौ कवि भीतरई भीतर, आक्रोश ते उबल पडौ ए। और उनकी रचनान मे कबहुँ क्रोध तै तौ कबहुँ व्यग तै कछु न कछु कह उठौए वे सरस्वती वदना हू करै तौ मानव हृदय की पीरा के निवारन हेतु माता सौं प्रार्थना करै देखो—

वीणा कर मे ग्रहण कर जन मे भर दै बुद्धि।
मन बाणी औ करम सौ मनुज होय सब शुद्ध ।।

□

वीणा नाद निनाद सुन चर अचराचर झार।
ज्ञान सिंधु गोता लहै, सुनते ही झनकार ।।

□

'माधव' अग्य करहु विग्य आप प्रवीना
झन झन झकृत वेद गु जरत बज्जत वीना।

'माधव जीनै भरतपुर लोहागढ की अजेयता ते हुयस कै 'लडि लेक' क इतिहास प्रसिद्ध हमला कौ बरनन बडी ओजपूण भाषा मे की हो ए पर उनकी दृष्टि कतई नाँय भटक एक तरफ तौ वे कहै कै—

यौ तौ दुग अनेकन रचकै
वीरन नै तयार किय थे।
लेकिन लडि लेक के गोला
मैने पानी भौति पिये थे।
टाड लिख गयौए इतिहास माहि
पढौ नाय का बा कौ लेखो।
किसन स्वय पीताम्बर ओढे
करते गढ की रक्षा देखो ।।

इतिहास की जी घटना भरतपुर वासीन कौ सीना फुलायवै कूँ पर्याप्त है पर कवि की दष्टि तौ आज की चेतना ते सम्पन्न है सो बे मात्र या घटना तै हुलसाय कै ई कैसै रह जाते सो उनने आज की वा दुग को पीरा या प्रकार सौ व्यक्त कीन्ही ए कै—

देख रहे हौ कि-तु मौन सब
जीण शीण मेरी काया कू।
मेरे अवयव कटे जा रहे
समझ न पायौ या माया कू।
आज सिख डी बने साहसी
दिखा रहे ऐ मोय जबानी।

कुटिल, कमीने, कामी मिल कै
मिटा रहे ऐ सुनौ निसानी ।

उ हे या अजेय दुग की या पकार की काट छाट करिवौ बुरौ लगि रहौ ए हमने ऊपर की पक्तिन मे देखो ए । उ हे तौ हमारे स्वार्थी सुभाव तै पीरा है रही है या दुग ने बाहरी हमलान ते रक्षा करी सो तौ ठीक ए पर या दुरग ने हमे बाढन तेऊ बचाओए या बात कौ तो हमे एहसान माननौ चहिए देखो—

सन चौबीम की अध रात्रि मे
बाध टूट गयौ जब अलवर कौ
हा-हा कार मच गयौ चहु दिस
बूढौ हौ पर मे नही सर कौ ।
मिल्यो मुझे जिनकौ सरक्षण
उनकी रक्षा मेन की है ।
चोर लफगे, गुडा दममन
सब ते बाजी मन ली है ।

दुग आज भरतपुर वासीन के स्वाथ कौ सिकार है रहा है । यहा छाटे बडे गरीब, अमीर, नेता, ठेकेदार सबन न मिलकै याकी माटी बेच खायी और ऊँचे ऊँचे भवन बना कै या कौ नाम निसान ह मिटाय दीनौ ए । कवि ने बडे मार्मिक शब्दन मे कही ए कै—

मेरे गौरब की गाथायें,
धूमिल है कै मिट जायेगी ।
नाम अमर इतिहास कर गयौ
शेष कहानी रह जायेगी ।
मेरौ जब तक शेप चि ह है
लोहागढ कौ नाम रहगौ
मिटा दियौ यदि तुमने याकूँ
गढ लोहागढ कौन कहेगौ ।

'माधव' जी वीरता और और बलिदान के पुजारी रहेएँ । भरतपुर की वीरता के सग सग उनने राजस्थान के वीरन कू हू अपनी रचनान मे अमर कर दीनौ ए 'राजस्थान' नामक कविता मे उननै कही ए कै–

सतिया तौ होती रहती थी
पर सती पदमिनी और कहा है।

□

रणथम्भौर के अजेय दुग की
आन बडी मतवाली है।
हल्दी घाटी के कन कन मे
छायी अब लौ लाली है।

□

दुर्गादास के रण कौसल मे
किल किला उठी थी काली है।
कोटा, बूँदी और चित्तौड की
देखौ सान निराली है।

□

राना प्रताप सौ वीर सिरोमणि
बातन खोई आन की।
धरन हेत अड गयौ अडगी
आहुति दै दई प्रान की।
पन्ना, सागा गोरा–बादल
सभी मिसाले शान की।
कन–कन ते आवाज आ रही
जय बोलो राजस्थान की।

या प्रकार सौ बीरो बलिदानियो की गौरव गाथा के सग-सग उनकी नजर जीवन की सबई समस्यान पै केन्द्रित रही ऐ। 'कलजुग' नाम की उनकी रचना आज की समस्यान कौ जीतौ जागतौ चित्रन करिवै वारी उनकी प्रसिद्ध रचता रही ऐ या कै कछु अस देखौ—

तुमने सतजुग देख्यो त्रेता देख्यो
द्वापर देख्यो अब देखौ मोकूँ।
मैं कलजुग हूँ।

तुम सोच रहेओ ई जावेगो
बू आवेगौ सान्ति मिलेगी
किन्तु कबहु ऐसौ नहिं होगौ
भ्रष्टाचार बढ गौ पल–पल
अन्यावन कौ अन्त न होगौ ।

□

मन्दिर मस्जत दोनों मेई
सस्त्रन के आगार बनिगे ।
ल्हासन के अम्बार लगिगे
खाकी वरदी चौको देगी ।

कलजुग यानी आज कौ युग कितनौ विकराल रूप धरिकै भारत की सस्कृति और सभ्यता कू ग्रस रह्यौ है या को सजीव चित्र या रचना म देखवे कू मिलै—

चोरी हु गी, कतल बढ़िगी
भ्रष्टाचारी सासक होगी ।

□

नगो नाच होयगो जग मे
ये तो बचपन हा है मेरौ
तरुनाई जब आवगी
सूचित करि दऊँगो आगे
धरि धीरज देखौ तुम मौकूँ
में कलजुग हूँ, मै कलजुग हू ।

या भारत मैया के लाडिलै सपूतन नै कहा सपनौ देखौ हतौ अरु या देस के नेतान ने याकौ कहा रूप बनाय दीन्यौ है या बात पैऊ बडी सजगता सौ कवि ने अपनी कलम पैनाई है देखौ–

ये मतवारे देस–प्रेम के
जिनने हँस-हँस फांसी खाई ।

असफाक, लाडली, विस्मिल, रोसन
भगतसिंह ने जान गमाई।

❑

हाय सहीदन की कुरबानी
आज है गयी निसफल सारी ।
भ्रष्टाचारी सासन म अब
जनता फिर रही मारी मारी।
उनकी होड लगी करती, ही
त्याग और बलिदानन मे ।।
अब कुर्सी गठ जोड चल रही
सासन मे बेइमानन मे ।।

'माधव' जी ने सहीदी दिवस' नाम की अपनी अमर रचना मे ऊपर लिखै बिचारन कूँ विराम या तरिया ते दीन्हो ए कै—

आज सहीदी दिवस मन रह्यौ,
याद तुम्है कर लूँगौ मै ।
बिना फूल माला इन सबकूँ,
सद्धाजलि दै दूँगौ मै ।

माधव जी ने अपनी उमर के अस्सीवें न्सक मे 'तरुण रक्त की पुकार' लिखकैं सिद्ध करि दीन्हौ है कै अबई उनके बान नाय थकेए वे आजऊ राज्स्थानी चारण कवीन की तरियाँ वीरन के हृदय मे हुकार भरिवे की सामथ रखें है। भ्रष्टाचार और अन्याव के विरोध मे खडे तरुणन कौ रक्त खौल उठौग वे वन्ध्ु करिवे कूँ कमर कसिकै तैयार है गये है इन पक्तिन मे देखौ -

उठे है वक्ष तान कै सीस बाध कै कफन।
ऊँच-नीच जात पात, हागी सुनौ ये अब दफन।
उठ रही हे आधिया, तूफान बनिकै आ रहे ।
युवा मचल उठे है अब, अँगार हाथ ला रहे ।।

या देश कौ नौजवान अब जाग उठौए और जाति-पाति और ऊँच नीच के भेदन कूँ खतम करिवे कू अगार लै कै आ रहोए कैसी ओज पूर्ण कल्पना ए। या सौं कवि की

आधुनिक दष्टि कौ अनुमान होय कै वे या उमर मेऊ आज की समस्यान तै दूर नायै । हमारे देश माहि लोकत त्री शासन मे चुनावन कौ दौर दौराऊ खूब चलै । सबई दल अपनी नीतिन कूँ चुनाव घोषणा पत्र मे लिखै । माधव' जी ने ऐक अनौखो घोषणा पत्र लिख्यौ । जाकौ नाम धरौए 'भ्रष्टाचार कौ चुनावी घोषणा पत्र' यानी चुनाव लडिवे कू अब भ्रष्टाचारी हौ नौ जरूरी ए देखो—

मे चाहू जाकू जितवा दँऊ
मै चाहू जाकू हरवा दऊँ
मे चाहु कुरसी दिलवा दऊँ
मै चाहू जब ताहि हटा दऊँ।

या प्रकार सौ भ्रष्टाचारई हमारे यहा के चुनावन कू तथा राजनीति कौ निरधारन करैगौ । बिचारी जनता तौ मूक दरसक बनिकै देखती रहेगी कछु पक्ति देखो—

भाव याव मेरे हाथन मे चलते सब मेरी बातन मे ।

□

जितने शासन के अधिकारी जितनौ अधिक भ्रष्ट है भारी ।
ता की कुरसी सदा सुरक्षित, करता मुझे प्रणाम ।

□

तसकर काम कर रहे जित उनकू सरक्षण है मेरौ ।
आये मुसीबत जब भी उन प, खुलो हुऔ है मेरी डेरौ ।

काऊ जमाने म हमारे देस म सच्चे और ईमानदार लोगऊ राजनीति मे हते । उनमे गुलजारी लाल नन्दा कौ नामऊ उन नेतान की पात म अमर ह गयौ जो या देस ते भ्रष्टाचारै भगावे को बीडा उठाओ करेये । कछ दिना जनता के बीच 'नन्दा कौ फन्दा' बडौ विख्यात भयौ । पर भ्रष्टाचार आज लौ नाय मिटौ 'माधव' जी ने बाकौ जिकर या तरियो सौ कियौ है—

नन्दा जैसौ कौन देस मे, टिक न सकौ जो मेरे आगे ।
मेरौ लख कै रूप भयकर जो सच्चे थे सब ही भागे ।
मै ही राम कृष्ण दुनिया मे भजन करौ दिन रात ।
कोठी कूलर कार मिलिगे हो चाहे कोऊ हू जात ।

हार गयौ हू मे चुनाव मे, हिम्मत मैने नहि हारी है ।
अरबो खरबो लूटौ अब लौ, फिर बोलो का लाचारी है ।

□

जनता मुखी राज म मेरे, काम सभी का होता है ।
पैसा तौ लगता है लेकिन, मनुज कभी नही रोता है ।

व्यग के ऐसै कसीले कौडानतै घोडा की तरह पीठै उधेडवे बारौ कवि 'माधव' दल बदलून कूँ हू खरी खरी सुनायवै मे नाय चूकै दो पटपदी छ दन मे इनकी कैसी कैसी खबर ली ही है सो देख लेऊ–

देस पतन की ओर अग्रसर होतौ जातो ।
जन मानस है विकल न कल, पलभर कू पातो ।
जितनै दल है इहा, विस्व मे नाय कही है ।
समझ न पावै कौन गलत है कौन सही है ।
अब चुनाव अति निकट है, कपटिन सौ रहिये सजग ।
चुनौ सही सरकार प्रिय, दल बदलुन कू कर अलग ।।

कछु ऐसेई विचारन ते युक्त एक 'कुण्डली' छ द देखवे जोग है देखौ–

दल बदलू नेतान की मित्र दोगली नीति ।
साबधान इनसौ रहौ करौ न इनसौ प्रीति ।
करो न इन सौ प्रीति, भूलि चुनिये न इनकू ।
बोट दीजिये आप, दस प्रेमी हो उन कू ।
समय आपके हाथ, सोचिये सारे पहलू ।
करै न कबहुँ निहाल, दोगले ये दल बदलू ।

कविवर 'माधव' प्रकृति कौ सुन्दर बरनन करते भये हू आज के जीवन के दबाबन ते इतने ज्यादा पीडित रहे है कै उनकी कलम प्रकृति की सुन्दर छटान के बीच हू जीवन की कुरूपता और विकरालता कू नाय भूल पामै । 'सवत्सर की बधायी" रचना मे प्रकृति के सग सग जीवन की पीरा हू देखिवे जोग है देखौ—

पडन की डारिन म कोपल
धरती पै चहु दिस है हलचल ।

सदेस नये जग कू पल पल
जर-जर जीवन मे कोलाहल ।।

लेकिन कवि कौ मन या सौदय के भीतर झाक रही राजनीति सौ कितनौ सजग है इन पक्तिन मे देखौ—

जिनके हाथन मे सासन है,
जनता कू चोर बतामे है
वे खाते है जा हाडिया मे
बाई कू फोर गिरामे है।

पर कवि इन त निरास नॉय होय। हिम्मत ते काम लेऔ तौ सफलता अवश्य मिलैगी। कवि कौ आशावादी मन हर हाल म खशी रहवे की प्रेरणा देवे। देखो —

पर प्रकृति सग हमारे है,
हिम्मत कर आगै बढनौ है।
लै सत्य अहिसा कौ सबल,
झन्झा के सम्मुख अडनौ है।
ई सवत्सर की घडी सव,
वैभव कू लैकै आई है।
हौ पूरन काम जो सेस रहे
'माधव' की यही बधाई है।

होली ब्रज की गली गली मे धूम मचाती आवै। ब्रजभाषा के कविन ने होरी की मस्ती अनेकन भाति सौ अपनी रचनान मे व्यक्त की ही है पर हमारे अनोखे कवि 'माधव' जी तौ रग भरी होरी की झोरी म ते गुलाल की बजाय राजनीति की बदरग सूरत कू देखते नजर आवै देखो—

शासन प्रजातत्र दोष, लिख्यौ अरस्तू यार
लुटौ हैं लुटेगौ जन, मृदुहास बोली मे।
मन के बहलावा कौ, मसूबे अनूठे होंगे
बात देस की उडी है, उडेगी उठोली मे।
करनी औ कथनी मे अ तर अवश्य होगो
कपट आम जनता के, पडे रहे झोली मे।

आडम्बर अनेक रचे है, रचेगे ये भी
साड शासन के ही दिखैगे मस्त होली मे ।

आज आम जनता होली जसे त्यौहार कू हू खुशी ते नाय मनाय सक । शासन के साड ही होरी मे मस्ती मारिगे ।

कवि 'माधव' ने जो कछु लिखौ है आधुनिक चेतना ते ओत प्रोत है कै लिख्यौ है। उनका दष्टि साधारण जन की भूख गरीबी की पीड़ा ते ऊपर नाय उठ पायी । आज की राजनीति और नेतान नै भ्रष्टाचार कौ जितनौ दलदल या भारत भूमि प फैला दीन्हौ है क देस की रग रग या कीचड म सन गइ है । बेईमान चोर उचक्कान की बनि आई है और भोरी भारी जनता तथा सीधे सच्चे नेता दुख उठा रहे है । माधव' जी की हर रचना मे यही स्वर गूँज तौ मिलेगौ ।

कवि 'माधव' जी कू जनता वीर रस के कवि के रूप मेई पहिचानती रही है पर या वीर रस के पीछे छिपे बठे वा व्यगकार कू कोऊ कैसे भूल सकैगौ । उनकी इत उत कू बिखरी रचनान मे तै उनके सच्चे कवि कौ दरसन करायव कौ मेरौ इ छोटो सौ प्रयास भर है । वैसे उनकी कलम आजहू बडी सजग है । आज हू वे नये कविन कू प्रेरणा दव वारी नये ते नये आधुनिक विसैन ते प्रेरित हे कै रचना कर रहे है । हम सबई भरतपुर वासी उनकी कलम की अमरता की कामना करे ।

—रामबाबू 'शुक्ल'

ब्रज रचना माधुरी

कवि की अभिलाखा

ब्रजभाषा भाषान मे काहा की है दैन ।
रस पीयौ रसखान न सूरा पायौ चैन ।।

सूरा पायौ चैन कृष्ण गुन मीरा गाये ।
सुन सुन पियौ पीयूष, प्रेम गगा मे हाये ।।

डूबे घन आनद हरी तुलसी जन आसा ।
जन जन की प्रिय होय, कर उन्नति व्रजभासा ।।

कवि और कविता

कवि होता निर्भीक, चापलूसी का जानै ।
साचे बोलै बोल काहु की धौस न मानै ।।

सच्चा कवि है वही, समय का मूल्य बतावै ।
हो समाज गुमराह, साध कर राह दिखावै ।।

कवि दपन है देसका भना बुरा करै मनन ।
सदाचार सदभाव का जन मन म करता सृजन ।।

कवि नगरी परिचय

सु यो होगी जोधा रनवीर वह बाकौ वीर,
जानै एक दिना दीठ दिल्ली माहू डारी है ।

फौज मुगलन की अल्ला अल्ला कर हल्ला करे,
देखत ही जाकी तेग पर महामारी है ।।

गढ तो माटी कौ तौऊ नाम लोहागढ पायो,
सेना अंगरेजी सत्तरह वार हारी है ।

सुदर सलौनी यह भूमि सूर वीरन की,
छोटी सी नगरी भरतपुर हमारी है ।।

□

कैसे ये अडगी जगी वीर लोहा गढ माहि
सूर वीरता की जिन सुनी ये कहानी है।
दिल्ली चढ धाये रन लोहा बजाये छाये,
मुगलन छकाये करी काट काट घानी है ।।
'माधव' महान वीर मानी अँगरेज हार,
सत्तर वार जिन कूँ पिवायौ खूब पानी है।
चिन्ह वीरता के ठोक छाती कह रहे आज,
अष्टधातु के किबार जीत की निसानी है ।।

□

काल के समान भुजदड सूरवीरो के थे,
देख जिन्हे मुगलो की हिम्मत हू हारी ह ।
ताऊ उनके मन मे, विसवास था अटूट,
अष्टधातु दिल्ली दरवाजो बडौ भारी है ।।
देख ताहि हाथी हूल देत है यौ बार बार,
हट जात पीछे फेर बढत अगारी है ।
देख कै हतास पारवरिया बीर कुजर को
छाती हूल हाथी के सन्मुख अडा डारी है ।।

□

यौ तौ अनेकन वीर बाकुरन से भरो सैय
मुगल मैना को जो कुटी की भाति कूटती ।
अल्ला अल्ला कर हल्ला भागते मूगल सारे,
जाटन की तेग जब युद्ध बीच छूटती ।।
कहै कवि 'माधव यदि हो तौ ना एक वीर,
कैसै बतलाऔ दिल्ली जाट सेना लूटती ।

आप ही विचार करौ अपने मनन माही,
पारवरिया न होतौ तौ दिल्ली नाहि टूटती ॥

ऊधौ सौ गोपीन कौ कहनौ

त्याग दिये तन, मन, धन, तीना ग्रातन मे
लोक लाजऊ सब ब्रज की विसराई है ।
कमी नही राखी कछु अहै जग साकी सबै
जाम नाहि कीनो कछु, हमने बुराई है ॥
घर केऊ ना राखे न राखे अपनेऊ सूनौ,
दै दै कै झासे सोन कुब्जिआ अपना है ।
कहा करै ा जाग तुम ी बताओ ऊधौ
इत माऊँ कूआ और त माऊ खाई है ॥

राधा को ऊधौ सौ कहनौ

पहिल तौ सजाग की सीख दीना ाटी काह
सग लै डोल्यो पट्टी पम रम पढाई है ।
मेल्यौ ठु एगी मन सुध बुध भूल ग
बातन म ाग्र लोग लाज विसराई है ॥
दूसरे भमाय क वि ा ा पढायौ पाठ,
तीसरे अब जोग को पाती भिजवाई है ।
कहा करू कहा जाऊँ तुम ही बताओ ऊधौ
इत माऊ कूआ ौर उत माऊँ खाई है ॥

यौवन को आगमन

सरकत जावै बालपन, यौवन चढत उमग
सकुचावत झिझकत झुकत, निरखत आवत अग ।
निरखत आवत अग मन ही मन मन हुलसावे,
पिया मिलन की चाह उठत हिय ताऊ दुरावे ॥

कर कर याद अनग नेत्र कुच दौनो फरकत,
तन अरूनाई बढत लखो ज्यो यौवन सरकत ।।

□

साचे के ढरे से अ ग भूषित अनग रग
तन सौ सुग ध के उडत महकारे है ।
भोर भीर झूमत पराग अनुराग भरी
कोकिल से बैन सुन मुनि मन हारे है ।।
माधव' मिलाप भयौ बालपन–यौवन कौ,
छीन कटि दौंनो कुच उठत निहारे है ।
छाई अरु नाई तरुनाई की अवाई जान,
हात आवै थोरे थोरे नैन मतवारे है ।।

राधा छवि

राधा छवि वरनन करत कवि हारे हर बार ।
छिन छिन पल पल मे लखे नई नई उनिहार ।।
नई नई उनिहार, लेखनी लिख लिख हारी ।
बदले रूप अनेक खिलत मुख पै फुलबारी ।।
तरु नाई ज्यो बढत परत लेकन मे बाधा ।
अरूनाई मुख चढत, करत ये कौतुक राधा ।।

अगद के समझायबे पै रावन ने कहा कही

दोहा

सुन सकोप रावन कही, कपि विलोक मम बाहू ।
अरिगन के गवन दलत, ग्रसत चदजिमि राहु ।।

कवित्त

नारी के वियोग बलहीन दीन तेरौ प्रभु,
नाकी तौ सूरता न काम कछु आनी यहा ।

तुम औ सुग्रीव द्रुम कूल हो छिनक माहि,
मूल सो उपार देहो चाहौगो जभी वहा ।।
जामव त म त्री अति वद्ध है न युद्ध योग,
नील नल सिल्प कभ जानै है समो जहाँ ।
तुम्हरे कटक माहि कौन जो झटक झेल्ने
सेवै रन रग मोसो ऐसे है कवी कहा ।।

□

सुनत कठोर गरबीले बैन रावन के,
क्रोध वत अ गद की दाई भुज फरकी ।
मास छै काख रह्यौ तात की सुझाऊँ याते,
तज अभिमान लै सरन रघुवर की ।।
सीता पति कोपै तौ त्रिलोक मे बचावें कौन
आप सहित लका है साभा छिन भर की ।
वीस भुज सीस दस पाय गर्वायौ मूढ,
धज्जिया उडैगी दुष्ट तेरे सर सर की ।।

हनुमान

हल गई लका औ दहल गयौ लकापति,
चहन पहल गाई महल अटान की ।
सागर अथाह थम्यौ रक्त को प्रवाह जम्यौ,
विकल भई सना समूची यातु धान की ।।
असुर समूह काप ठाड ते पछारै खात,
धारे मार वरवस दत बलि प्रान की ।
धसन लगी धरनी खसन पहार लगे
सुनते ही भीषन हुकार हनुमान की ।।

□

जौ लौ हौ न आऊ आप धीर धर देखौ वाट
कारज सँभारु सभी सत्य सौह खाऊँ मै ।

सागर अपार पार छिन मे छलाग जाऊँ,
मातु अ जना को कभौ दूध ना लजाऊँ मैं ।।
कोटि कोटि वाधा आयै विघन मचावे तौऊ,
'माधव' सुकवि सर्वं मग सो हटाऊँ मै ।
राम जस छाऊ गव रावन न साऊँ और,
सीता सुध लाऊ तो हनुमत कहाऊँ मैं ।।

□

राष्ट्र पिता जो ए गये स्वगधाम गोली खाय
धाय पर लोक लोक नायक सिधारे है ।
राष्ट्रपति प्रतिमा पवित्र राष्ट्र म दिर को,
दल वल वारे बने राज काज वारे हैं ।।
बाहर के भीतर के सकट अनेक यहा,
मानव हजारो निरदोष जात मारे है ।
करौ ना अवार कवि माधव' पुकार सुनौ,
अ जनी कुमार देव आप रखवारे है ।।

हमारे देस कौ होरी कौ विधान

वेद के विधान सौ विधान भव्य भारत कौ
मनु औ महर्षि कृत काहु की न चोरी है ।
वैर भाव भेद भाव भूलवे भुलाइबे की,
भारतीय तत्र की प्रशसनीय थ्यौरी है ।।
गाओ बजाओ हँस च दन लगाओ भाल,
गालन गुलाल डारौ रग की कमोरी हैं ।
सव धम मर्व जात आलिगन मिलन कौ,
भारतीय विधि कौ रसीलौ पव होरी है ।।

□

होत आवै लाल लाल अम्बर अवनि आली, उडत गुलाल लाल आधी सी लखात है ।
बाजत मृदग मुह चग चग ढफ ;ढोल, गावत मधुर धुनि मुरली बजात है ।।

हँस हँस रहसि रहसि लचक लचक, ग्वाल वाल टोली सग नचत नचात है।
हेरत हँसत हुलसात हरसात हेली, हौस भरयौ होरी को हुरयारी लाल आत है।।

षट्पदी

दसा देस की भोत, नि तर बिगर रही है।
नेताओं की फौज परस्पर झगड रही है।
सत्ता के प्रति मोह, राष्ट्र सों प्रेम नहीं है।
मन मान आचरण, नम अर श्रम नहीं है।
कहा कहें, कासों कहें, आप आप म सब मगन।
म प्रधान मन्त्री बनू यही एक सब की लगन।।

□

जनता को जीवन यहा, आज सुरक्षित नाहि।
आवौ जावौ तो अलग घर म मारे जाहि।
घर म मारे जाय विवस धन माल गमावै।
वायुयान लुट जाय रेल बस कब बच पावै।
कहा सुरक्षित रहै, कहे सोचे का जनता।
जनता सासन माहि, दुखी सब विध सौ जनता।।

बेरोजगारी

फिर्यौ कर तेली को सो बा गारी म नित्य इतने पऊ मिल ना रोटी पेट भरकै।
झूठ साच बोलू औ डोलत न बौरान भयौ डोलत हूँ बात भाग सुनो इमि खर कै।
मेरे पाप दापन कौ मेरी भागू गी भाग सुत सुता द्वारा सब माथी यार जरकै।
सौ सौ कोस ढूढ आयौ काम कछ मिलै नाहि बिना राजगारी राज गारी देते घरकै।।

बसत की

भूमरे ही सुनौ नाज स ग कौ तगा दी भयौ, खुलस सीमा देस पार आई भगवत की।
सोच्यौ मन हार हाय कौन पाप की है राम, जो पै ऐसी दीनता दिखाई मोय अत की।
तात मात भ्रात परिवार पुत्र मित्र आदि, धन के सखा है सभी बात यहै तत की।
आर वार चगी औ त्यौहार गार नगौ, ऐसी, प्रान सोख आई आज पचमी बसत की।

होत आवै लाल लाल अम्बर अवनि आली उडत गुलाल लाल आधी सी लखात है।
बाजत मदग मुह चग चग ढफ ढोल गावत मधुर धुनि मुरली बजात है।
हस हस रहसि रहसि लचक लचक ग्वाल बाल टोली सग नचत नचात है।
हेरत हसत हुलसात हरसात हेली हौस भरयो होरी का हुरयारौ लाल आत है।

□

वेद के विधान सो विधान भयो भारत को मनु औ महर्षि कृत काहु की न चोरी है।
वैर भाव भेद भाव भूलवे भुलाइबे की, भारतीय तत्र की प्रससनीय थ्यौरी है।
गाऔ बजाऔ हस चदन लगाऔ भाल, गालन गुलाल डारी रग की कमोरी है।
सब धम सब जात अनगिनत मिलन को भारतीय विधि कौ रसीलो पव होरी है।

□

राष्ट पिता जो ऐ गये स्वगधाम गोली खाय, धाय पर लोक लोक नायक सिधार है।
राष्ट्रपति पतिमा पवित्र राष्ट्र मदिर को दल बल वारे बने राज काज वार।
बाहर औ भीतर के सकट अनेक यहा मानव हजारो निरदोष जात मारे है।
करौ न अवार कवि 'माधव' पुकार सुनौ, अजनी कुमार देव आप रखवारे है।

□

जौ लौ होन आऊ आप धोर धर न देखौ बाट, कारज सभारू सभी सत्य सौह खाऊ मैं।
सागर अपार पार छिन मे छलाग जाऊ, मातु अजना कौ कभो दूध ना लजाऊ मै।
कोटि कोटि बाधा आवै विघन मचावे तौऊ 'माधव सुकवि सबै मग सौ हटाऊ मै।
राम जस छाऊ गव रावन न साऊ और, सीता सुध लाऊ तौ हनुमत कहाऊ मै।

नेतान कौ आगमन

सतजुग मे हिरण्याक्ष हिरण्य कश्यप सौ, दुखित मही थी धम ग्र थन बताये है।
त्रेता मे रावन अहिरावन अजीत भये, हा हा कार भारी ऋषि मुनि हू सताये है।
द्वापर म जरासध कस बलसाली बडे, अमित अनीत करी धम किल ढाये है।
राम जाने वे ही मिल दलबल जोर अब धार अवतार सभी नता बन आये हैं।

□

गाइये गुणानुवाद लोकप्रिय नेतन के, मुक्त कठ उनकी यस गाथा सुनाईये।
नाईये नित्य सीस प्रात उठ चरनन मे, आसुतोष है ये मुह मागा वर पाईये।

पाईये तुरत अच्छी नौकरी न झूठ जामें, रहिये निसक सक उर मे न लाईये।
लाईये समेट धन लूटिये प्रजा को खूब चन्नी ना औसर दुख दारिद्र भाईये।

इन्द्रा गांधी

देस औ विदेसन म छाय गई चारो ओर जिनकू गइ तिनकू सार भयो भारी है।
जनता जनार्दन के पानन की प्रान भई, जाप दीठ डार दई आयौ न अगारी है।
अपने ही खेतन की बार ताहि खाय गइ, रक्षक भये भक्षक, हाय मार डारी है।
बीसवी सदी मे ऐसी हुई है न होनी कजी, जसी भई इन्द्रा मम भारत की नारी है॥

द्रोपदी

कसी कसी भक्त नारी भइ हे भारत माहि सुरन की सुरता म धूर जिन डारी है।
दुष्ट दुसासन उघारन चाहे जाके अग, अग गयौ दभ जाको उतरी न सारी है।
कौरव सभा बीच महारथी विचार करै कसा ये चीर द्रोपद भई न उघारी है।
टेर सुन रक्षा हेतु द्वारिका सौ धाये कान्ह, एसी भई द्रोपदी भारत की नारी है॥

समय को फेर

एक दिन पूछत न जाती जिन कोऊ बात एक दिन ऐसो बैठे बीच सिंहासन मे।
एक दिन हुकम म खडे रहे बजीर यार, एक दिन ा नी डोलत फिरत जन म।
एक दिन सलामी करत देखी सैन्य जिन्म, एक दिन बई ब द पडे पिंजरन मे।
कहै 'कवि माधव' मनुज की चलत कहा, सूय की तीन दसा बदल एक दिन म।

मिथ्या अभिमान

कमाय धन थोरो सौ फूल्यौ मन मूढ आज झीकत ही बीते दिन फूस के मकान म।
साई के दरबार बीच चलै ना एक झूठ, साई खूब रिस्वत फिरै यौ ही गुमान म।
बेईमानी सौ ही जवानी बिताई अज्ञानी तै, बात ये काहू सौ नाहि छिपी है जहान मे।
अजहू जजाल तजि, भजरे गुपाल लाल, थारे दिना सेस अब, काल कहै कान म।

कलम कहे कान मे

मेरी ही कृपा सा आज प्राप्त कियौ मत्रीपद, भूल्यौ है असली रूप भूल गयौ सान मे ।
भाई बिरादरी कू गिनै नाहि नैकऊ अब कुर्सी की खातिर घस बैठयौ चमचान मे ।
मोरी की ईट मेन गेट पर लगाय दई, मागत हौ टूक कछू रही नही ध्यान मे ।
जाली जालसाजी की बात लिखन मोसा नित्य, ह्वै है मुख कारौ त कलम कहै कान मे ।

बिजारन की भिडत

दूरसौ ही देख एक दूसरे प टूट परै, सीगन सौ मेड फोर जुद्ध की उम्ग कर ।
खुरन खुरखुराय अडढा कौ सोर करत बतन तुराय मगराज सी लप्क करै ।
माधव कवि देखौ तौ माड खडे सीगन के लडवे कू आगै बढै नैंक न हिचक करै ।
हक करै न धक करै न रुक करै हिये म नैक छूटत ही बाजत धडाधड की टक्कर ।।

ढीले कपडन चौं

ढोले कपडन मे सदा छिपे रहत सब अग ।
तन उभार झलकत नही शील न होवे भग ।।

शील न होवे भग दीठ वहा टिक नहि पाती ।
नजर काहु की यार वाह कबहु नहि खाती ।।

बडे बडे महबूब, चले जाते सर्मीले ।
इज्जत रखने हेतु चाहिये कपडे ढीले ।।

टी वी

लाज ढकी अजलो सुनो, जब लौ दसन दूर ।
पुत्र वधू बेटी सभी, नाच रही इमि हूर ।।

नाच रही इमि हूर, सभ्यता लुप्त भई है ।
वे सरमाई ओढ, देस नें आज लई है ।।

टी वी नें टी वी करी, ठप्प हुये सब काज ।
अध नग्न अवयव लखौ, कैसे बचिहै लाज ।।

हनुमन्त वन्दना

श्री राम अनुरागी अनुगामी मात सीता को, मनुज दल ...लया नाम सरनाम है।
भगतन रखैया और खिबया नाम नया को, ...रज सरया भरपूर बल धाम है।
ग्यान कौ निधान बाकौ पोल सम वेगवान समता न जान ऐसौ जग अभिराम है।
सहज ब्रह्मचारी वीर रूद्रावतारी के जुगल चरन माहि कोटिन प्रनाम है॥

□

बीर सिरताज देव वीरता प्रदान करौ तज के निधान निज महिमा दिखाइये।
साहस असीम भरौ मन में हमारे नाथ जनगा दान दय भय भीतिया भगाइये।
चारो ओर घोर घन विघन घिरे है भारी दुखित मही है सारी इनसौ बचाइये।
करुना निधान आप पूरन कृपा के धाम दुष्ट दुख दायिन कौ मूल सौ मिटाइये॥

प्रकृति को निरूपण

पावस कौ ह्रास भयौ सरद सुहानी आई, विरही वियोगिन को नैक ना सुहाई है।
ताप पुन धायौ हठी हिमत सामत वीर, भारी सीत छायो लाग्यो अति दुखदाई है।
ताही का बधु फिर सिसिर सताने आयौ सीतल समारन सौ देह ठिठुराई है।
पावै अब चैन सबराज रितुराज आयौ, मगी गैया सबकी बसत की बधाई है॥

पावस

देख दस कारे घन कोकिल कुहूक सुनि हूकै उठ हिय पिय प्रेम मे पगी रहै।
पावस परेस छायौ बालम विदेस मांहि पायौ ना सदेस या अदेस म दगी रहै।
माधव सुकवि' सब खान पान जान आदि त्याग के विहाल बात बीट म जगी रहै।
बैठ के इकत निज कत दस पावन कौ, रैन दिन जाग गाय ध्यान म लगी रहै॥

□

लपट चार लबार सभी मिल,
देवत है सब एकई नारौ।
भारत नाव फँसि मझीधाराहि,
मूक खड़े मत याहि निहारौ॥

जातिन जाल विसाल भयौ अब,
राज करै छलिया छल वारौ।
'माधव' बेग उपाय करौ अब,
का विधि दूर भग अधियारौ ॥

□

पति आये न आई कोई पतिया
छतिया धरकै नहिं कोऊ हमारौ।
अग उमग उठै इनकू
उत सोवत कन इकत बिचारौ ॥
माधव' नैकहु चन नही
अब दीखत हे नहिं कोऊ सहारौ।
कासन दूर पिया बसि है सखि,
का विधि दूर भगै अधियारौ ॥

कुन्डली

सकल विघन टारहु पभु विघन हरन व्रजराज।
पावहु पावन परम पद कर पूजन गिरिराज ॥
कर पूजन गिरिराज कृष्ण जग सुजस बढायौ।
आपहि पूजै पुजै आप, कछु भेद न पायौ ॥
माधव' मारे मान इद्र कोप कर सब विफल।
नग धार्यौ गिरिराज लह्यौ मोद ब्रज जन सकल ॥

जन-सक्ति

सक्ती जनता की लखौ, पहुँचा दई अकास।
अहकार कौ चूर कर, बुला लई फिर पास ॥
बुला लई फिर पास, अकल बाकूँ सिखलाई।
दैकै गहरी चोट, पुन सत्ता मे लाइ ॥
त्रिया हठ कू त्याग, दिखा जन अपनी भक्ती।
सत्ता मद सौ अधिक, सक्तिमाली जन सक्ती ॥

साख याय की राखिने दियौ फैसनो यार।
साच आव ना या सके ना कोउ सकि है मार।।
ना कोऊ सकि है मार, जुदि अति मित्र नगाइ।
लइ दुसमनी मोल याय की खातिर भाइ।।
निरनय के विपरीत अब, सुनौ समथन लाख।
पद लालुपता ना गइ, तौ गइ याय की साख।।

□

याय करन वारे जहा त्याग पत्र द यार।
बलिहारी या देस की कैसी है सरकार।।
कैसी है सरकार सुसाभित कर रही सासन।
दुरयोधन की भाति, जमा बठी है आसन।।
-यायधीस के चयन मे होत जहा अ याय।
जन साधारन को भला, कैस मिल है -याय।।

मुग्धा

कुच कपोल थिरकन लखत
तिय हिय हुलसत जात।
मनु ऐढी की धमक सौ,
जोवन धन बिखरात।।
जोवन धन बिखरात
मन ह मन हुलसै मन मे।
इत उत देखत जात
आच सी लग रही तन मे।।
जोवन उठत अनग सु-यौ,
नहि देख्यौ सचमुच।
चलत रुकत झिझकत तौऊ
रुकत ना थिरकन दोऊ कुच।।

सामाजिक-कार्य-सेवा

एस यू पी डब्लू,
निष्फल प्रयोग

समय कौ दुरुपयोग
धन कौ अपव्यय,
भ्रष्टाचारीन कौ जाल,
विचार सू यन कौ समथन —

भ्रमात्मक प्रचार
गरीबन कौ सौमन,
स्कूलन की छुट्टी,
मास्टरन की मुक्ति,
धन बारेन कू लाभ,
निरधनन कौ कचूमर,
तुगलक की याजना
जाके अतिरिक्त कछू ना —

□

रामायन देखत अजौ नान न उपजौ मूख।
मन बानी कलुषित रही रह्यौ धूत कौ धूत ।।
रह्यौ धूत कौ धू त ज्नम लै वथा गँवायौ।
रिस्वत लीनी खूब, माल सूकर सम खायौ ।।
थोरौ जीवन शेष कियौ ना तैं पारायन।
अब तौ भजन लै राम तिरै सुन पढ रामायन ।।

□

सूर आप जन्मा ध थ, होता नहिं विसवा।
वाह सूर बिन द्रगन के, जग कू दियौ प्रकास ।।
जग कू दियौ प्रकास, सूर सागर लिख डारयौ।
अमृत दियौ घोर, छिकत ना पीवन हारौ ।।
सासक सत्ता के बन, सूरदास कलि कूर।
दीदे भट्टा से खुले, तौऊ बन रहे सूर ।।

□

'माधव' अब निभनौ कठिन, केर बेर कौ सग।
बिन स्वारथ सेवा करी, तऊ फार रह्यौ अ ग ।।

तऊ फार रह्यौ अग, समझ मूरख नहि पायौ ।
लाभ हानि कौ ज्ञान, मधुर [illegible] समझायौ ॥
माह जात को त्याग, चरन गह जब तू राघव ।
गिरवर [illegible] लै सरन [illegible] 'माधव' ॥

नश्वर जीवन ता[illegible]प अभिमान

कारौ मुह तै कर लियौ, परगो न कछु [illegible] हाथ ।
धन दौलत सब रह गई, गयौ न कोऊ साथ ॥
गयो न कोऊ साथ, वृथा ही जनम गवायो ।
सुत दारा सब खड़े, काम काऊ नहिं आयौ ॥
मरयौ दुहैरी मौत, दिगौ नहि काऊ सहारौ ।
दुनिया थू थू करै अत [illegible] मुह है गौ कारौ ॥

□

रघुपति का गलती भई, समझ परै नहिं बात ।
सेवक दुष्टन ते घिरयौ, सु रोज करै उत्पात ॥
रोज करै उत्पात, रचै षडयन्त्र निराल ।
पापी मन जो होय, करौ ताके मुँह कारे ॥

□

याग होय निसपच्छ बात मत मानौ मोमति ।
दोषी तीनन कौन आप सब जानौ रघुपति ॥

माटी के कौतुक

माटी बैठी कार मे, हसती हसती जाय ।
पैन्ल माटी चल रही, विनै देख मुसकाय ॥
बिने देख मुसकाय फूल रही माँटी मन मे ।
माटी खा रही रोज, डार रही, माटी, तन मे ॥
भयौ भूमरौ उठी पी रही माटी साटी ।
भई वाबरी फिर देस मे चहु दिस माटी ॥

माटी कुर्सी दोउ मिल मन मे रही इतराय ।
कौन बडी हम दोउन मे, हस हस दुहु बतराय ।।
हस हस दुहु बतराय जुलम दोउन नै की हे ।
मौको जाकौ लग्यौ, बाई ने झासे दीने ।।
दिये बहुत विश्वास, पाय पद माटी नाटी ।
घर भर लियौ खूब, सड्या गई देखो माटी ।।

गिरिराज की सोभा

नव कुज कलिदजा लै कर म ब्रजभूमि को पूजा को पावनो है ।
सर सो सर और न दूजी कोऊ, अनुकूल दुकूल सुहावनो है ।।
बन वाग लसै विटपी कुल सौ नव लौनी लतान सौं छावनो है ।
सब माति अनूपम साज सजो, गिरिराज को रूप सुहावनो है ।।

ब्रजभूमि की महिमा

पौढ रह्यौ सत कोसन मे, जल मानसी गग को पावनो है ।
ब्रज वाल सकेल करी वहु केलि, करील की कुजन भावनो है ।।
चहु ओर विहगन को सुन सोर, जिया मन मोर लुभावनो है ।
सब भाति अनूपम साज सजे ब्रजभूमि को रूप सुहावनो है ।।

अजय दुर्ग लोहागढ की कहानी वाई की जुबानी

मोय याद है मेरौ गौरव,
जब मेरौ निर्माण हुऔ हो ।
सवल भुजाअन कौ सरक्षन
मौकू निस दिन प्राप्त हुऔ हो ।।
बडे बडे रनधीरन के कर,
सहराते इमि अपनो बच्चा ।
बीर बाकुरन ने मिलकर कै,
रच्यौ दुग माटी को कच्चा ।।
मो मे सूरज कौ सौय,
जवाहर तेज छिप्यौ है ।

अरि शोणित सौं गयौ,
नयौ इतिहास लिख्यौ है ।।
पारवरिया सौ वीर
वीर माढागुरिया सो ।
लोहागढ लियौ जनम,
नाम अबहु है ताको ।।

मैदानी ये वीर
बाकुरे रन मैदानी ।
थर थर काप मुगल
त्यव कै इनको पानी ।।
कैसे कैसे वीर विलक्षन,
मूंछै जिनकी यार कटारी ।
बार सत्तैरह गोरी पलटन
जिनते युद्ध बीच थी हारी ।।

सेरन के से सीने उभरे,
कटि केहरि की भाति निराली ।
बदन छरैरे सान अनोखी
दिल्ली म जिन हल गई हाली ।।
यही सिलसिला बुज,
नपति चढ भृकुटी तानी ।
मुगल दलन कौ दलन
जीत दिल्ली मन ढानी ।।

मेरे बल पै तेग जवाहर,
चमकी थी ऐसी लासानि ।
अष्टधातु दरवाजो जाकी,
मूक कह रह्यौ आज कहानी ।।
दो हाथी मेरी छाती पै,
मिलके चलते देख मार कू ।
मेरी भीम काय काया लख,
भय लगतौ हो अरि विसाल कू ।।

मेरे बारह द्वार,
द्वारन पै सैय अढी थी।
दुग बीच मे बुज,
बुज पै तोप चढी थी ॥
वाईसी के ज्वान
लगायौ करते पहरे।
दार चूरमा यार
व यौ करते थे गहरे ॥

पिस्ता काजू बादाम
सग मे केसर गहरी।
सिल पै घुटती भग
सीक रह जामे ठहरी ॥
गग मे फिर छनती थी भग
चढा कै शिव पै लगनौ रग।
अखारन मे होती थी जग,
देखकै कालहु होतौ दग ॥

ऐसे रन बकाओ द्वारा
मेरे गढ की रक्षा होती थी।
जाई कारन भारत भर मे,
गूजो करती मेरी तूती थी ॥
यो तौ दुग अनेकों रचकें
वीरन ने तैयार किए थे।
कि तु लाई लेक के गोला,
मैने पानी भाति पीये थे ॥

टाड लिख गयौ है इतिहास मे,
पढे नही का वाके खेले।
कृष्णा स्वय पीताम्बर पहिने,
करते गढ़ की रक्षा देखे ॥

भारत को इतिहास कह रह्यो,
ता॰ा गढ सो दुग न पायो ।
गान पै गा॰ा गिरते थे,
पर नैकहु न विकसी काया ।।

सन् चौबीस की आधीरात प,
बाध टूट गयो जब अलवर को ।
हाहाकार मच गयो चहु दिस,
बूढो हो मै परना सरको ।।
मिल्यो मोय जिनते सरक्षन,
विनकी रक्षा मने की है ।
चोर लफगे गुडे दुस्मन,
सबते बाजी मैन लईये ।।

देख रहे ह तोऊ सब कुछ,
जोण शीण मरी काया कू ।
अ ग अ ग सब कट जा रह,
समझ न पायो जा माया कू ।।
आज सिखडी उने सहासी,
दिख। रहे है मोय जवानी ।
कुटिल कमीने कामी मिलके,
मिटा रह है मुनो निसानी ।।

मेरे गौरव की गाथाये,
धूमिल है कै मिट जाई गी ।
नाम अमर इतिहास कर गयो,
सेस कहानी रह जाई गी ।।
मेरे जब तक सेस चिह्न है
लोहागढ को नाम रहैगो ।
मिटा दियो यदि तुमने इनकू
गढ लोहागढ कौन कहैगो ।।

कल जुग

जब ते धरती कौ भयौ जनम,
मैं रुक्यौ नही,
चलनौ मेरौ काम बराबर
आगे कू बढतौ ही जानौ
यही काम सास्वत है मेरौ ।
तुमने इतिहास पढे हुइ गे,
अरु देखौ होगौ रूप मेरौ,
मै ना काऊ कौ मित्र ब यौ,
पर दुनिया भिरम मे फसी भई,
स्वारथ के वसीभूत इतनी
वो समझ रही मोकू साथी
पर निराधार बाकौ सपनौ ।
तुमने सतयुग देख्यौ,
त्रता देख्यौ, द्वापर देख्यौ,
अब देखौ मोकू , मै कलजुग हू ।

तुम मोच रहेओ ई जायेगी,
बू अ।वैगौ सान्ति मिलेगी
पर ऐसौ कबहु नहि होगौ,
भ्रष्टाचार बढैगौ पल पल,
अ यायन कौ अन्त न होगौ,
कोऊ काऊ कौ सखा न होगौ,
जो कछु होगौ पैसा होगौ,
मानव मानव कू खावे गौ,
कोऊ नही बच। पावे गौ
कहू मेह बरस अतिभारी,
कहू परैगी सूखा यारी,
कहू लगैगी आग,
कहू भू फट जायेगी,
कहू भूकते दुखिया है कै,
मैया पूतन खा जाये गी,
अबई रूप बिकराल धरूँगौ ।

मन्दिर महनत दानो म इ,
सस्त्रन के आगार बनिगे,
खाकी बरदी धोखौ देगी,
सन्तन की हत्याय हुइ गी
चोरन को पूजाने हुइ गी ।
चौगइन प,
लाज लुटगी अबलाअन की,
खरी खरी जनता देखैगी,
हाथ मसलती रह जाऐगी,
पुलिस नही कछु कर पाऐगी,
सच्चेन के मु ह हुइग कारे,
जीवन के हू हुइ गे लाते,
झूठे मौज उडाइ गे
सब एक डोरा बध जाइ गे,
गुन्डन कौ बाहुल्य बढैगौ,
चहुँ दिस हाहाकार मचैगौ,
अपने कुल की लाज बचाइवे,
कहूँ कहूँ जौहरऊ हु इगे ।

चौरी हुइ गी कतल बढैइ गी,
भ्रष्टाचारी सासक हागौ,
जो होगौ सो सबई सामई,
छिप्यौ हओ कछऊ नहि होगौ ।
नगौ नाच होयगौ जग है,
ये तौ बचपन ही है मेरौ,
तरुनाई जब आवैगी,
सूचित कर दऊ गौ,
धर धीरज देखौ तुम मोकू
मैं कलजुग हू ।

एकता सद्भावना

ई एकता सदभावना कौ,
गीत को गा रह्यौ है ?

ई हिंदू अै कि मुसलमान,
सिक्ख अ कि ईसाई,
मै तुम लोगन ते पूछ रह्यौ हूँ,
जौ पैसा कहा ते आ रह्यौ है,
चाय ऊ पीई जा रही है ।
खायबे कू हू अच्छो मिले
और किरायोऊ दे,
रसीदऊ ले ।

ऐसौ कौन भामा सेठ है
जो इन कवीन नै बुला बुला कँ,
भाडन की तरिया पुकर बारे –
जैसे नट पेट कू दिखाय कँ
हेका हेका खाय कूँ पेट कू भरे
ठीक बाई तरिया
आज कवि है गयौ है
एकता तौ जा धरती प
आदमी आयौ बाई दिना ते आ गई
एकता सदभावना नही होती तौ
आदमी आदमिये खा जातो
इकल्लो आदमी जा दुनिया मे
का कर लेतौ,
एकता औ सदभावना ते इ
आदमी ने गाव बसाये
और जाडे गरमी औ बरसातन ते,
मुकाबलो करयौ
पर अब जाने का हैगौय
जा अखबारे पढू,
दो तीन बरसते,
इनइ के रोजनेन कू पढू और सुनू
पर इ मेरे ख्याल मे ना आ रही
जाय कौन कहवाय रह्यौ है,
और कौन ते कह रह्यौ है,
इ कौने के बोये जाल है ।

तुम सब जानौ,
नाज खाओ
मुम तौ ना चरौ
जा दिना ते ई गीन गवब नग्यो है
ताई दिना ते देस की हालत
औरऊ बिगरती जा रही है
तुमऊ अखबार पढते हुइ गे,
सब तौ अखबार,
उगवाद, आतङ्कवाद बलात्कार
निमम हत्या, लूट डकैतोन ते
भर्यौ मिलै
मोय तौ जामैं कछु जाल दीस
आदमी । ल्यानै फेरबे कू
ई रासौ रच्यौ जा रह्यो है,
और जनता ए
भूल भुलैया म डार कै,
अपनौ उल्लू सीधौ कियौ जा रह्यौ है ।

राजस्थान

ये वीरन को प्रा त, सिरामनि भारत कौ है ।
अरि सोणित सौं गयौ, यहा ईतिहास लिख्यौ है ।।
ज्योऊ दुस्मन चढयौ, जाई ने बाजी लई है।
दे अप।। बलिदान, देस की रक्षा की है ।।

□

जिये देस के लिये सदा जो मरे देस के लिये सदा है ।
वे थे सिंगन के सपूत जिन, विष के प्याले पिये सदा है ।।
अपनौ सब कछु लुटा पुटा के अमर निसा जिनने किये है ।
जूझ जूझ कें मैदानन मे, अरि के दीये बुझा दिये है ।।

□

भारत कौ इतिहास कह रह्यौ, सुन्यौ नही ऐसौ बलिदान ।
अपने हाथन सीस काट कै, मे ज्यौ जहा है रह्यौ सग्राम ।।

धय धय तू हाडा रानी, धन्य धय तेरी ये सान ।
जब लो सूरज चदा रिंहिगे, याद करेगौ राजस्थान ।।

□

रनथम्भीर के अजय दुग की आन बडी मतवारी है ।
हल्दीघाटी के कन कन मे, छाई अबहू लाली है ।।
दुर्गादास के रन कौसल मे, किलकिला उठी थी काली है ।
कान्टा बू दी और चित्तौड की, देखो सान निराली है ।।

□

पूरब द्वार स्थित लोहागढ जाऊ की अजब कहानी है ।
द्वार अष्ट धातु ते पूछो, वीरन की ईहू निसानी है ।।
सूरज छिपौ कबहु नहि जाकौ, जग बाइ ते ठानी है ।
सत्तरह बेर पिलायौ जाकू लोहागढ ने पानी है ।।

□

भगत सिरोमनि मीरा बाइ, जानै सभी जहान है ।
विष प्यालो राना ने भेज्यौ, कियौ खुशी सो पान है ।।
ऐसी भइ किशोरी रानी, भगवन राख्यो मान है ।
खुल गये द्वार सबइ मदिर के, श्रीनाथ धरयौ ध्यान है ।।

□

स्वामी भक्त राना कौ मन्त्री, मुकट लै लियौ भाल ते ।
अरिदल मे जा घुस्यौ सूरमा जूझौ सैन्य विसाल ते ।
त्यागी भामा साह निरालौ, मोह छोड दियौ माल ते ।
देस प्रेम के ये मतवारे, खेली होली काल ते ।।

□

राज पाट सवस्व त्याग के , जाने माँ की सेवा करियें ।
कष्ट बहुतैइ झेले तोऊ, सरनागत दिल्ली ना लइयें ।।
सूर अनेको बाके अनगिन, प्रानन की जिनने बाजी दईयें ।
मरते मरते समर भूमि मे, मातृभूमि की रछया करिये ।।

राना प्रताप सो वीर सिरामनि, बात न गोई आन की।
धम हेतु अउ गयौ जउगी जान्त द दई पान की ॥
पन्ना, सागा, गागा रा.त सबई सिमाते गान की।
कन कन ते आवाज आ रही जय हो राजस्थान की ॥

ग्ग्स्रा. - को ऐलान

मै दुनिया की मेरी दुनिया करई भग गुनाम।
मुकुट झके रहते चरनन प तेता करै सलाम ॥

में चाहू जाकू जितबा दऊँ म चाहू गा रखवाऊँ।
मै चाहू कुरसी दिरवा उ मे गाट जब चाम हटाय दऊँ।
ई ही मरी सान मुकुट ॥

भाव न्याव मेरे हाथन म चलत सब मरी बानन म।
गुन्डा सब रहत लातन म कारो धन मेर गातन म ॥
करता है विसराम मकुट ॥

चीनी के मं भाव घटा दऊ, सरसी की कीमत बढ वाय दऊँ।
जब चाहू छापो डरवाय दऊँ, और वाय में माफ कराय दऊ ॥
ई ही मेरे काम मुकुट ॥

जो भी शासन कौ अधिकारी, जितनौ अधिक भ्रष्ट है भारी।
बाकी कुरसी सदा सुरक्षित, बिनती करत हमारी ॥
धौताय और मान मुकुट ॥

तसगर काम कर रहे जितन उनकू सरक्षण है मेरो।
आय मुसीबत जबऊ जावै, खुल्यो हुओ है डेरो ॥
जी मेरो ऐलान मुकुट ॥

ज्यो लो है ये राज देस मे, मोकू कौन भगा सकता है।
सारो सत्ता दल सेवक है, बकन देअ जाऊ बकता है ॥
मेरो काम महान– ॥

रानी प्रताप सो वीर सिरोमनि, बात न खोई आन की।
धम हेतु अड गयौ अडगी, आहत दै दई पान की ।।
पन्ना, सागा, गारा बादल सर्ई मिसालें सान की।
कन कन ते आवाज आ रही जय हो राजस्थान की ।।

भ्रष्टाचार कौ ऐलान

मे दुनिया की मेरी दुनिया, सबई भग गुनाम ।
मुकुट झुके रहते चरनन म नेता करै सलाम ।।

मै चाहू जाकू जिताबा दऊँ मै चाहू बाकू हरवाऊँ ।
मैं चाहू कुरसी दिरवाऊँ मै चाहू जब बाय हटाय दऊँ ।
ई ही मरी सान मुकुट ।।

भाव याव मेरे हाथन म, चलत सब मेरी बानन मे ।
गुण्डा सब रहत लातन म कालौ धन मेरे खातन म ।।
करता है बिसराम मकुट ।।

चीनी के मै भाव घटा दऊ, सरसौ की कीमत बढ वाय दऊँ ।
जब चाहू छापौ डरबाय दऊँ, और बाय मै माफ कराय दऊ ।।
ई ही मेरे काम मुकुट ।।

जो भी शासन कौ अधिकारी, जितनौ अधिक भ्रष्ट है भारी ।
बाकी कुरसी सदा सुरक्षित, बिनती करत हमारी ।।
धौताय और मान मुकुट ।।

तसगर काम कर रहे जितने उनकू सरक्षण है मेरौ ।
आय मुसीबत जबऊ जावै, खुल्गो हुऔ है डेरौ ।।
जी मेरौ ऐलान मुकुट ।।

ज्यौ लौ है ये राज देस मे, मोकू कौन भगा सकता है ।
सारौ सत्ता दल सेवक है, बकन देअ जाऊ बकता है ।।
मेरौ काम महान— ।।

नन्दा जैसौ कौन देस मे, टिक न सक्यौ बू मेरे आगे ।
मेरौ लख कै रूप भयकर जो साचे थे वे ऊ भागे ।।
मेरौ है सम्मान मुकुट ।।

खाऔ पीऔ मौज उडाऔ सुरा सुन्दरी कू अपनाऔ ।।
जोऊ करै खिलाफत मेरी कच्चौ ई वाय खा जाऔ ।।
ई मेरौ आह्वान मुकुट ।।

जितनौ ऊचौ भ्रष्ट बनैगौ उतनौ ऊचो पद पावैगौ ।
मक्खन टोस्ट उडावैगौ नित, मेरे गुन जोऊ गावैगौ ।।
मेरौ यही पिलान मुकुट ।।

मै ई राम कृष्ण दुनिया कौ, भजन करौ दिन रात ।
कोठी, कूलर, कार मिलिगी हो कोऊ भी जात ।।
हथकडन की मो मे खान मुकट ।।

करौ वायदौ झूठौ जन ते, गगा की सौ खा जाऔ ।
धरती अम्बर एक मिला देऔ पैसा को दुख मत पाऔ ।।
बैंकन कौ मै हू महमान मुकुट ।।

फूट डारवौ राज चलायबौ बाये हाथ कौ काम ।
दुनिया मे तौ नाम है रह्यौ, घर मे हू बदनाम ।।
मेरौ ई ही एक निसान मुकुट ।।

आजादी के दीवानेन की कहानी

जा बलिदानी मातृभूमि की सुनौ सुनाऊँ तुम्हे कहानी ।
सुन करके दिल दहल जाइगे, वीर सहीदन की कुरबानी ।।

कैसे–कैसे वीर साहसी, मा तुमने उत्पन्न किये थे ।
हस हस कै बलिवेदी पै चढ जीवन के बलिदान दिये थे ।।

धन्य धन्य बिनकी जननी कू जिनने सरवस लुटा दियौ है ।
सबई जग के वैभव तजकै, मातृभूमि ते प्यार कियौ है ।।

ई मतवारे देस प्रेम के, जिनन हस कै फासी खाई ।
अशफ़ाक, लाहली, बिस्मिल, राशन, भगतसिह ा जान गमाई ।।

और न जानें कितने अनगिन बलिवेदी पै पुष्प चढ गये ।
नि स्वाय देस की सेवा करकै, चुप रह के गुम नाम कर गये ।।

उनम ते आजाद एक हो, जानै मन म यह थी ठानी ।
मा की बेडी कट वाऊगौ, जब तक मरे तन म पानी ।।

भय कौ नाम नाहि हो मन म, ताव दियौ मूछन पै करतौ ।
मा के कष्ट मिटिगे कैस, मा की इज्जत कू बू मरतौ ।।

हाय सहीदन की कुरबानी आज है गई निष्फल मारी ।
भ्रष्टाचारी सासन म अब जनता फिर हे मारी मारी ।।

पहलै होड लग्यौ करती थी, त्याग और बलिदानन की ।
अब कुर्सी गठ जोड चल रही, सासन म बेईमानन की ।।

आज दुख्यारी सबई प्रजा, फिरत तुम्है बुलाती है ।
भारत मा की लाज बचाऔ, नैया डूबी जाती है ।।

है कौन उठायौ जानै बीरा, मोय मिटायबे कौ भारत ते ।
आदि काल ते चल्यौ आ रह्यौ, अबहू चल रह्यौ और चलूगौ ।।

ईतौ जीवन काल है मेरौ, कह रह्यो तोते हटजा मगने ।
मेरो छेत्र बडो व्यापक है सो दऊँगो म तोकू जर ते ।।

भूखे नगे का कर सकि है, जिनकू अन्नहु नाहि मिलै है ।
मेरे साथी माटे ताजे, इनकू पीवे सुरा मिलै हे ।।

कौन सहैगौ जा टक्कर कू, बाली जैसी सक्ती मोम ।
राम नाहि है या दुनिया म ना वैसी सक्ती है तो म ।।

बडी बहिन ज्यौ लौ जि दा है सबक ऊपर मरो झन्डा है ।
पुलिस सबन्ती नौकर मेरे, फिर का कर सकहि नन्दा है ।।

मेरे साथी चोर बजारी अफसर जितने भ्रष्टाचारी ।
चोर लफगा गु डा सारे पचायत सरपच हमारे ।।

तस्कर डोले है मतवारे सुरा सु दरी सेवन वारे ।
नेता जब तक है स्वराज मे, मर गये मोय भगावन हारे ।।

भारत कौ स्वार्थ–काश्मीर

हम आजादी के मतवारे,
जीवन ते मोह नाहि हमकू ।
कितनौ बल पौरुष है हममे,
कई बार दिखायौ है तुमकू ।।

हम तुमकू भाई समझते है
तुम चढे सीस पर आते हो।
माता पै हमला करिवे मे,
तुम नैक नही सरमाते हौ ।।

जो मिले भीक मे टैंक यान
तुम विन पै अकड दिखाते हो।
दुनिया कौ चालन मे आके,
कश्मीर हथ्यानौ चाहते हो ।।

ये मातभूमि ये पु्य भूमि,
ये पितर भूमि हम सबकी है।
जाकी सु दरता देख देख,
यवनन की छाती जरती है ।।

जब प्रभात सूरज की किरनें,
धवल सैल तै गिरती है।
तल रूप सुनैहरी पाकर के,
कश्मीरी कलिया खिलती है ।।

ये धरती उगले केसर है,
घाटी मे दाडिम पकते है।
कश्मीरी सेवन से कपोल,
हर एक देखत थकतें हैं ।।

यहा झरझर झरने झरते है,
और कल कल नदिया बहती है ।
यहा सुरबालायें आ आकै,
कलियन त मेल्यौ करती है ।।
यहा प्रकृति नटी वहु रूपलिये,
निज वदन निखारयो करती है ।
फूलन के गुन्चा मनभावना,
कश्मीर सजायौ करती है ।।
अनुपम छटा देख के जाकी,
सुर नगरी सरमाती है ।
सुदरता तौ जाय देखकें,
स्वय मुग्ध है जाती है ।।
या स्वर्ण भूमि मे हम कैसे,
अब यवनन कू आमन दिइगे ।
हम सीमा पै मिट जाइगे,
तुमकू कश्मीर नही दिइगे ।।

नश्वर जीवन पै मिथ्या अभिमान

नश्वर जीवन खेल मौन कौ, का रोना का धोना रे ।
जित्ती चाबी भरी राम न उत्तौ बजै खिलौना रे ।।
पढे लिखे और मूरख पडित, जति देगे पीर पैगम्बर ।
ठठन पाल गये दुनिया ते, जैसे खाली गयौ सिकन्दर ।।
काहू के नहि साथ गयौ है ये चादी और सोना रे ।। जित्ती

सुत दारा और कोठी बगला, जाय समझ रह्यौ तू धन दौलत ।।
दो दिन की है इज्जत तेरी, दो दिन की ये है सब सौहरत ।।
आज जो ताकू मिल्यौ जगत मै, कल्ल पडैगौ खोना रे ।। जित्ती

बूढौ तन तेरौ है जर जर, तोऊ अकड नही छोडी ।
अरे दुष्ट भज राम सिया कू, उमर रही है अब थोरी ।।
जो कछु तैने कीयौ अब तलक, सवई कियौ घिनौना रे ।। जित्ती चाबी

झूठे गढ गढ लडै मुकदमा का मन मे तू हरसाबै ।
गीत बढाई के गा गा के, जन जन कू क्यो बहकाबे ।।
थोरे दिन की बात और है, करि है काम चबैना रे ।। जित्ती चाबी

आज चाहिये हवा गेसनी, कल्ल कहा ते लावगो ।
सूअर कुत्ता लरै चिता पै, कौन भजायवे जावैगो ।।
अकर सबई माटी मिल जै है जम घर चाल चल ना रे ।। जित्ती चाबी

जीवन भर लूटयौ और खायौ, ध्यान कृष्ण को नाहि धरै ।
ईभी मेरो बू भी मेरौ ईट इट पै लरयौ मरै ।।
अंतिम समय बँध रह्यौ काठी, अब क्यो जीव चलै ना रे ।। जित्ती चाबी

बिषय-लेखनी

सरल हृदय से प्रथम, पूजि पद गुरु गनपति के ।
जिनकी कृपा कटाक्ष, पिटारे खुलै सुमति के ।।

कियौ शारदा ध्यान, मूर्ति शुचि उर मे धर के ।
प्रगटाओ सद ज्ञान विराजौ उर किंकर के ।।

रस है वीर प्रधान, लेखनी हाथ उठाऊ ।
सरस भाव रस युक्त सुद्ध कविता लिख पाऊ ।।

चलौ लेखनी चलौ गवयुत सिंह भाति सौ ।
गति कुंजर सो चलो चलो गति हस पानि सौ ।।

तुमको लेकर ब्रह्म, वेद उपवेद बनाये ।
वाल्मीकि रच आदि, काव्य रस कविता लाये ।।

तुलसी कालीदास, सूर केशव गुन मडित ।
देव बिहारी दास, पून कवि सब बिध पडित ।।

विहरौ कानन काव्य काहु सौ वैर न ठानौ ।
झुक झुक झूमत चलौ, झिझक न मन मे मानौ ।।

डरता है ससार, वीरता देख तिहारी ।
चलौ लेखनी चलौ, मान अब बात हमारी ।।

सासक मन्त्री और, चतुर व्यापारीगन के ।
डाक्टर वैद्य हकीम, ज्योतिषी कारीगन के ।।

हाकिम काटै सीस, लेखनी से ही छिन मे ।
कवि वर पाटै सिन्धु, विलछन है छिन छिन मे ।।

कविता नव रस पूजे, लिखौ अब ध्यान लगाकर ।
सुनै सुनन सुख पाय, सत्य की आट लगाकर ।।

कृपा पात्र निज जान विनय अब मान हमारी ।
चलौ लेखनी चलौ सौंह है तुम्हैं तिहारी ।।